लोकों का युद्ध

लोकों का युद्ध

संसार का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक उपन्यास, मगल-निवासियो
द्वारा पृथ्वी पर आक्रमण की भावोत्तेजक कहानी,
जो जितनी भयानक है उतनी ही मनोरजक भी

मूल लेखक

एच. जी. वेल्स

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

१

युद्ध की संध्या

उन्नीसवी शताब्दि के अन्तिम दिनो मे किसीने कल्पना भी न की होगी कि मानव-जगत् की गतिविधि का सूक्ष्म एवं उत्सुकतापूर्ण निरीक्षण, मानव से महान्, परन्तु उन्हींके समान नश्वर बुद्धियाँ कर रही हैं। जब मनुष्य अपने कार्यों में रत रहते थे, उनका निरीक्षण एवं अध्ययन किया जाता था, शायद उतना ही सूक्ष्म निरीक्षण जितना कि कोई मनुष्य अन्वीक्षक यन्त्र द्वारा पानी की एक बून्द मे बिलबिलाते एवं गुणित होते अल्पायु कीटाणुओ का कर सकता है। असीम सन्तोष के साथ मनुष्य पृथ्वी के इस छोर से उस छोर तक अपने छोटे-मोटे कार्यों के निमित्त प्रकृति पर अपने एकछत्र साम्राज्य से आश्वस्त यात्रा किया करते थे। सम्भव है कि अन्वीक्षक यन्त्र वाला कीटाणु भी ऐसा ही करता हो। किसीने भी पुरातन नक्षत्रों को मानव-जगत् के निमित्त संकट का कारण नहीं माना था, अथवा यदि कभी उनके सम्बन्ध में विचार भी किया था, तो केवल अपने मन से उन पर जीवन की सम्भावना को असम्भव मानकर निकाल भगाने के निमित्त ही। अतीत के उन दिनों की कुछ विचार-प्रणालियो का परिचय यहाँ आवश्यक है। इस लोक के मानव अधिक से अधिक यह कल्पना करते थे कि मङ्गल-ग्रह में मानव हो सकते हैं, जो शायद उनसे हीन होगे एवं पृथ्वी के किसी भी सद्‌भावना-मण्डल का स्वागत करने को तत्पर होगे। तो भी, आकाश के उस पार, मस्तिष्क, जो हमारे लिये ठीक उसी प्रकार हैं जैसे कि हम उन पशुओं के निकट जो नष्ट होते हैं, बुद्धियाँ, जो विशाल हैं, हृदय-शून्य एवं दया-विहीन हैं, इस लोक को ईर्ष्या की दृष्टि से देखती रही, और धीरे-

धीरे निश्चित रूप में हमारे विरुद्ध युद्ध-योजनाएँ प्रस्तुत करती रही। और बीसवी शताब्दि के प्रारम्भ में वह भयानक वास्तविकता प्रकट हुई।

मङ्गल-ग्रह, मुझे पाठको को स्मरण कराने की आवश्यकता नहीं, सूर्य से १४०, ०००, ००० मील दूर परिक्रमा करता है, और वह प्रकाश एवं अग्नि, जो वह सूर्य से प्राप्त करता है, इस लोक द्वारा प्राप्त प्रकाश एव अग्नि का अर्धांश भी नही है। यदि तारा-मण्डल-सम्बन्धी अनुमान मे कुछ सत्य है, तो यह हमारे लोक से अधिक प्राचीन होना चाहिए, और हमारी पृथ्वी के ठण्डा होने से पूर्व ही इस पर जीवन का क्रम प्रारम्भ हो चुका होगा। इस वास्तविकता ने कि यह कठिनाई से पृथ्वी का सप्तमांश है, उसके ठण्डा होने की उस गति को तीव्रतम कर दिया होगा, जिसमें जीवन प्रारम्भ हो सके। सजीव सृष्टि का पालन कर सकने योग्य वायु-जल एवं अन्य सभी आवश्यकताएँ मंगल-ग्रह में विद्यमान हैं।

परन्तु तो भी मानव इतना दम्भी है, एव मिथ्या अहंकार ने उसे इतना अन्धा कर रखा है कि उन्नीसवीं शताब्दि के अन्तिम दिनो तक किसी भी लेखक ने इस विचार को कभी भी व्यक्त नही किया कि उस लोक में सज्ञान सृष्टि इस लोक से पूर्व ही विकसित हो चुकी होगी, किसी भी अन्य रूप में इस लोक से पूर्व ही। और न यह जन-सम्मत भावना ही थी कि क्योकि मंगल-ग्रह हमारे लोक से पुरातन है एवं सूर्य से अधिक दूर है, अतः यह प्रमाणित होता है कि वह जीवन-क्रम के प्रारम्भ नही वरन् अन्त होने का स्थान है।

पृथ्वी का धीरे-धीरे ठण्डा होना, जो किसी भी दिन हमारे इस लोक को नष्ट कर सकता है, हमारे पड़ोसी के साथ पर्याप्त अंशों में पूरा हो चुका था। उसकी भौतिक दशाएँ इस समय तक रहस्य के आवरण में हैं, परन्तु अब हम इतना अवश्य जानते हैं कि उसकी भू-मध्यीय सीमा में दोपहर का तापमान कठिनता से हमारे मध्य-शीत कालीन तापमान के समान होता है। इस ग्रह की वायु हमारे लोक की वायु से कहीं सूक्ष्म है, उसके समुद्र हमारे तृतीयांश को जल-मग्न कर लेने से

पूर्व सीमित नही होते हैं, और जैसे-जैसे उसकी मन्द ऋतुएँ बदलती हैं, हिम की विशाल चोटियाँ उसके ध्रुवों पर एकत्रित होती और फिर पिघलती हैं तथा इस प्रकार उसके सम-शीतोष्ण कटिबन्धों में जल-प्रलय के दृश्य उपस्थित करती रहती हैं। प्रलय की वह बेला, जो हमारे लिये अभी पर्याप्त दूर है, मंगल निवासियों के निकट प्रति दिन की समस्या बन चुकी थी। आवश्यकता की निकटतम उपस्थिति ने उनके मस्तिष्क को प्रकाशित, उनकी शक्तियों को अपरिमित एवं उनके मानस को वज्र-कठोर बना दिया। और यन्त्रों एवं बुद्धियों की सहायता से, जिनकी कल्पना मात्र भी हम कठिनाई से कर सकते हैं, शून्य के परे, सूर्य की ओर केवल ३५, ०००, ००० मील की दूरी पर, आशा के देदीप्यमान तारे की भाँति उन्हे हमारा यह ऊष्ण लोक दिखाई पड़ा, जो वनस्पतियों से हरा-भरा, जल से पूर्ण, उवर्रता की घोषणा करने वाली मेघ-राशि से आच्छादित था। और वायु में तैरते इन बादलों से स्थान-स्थान पर जन-संख्या से पूर्ण देशो एवं जलयानों से परिपूर्ण समुद्रों को उन्होंने देखा।

और इस पृथ्वी पर निवास करने वाले हम मानव, उन्हें उतने* ही अपरिचित एवं निम्न कोटि के प्रतीत हुए होंगे* जैसे बन्दर एवं लीमर (बन्दर के ही समान एक पशु) हमारे निकट प्रतीत होते हैं। मानव-बुद्धि स्वीकार करती है कि जीवन-स्थिति के निमित्त सतत संघर्ष है, और प्रतीत होता है कि मंगल-निवासियों की धारणा भी कुछ ऐसी ही थी। उनका लोक अधिक ठण्डा हो चुका है, और यह लोक जीवन से भरा हुआ है, परन्तु केवल उन्ही जीवों के द्वारा जिन्हें वह अपने से हीन समझते थे। सूर्य की ओर संघर्ष को गतिशील करना ही, उस विनाश से, जो मन्द गति से उन पर छा रहा है, बच सकने का एकमात्र मार्ग है।

और इससे पूर्व कि हम उनके आचरण को निन्दनीय घोषित कर, हमें स्मरण कर लेना चाहिए कि हमारी ही मानव-जाति ने कितना भीषण

विनाश किया है, केवल बाइसन एवं डोडों पर ही नहीं, बरन् अपनी ही निर्बल जातियों पर भी। मानव सादृश्य के होते हुए भी, टास्मोनियन जाति को, योरुप में प्रवेश करने वाले मनुष्यों द्वारा, पचास वर्ष की अवधि में समूल-विनाश के युद्ध में नष्ट कर दिया गया। क्या हम दया के ऐसे दिव्य दूत हैं कि यदि मङ्गल-निवासियो ने भी उसी प्रवृत्ति से युद्ध किया, तो हम उस पर आपत्ति उठा सकें ?

प्रतीत होता है कि मंगल-निवासियों ने पृथ्वी पर अपने उतरने की गणना आश्चर्यान्वित कर देने वाली सूक्ष्मता से पूर्ण की—स्पष्ट है कि उनका गणित-ज्ञान हमसे कहीं अधिक विकसित है—और उन्होंने अपनी तैयारियाँ एकमतता से पूर्ण की। यदि हमारे यन्त्र इतने विकसित होते, तो हम उन्नीसवीं शताब्दि में ही घिरते हुए इस संकट को देख लेते। सिशियेपेरिली के समान मनुष्यों ने रक्त वर्ण इस ग्रह का निरीक्षण किया, और यह विलक्षण बात है कि यह नक्षत्र शताब्दियो तक युद्ध का नक्षत्र माना जाता रहा है, परन्तु वह अपने उन चित्रों में उसके परिवर्तित होती आकृतियों के अर्थ को समझ पाने में नितान्त असफल रहे, जिन्हें वह इतनी कुशलता से चित्रित कर सके थे।

१८९४ के प्रारम्भ में मंगल के प्रकाशमान ग्रह पर एक प्रकाश प्रथम लिस्क अनुसन्धानशाला, और नाइस के पेरोटिन नामक व्यक्ति एवं अन्य अनेक निरीक्षकों द्वारा देखा गया। अंग्रेजी पाठकों ने इस विषय में सर्व प्रथम 'नेचर' नामक पत्रिका के दूसरी अगस्त के अंक में पढ़ा। मैं कल्पना करता हूँ कि इसकी आकृति एक विशाल तोप के समान होगी, जो उनके लोक में धँसी-सी प्रतीत होती होगी, और उससे हमारी पृथ्वी पर अग्नि वर्षा की गयी। विलक्षण चिह्न, जिनका सम्पूर्ण विश्लेषण अभी तक नही हो पाया है, इस विस्फोट के अगले दो वर्षों में देखे गये।

यह भयावह तूफान हमारे सर पर अब से छः वर्ष पूर्व टूटा था। जैसे ही मंगल-ग्रह पृथ्वी की सीध में आया, जावा के लावेल नामक व्यक्ति ने ज्योतिष-संसार को मंगल-ग्रह से भूलोक की ओर छोड़ी जाने

वाली अग्निमय एवं तीव्र प्रकाश-युक्त गैस के आश्चर्य मे डाल देने वाले समाचार से कँपकँपा दिया। यह घटना १२ की अर्द्धरात्रि के समीप घटी, और किरणों के रूप को पृथक-पृथक देखने वाले यन्त्र सूक्ष्म अन्वीक्षक यन्त्र ने, जिसका आश्रय उसने ग्रहण किया, अग्निमय गैस के एक विशाल पिंड को तीव्र प्रवाह के साथ हमारे लोक की ओर आते चित्रित किया। अग्नि का यह पिंड सवा बारह बजे के समीप अदृश्य हो गया। उसने इसकी तुलना धूम्र के एक विशाल पिंड से की, जो प्रचण्ड एवं आकस्मिक रूप में इस ग्रह से निकला, जैसे अग्निमय गैस बन्दूक से निकलती है।

यह वाक्य नितान्त उपयुक्त वाक्य सिद्ध हुआ। तो भी अगले दिन 'डेली टेलीग्राफ' में एक सक्षिप्त टिप्पणी के अतिरिक्त किसी भी समाचार-पत्र में इस विषय पर कोई चर्चा नही हुई, और ससार मानव-जगत् के इस महानतम सकट के सम्बन्ध में अन्धकार में ही रहा। मैंने भी इस विस्फोट के सम्बन्ध में कुछ न सुना होता यदि अट्टरथा में मेरी भेंट प्रसिद्ध ज्योतिष-शास्त्र-वेत्ता आग्लिवी से न हुई होती। इस समाचार से वह अत्यधिक उत्तेजित था, और अपनी भावना की उत्तेजना में उस ने उस रात्रि मुझे उस रक्त वर्ण नक्षत्र के अन्वीक्षण में अपने साथ रखा।

उस सबके होते हुए भी, जो उसके पश्चात् हो चुका है, मुझे उस-निरीक्षण की स्पष्ट स्मृति है। वह कृष्ण एवं शान्त अनुसन्धानशाला, कोने में ढकी हुई वह लालटेन, जो फर्श पर धूमिल-सा प्रकाश बिखेर रही थी। टेलीस्कोप की वह स्थिर टिक्-टिक् की ध्वनि, छत का वह छोटा छिद्र, आयाताकार गहनता, जिस पर नक्षत्र की छाया रेखाओ के रूप में चित्रित-सी दीखती थी। अन्धकार में इधर-उधर फिरते आग्लिवी को मैं देख नही पा रहा था, परन्तु उसकी बातें सुनाई पड़ रही थी। टेलीस्कोप से गहन नील वर्ण का एक गोला-सा दिखाई पड़ता था, और वह छोटा-सा नक्षत्र उसमें तैरता-सा दृष्टिगोचर होता था। वह इतना सूक्ष्म, इतना प्रकाशमय एव स्थिर दीख

पडता, जिस पर धूमिल-सी तिरछी धारियाँ अंकित प्रतीत होती, और पूरा चक्कर काटने में वह कुछ मन्दता प्रदर्शित करता था। परन्तु वह इतना सूक्ष्म था, चादी की भाँति चमकता प्रकाश का, पिन की मूठ के समान आकार; प्रतीत होता जैसे वह किंचित कँपकँपाता था, परन्तु वास्तव मे यह कंपन टेलीस्कोप का कंपन था, जो थरथराते उस यन्त्र से जन्म पाता था जो नक्षत्र को दृष्टि के समक्ष रखता था।

जब मैं अन्वीक्षण कर रहा था, वह छोटा नक्षत्र आकार में घटता, बढता एव वक्र गति होता प्रतीत हुआ, परन्तु कारण केवल यह था कि मेरे नेत्र थक चुके थे। वह हमसे चालीस मीलियन मील दूर था, शून्य मे चालीस मिलियन मील परे। कुछ ही व्यक्ति हैं जो शून्य की इस विशालता का अनुभव करते हैं, जिसमें सृष्टि की क्रियाएँ गतिशील रहती हैं।

उस स्थान में, मुझे स्मरण है, उसके समीप प्रकाश के तीन सूक्ष्म पुंज थे; दूरबीन के आकार के तीन तारे जो विशाल दूरी पर थे, और उनके चारो ओर था शून्य का अतल अधकार। आप जानते हैं, नक्षत्रो से जगमगाती रात्रि मे कालिमा कैसी प्रतीत होती है? टेलीस्कोप मे वह और अधिक गहन प्रतीत होती है। और मेरे नेत्रो से अदृश्य, कारण कि वह मुझसे इतनी दूर एव इतनी सूक्ष्म थी, मेरी ओर प्रचण्डता एवं तत्परता से उस अप्रमाणभूत दूरी से उडती, प्रति मिनट सहस्रो मील समीप आती, वह वस्तु थी जो वह हमारी ओर भेज रहे थे; वह वस्तु जो इस लोक के निमित्त इतना संघर्ष, दुर्भाग्य एवं मृत्यु ला रही थी। जिस समय मै अन्वीक्षण कर रहा था, मैं उसकी कल्पना भी न कर सका, और भूलोक मे कोई भी उस अमोघ अस्त्र की कल्पना न कर सका।

उसी रात्रि को उस सुदूर नक्षत्र से दूसरी बार फिर गैस छोड़ी गई। मैंने उसे देखा। उसका छोर रक्त वर्ण प्रकाश के समान था, जो केवल बाह्य रेखा के रूप में ही था, और जिस समय क्रोनोमीटर ने मध्य रात्रि

की सूचना दी, मैंने आग्लिवी से कहा और उसने मेरा स्थान ग्रहण कर लिया। रात्रि गर्म थी और मुझे प्यास लगी थी। अपने हाथ-पैरो को फैलाते और अन्धकार मे मार्ग टटोलते मै उस मेज की ओर बढा जहाँ पानी की नली थी, जब कि आग्लिवी हमारी ओर गतिशील उस गैस पर विस्मय प्रकट करता रहा।

उसी रात्रि दूसरा अदृश्य अस्त्र मगल-ग्रह से हमारी पृथ्वी की ओर यात्रा करने लगा। मुझे स्मरण है कि मै किस प्रकार उस अन्धकार में उस मेज पर बैठा रहा और मेरे नेत्रो के समक्ष हरे एवं गुलाबी तिलूले-से उडते रहे। मै इच्छा करता रहा कि यदि कोई साधन होता तो मैं धूम्रपान करता, और उस सूक्ष्म प्रकाश-पुंज के वास्तविक अर्थ पर, जिसे मैंने देखा था, तथा सब कुछ जो वह मेरे निमित्त शीघ्र ही ला रहा था, कोई सन्देह नही कर रहा था। आग्लिवी उसे एक बजे तक देखता रहा, और तब उसे छोडकर वह हट आया। हमने लालटेन जलायी, और उसके निवास-स्थान की ओर चल दिये। नीचे गहन अधकार मे अटरशा एवं चर्टसी नगर थे, और उनके सैकडो नागरिक शान्ति की निद्रा में मग्न थे।

रात्रि भर वह मगल-ग्रह की दशा के सम्बन्ध मे अटकल लडाता रहा, और इस घृणित विचार का, कि मंगल-ग्रह मे निवासी हैं जो हमें संकेत कर रहे हैं, तिरस्कार करता रहा। उसका विचार था कि उस नक्षत्र पर टूटे हुए तारो की भीषण वर्षा हो रही है, अथवा कोई ज्वालामुखी विस्फोट की ओर प्रगतिशील है। उसने मुझे यह भी सकेत किया कि यह कितनी असम्भव-सी बात है कि समीपवर्ती दोनो नक्षत्रो के विस्फोट ने एक ही दिशा ग्रहण की।

"मगल में मानवो के समान जीवो के निवास की सम्भावना लाख में एक अश के समान है", उसने कहा।

सैकड़ो निरीक्षको ने उस रात्रि और उससे दूसरी रात्रि को, मध्य रात्रि के समीप, और फिर उससे अगली रात्रि को, और इसी प्रकार

दस रात्रियो तक प्रत्येक रात्रि एक अग्नि-शिखा को देखा। दसवी रात्रि के पश्चात् विस्फोट क्यो बन्द हो गये, किसीने भी बताने का प्रयत्न नही किया। हो सकता है कि इन विस्फोटो की गैसें मगल-निवासियों के निकट असुविधा का कारण बनी हो। धूम्र अथवा धूल के गहन बादल, जो पृथ्वी के प्रबल अन्वीक्षक यन्त्रो द्वारा भूरे, उडते हुए बादल-से प्रतीत होते थे, नक्षत्र के निर्मल वातावरण के चारो ओर छा गये, और उसके सदा सरलता से दिखाई पडने वाले भागो को आच्छादित करने लगे।

अन्त में दैनिक समाचार-पत्र इन विघ्नो के सम्बन्ध में जागरूक हो गये एवं सभी स्थानो मे मंगल के ज्वालामुखियो से सम्बन्धित लोक-सम्मत टिप्पणियाँ निकलने लगी। गाम्भीर्य एव हास्य-रस के मिश्रण वाली 'पच' नामक पत्रिका ने, मुझको स्मरण है, इसका सुन्दर प्रयोग अपने राजनीतिक व्यंग्य-चित्र में किया। और किसीने भी शका न की कि मगल-निवासियो द्वारा चलाये गये वह अस्त्र, हमारे लोक की ओर, प्रति क्षण अनेक मील की गति से, शून्य को पार करके प्रति घण्टा एव प्रति दिन हमारे समीप ही आ रहे हैं। इस समय यह मुझे अविश्वस-नीय आश्चर्य के समान प्रतीत होता है कि सर पर प्रचण्ड गति से घिरते उस दुर्भाग्य के होते हुए भी मनुष्य अपने तुच्छ कार्यों में पूर्व की भाँति निमग्न रहते थे। मुझे स्मरण है कि मंगल-ग्रह का एक नूतन चित्र उस पत्र के निमित्त प्राप्त करके, जिसका सम्पादन वह उन दिनों कर रहा था, मार्कहम कितना प्रसन्न था। बाद के इन दिनो के लोग हमारी उन्नीसवी सदी के समाचार-पत्रो की प्रचुरता एव साहसपरता की अनुभूति कठिनता से कर सकते हैं। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं बाइसिकिल चलाने के अभ्यास करने एवं सभ्यता के साथ नैतिकता के सम्भावित विकास पर तर्क करने और लेख लिखने में लगा हुआ था।

एक रात्रि (प्रथम अस्त्र जब पृथ्वी से अधिक से अधिक १०,०००,००० मील दूर होगा) मैं अपनी पत्नी के साथ भ्रमण के निमित्त गया। रात्रि तारो-भरी थी, और मैंने उसे राशियो के सम्बन्ध में बतलाया, और

मंगल की ओर सकेत किया, जो अन्तरिक्ष की ओर गतिशील प्रकाश का एक चमचमाता-सा बिन्दु था, तथा जिसकी ओर अनेक अन्वीक्षक यंत्र लगे थे। रात्रि गर्म थी। घर की ओर लौटते समय चर्टसी अथवा आइलवर्थ से लौटता भ्रमणार्थियो का एक दल गाता-बजाता हमारे पास से निकला। मकानो की ऊपरी खिड़कियो में प्रकाश था, क्योकि लोग सोने जा रहे थे। दूर के रेलवे स्टेशन से शण्टिग करने वाली गाडियो की ध्वनियाँ आ रही थी—ठनठनाहट और खटखटाहट, जो दूरी के कारण कोमल सगीत का रूप धारण कर रही थी। मेरी पत्नी ने आकाश में ऊँचे लटकते सिगनलो के लाल, हरे एवं पीले प्रकाश की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। सभी कुछ सुरक्षित एवं शान्त प्रतीत होता था।

२

टूटता तारा

तब आयी उल्कापात की प्रथम रजनी। प्रात.काल समीप विन्चेस्टर से पूर्व की ओर आकाश में यह उल्कापात देखा गया। सैंकड़ो ने इसे देखा होगा और इसे एक सामान्य 'पात' समझा होगा। एल्बिन ने इसे अपने पीछे हरित वर्ण धार-सी छोडते बताया जो कई सैकिण्ड तक चमकती रही। उल्कापात के संबध मे हमारे सबसे बडे विद्वान डेनिंग ने बताया कि उसके सर्वप्रथम दृश्यमान होने की ऊँचाई नब्बे अथवा सौ मील रही होगी। उसे प्रतीत हुआ कि वह पृथ्वी पर उससे सौ मील पूर्व की ओर कही गिरी।

उस समय मैं घर मे था और अपने अध्ययन-कक्ष मे लिख रहा था, और यद्यपि मेरी फ्रेंच खिडकियाँ अटरशा की ओर पडती थी, और इस समय सभी सिटकनियाँ खुली हुई थी (कारण कि उन दिनो मुझे रात्रि के आकाश को देखना अधिक प्रिय था), मैंने कुछ भी नही देखा। तो भी शून्य से पृथ्वी की ओर आने वाली सभी वस्तुओ मे विलक्षणतम यह वस्तु उसी समय गिरी होगी जब मै वहाँ बैठा था, और दृष्टिगोचर हो गयी होती, यदि मैंने उसी समय अपना सर ऊपर उठा लिया होता जब कि वह नीचे गिरी। कुछ लोग, जिन्होने उसे गिरते देखा, कहते हैं कि वह सी-सी की ध्वनि कर रही थी। स्वयं मैंने कुछ भी नही सुना। बर्कशायर, सरे और मिडिलसेक्स के अनेक नागरिको ने उसे गिरते देखा होगा, और अधिक से अधिक समझा होगा कि अन्य कोई तारा टूटा है। उसी रात्रि, गिरे हुए पदार्थ को देखने का कष्ट किसीने भी नही किया होगा।

परन्तु प्रात. सवेरे ही बेचारा आग्लिवी, जिसने उस उल्कापात को देखा था, और जिसे विश्वास था कि कोई टूटा हुआ तारा हारसेल, अटरशा और वोकिंग के बीच किसी स्थान पर पड़ा है, उसे खोजने के लिये उठ खड़ा हुआ। शीघ्र ही सूर्योदय के कुछ काल पश्चात्, उसने उसे बालू के गड्ढों के समीप खोज निकाला। वायु में फेंकी गयी इस वस्तु ने एक विशाल खड्ड बना लिया था, और बालू एव ककड प्रचण्डतापूर्वक झाड़ियो से पूर्ण इस स्थान पर इधर-उधर प्रत्येक दिशा मे फैल गये थे, और ऐसा ढेर बना लिया था जो मील डेढ मील से दिखाई पडता था। पूर्व की ओर की झाडियाँ सुलग रही थी और सूक्ष्म नील धूम्र आकाश की ओर उठ रहा था।

वह वस्तु बालू में एक फर के वृक्ष की नष्ट-भ्रष्ट शाखाओं में, जिसे गिरते समय उसने खंड-खंड कर दिया था, दबी पड़ी थी। खुले हुए भाग की आकृति एक सिलण्डर के समान थी, जिसका सिरा केक के समान गोल था, और उसकी बाह्य रेखा एक स्थूल श्याम वर्ण परत से ढकी थी। उसका व्यास तीस गज के लगभग था। उसके आकार और उससे भी अधिक

उसकी आकृति पर आश्चर्यान्वित वह उसके समीप बढा, कारण कि अधिकतम टूटे तारे आकृति मे गोल ही होते हैं। परन्तु इस समय भी वायु में यात्रा करने के कारण वह इतना अधिक गर्म था कि उसके समीप पहुँचना दुस्तर था। उस सिलण्डर के भीतर की ध्वनियो को उसने ठण्डा होने की प्रतिक्रिया मात्र ही माना, कारण कि उस समय वह यह कल्पना भी नही कर सका था कि वह भीतर से खोखला होगा।

वह उस खड्ड के किनारे, जो इस वस्तु ने बना लिया था, उसकी विलक्षण आकृति पर आश्चर्य करता खडा रहा; प्रमुख रूप से वह उसकी आकृति एवं वर्ण पर आश्चर्य कर रहा था, और विशेष रूप से वह उसके आगमन में एक विशेष रचना का आभास पा रहा था। प्रातः काल पूर्णतः निस्तब्ध एव शान्त था, और वीब्रिज की ओर देवदार के झुरमुट को चीरकर सूर्य गर्म हो चुका था। उसे स्मृति नही कि उस प्रात. उसने पक्षियो की काकली सुनी थी, और जो भी ध्वनियाँ सुनायी पड रही थी, वह उस भस्ममय सिलण्डर से आ रही थी। उस निर्जन स्थान में वह अकेला ही था।

तब सहसा उसने देखा कि उस खड को लपेटे रखने वाली भस्म मे से झनझनाहट की ध्वनि के साथ भूरे रंग का कोई पदार्थ उस गोल सिरे से झडकर गिर रहा है। वह परत के रूप मे चू रहा था और भूमि पर गिर रहा था। एक बडा भाग सहसा टूटा, और ऐसी तीव्र ध्वनि के साथ नीचे गिरा कि भय से उसको अपना प्राण कठ मे आता प्रतीत हुआ।

एक क्षण तक वह न समझ सका कि इसका क्या अर्थ है, और यद्यपि गर्मी प्रचण्ड थी, वह खड्ड की ओर उस बिशाल खण्ड के अधिक समीप स्पष्ट रूप से देख पाने के निमित्त कठिनता से चढ गया। उस समय भी वह यही कल्पना कर रहा था कि उस खण्ड के ठण्डा होने के कारण ही ऐसा हो रहा है, परन्तु उसके इस विचार को बाधा पहुँचाने वाला तथ्य केवल यही था कि भस्म सिलण्डर के छोर से गिर रही थी।

और तब उसने देखा कि धीरे-धीरे उस सिलण्डर का गोल ऊपरी

भाग उसके ऊपर चक्र के समान घूर रहा है। उसकी गति इतनी मन्द थी कि वह इसका पता उस काले निशान को देखकर ही लगा पाया जो पाँच मिनिट पूर्व उसके समीप था, परन्तु अब उस अर्धव्यास के उस सिरे पर था। परन्तु तो भी वह न समझ सका कि इसका क्या अर्थ है, जब तक कि उसने दबी हुई एक ककर्श ध्वनि न सुनी और काले निशान से एक तीव्र प्रकाश निकलते न देखा। वह सिलण्डर कृत्रिम था—खोखला —जिसके सिरे पर घुमाने वाला यंत्र लगा था। सिलण्डर के भीतर से कोई वस्तु उस सिरे को घुमा रही थी।

"हे ईश्वर !" आग्लिवी पुकार उठा, "उसमें मनुष्य हैं—उसमें मनुष्य हैं ! जो आधे जल चुके हैं ! बच निकलने को प्रयत्नशील !"

सहसा एक मानसिक उछाल से उसने इस वस्तु का संबंध मंगल-ग्रह के आलोक के साथ जोड़ लिया।

उस दहकते खण्ड में बन्दी प्राणी का विचार उसे इतना भयावह लगा कि वह उस प्रचण्ड दाहकता को भूल गया, और सहायतार्थ उस सिलण्डर की ओर अग्रसर हुआ। परन्तु सौभाग्य से अभी तक दहकती उस धातु के धूमिल वर्ण ने उसे अपने हस्थ जलाने से पूर्व ही रोक लिया। तब एक क्षण तक वह किंकर्त्तव्यमूढ़-सा खड़ा रहा, और फिर घूमा, उस खड्ड से बाहर निकला, और प्रचण्ड गति से वोकिंग की ओर भागा। तब समय लगभग छ: के समीप होगा। उसे एक छकड़ा हाँकने वाला मिला, और उसने उसे समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु जो कहानी उसने सुनायी एवं उसकी आकृति जो इतनी भयावह हो रही थी—उसका हैट खड्ड में गिर पड़ा था—कि वह मनुष्य आगे बढ़ गया। इसी प्रकार वह उस कुम्हार को समझा पाने में भी असफल रहा, जो हारसेल ब्रिज के सार्वजनिक गृह के द्वार खोल रहा था। उस व्यक्ति ने उसे विक्षिप्त समझा और उसे टेप-रूम में बन्द करने का असफल प्रयत्न किया। इस सबने उसे किंचित संयत कर दिया, और जब उसने लन्दन के सम्पादक

हैण्डरसन को अपने उद्यान में देखा, उसने हाते के ऊपर से उसे पुकारा, और अपनी बात समझायी।

"हैण्डरसन", वह चिल्लाया, "तुमने कल उस टूटते तारे को देखा था?"

"हाँ", हैण्डरसन ने उत्तर दिया।

"वह इस समय हारसेल कामन पर पडा है।"

"हे ईश्वर!" हैण्डरसन ने कहा, "टूटा तारा ठीक है!"

"परन्तु टूटे तारे के अतिरिक्त वह कुछ और भी है। उसमें एक सिलण्डर है—एक कृत्रिम सिलण्डर! और उसके भीतर कुछ और है।"

"वह क्या है?" उसने कहा। वह एक कान से ऊँचा सुनता है।

आग्लिवी ने उसे बताया जो कुछ उसने देखा था। एक या दो क्षण हैण्डरसन मनन करता रहा। तब उसने अपना फावडा फेक दिया, अपनी जाकेट उठायी, और सड़क पर आ गया। दोनो व्यक्ति शीघ्रता से उस स्थान की ओर बढे, और उन्होने उस सिलण्डर को पूर्ववत् अवस्था में पडे पाया। परन्तु इस समय तक भीतर की ध्वनियाँ समाप्त हो चुकी थी, और चमकती हुई धातु का एक गोला-सा सिलण्डर और उसके सिरे के बीच दिखाई पडा। सिरे की ओर हल्की सी-सी की ध्वनि के साथ वायु भीतर प्रवेश कर रही थी अथवा बाहर निकल रही थी।

वह सुनते रहे, उन्होने एक डण्डे से उस पर खड़खड़ाहट की, और कोई उत्तर न मिलने पर उन दोनों ने समझा कि भीतर का मनुष्य अथवा भीतर के मनुष्य या तो अचेतन हो चुके हैं अथवा निष्प्राण।

वास्तव में वह दोनों कुछ भी कर पाने में असमर्थ रहे। बाहर से वह आश्वासन देते रहे, सहायता की प्रतिज्ञाएँ करते रहे, और नगर की ओर और अधिक सहायता पाने के निमित्त लौट गये। कोई भी उनकी कल्पना कर सकता है—धूलि-धूसरित, उत्तेजित एवं अव्यवस्थित—चमचमाते प्रकाश में उस छोटी सडक पर भागते, जब कि दूकानदार अपनी दूकाने और लोग अपने शयनागार की खिड़कियाँ खोल रहे थे।

हैण्डरसन तुरन्त ही स्टेशन की ओर इस समाचार को तार द्वारा लन्दन भेजने के निमित्त चला गया। समाचार-पत्रों के लेखो ने मानव-मस्तिष्क को इस विचार को समझ पाने योग्य बना दिया था।

आठ बजते-बजते एक बडी सख्या मे लडके एव स्वेच्छा से सहायता करने वाले लोग उस स्थान की ओर 'मृतक मगल-निवासियो' को देखने के निमित्त चल पडे। यह रूप था जो इस कहानी ने प्राप्त किया। सर्व-प्रथम मैंने इस विषय में अपने समाचार-पत्र बेचने वाले छोकरे से पौने नौ के समीप सुना, जब मैं अपना 'डेली क्रोनिकल' लेने गया। स्वाभाविक है कि मैं आश्चर्य से जड़-सा हो गया, और अटरशा के ब्रिज से बालू के उन गड्ढो की ओर जाने में मैंने किंचित् भी विलम्ब नही किया।

३.

हारसेल कामन पर

मैंने लगभग बीस लोगो की एक छोटी-सी भीड़ को उस विशाल खण्ड को घेरे पाया जिसमे वह सिलण्डर दबा पड़ा था। मैं उस विशाल खण्ड की आकृति का वर्णन कर ही चुका हूँ जो पृथ्वी पर दबा पडा था। उसके आसपास की घास एवं ककड़ इस प्रकार झुसल गये थे जैसे कि यह आकस्मिक विस्फोट हो गया हो। निस्सन्देह उस आघात ने अग्नि-शिखा को जन्म दिया था। हैण्डरसन और आग्लिवी वहाँ नहीं थे। मैं समझता हूँ कि उन्होने विचार किया होगा कि उस समय कुछ भी नही हो सकता है, अतः वह हैण्डरसन के यहाँ जलपान के निमित्ति चले गये थें।

उस खड्ड के सहारे चार-पाँच बालक बैठे हुए थे, जो अपने पैरो को झुला रहे थे, और उस विशाल खण्ड पर पत्थर फेककर आनन्द मना रहे थे, मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका। जब मैंने उनसे इस सम्बन्ध में कहा, वह बाहर खडे लोगो में एक दूसरे को छूने का खेल खेलने लगे।

इन लोगों में कुछ साइकिल-सवार थे, भाडे पर काम करने वाला एक माली था, जिसे कुछ समय पूर्व मैंने रखा था, बच्चे को गोद मे लिये एक लडकी, कसाई ग्रेग जो अपने छोटे बालक के साथ था, दो-तीन घुमक्कड तथा रेलवे स्टेशन पर चक्कर काटने वाले दो-तीन गोल्फ़ के खिलाडी। वार्तालाप कम हो रहा था। उन दिनो इग्लैड के कतिपय जनसाधारण के मस्तिष्क में ज्योतिष से सम्बन्धित अनिश्चित विचार होते थे। उनमें से अधिकाश शान्तिपूर्वक उस मेज सदृश सिलन्डर के सिरे को देख रहे थे. जो इस समय भी उसी अवस्था में पडा था, जिसमें हैण्डर-सन और आग्लिवी उसे छोड गये थे। मै समझता हूँ, सर्वसाधारण का भस्मीभूत शवो को देखने का कौतूहल सजीवता से पूर्ण इस खण्ड को देखकर शान्त हो चुका था। जब कि मैं वही था, कुछ चले गये, और दूसरे आ पहुँचे। मैं कठिनतापूर्वक उस खड्ड तक चढ गया, और मुझे आभास हुआ कि मैंने अपने पैरो के पास एक हल्की गति का अनुभव किया। निश्चित रूप मे ऊपरी सिरे ने घूमना बन्द कर दिया था।

केवल उसी समय, जब मै उसके इतने समीप पहुँचा, इस वस्तु की विलक्षणता मुझ पर प्रकट हुई। प्रथम दृष्टि मे वह एक उल्टी हुई गाडी, अथवा सडक पर आर-पार उखडे वृक्ष से अधिक कौतूहलप्रद न था। वास्तव में वह ऐसा न था। ससार की किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा वह एक जग खाये आधे दबे पडे गैस के पीपे के समान प्रतीत होता था। यह जानने के लिये वैज्ञानिक-बुद्धि की आवश्यकता थी कि उसकी भूरी परत कोई सामान्य आक्साइड नही थी और वह श्वेत-पीत वर्ण धातु, जो सिलण्डर एव उस ढकने के मध्य चमक रही थी, असामान्य-

सी थी।

उस समय मेरे मस्तिष्क में भी यह स्पष्ट था कि यह वस्तु मंगल-ग्रह से आई है, परन्तु उसमें किसी जीवित वस्तु की सम्भावना को मैंने असम्भव ही स्वीकार किया। मैंने कल्पना की कि उसका ढीला होना एवं घूमना स्वचालित आधार पर ही था। आग्लिवी के विचार के होते हुए भी, मैं इस समय भी कल्पना कर रहा था कि मंगल-ग्रह में मानव-निवास है। कल्पना के प्रवाह में मेरा मस्तिष्क उसमें किसी लिखित वस्तु की सम्भावना, उसके अनुवाद की कठिनाइयाँ, जो उपस्थित हो सकती थी, अथवा क्या हम उसमें मुद्राएँ, प्रतिमूर्तियाँ प्राप्त करेंगे अथवा नही, इन्ही विचारो में चक्कर काटने लगा। परन्तु तो भी इन सम्भावनाओ को आश्वासन प्रदान करने के लिये उसका आकार अधिक विशाल था। ग्यारह के समीप, जब कुछ भी होता प्रतीत न हुआ, मैं इन्ही विचारो में डूबा लौट पडा, मेबरी मे अपने घर की ओर। परन्तु अपने इन अव्यावहारिक विचारो पर कार्य करना मेरे निकट कठिन था।

मध्याह्न तक घटना के वर्णन में भारी परिवर्तन हो चुका था। सायं-समाचार-पत्रो ने समस्त लन्दन को अपनी विशाल पंक्तियों से आतंकित कर दिया :

'मंगल-ग्रह से प्राप्त एक सम्वाद'

'वोकिंग की अनोखी घटना'

और इसी प्रकार। इसके अतिरिक्त आग्लिवी के 'एस्ट्रोनोमिकल एस्सचेंज' को भेजे गये तार ने तीनो राज्यो की अनुसन्धानशालाओं का जागरूक कर दिया।

बालू के इन गड्ढों के समीप वोकिंग स्टेशन से आई हुई आधा दर्जन से अधिक फलाई गाडियाँ, और चोबहम से आई हुई एक बास्केट-चेज खडी हुई थी, जो एक शानदार गाड़ी के समान प्रतीत हो रही थी। इसके अतिरिक्त वहाँ साइकिलो का एक ढेर-सा था। साथ ही उस गर्म दिन के होते हुए भी एक विशाल मानव-समूह वोकिंग से चर्टसी की

ओर चला होगा, जिससे भीड की सख्या विशाल हो उठी होगी, जिसमें सुन्दर परिधानों में सुसज्जित एक-दो नारियाँ भी थी।

चमचमाता सूर्य तप रहा था, और आकाश में न एक भी बादल था और न वायु का झोंका ही, और दृष्टि पड़ने वाली परछाइयो में केवल देवदार के कुछ उखडे हुए वृक्ष ही थे। जलती हुई झाडियाँ बुझा दी गयी थी, परन्तु तो भी अटरशा की ओर की पृथ्वी, जहाँ तक दृष्टि का पसार था, काली पडी हुई थी और इस समय भी ऊपर की ओर उठने वाली धूम-धाराएँ छोड रही थी। चोबहम रोड के एक साहसी मिठाई बेचने वाले ने अपने पुत्र को एक दोपहिया ठेलागाडी में सेब और जिंजर-बीयर लेकर भेज दिया था।

उस खड्ड के किनारे जाकर मैंने उसे लगभग आधा दर्जन व्यक्तियों से घिरा पाया। हैण्डरसन, आग्लिवी और एक लम्बे, कोमल केश वाले मनुष्य को, जो पीछे चलकर मुझे पता चला राज्य-ज्योतिषी स्टेन्ट था, मैंने वहाँ पाया, जिनके साथ कई श्रमिक फावडे और कुल्हाडियाँ चला रहे थे। स्टेन्ट स्पष्ट और ऊँची वाणी में आज्ञाएँ दे रहा था। वह सिलण्डर पर खड़ा था, जो स्पष्ट था कि अब पर्याप्त ठडा हो चुका था। उसका मुख लाल हो रहा था, जिससे पसीना चू रहा था, और लगता था कि जैसे किसी बात ने उसे व्यथित कर रखा हो।

सिलण्डर का एक विशाल भाग खोदा जा चुका था, यद्यपि उसका निचला भाग अभी दबा पड़ा था। जैसे ही आग्लिवी ने खड्ड के किनारे दीखने वाली उस भीड़ में मुझे देखा, उसने मुझे पास आने को पुकारा, और मुझसे पूछा कि क्या मैं मैनर के लार्ड हिल्टन के पास तक जा सकूँगा।

उसने कहा, बढती हुई भीड़, और विशेषत: लडके, उस खुदाई में भारी व्यवधान का कारण बन रहे हैं। वह चाहते थे कि एक हल्का घेरा उनके चारो ओर भीड को रोकने के लिये लगा दिया जाय। उसने मुझे बताया कि सिलण्डर-केस में एक हल्की सरसराहट की ध्वनि अभी

तक कभी-कभी सुनायी पड जाती थी, परन्तु श्रमिक उस सिलण्डर को खोल पाने मे असमर्थ थे, कारण कि वह उनकी पकड में ही नही आ पाता था। यह केस पर्याप्त रूप मे मोटा प्रतीत होता था, और सम्भव था कि वह हल्की ध्वनियाँ, जो वह सुन रहे थे, उसके आभ्यतरिक भाग मे हो रहे किसी कोलाहल को व्यक्त करती थी।

उसके कहने के अनुसार कार्य करने, और इस प्रकार उस स्थान के एक विशेष दर्शक बन जाने मे मुझे भारी प्रसन्नता हुई। लार्ड हिल्टन से घर पर भेट कर पाने मे मैं असमर्थ रहा, परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उनके लन्दन से वाटरलू-ट्रेन द्वारा छः बजे तक आने की सम्भावना थी, और क्योकि इस समय लगभग सवा पाँच बज चुके थे, मैं घर गया, और अल्प चाय लेकर उनसे मिलने के हेतु चल पड़ा।

सिलण्डर का खुलना

जब मैं उस स्थान पर पहुँचा, सूर्य डूब रहा था। वोकिंग की ओर से अनेक लोग उस स्थान की ओर शीघ्रता पूर्वक जा रहे थे, और एक-दो व्यक्ति लौट रहे थे। खड्ड के समीप की भीड बढ गई थी और धुंधले-पीले आकाश के नीचे काली-काली पक्तियो मे सैकड़ों व्यक्तियों का समूह खड़ा था। अनेक ध्वनियाँ सुनायी पड़ रही थी, और प्रतीत होता था कि वहाँ कोई संघर्ष चल रहा है। मेरे मस्तिष्क में अद्भुत कल्पनाएँ उठने लगी। जब मैं समीप आया, मुझे स्टेन्ट की वाणी सुनायी पड़ी :

"पीछे हटो, पीछे!"

एक लडका दौड़ता हुआ मेरे समीप आया।

"वह चल रहा है", भागते हुए उसने कहा, "उसका पेच खुल रहा है, वह खुल रहा है। मुझे अच्छा नही लगता, मै घर जा रहा हूँ।"

मै भीड के समीप पहुँचा। वहाँ, मै समझता हूँ, दो-तीन सौ व्यक्ति थे, जो एक दूसरे से धक्का-मुक्की कर रहे थे, और उनमे रही एक-दो नारियाँ भी किसी प्रकार कम कार्यशील नही दिखाई पड़ रही थी।

"वह खड्ड मे गिर पडा है", कोई चिल्लाया।

"पीछे रहो", अनेक चिल्ला उठे।

भीड कुछ पीछे हटी, और मेने अपना मार्ग निकाल लिया। प्रत्येक अत्यधिक उत्तेजित दिखाई पडता था। मुझे खड्ड से विचित्र प्रकार की भनभनाहट की ध्वनि सुनायी पडी।

"मै कहता हूँ," आग्लिवी ने कहा, "कृपया इन मूर्खों को रोको। हम नही जानते इस सन्देहजनक वस्तु मे क्या है।"

मैंने एक नवयुवक को, जो शायद वोकिंग के किसी दुकानदार का सहकारी था, सिलण्डर पर खडे एवं उस खड्ड से बाहर निकलने का प्रयत्न करते देखा। लोगों ने उसे भीतर धकेल दिया था।

उस सिलण्डर का छोर भीतर से घुमाया जा रहा था। चमचमाती पेंच लगभग दो फीट बाहर निकल चुका था। किसीने मुझे धक्का दिया और मैं उस पेच के सिरे से टकराते-टकराते बचा। जैसे ही मैं पीछे घूमा, वह पेच बाहर निकल आया होगा, और सिलण्डर का ढकना कंकड़ो पर एक झटके के साथ गिर पड़ा। मैंने अपने पीछे वाले व्यक्ति को कोहनी मारी और अपना सर उस वस्तु की ओर घुमाया। एक क्षण तक वह गोलाकार छिद्र पूर्णत काला दिखाई पडा। कारण कि अस्त होते हुए सूर्य की किरणे मेरे नेत्रो पर पड रही थी।

मै समझता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति उस क्षण सिलण्डर से किसी मानव के बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था, सम्भवतः हम लौकिक प्राणियो से कुछ भिन्न प्रकार का प्राणी, परन्तु वस्तुत मानव। मुझे स्मरण है कि मै ऐसी ही कल्पना कर रहा था। तुरन्त ही मैंने उस

छाया-अन्धकार में किसी वस्तु को हिलते देखा—भूरे तरंगाकार कम्पन एक दूसरे के ऊपर, तब दो तश्तरियो के समान आँखे। तब कोई वस्तु, जो एक भूरे सर्प के समान थी, और जिसकी मोटाई एक छडी के समान थी, उस कम्पायमान मध्य भाग से पिण्डाकार होकर बाहर निकली, और वायु में कभी मेरी ओर, और फिर दूसरे व्यक्ति की ओर लपलपाने लगी।

मेरी नाडियो का रक्त सहसा जम गया। पीछे की एक नारी तीव्र चीत्कार कर उठी। आधा मुडा हुआ मै, अपने नेत्रो को सिलण्डर पर टिकाये, जिसमें से अब स्पर्श-ज्ञान-सयुत वैसे ही अनेक पिण्ड बाहर निकल रहे थे, धक्के मारकर पीछे की ओर अपना मार्ग निकालने लगा। मैने अनुभव किया कि मेरे चारो ओर के समूह के चेहरो पर अब भय ने कौतूहल का स्थान ले लिया था।

मैंने अपने चारों ओर अस्पष्ट आश्चर्य का भाव पाया। जन-समूह पीछे की ओर हटने लगा। मैंने उस दुकानदार को इस समय भी खड्ड से निकलने का असफल प्रयत्न करते पाया। मैंने स्वयं को अकेला पाया, और लोगों को, जिनमें स्टेन्ट भी था, खड्ड के उस ओर भागते पाया। मैंने पुनः सिलण्डर की ओर देखा, और सयमन न किये जाने योग्य भय ने मुझे घेर लिया। जड मूर्ति के समान मैं उसे घूरता खड़ा रहा।

एक विशाल भूरी देह, जिसका आकार शायद रीछ के समान था, सिलण्डर से धीरे-धीरे, परन्तु कठिनतापूर्वक बाहर निकल रही थी। जब वह बाहर निकल आया और प्रकाश उस पर पडने लगा, वह एक गीले चमडे की भाँति चमकने लगा। गहरे काले रंग के दो विशाल नेत्र मुझे स्थिरता से घूर रहे थे। वह गोल था, और कोई भी समझ सकता था कि वह एक चेहरा है। आँखों के नीचे मुँह था, जिसका ओष्ठ-विहीन किनारा फड़फड़ा रहा था, और लार टपका रहा था। वह शरीर ऐंठन के साथ-साथ श्वास ले रहा था। एक पतले एवं स्पर्श-ज्ञान-सयुत शरीर-

भाग ने सिण्डलर को जकड़ लिया, और शेष भाग वायु में इधर-उधर डोलने लगा।

वह, जिन्होने कभी किसी जीवित मगल-निवासी को नही देखा है, उनकी भयावह आकृति की कल्पना कठिनता से ही कर सकते हैं। नुकीले ऊपरी होठ वाले 'V' आकार का मुख, भौहो की अनुपस्थिति, चिबुक-विहीन उनके खूँटे के आकार का निम्न ओष्ठ, इस मुख का अनवरत कम्पन, पौराणिक सर्पकेशी नारी के समान स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंगों का समूह, अपरिचित वातावरण में फेफड़ो का तीव्रता से श्वास-क्रिया करना, पृथ्वी की अतिरिक्त आकर्षण-शक्ति के कारण शरीर-सचालन में भारी-पन एवं कष्ट और सर्वोपरि उनके नेत्रों की विशालता सभी कुछ मिलकर एक ऐसी अप्रिय इच्छा को जन्म देते थे—जैसे कि वमन करते समय होती है। उनकी तैलमय-सी भूरी त्वचा में और उनके भारी एवं भद्दे अंग-सचालन में ऐसा कुछ था, जो अनिर्वचनीय रूप में भयावह था। इस प्रथम भेट एव दर्शन में ही, मेरा मन घृणा एवं भय से भर उठा।

सहसा वह दैत्य अदृश्य हो गया। वह सिलण्डर के छोर से लुढ़का और चमड़े के एक पिण्ड के समान शब्द करके खड्ड में गिर पड़ा। मैंने उसे एक विशेष प्रकार का आर्तनाद करते सुना और शीघ्र ही ऐसा ही एक अन्य जीव उस छिद्र के अन्धकार में चमकता दिखाई दिया।

उस समय मेरी दृढ़ता उड चुकी थी, मैं पीछे मुड़ा और अन्धाधुन्ध उन समीप के वृक्षो की ओर भागा, जो सौ गज़ की दूरी पर थे। परन्तु मै तिरछा और ठोकर खाता भाग रहा था, कारण कि मै उस ओर से अपना मुख फेर नही पाया था।

वहाँ देवदार के कुछ वृक्षो एव भटकैया की झाड़ियो के मध्य मे रुका और तीव्र श्वास लेता हुआ होने वाले विकासो को देखने लगा। बालू के गड्ढो के समीप का स्थान लोगो से भरा था, जो मेरी ही भाँति भयान्वित इन जीवो पर टकटकी बाँधे खड़े थे अथवा ककडों के उस ढेर को देख रहे थे जिसमें यह जीव थे। तब एक नूतन भय के साथ मैंने एक गोल काली

वस्तु को उस खड्ड के किनारे ऊपर-नीचे होते देखा। यह उस दुकानदार का सर था, जो खड्ड में गिर पडा था, और जो ऊष्ण काले आकाश के नीचे एक छोटी काली वस्तु के समान प्रतीत हो रहा था। अब उसके कधे और पैर ऊपर आ चुके थे, परन्तु शीघ्र ही वह पुन. नीचे सरकता-सा प्रतीत हुआ, और केवल उसका सर ही दिखाई पड़ने लगा। सहसा वह अदृश्य हो गया, और मैंने कल्पना की कि एक हल्का चीत्कार मेरे कानों तक आया। मुझे एक क्षणिक प्रेरणा हुई कि मै पीछे जाकर उसकी सहायता करूँ, जिसे मेरे भय ने उखाड फेंका।

तब सभी कुछ उस गहन खड्ड और बालू के उस ढेर के पीछे, जिसे गिरने वाले सिलण्डर ने उभाड़ दिया था, अदृश्य हो गया। उस समय चोबहम अथवा वोकिंग से आने वाला कोई भी व्यक्ति इस दृश्य पर आश्चर्य-चकित हो गया होता—निरन्तर कम होने वाले लगभग सौ व्यक्तियों का समूह, जो टेढे-मेढ़े गोले खाइयो में, झाड़ियो के पीछे, द्वारो एवं कुजो के पीछे खड़े थे, जो एक दूसरे से बहुत कम वार्तालाप कर रहे थे, सक्षेप में वह केवल उत्तेजित कोलाहल कर उठते थे और टकटकी लगाये बालू के उन कतिपय ढेरो की ओर देख रहे थे। जिंजर-बीयर का ठेला, विलक्षण रूप से परित्यक्त हुआ एवं एकाकी तपते अम्बर के नीचे खड़ा था, और बालू के गड्ढो में निर्जन सवारियाँ खडी थी, जिनके घोड़े या तो अपने तोबड़े मे से जुगाली कर रहे थे अथवा भूमि को कुरेद रहे थे।

५

अग्नि-किरण

मंगल-निवासियो को उस सिलण्डर से, जिसमे वह अपने लोक से इस पृथ्वी तक आये थे, निकलते देखकर मुझ पर एक ऐसी स्तम्भन-क्रिया-सी हुई, जिसने मेरी चेतना को जड-सा कर दिया। उन झाडियो मे घुटनो तक गडा मैं उस ढेर की ओर घूरता रहा, जिसने उन्हे छिपा रखा था। मेरा मन भय और विस्मय का द्वन्द-क्षेत्र-सा बना हुआ था।

मुझे उस खड्ड तक जाने का साहस न हुआ; यद्यपि मेरे अन्तर में लौटकर उसमे झाँकने की अदम्य लालसा बनी हुई थी। अतः मैंने वक्रगति से, किसी सुलभ स्थान को पाने के लिये चलना प्रारम्भ कर दिया, और मेरे नेत्र उन्ही बालू के गड्ढो की ओर टिके हुए थे, जिन्होने पृथ्वी के उन नवागतो को छिपा रखा था। एक बार पतले काले कोडो की बटी हुई एक रस्सी-सी, अस्त होते सूर्य में चमकी, और उसके पश्चात् एक पतली घडी-सी धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठी, जिसके सिरे पर एक गोल तश्तरी चक्कर खाती हुई बाहर निकली। वहाँ क्या हो रहा होगा?

अधिकतम दर्शक एक-एक दो-दो के झुण्डों मे बँट गये थे—एक छोटी-सी भीड़ वोकिंग की ओर और दूसरी चोबहम की ओर। स्पष्ट था कि वह भी मेरे समान द्वन्द्व की अनुभूति कर रहे थे। कुछ मेरे समीप थे। मैं एक व्यक्ति के समीप पहुँचा, जो मै समझता हूँ मेरा पड़ोसी था, यद्यपि मै उसका नाम नही जानता था, और सम्भाषण प्रारम्भ किया। परन्तु यह समय क्रमिक वार्ता का नही था।

"कैसे भयानक पशु !" उसने कहा, "हे ईश्वर ! कैसे भयानक पशु !" उसने उन्ही शब्दों को बार-बार दोहराया ।

"क्या तुमने उस खड्ड मे किसी मनुष्य को देखा ?" मैंने प्रश्न किया, परन्तु उसने इसका कोई उत्तर नही दिया । हम मौन हो गये, और कुछ काल तक साथ-साथ खडे उस ओर देखते रहे, और मैं कल्पना करता हूँ, एक दूसरे के साहचर्य्य-जनित सुख की अनुभूति करते रहे । तब मैं एक छोटे ढेर की ओर बढ गया, जिसने मुझे शायद एक गज अथवा उससे अधिक आगे बढा दिया, और जब मैंने अपने उस साथी की ओर देखा, वह वोकिंग की ओर चला जा रहा था ।

इससे पूर्व कि और कोई नूतन घटना घटती, सूर्यास्त गोधूलि मे परिवर्तित हो गया । दूर वाम दिशा वाली भीड, जो वोकिंग की ओर जा रही थी, बढ़ती-सी प्रतीत हुई, और अब मुझे वहाँ से मन्द भनभनाहट सुनाई पडने लगी । चोबहम की ओर की छोटी भीड़ अन्तर्धान हो गयी । खड्ड की ओर से किसी के आने की सम्भावना प्रतीत नहीं हो रही थी ।

जहाँ तक मैं सोचता हूँ, यही कारण था जिसने लोगों को उत्साहित किया, और साथ ही मैं समझता हूँ कि वोकिंग की ओर से आने वाले नवागन्तुको ने उनके हृदय में विश्वास का संचार करने में सहायता की । जो कुछ भी हो, जब तश्तरी ऊपर आ गयी एक मन्द एवं रुक-रुककर होने वाली गति बालू के उन गड्ढो के ऊपर होने लगी—एक गति जो सिलण्डर के समीपवर्ती सन्ध्या की स्तब्धता को भग नही कर रही थी । दो-दो तीन-तीन की संख्या मे काली आकृतियाँ आगे बढ़ती, रुकती, देखती और पुनः आगे बढती दिखाई पड रही थी, जो ऐसा करने में एक अर्द्धचन्द्राकार का रूप धारण कर लेती थीं और अपने दुर्बल अंगों से उस खड्ड को घेर लेती थीं । मैं भी उस खड्ड की ओर बढ़ा ।

तब मैंने देखा कि कुछ गाड़ीवान तथा दूसरे लोग साहसपूर्वक उन बालू के गड्ढों की ओर बढ गये हैं, और मैंने घोड़ों की टापें और पहियों की गड़गडाहट सुनी । मैंने एक छोकरे को सेबों के ठेले से लुढकते देखा ।

और तब, खड्ड से लगभग तीस गज की दूरी पर मैंने लोगो की एक छोटी-सी कतार देखी, जिनका नेता श्वेत झंडा लहरा रहा था। यह एक सद्भावना-मण्डल था। क्योकि घृणित आकृति वाले होते हुए भी मगल-निवासी सबुद्ध जीव प्रतीत होते थे, यह निश्चय किया गया कि कुछ सकेतो को लेकर उन तक जाया जाय, और प्रदर्शित किया जाय कि हम भी बुद्धिमान हैं।

लहराता, फरफराता झण्डा पहिले सीधी ओर और तब बायी ओर चलता दिखाई पडा। वह समूह मुझसे इतना दूर था कि उसमें से किसी को पहिचान पाना मेरे लिये कठिन था। परन्तु बाद मे मुझे पता चला कि आग्लिवी, स्टेन्ट तथा हैण्डरसन, अन्य व्यक्तियो के साथ भावनाओ का यह आदान-प्रदान करने आये थे। यह छोटा-सा समूह उस गोलाई की ओर बढा जो अब पूरे गोले का रूप धारण कर चुकी थी, और एकाध धुधली, काली छायाएँ पर्याप्त दूरी पर इस ओर को बढ रही थी।

सहसा प्रकाश की एक चकाचौध-सी हुई और हरित वर्ण धूम्र के विशाल पिड उस खड्ड से तीन स्पष्ट स्थानो से उस शान्त वायु में सीधे ऊपर की ओर उठते दिखाई पडे।

यह धूम्र (अथवा शिखा, जो भी इसका उपयुक्त नाम हो) इतना चमकीला था कि ऊपर का नीलाकाश और चर्टसी की ओर फैला हुआ मैदान, और उसके देवदार वृक्ष, जैसे ही यह पिंड ऊपर उठे, धूमिल होते दिखाई पड़े एव उनके विलीन हो जाने पर भी धूमिल ही रहे। उसी समय एक मन्द हिस्-हिस् की ध्वनि सुनायी पडने लगी।

खड्ड से परे, मनुष्यो की वह छोटी-सी भीड़, एक खूंटे के समान, इन दृश्यो से आकर्षित, अपना श्वेत झण्डा लिये खडी थी—काली पृथ्वी पर खड़ी हुई काली आकृतियो का यह छोटा-सा समूह। जब वह हरित-वर्णन धूम्र ऊपर उठा, उनके मुख धुंधले पीले रूप में चमक उठे, और साथ ही पुनः धूमिल पड गये। तब धीरे-धीरे हिस्-हिस् की वह ध्वनि मधु-मक्खियो की भनभनाहट में परिवर्तित हो गयी, और तब एक तीव्र

भों-भों के स्वर में। तब एक कुबडी-सी आकृति खड्ड से धीरे-धीरे ऊपर की ओर निकली, और उसमे से धूमिल प्रकाश की किरणें निकलने लगी।

तुरन्त ही अग्नि की वास्तविक शिखाएँ, तीव्र आलोक-युक्त लपलपाती शिखाएँ, उस अस्त-व्यस्त जन-समूह के शरीरो से निकलने लगी। लगता था जैसे कोई अदृश्य जल का फुहारा उनसे टकरा गया है, और श्वेत लपटो की भाँति उन पर बरस पड़ा है। यह दृश्य ऐसा था जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति सहसा एवं पलक मारते अग्नि-शिखाओं में परिवर्तित हो गया है।

तब उनके ही विनाश की उन शिखाओ के प्रकाश में, मैंने उन्हे लडखड़ाते, गिरते, एवं उनके सम्हालने वालों को पीछे मुड़कर भागते देखा।

मैं इस दृश्य को घूरत, एवं इस समय तक यह न समझता कि यह विनाश था, जो उस दूरतम समूह मे एक दूसरे की ओर लपक रहा था, खडा रहा। जो कुछ भी मैं समझ सका वह यह था कि यह सब कुछ विलक्षण-सा है। एक पूर्णतः निःशब्द एव चकाचौध कर देने वाला प्रकाश हुआ, और एक मनुष्य धड से सर के बल गिरा और निचेष्ट हो गया, और जैसे ही वह अदृश्य आग्नेयास्त्र उनके ऊपर पडा, देवदार के वृक्ष अग्नि-शिखाएँ छोड़ने लगे, और प्रत्येक शुष्क भटकैया की झाड़ी धमाके के शब्द के साथ शिखाओ के ढेर मे परिवर्तित हो गयी।

शीघ्रता एवं स्थिरता के साथ, यह अग्निमय मृत्यु, अग्नि का यह अमोघ खड्ग चारो ओर को लपलपाता फिर रहा था। उन झाड़ियों को, जिन्हे वह अपने स्पर्श से प्रज्वलित कर रहा था, मैंने उस अदृश्य अस्त्र को अपनी ओर आते देखा, और मैं भी विस्मय एवं भय से जैसे पृथ्वी में गड-सा गया। मैंने बालू के उन गड्ढों की ओर अग्नि के कड़ाके की ध्वनि सुनी, और फिर सहसा किसी घोड़े की चिल्लाहट, जो तुरन्त ही निष्प्राण हो गया। तब ऐसा लगा कि जैसे कोई अदृश्य, परन्तु नितान्त अग्निमय उगली, उस विस्तृत मैदान में, मेरे और मंगल-निवासियों के

मध्य फैली हुई है, और बालू के गड्ढो के पीछे की भूमि एक वक्राकार रेखा में सुलग रही एव कड़कड़ाहट की ध्वनियाँ कर रही थी। दूर बायी ओर, जहाँ वोकिंग स्टेशन से कामन की ओर सडक फूटती है, किसी भारी वस्तु के चरचरा कर गिरने का शब्द सुनायी पडा। शीघ्र ही हिस्-हिस और भनभनाहट की वह ध्वनि बन्द हो गयी, और वह काली एव गुम्बद के समान दिखाई पड़ने वाली वस्तु पुन: उस खड्ड मे नीचे सरक गयी।

यह सब कुछ इतनी शीघ्रता से घटित हो गया कि मै गतिहीन, जड़ एव अग्नि-शिखाओ के मध्य चौधियाता खड़ा रहा। यदि मृत्यु की वह क्रिया गोलाकार रूप में हुई होती, तो उसने मुझे निश्चित रूप से नष्ट कर डाला होता। परन्तु मुझे जीवित, और अपने पीछे सहसा ही काली एवं अपरिचित रात्रि छोड़कर वह विलीन हो चुकी थी।

लहराकार-सा वह 'कामन' अब पूर्णत अन्धकार से ढका था, केवल उन सड़को के अतिरिक्त, जो प्रारम्भिक रात्रि के गहन-नील आकाश के नीचे भूरी एवं पीली-सी दिखाई पड़ती रही। ऊपर आकाश में तारे निकल रहे थे, और पश्चिम की ओर का क्षितिज इस समय भी पीला, प्रकाशमय एव हरित-नील था। देवदार के वृक्षो की चोटियाँ और हारसेल की छते पश्चिमी आकाश के सान्ध्य-प्रकाश मे स्पष्ट एवं काली प्रतीत हो रही थी। मंगल-निवासी एवं उनके यन्त्र, केवल उस स्तूल को छोड़ कर, जिस पर उनका वह शीशा थरथराता था, इस समय अदृश्य थे। झाड़ियो के समूह, और स्थान-स्थान पर अकेले खडे वृक्ष कही-कहीं अभी तक सुलग रहे थे और धुआँ दे रहे थे, और वोकिंग स्टेशन की ओर वाले मकान, सन्ध्या की शान्त वायु में आग उगल रहे थे।

केवल इस सब, और मेरे मन के भयानक विस्मय के अतिरिक्त, सभी कुछ ज्यो का त्यो था। हाथो मे झण्डा लिये खडा मानवो का खूँटो के समान दिखाई पडने वाला वह समूह नष्ट कर दिया गया था, और सन्ध्या की शान्ति, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ, किसी प्रकार भी भंग नही हुई थी।

सहसा मुझे ध्यान आया कि मैं इस अन्धकारमय कामन पर असहाय, असुरक्षित और अकेला हूँ। तुरन्त ही बाहर से उछलकर गिरने वाली वस्तु के समान, मेरे हृदय में भय का संचार हुआ।

शरीर की सारी शक्ति लगाकर, मैं मुडा, और लडखडाता हुआ उस मैदान में से भाग निकला।

वह भय, जिसकी अनुभूति मैं इस समय कर रहा था, कोई विचार-युक्त भय न था, अपितु केवल उत्तेजना-जन्य था, और यह मगल-निवासियो का नही, वरन् अपने चारों ओर के अन्धकार एवं निस्तब्धता का था। मुझे भीरु बनाने में इसने मुझ पर ऐसा भीषण प्रभाव डाला कि मैं चुपचाप रोता हुआ भाग रहा था, जैसा कि किसी बालक ने किया होता। एक बार जब मैंने पीठ फेर ली, मुझे पीछे लौटकर देखने का साहस नही हुआ।

मुझे स्मरण है कि मैं अपने अन्दर एक प्रबल विचार पा रहा था कि शायद मेरे साथ खेल खेला जा रहा है, और अब जब कि मैं सुरक्षा की सीमा पर हूँ, यह रहस्यमय मृत्यु, जो प्रकाश के समान गतिशील है, खड्ड के उस सिलण्डर से मुझ पर कूद पडेगी, और मुझे नष्ट कर डालेगी।

६

चोबहम रोड पर अग्नि-किरण

यह अभी तक आश्चर्य का विषय है कि मंगल-निवासी किस प्रकार मनुष्यो को इतनी शीघ्रता एव इतनी शान्ति के साथ मार डालते थे। कुछ लोगों का विचार है कि वह किसी सम्भव उपाय द्वारा किसी जन-

प्रवहनशील बन्द स्थान मे उग्र अग्नि उत्पन्न कर लेते थे। इस प्रचण्ड अग्नि को वह किसी भी वस्तु के विपरीत समानान्तर किरणो में अज्ञात सम्मिश्रण वाले किसी लाक्षणिक शीशे द्वारा फेकते थे—ठीक उसी प्रकार जैसे कि प्रकाश-गृह के शीशे प्रकाश किरणो को बाहर फेकते हैं। परन्तु किसीने भी इसका समग्र विवरण प्रस्तुत नही किया है। ऐसा किसी प्रकार भी हो, परन्तु यह निश्चित है कि अग्नि की कोई भी किरण (भौतिक शक्ति) घन पदार्थ का सारभूत होती है। अग्नि और दृश्यमान प्रकाश के स्थान पर अदृश्य। जो कुछ भी ज्वलनशील है, वह उसके स्पर्शमात्र से ही ज्वालपुंज में परिवर्तित हो जाता है; सीसा पानी की तरह बहने लगता है, लोहा नम्र हो उठता है, शीशा चटखने और पिघलने लगता है, और जब वह जल पर पड़ती है तो वह अबाध रूप से भाप का रूप धारण करने लगता है।

उस रात लगभग चालीस व्यक्ति उस खंड के समीप, तारो-भरे आकाश के नीचे जले एवं न पहिचाने जाने योग्य अंग-भग हुए पडे थे, और रात भर हारसेल से मेबरी वाला जन-पथ निर्जन एवं तीव्र आलोक से परिपूर्ण रहा।

उस विनाश की सूचना चोबहम, वोकिंग और अटरशा में लगभग एक ही समय प्राप्त हुई। जब यह दुर्घटना हुई, वोकिंग की दूकानें बन्द हो चुकी थी, और दूकानदारो एवं दूसरे व्यक्ति, जो इन कहानियो से, जो उन्होने सुनी थीं, आकर्षित हो चुके थे, हारसेल ब्रिज एवं उस स्थान तक पहुँचने वाली दोनो ओर की झाड़ियो के मध्य चल रहे थे। आप उन नवयुवकों की कल्पना कर सकते हैं, जो दिन भर के परिश्रम से थके-हारे थे, फिर भी ताजगी दिखा रहे थे। आप अपने समक्ष सध्या के मन्द प्रकाश में सडक पर होते हुए इस कोलाहल का चित्र उपस्थित कर सकते हैं।......

परन्तु तो भी, वोकिंग के केवल कुछ व्यक्ति ही यह जान सके कि सिलण्डर खुल चुका है, यद्यपि बेचारे हैण्डरसन ने उसी सन्ध्या को

प्रकाशित होने वाले किसी पत्र के निमित्त इसी आशय का एक विशेष समाचार एक साइकिल-सवार के द्वारा भेज दिया था।

दो दो, तीन-तीन करके जब यह व्यक्ति उस खुले स्थान पर पहुँचे, उन्होने स्थान स्थान पर छोटे-छोटे समूहो को उत्तेजनापूर्वक वार्तालाप करते एव बालू के उन गड्ढों पर घूमने वाले उस शीशे को घूरते हुए पाया और नवागत भी तुरन्त ही घटना-स्थल की उत्तेजना से प्रभावित हो चुके थे।

साढे आठ बजे जब कि वह सद्भावना-मण्डल विनष्ट हुआ, वहाँ तीन सौ या इससे अधिक व्यक्तियो का समूह उन व्यक्तियों के अतिरिक्त रहा होगा, जो सडक को छोडकर मगल-निवासियों की ओर बढ़ रहे थे। वहाँ तीन पुलिस वाले भी थे, जिनमें से एक घुडसवार था, जो स्टेन्ट के आदेशानुसार मनुष्यो को सिलण्डर की ओर बढ़ने से रोकने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहा था। विचार-शून्य एवं उत्तेजनशील व्यक्ति, जिनके निकट भीड सदैव कोलाहल का कारण होती है, असन्तोषजनक रूप में चिल्ला रहे थे।

स्टेन्ट एव आग्लिवी ने किसी मुठभेड़ की सम्भावना की कल्पना करते हुए तार द्वारा हारसेल से सेना की बैरक को, मगल-निवासियों के बाहर निकलते ही, इन विलक्षण जीवो को कोई हिंसात्मक कार्य करने से रोकने के लिये, भेजने की प्रार्थना भेज दी थी। इसके पश्चात् वह उस दुर्भाग्यपूर्ण अभियान का नेतृत्व करने के निमित्त लौट आये थे। भीड़ द्वारा दिया गया उनकी मृत्यु का वर्णन मेरे अनुमान से बिल्कुल मिलता-जुलता है। हरित-धूम्र के तीन पिण्ड, भनभनाहट का तीव्र कोलाहल एव अग्नि की शिखाएँ।

परन्तु समूह मेरी अपेक्षा अधिक कठिनाई से बच सका था। केवल यह कि बालू के एक टीले ने अग्नि की उन किरणों के नीचे वाले भाग के मध्य आकर उन्हे बचा दिया था। यदि उस लाक्षणिक शीशे का उभार कुछ गज अधिक होता, तो इस कहानी को सुनाने वाला कोई शेष न

रहा होता। उन्होंने शिखाओ को भडकते और मनुष्यों को गिरते देखा एव एक अदृश्य हाथ ने झाडियो मे आग लगा दी, जब कि वह गोधूलि के उस प्रकाश मे तीव्रतापूर्वक उनकी ओर झपटा था। तब खंड से निकलने वाले तीव्र कोलाहल के साथ उनके सर के ऊपर सडक के सहारे लगे वृक्षो को प्रज्वलित करती, ईंटों को खड-खंड करती, खिडकियो को ध्वस्त, चौखटो को भस्म करती एव समीपवर्ती मकान के एक कोने को धम्म से नीचे गिराती चमक उठी।

इस आकस्मिक धमाके, कोलाहल एव प्रज्वलित वृक्षों के प्रकाश में भय-ग्रस्त वह समूह कुछ क्षणो तक अनिश्चित अवस्था मे खड़ा रहा होगा। चिन्गारियाँ और जलते हुए वृक्षो की टहनियाँ सड़क पर आ-आ कर गिरने लगी; और पत्तियाँ अग्नि के पुंजो के समान। टोपों एवं वस्त्रो ने आग पकड़ ली। तब कामन की ओर से चीत्कार की ध्वनियाँ सुनायी पड़ी।

चीखे एवं चिल्लाहट सुनायी पड़ रही थी, और तब सहसा घोड़े पर सरपट दौडता एक पुलिसमैन इस अव्यवस्था में आता दिखाई पड़ा, जिसके हाथ उसके सर के ऊपर जकडे हुए थे, और जो आर्तनाद कर रहा था।

"वह आ रहे हैं," एक नारी ने चीत्कार किया, और असयत रूप से प्रत्येक व्यक्ति मुडकर अपने पीछे वालो को धकेल कर पुन. वोकिंग की ओर जाने के निमित्त मार्ग निकाल रहा था। वह परस्पर इतने भिड़े हुए होगे जितना कि भेड़ों का एक समूह। ऊँचे-ऊँचे किनारों के समीप, जहाँ सडक सकीर्ण एवं अन्धकारमय थी, यह समीपता रुद्ध-सी होगयी एवं निकल पाने के लिये नैराश्यपूर्ण सघर्ष होने लगा। वह सम्पूर्ण समूह सुरक्षित न निकल सका, और कम से कम तीन व्यक्ति, दो नारियाँ और एक छोटा लडका भीड़ के पाँव तले कुचल गया, और वह भय एवं अन्धकार में मरने के लिये छोड़ दिये गये।

७

मैं घर कैसे पहुंचा

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे अपने भागने के विषय में केवल इतना स्मरण है कि मैं यथासम्भव पेडो से टकराने एव झाड़ियो में उलझकर गिरने से बचने का प्रयत्न करता रहा। मेरे चारों ओर के व्यक्तियो के हृदय पर मगल-निवासियों का अदृश्य भय इधर-उधर अधिकार कर चुका था, अग्नि का वह कठोर वज्र मेरे सर के ऊपर इधर-उधर चक्कर काट रहा था, और इससे पूर्व कि नीचे उतरकर वह मेरे जीवन का अन्त कर डालता, मै चौराहों एव हारसेल की बीच वाली सड़क पर आ पहुँचा था, और यहाँ से फिर चौराहे की ओर भागा।

अन्त में मैं और अधिक न भाग सका, कारण कि अपनी भावना की उत्तेजना एव इस पलायन के कारण मेरी भी शारीरिक शक्ति नष्ट-प्राय हो चुकी थी, और मैं लड़खड़ाकर मार्ग पर गिर पड़ा। यह पुल के समीप का वह स्थान था, जो नहर और गैस-वर्कस को पार करता है। मै गिर पड़ा एवं अचेतन-सा पड़ा रहा।

मैं वहाँ कुछ समय तक रहा हूँगा।

आश्चर्यजनक रूप से उदभ्रान्त मै उठ बैठा। सम्भवत: एक क्षण तक मैं स्पष्ट न समझा कि मैं वहाँ किस प्रकार आ पहुँचा था। इस समय तक मेरा भय विलीन हो चुका था। मेरा हैट गिर पड़ा था और कालर अपने बटन से फट चुका जा। कुछ क्षण पूर्व मेरे समक्ष केवल तीन वास्तविकताएँ ही रही होंगी—रात्रि, शून्य एवं प्रकृति की असीमता, अपनी दुर्बलता एवं पीडा, और मृत्यु का निकटतम साहचर्य्य ! अब

लगता था जैसे कुछ बदल-सा गया हो, और मेरा दृष्टिकोण सहसा ही परिवर्तित हो उठा। उस समय मस्तिष्क का एक प्रकार की मनोदशा से दूसरी मे तुरन्त ही जाने का कोई विवेक-जन्य परिवर्तन सम्भव नही था। तुरन्त ही मैं प्रतिदिन के समान स्वयं को एक शिष्ट एव साधारण नागरिक समझने लगा। वह सुनसान स्थान, मेरे पलायन की प्रेरणा एव प्रारम्भ होने वाली वह शिखाएँ, सभी कुछ स्वप्न-सा प्रतीत होता था। मैने स्वय से प्रश्न किया कि क्या यह सब बाते वास्तविक रूप में हो चुकी हैं। मै यह विश्वास न कर सका।

मै उठा और अस्थिरतापूर्वक पुल के ढलवाँ भाग की ओर चलने लगा। मेरा मस्तिष्क जड-सा हो चुका था। लगता था जैसे कि मेरी पेशियो एवं शिराओ की शक्ति बह चुकी है। मुझे पूरी तरह स्मरण है है कि मै किसी मद्यप की भाँति लडखडाकर चल रहा था। आर्क में एक श्रमिक दृष्टि पडा, जो एक टोकरी लिये हुए था। उसके पीछे एक छोटा बालक भाग रहा था। मुझसे गुड नाइट कहता वह गुजर गया। मै उससे वार्तालाप करना चाहता था, परन्तु मैंने ऐसा नही किया। उसके अभिवादन का उत्तर मैंने एक ऐसी अस्पष्ट ध्वनि से दिया जिसका कोई अर्थ नही था, और पुल पर चढ गया।

मेबरी आर्क पर एक ट्रेन कोलाहल-युक्त, प्रकाशमान धूम्र और अनुगमन करती प्रकाश से झिलमिलाती खिडकियो से दक्षिण की ओर जाती दृष्टिगोचर हुई .....खटखटाखट, खटखटाखट, और वह विलीन हो गयी। धूमिल रूप से दिखाई पड़ने वाला मनुष्यो का एक समूह, 'ओरिएन्टल टेरेस' नामक सुन्दर मकानो की उस छोटी-सी पक्ति के किसी प्रवेश-द्वार के सामने खडा वार्तालाप कर रहा था। यह सभी कुछ इतना वास्तविक एव इतना चिर परिचित था, और वह जिसे मैं अपने पीछे छोडकर आया था, कितना उच्छृंखल एव कितना भयावह! ऐसी बाते, मैंने स्वयं को आश्वस्त किया, नही हो सकती हैं।

सम्भवत मै विलक्षणतम मनः-स्थिति का मनुष्य हूँ। मैं नही

कह सकता कि मेरा अनुभव कहाँ तक सामान्य है। कभी-कभी मैं अद्भुत विलक्षणता के साथ स्वय को चारो ओर के ससार से विरक्त पाता हूँ, लगता है जैसे कि मैं अकल्पनीय दूरी से उस सबका निरीक्षण करता हूँ, समय एव दूरी के बन्धनो से मुक्त, उस सबके प्रभाव एव दुःख से नितान्त परे। इसी प्रकार की भावना उस रात्रि मेरे अन्तर मे आधिपत्य जमाये हुए थी। यहाँ मेरे स्वप्न का दूसरा रूप प्रस्तुत था।

इस शान्ति की शीघ्रगामी एवं उडनशील मृत्यु से, जो सामने दो मील से कम दूरी पर थी, यह असम्बद्धता देखकर, मैं कठिनाई में पड गया। गैस-वर्क्स से होने वाले काम का कोलाहल सुनाई पड रहा था, और बस्तियाँ प्रकाश से जगमगा रही थी। मैं उस समूह के निकट रुक गया।

"कामन का क्या समाचार है ?" मैंने प्रश्न किया।

उस द्वार पर दो पुरुष और एक महिला थी।

"ऐ ?" उनमें से एक ने मुडते हुए कहा।

"कामन का क्या समाचार है ?" मैंने दोहराया।

"क्या तुम वहाँ से नही आ रहे हो ?" एक मनुष्य ने प्रश्न किया।

"लोग कामन के सम्बन्ध मे पागल-से हो गये प्रतीत होते हैं," द्वार पर खड़ी महिला ने कहा। "वहाँ क्या है ?"

"क्या तुमने मगल-निवासियों के सम्बन्ध मे नही सुना है ?" मैंने प्रश्न किया। "मंगल के निवासी !"

"बहुत कुछ", द्वार पर खडी महिला ने उत्तर दिया। "धन्यवाद", और तीनो हँस पडे।

अपने मूर्ख बनने पर मुझे क्रोध हो आया। मैंने प्रयत्न किया, और पाया कि मै उन्हे वह सब कुछ समझा पाने मे असमर्थ हूँ, जिसे मैंने वहाँ देखा था। मेरे भग्न वाक्यो पर वह पुनः हँस पडे।

"तुम और अधिक सुनोगे", मैंने कहा, और घर की ओर चल पड़ा।

मेरी वेश-भूषा ऐसी अस्त-व्यस्त हो रही थी कि मैंने प्रवेश-मार्ग में

खडी अपनी पत्नी को चौंका दिया। मै भोजन-स्थान पर गया, बैठकर कुछ मदिरा गले से नीचे उतारी, और जैसे ही कि मै उस सबको पूर्णरूपेण स्मरण कर सका, मैंने उससे उस सबका वर्णन किया जो मैंने देखा था। भोजन जो ठण्डा था, और परोसा जा चुका था, मेज पर ज्यो का त्यो धरा रहा, जब तक कि मै अपनी पत्नी को कहानी सुनाता रहा।

"एक बात है" मैने उस भय को, जिसे मैने उसके मन में जगा दिया था, शान्त करने के लिये कहा, "वह नितान्त मन्दगामी हैं—रेंगने वाली सभी वस्तुओ से मन्दगामी। वह उस खड्ड में ही रह सकते हैं, और समीप आने वाले व्यक्तियों को नष्ट कर सकते हैं, परन्तु वह उससे बाहर नही निकल सकते हैं ... . परन्तु वह कितने भयावह हैं!"

"नही प्रिय", मेरी पत्नी ने अपनी भवों को सिकोडते और मेरे हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

"बेचारा आग्लिवी", मैंने कहा, यह विचार कर कि उसका शरीर कही पड़ा होगा।

"वह यहाँ आ सकते हैं।" उसने अनेक बार दोहराया।

मैंने उससे अनुरोध किया कि वह कुछ मदिरा ले, और उसे बार-बार आश्वस्त किया।

"वह कठिनता से चल सकते है," मैने कहा।

मैंने उसके और अपने मन को भी वह सब कुछ दोहरा-दोहरा कर, जो आग्लिवी ने पृथ्वी पर न बस सकने के सम्बन्ध में कहा था, आश्वासन दिया। विशेष रूप से मैंने पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति पर बल दिया। पृथ्वी के धरातल पर मगल-ग्रह के धरातल से तीन गुना अधिक आकर्षण है। अत पृथ्वी पर एक मगल-निवासी का भार मगल-ग्रह के भार से तीन गुना अधिक होगा, यद्यपि उसकी मास-पेशियो की शक्ति उतनी ही रहेगी। अत उसका शरीर उसके लिये एक बोझ के समान होगा। यही सम्मति जन-सम्मति थी। 'दी टाइम्स' एव 'डेली टेली-

ग्राफ़', दोनो ही समाचार-पत्रों ने अपने दूसरे दिन के प्रातःकालीन अंकों मे इसी बात को अधिक महत्ता दिया, और दोनों ही ने मेरे समान इस को संशोधित करने वाले दो प्रभावों पर ध्यान नहीं दिया।

पृथ्वी के वायु मण्डल में, जैसा अब हम जानते हैं, या तो मंगल-ग्रह की अपेक्षा आक्सीजन की प्रचुर मात्रा है अथवा आर्गन की न्यूनता। जैसा भी कोई सम्भव माने आक्सीजन की इस प्रचुरतामय प्रभाव ने निस्सन्देह रूप में उनके शरीर के बढ़े हुए भार को कम करने का काम किया और दूसरी बात यह है कि हम सबने इस तथ्य पर ध्यान ही नही दिया कि वह यान्त्रिक बुद्धि, जिससे कि मंगल-निवासी सम्पन्न थे, किसी भी विशेष स्थान पर की जाने वाली शारीरिक क्रियाओं को रोकने वाली किसी भी असुविधा को नष्ट कर सकने योग्य थी।

परन्तु उस समय मैं इन बातों पर ध्यान न दे सका, अत आक्रमण-कारियों के संबंध में मेरे तर्क निष्प्राण थे। भोजन एवं मदिरा के द्वारा, अपनी चिरपरिचित मेज पर बैठकर एवं अपनी पत्नी को पुन: आश्वासन देने की आवश्यकता के विचार से मैं अज्ञात प्रकार से, अपने अन्तर मे साहस एवं सुरक्षित होने की भावना की अनुभूति करने लगा।

"उन्होने भारी मूर्खता की है", मैंने अपने मदिरा के गिलास में उंगली फिराते हुए कहा। "वह भयावह हैं, कारण कि निस्सन्देह रूप में वह स्वयं भय से विक्षिप्त-से हो गये हैं। सम्भवत: उनका विचार था कि वह इस लोक में किसी जीवित प्राणी को नहीं देखेंगे—निश्चित रूप से सबुद्धि एवं सप्राण व्यक्ति को तो नही ही देखेंगे। खड्ड में पड़ा हुआ वह सिलण्डर", मैंने कहा, "यदि भयानकता का रूप धारण भी करें, तो उन सबको ही नष्ट कर डालेगा।"

घटनाओं की उत्तेजना ने निस्सन्दिग्ध रूप से मेरी स्पर्श-ज्ञान-संबंधी शक्तियों को आश्चर्य में डाल दिया था। असामान्य स्पष्टता के साथ मैं मेज की इस समय भी कल्पना कर सकता हूँ। मेरी प्रियतमा का उत्सुकतापूर्ण चन्द्र-मुख, जो उस लैम्प के गुलाबी शेड से रह-रहकर झांक

रहा था, वह शुभ्र श्वेत मेजपोश, जिस पर रूपहले एवं काँच की मेज को सुशोभित करने वाली अनेक वस्तुएँ—कारण कि उन दिनो दर्शन-शास्त्र के लेखक भी छोटे-मोटे विलास-प्रसाधनो का प्रयोग करते थे—मेरे गिलास की बैंगनी लाल मदिरा, सभी कुछ मेरे मानस मे चित्रवत् अकित हैं। इसके पश्चात मैं छाली चबाते एवं सिगरेट पीते, नग्लिवी की उतावली तथा मगल निवासियो की अदूर-दर्शितापूर्ण कायरता का तिरस्कार करता बैठा रहा।

ऐसा ही मारीशस द्वीप के किसी आदरणीय डोडो ने अपने घोसले में किया होता, और पशु भोजन की खोज मे आने वाले शिकारियो से भरे जलयान के आगमन की आलोचना की होती। "हम कल ही उन्हे चिर-निद्रा में सुला देगे, प्रियतमे !"

यद्यपि मै नही जानता था, परन्तु आने वाले अनेक नितान्त विलक्षण एवं भयानक दिनो में यह मेरा अन्तिम सभ्य भोज था।

८

शुक्रवार की रात्रि

उन समस्त विलक्षण एवं आश्चर्यजनक घटनाओ में, जो शुक्रवार को घटी, मुझे असाधारण लगने वाली बात हमारे सामान्य जीवन के सर्व-सामान्य आचरणो का घटनाओ के उस क्रम से सम्मिलित करना था, जो उस सामाजिक व्यवस्था को पूर्णतः भूमिसात् करने वाली थी। उस रात्रि यदि एक परकार लेकर वोकिग के उन बालू के गड्ढो के चारो ओर पाँच मील का एक घेरा खेचा होता, मुझे सन्देह है कि शायद वहाँ आपने एक

भी मानव को उस घेरे के बाहर पाया होता, यदि वह स्टेन्ट का संबंधी न होता अथवा तीन-चार वह साइकिल-सवार अथवा लन्दन के वह व्यक्ति जो कामन पर निर्जीव पड़े थे और जिनकी भावनाएँ अथवा क्रियाएँ इन दवागतो से प्रभावित हो सकने के परे थी। अनेक लोगो ने निश्चित रूप से सिलण्डर के संबंध में सुना था एवं इस सबंध में वह अपने अवकाश के समय वर्तालाप कर लेते थे, परन्तु इसने उनके मन में किसी भी ऐसी उत्तेजना को जन्म नही दिया था जितना कि जर्मनी के अल्टीमेटम ने दिया होता।

लन्दन में उस रात्रि बेचारे हैण्डरसन के उस सिलण्डर के शनैः-शनैः खुलने का वर्णन करने वाले तार को केवल एक कल्पित कथा माना गया, और उसके समाचार-पत्र ने उसे पुष्टि करने के निमित्त भेजे गये तार का कोई उत्तर न पाकर—कारण कि वह बेचारा इस संसार से जा चुका था—किसी विशेष सस्करण को न छापने का निश्चय कर लिया।

पाँच मील के उस घेरे वाले मनुष्यों का अधिकाश इस विषय में निष्क्रिय रहा। मैं उन नर-नारियो का वर्णन कर ही चुका हूँ, जिनसे मैंने बात की थी। जिले भर में लोग मध्याह्न एव रात्रि को यथापूर्व योजना कर रहे थे, श्रमिक दिन भर के परिश्रम के पश्चात् उद्यानो का यथापूर्व आनन्द ले रहे थे, नित्य की भाँति बालकों को उनकी शय्या पर सुलाया जा रहा था, नवयुवक गलियो का चक्कर काटने और प्रणय-क्रीड़ाओं में व्यस्त थे, और विद्यार्थी अपनी पुस्तकों में तल्लीन।

सम्भव है कि ग्राम की गलियों मे इस विषय पर फुसफुसाहट होती थी, और सार्वजनिक स्थानो में यह वार्ता का एक नूतन एवं प्रबल विषय बन गया हो और कही-कहीं इन बाद की घटनाओं का कोई समाचार-वाहक अथवा साक्षी आश्चर्यजनक उत्तेजना उत्पन्न कर देता हो, भय-जनित कोलाहल एवं हिचकिचाहट भी, परन्तु अधिकाश रूप में लोगों का काम करना, भोजन करना और सोना उसी प्रकार चलता रहा जिस प्रकार कि वह असंख्य वर्षों से चल रहा था—जैसे कि मंगल नाम के

किसी नक्षत्र की स्थिति ही आकाश में न थी। यहाँ तक कि वोकिंग स्टेशन और हारसेल और चोबहम की दशा भी ऐसी ही थी।

वोकिंग जकशन पर रात्रि के पिछले पहर तक, गाडियाँ रुक रही थी एवं जा रही थी, दूसरी साइडिंग पर शन्टिंग करती रहती थी, यात्री उतर रहे एव विश्राम कर रहे थे, और सभी कुछ सामान्यतम रूप मे चला आ रहा था। शहर का एक लडका समय का लाभ उठाकर तीसरे पहर के समाचार वाले समाचार-पत्र बेच रहा था। गाड़ियो की झन-झनाहट एव डिब्बों के परस्पर टकराने की ध्वनियाँ और जकशन से आने वाले इजनो के तीव्र स्वर उसके शब्दो 'मगल के मानव' मे घुल मिल जाती थी। उत्तेजित मनुष्य स्टेशन मे नौ बजे के सम्बन्ध में अविश्वसनीय समाचार लेकर भीतर आते थे, और उसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित कर देते थे जिस प्रकार कि मद्यपो ने किया होता। लंदन की ओर जाने वाले लोग, जब अपनी खिडकियो से बाहर की ओर झाँकते थे, तो वह केवल एक असाधारण हिलते एवं विलीन होते प्रकाश-पुंज को हारसेल की ओर से नाचता-सा पाते थे—एक लाल चमकदार एवं क्षीण धूम्र की रेखा, जो ऊपर उठती-सी प्रतीत होती थी, और समझ लेते थे कि केवल झाडियो के सुलग जाने के अतिरिक्त अन्य कोई गम्भीर बातें नहीं हो रही है। केवल कामन के छोर से ही इस तथ्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था कि कोई दुर्घटना घट रही है। वोकिंग की सीमा पर लगभग आधा दर्जन ग्राम-गृह जल रहे थे। कामन के तीनों ओर वाले गाँवों के मकानो में प्रकाश था, और लोग वहाँ भोर तक जागते रहे।

व्यग्र एव बेचैन एक जन-समूह वहाँ एकत्रित रहा, लोग आते रहे और जाते रहे, परन्तु चोबहम और हारसेल के पुलो, दोनो स्थानों पर यह समूह खड़ा ही रहा। एक-दो साहसी, बाद मे इस बात का पता चला, उस अन्धकार मे चले गये, और मंगल-निवासियो के पर्याप्त समीप जा पहुँचे, परन्तु वह कभी न लौट पाये, कारण कि किसी युद्ध-पोत की सर्च-लाइट के समान प्रकाश की किरणे कामन पर इधर-उधर

चक्कर काट रही थी, जिनका अनुगमन करने के निमित्त अग्नि-किरण भी तत्पर रहती थी। इन बातो के अतिरिक्त कामन का वह स्थान शान्त एव निर्जन था, और भस्मीभूत वह शरीर वहाँ रात्रि भर तारो के प्रकाश मे और फिर दूसरे सम्पूर्ण दिवस पडे रहे। खड्ड से हथौडे की-सी चोटो की ध्वनियाँ अनेक लोगो द्वारा सुनी गयी।

शुक्रवार की रात्रि को ऐसी ही दशा रही। कामन के मध्य, हमारी इस पृथ्वी के शरीर में धँसे हुए एक विषैले बरछे के समान वह सिलण्डर था। परन्तु विष इस समय क्रियाशील नही था। उसके चारो ओर शान्त कामन था, जो स्थान-स्थान पर भीतर ही भीतर सुलग रहा था, और जिसमें कुछ अन्धकारमय एव धुंधली दृष्टि पडने वाली वस्तुएँ थी, जो छिन्न-भिन्न रूप से इधर-उधर पडी हुई थी। कही-कही कोई प्रज्वलित वृक्ष एव झाडी थी। उससे परे उत्तेजना एवं कौतूहल से परिपूर्ण मानव-समाज था, और उस सीमा तक अभी आग नही पहुँची थी। शेष मानव-जगत मे जीवन की धारा उसी प्रकार प्रवाहित हो रही थी जिस प्रकार कि सख्यातीत काल से—युद्ध का वह ज्वर, जो निकट भविष्य में शिराओ एवं धमनियो को शिथिल, नाडियो को निष्प्राण एवम् मस्तिष्क को विनष्ट कर देता, अभी विकसित होने को था।

पूरी रात मगल-निवासी अनथक एवम् जागृत उन मशीनो पर ठोक-पीट करते रहे, जिन्हे वह तत्पर कर रहे थे, और यदा-कदा श्वेत हरित वर्ण का धूम्र तारो-भरे आकाश की ओर भरभरा उठता था।

ग्यारह बजे के समीप सैनिकों की एक टुकड़ी हारसेल की ओर से आई एवम् कामन के किनारे-किनारे रक्षा-पक्ति के रूप मे फैल गयी। बाद में एक दूसरी टुकडी चोबहम की दिशा से आई और इसी प्रकार कामन के उत्तरी भाग में फैल गयी। 'इन्करमेन बैरेक' के कतिपय सैनिक अधिकारी दिन में भी कामन पर रहे थे, और उनमे से एक मेजर एडिन का कोई पता नही चल रहा था। मध्यरात्रि के समीप रेजीमेन्ट का कर्नल चोबहम पुल पर आया, और उस समूह से प्रश्न करता रहा। सेना

के अधिकारी निश्चित रूप से इस विषय की गम्भीरता के सम्बन्ध में जागरूक थे। लगभग ग्यारह बजे, अगले दिन के समाचार-पत्र कह सके कि अश्वारोही सेना की दो टुकडी, दो 'मेक्सिम और कार्डीजन रेजीमेन्ट' के लगभग चार सौ सैनिक एल्डरशाट से प्रस्थान कर चुके है।

मध्य रात्रि के कुछ ही सैकिण्ड बाद चर्टसी की ओर वोकिंग की सडको वाले जन-समूह ने आकाश से एक तारे को टूटकर उत्तर-पश्चिम की ओर वाले देवदार वन मे गिरते देखा। वह एक हरित प्रकाश के साथ गिरा, जिसने ग्रीष्म-कालीन बिजली के समान एक चमक को जन्म दिया। यह दूसरा सिलण्डर था।

९

युद्ध का आरम्भ

अनिश्चितता के रूप में वह शनिवार अभी मेरी स्मृति मे सजीव है। वह दिन भी भारीपन से भरा हुआ था, गर्म—और मुझे तीव्रता से घटते-बढते बेरोमीटर के विषय में बताया गया। मैं अल्प निद्रा ही ले पाया था, यद्यपि मेरी पत्नी अच्छी नीद ले चुकी थी, और मै अन्धेरे ही उठ खडा हुआ। नाश्ते से पूर्व मैं अपने उद्यान में गया, और कान लगाकर सुनने लगा, परन्तु कामन की ओर, केवल एक लार्क पक्षी के स्वर के अतिरिक्त पूर्ण निस्तब्धता थी।

निश्चित समय पर दूध वाला आया। मैंने उसके रथ की खडखडाहट सुनी, और मै पार्श्व द्वार की ओर उससे नवीनतम समाचार जानने के निमित्त गया। उसने मुझे सूचित किया कि रात में मगल-निवासियो को सेना द्वारा चारो ओर से घेर लिया गया था, और गोली चलने की

सम्भावना थी। तब मन को निश्चिन्त करने वाला एक अन्य साधन मैंने वोकिंग की ओर जाती हुई एक गाड़ी की ध्वनि सुनी।

"वह मारे नही जायेंगे", दूध वाले ने कहा, "यदि ऐसा होना सम्भव हो सके।"

मैंने अपने पडोसी को अपने उद्यान में कार्य-रत देखा, उससे कुछ समय वार्तालाप किया, और फिर नाश्ते के निमित्त भीतर की ओर लौट पडा। यह एक अपूर्व प्रात.काल था। मेरे पड़ोसी का मत था कि सेना दिन भर में मंगल-निवासियो को बन्दी बनाने अथवा नष्ट कर देने में सफल हो जायगी।

"दु:ख की बात है कि उन्होने स्वय को इतना अप्राप्य बना रखा है," उसने कहा, "यह देखना कि वह अपरिचित वातावरण में किस प्रकार जीवित रहते हैं, कौतूहल-प्रद होगा। हम उनसे एक-दो बाते सीख सकते हैं।"

वह बाड़ तक आया, और उसने मुझे मुट्ठी भर झरबेरी के बेर दिये, कारण कि उसका उद्यान-कार्य उतना ही फलप्रद था, जितना कि श्रम-पूर्ण। उसी समय उसने मुझे बाइफ्लीट गोल्फ-लिन्क्स के समीप के देवदार वृक्षो के भी जल जाने की सूचना दी।

"लोग कहते हैं," उसने कहा, "कि वहाँ वैसी ही अन्य वस्तु गिरी है—नम्बर दो। परन्तु एक ही पर्याप्त है। यह घटना बीमा वाले लोगो की पर्याप्त हानि करेगी, इससे पूर्व कि सभी कुछ समाप्त हो सके।" वह मुक्त भाव से हँसता रहा, जब कि उसने यह बात कही। "वृक्ष", उसने कहा, "इस समय भी जल रहे हैं," और उसने मुझे दूर उठता एक धुँधला-सा धुँआ दिखाया। "वह कई दिनों तक तपते रहेंगे", उसने कहा, और तब बेचारे आग्लिबी की बात पर वह गम्भीर हो उठा।

नाश्ता करने के पश्चात्, कार्य करने के स्थान पर मैंने कामन की ओर जाने का निश्चय किया। रेलवे के पुल के नीचे, मैंने सैनिकों के एक समूह को देखा—मैं समझता हूँ छोटी गोल टोपियाँ लगाये, खुले बटनो

वाले, मैले लाल जाकेट, और नीली कमीजे और बूट पहिने, अस्त-व्यस्त और मूर्खवत्। उन्होंने मुझे बताया कि नहर पर किसीके जाने की आज्ञा नही थी, और पुल वाली सडक की ओर देखने पर मैंने एक सन्तरी को वहाँ खडा पाया। कुछ समय तक मै उन सिपाहियो से बातचीत करता रहा, मैंने उन्हे पूर्व सन्ध्या को मगल-निवासियो के अपने दर्शन का वर्णन सुनाया। उनमें से किसीने भी मगल-निवासियो को नही देखा था, एवम् उनके सम्बन्ध में उनके विचार अनिश्चित एवम् सन्दिग्ध थे, और इस कारण उन्होने प्रश्नो का ढेर-सा लगा दिया। उन्होंने बताया कि वह नही जानते थे कि सेना की गति-विधि को किसने निर्धारित किया है, और उनका विचार था कि 'हार्स-गार्ड्स' में कुछ मतभेद हो गया है। एक सामान्य सेपर किसी भी साधारण सैनिक से कही शिक्षित होता है, और उन्होने सूक्ष्मता के साथ सम्भावित युद्ध की विलक्षण परिस्थितियो का वर्णन किया। मैंने उनके निकट अग्नि-किरण का वर्णन किया, और वह आपस मे वाद-विवाद करने लगे।

"उन तक रेंग चलो, और उन पर टूट पड़ो, मै कहता हूँ," उनमें से एक ने कहा। "आगे बढो," दूसरे ने कहा।

"उन खाइयो को उड़ा दो! तुम सदैव खाइयो की ही बात करते हो, अन्धकार मे शत्रु पर आक्रमण करने वाले, तुम्हे चूहे का जन्म धारण करना था।"

"और यदि उनके गर्दनें हों ही नही, तो?" सहसा एक घण्टे से गम्भीर एवम् साँवले मनुष्य ने पूछा, जो पाइप पी रहा था।

मैंने अपना वर्णन पुनः दोहराया।

"आक्टेपस, मैं उसे इसी नाम से पुकारता हूँ। मनुष्यो के मछेरो की बात करो" उसने कहा।

"उन्हे क्यो न गोले से उड़ा दिया जाय, और बखेडा ही समाप्त कर दिया जाय," उस साँवले छोटे व्यक्ति ने कहा। "हम नही जानते कि वह क्या कर डालें।"

"तुम्हारे गोले कहाँ हैं ?" प्रथम वक्ता ने कहा। "समय अधिक नही है। शीघ्रता करो, यह लो अपना इनाम, और इसे कर डालो।"

और इसी प्रकार वह वाद-विवाद करते रहे। कुछ समय पश्चात् मैंने उन्हें छोड दिया, और स्टेशन की ओर अधिक से अधिक संख्या में समाचार-पत्र एकत्रित करने चल पडा। उस दीर्घ प्रात. एवम् दीर्घ तृतीय पहर का वर्णन करके मैं अपने पाठको को थकाऊंगा नही, मैं कामन की झलक मात्र भी जानने मे सफल न हो सका, कारण कि हारसेल एवम् चोबहम की चर्च-टावर भी सैनिक अधिकारियो के हाथ में थी। वह सैनिक, जिनसे मैंने सम्भाषण किया, इस विषय मे अनभिज्ञ थे, और अधिकारी लोग रहस्यमय एवम् व्यस्त। सेना की उपस्थिति में मैंने नगर के लोगों को पुन. आश्वस्त होते पाया, और सर्व प्रथम मैंने मार्शल नामक तम्बाकू वाले से सुना कि कामन पर नष्ट होने वालो मे उसका पुत्र भी था। हारसेल की सीमा वाले स्थानो के लोगो को सैनिको ने अपने घरो को ताला लगाकर छोड़ देने पर विवश कर दिया था।

अत्यधिक थका-हारा, दो बजे के समीप मैं दोपहर का भोजन करने लौटा, कारण मैं बता चुका हूँ कि दिन भारी एवम् गर्म था, और शरीर को स्फूर्ति देने के निमित्त मैंने तीसरे पहर ठण्डे पानी से स्नान किया। साढे चार के लगभग मैं सन्ध्या का समाचार-पत्र लेने स्टेशन की ओर गया, कारण कि प्रात कालीन पत्र ने आग्लिवी, स्टेन्ट, हैण्डरसन एवम् अन्य व्यक्तियो की मृत्यु का एक अपूर्ण-सा वर्णन दिया था। परन्तु उसमे ऐसा कुछ भी नही था जिसे मैं नही जानता था। मगल-निवासी इंच भर भी दिखाई नही पड़े। वह अपने खड्ड मे व्यस्त प्रतीत होते थे, और वहाँ से हथौडे की खटखट और धूम्र की धारा-सी निकलती दिखाई पड़ती रही। स्पष्ट था कि वह आगामी युद्ध के निमित्त सन्नद्ध हो रहे थे। बिना किसी सफलता के नूतन प्रयत्न दिखाये जा रहे थे, और यही समाचार-पत्रो का दृढ मत था। एक सेपर ने मुझे बताया कि ऐसा खाई के एक व्यक्ति ने एक लम्बे पोल पर एक झण्डा लहरा कर किया।

मंगल-निवासियो ने इस प्रकार की प्रगतियो पर उसी प्रकार ध्यान दिया, जैसा कि हम गाय के रंभाने को देते हैं।

मुझे स्वीकार करना चाहिये कि इस प्रकार की सैनिक तैयारियो और शस्त्रास्त्रो ने मुझे विशेष रूप से उत्तेजित किया। मेरी कल्पना युद्धमय हो उठी, और मै दर्जनो आक्रमणकारियो को नाना विलक्षण उपायो से परास्त करने लगा, मेरे स्कूल के दिनो के युद्ध एवम् वीरता के सपने पुन: एक बार सजीव हो उठे। उस क्षण मुझे यह कठिनाई से न्यायोचित युद्ध प्रतीत हुआ। अपने ही खड्ड में, वह नितान्त असहाय प्रतीत हुए।

तीन बजे के समीप, निश्चित अन्तर से मुझे चर्टसी अथवा एडलस्टन की ओर से चलने वाली किसी तोप की ध्वनि सुनायी पडने लगी। मुझे पता लगा कि भीतर ही भीतर सुलगने वाले देवदार के वृक्षो को, जिसमें वह द्वितीय सिलण्डर गिरा था, तोप से उडाये जाने का प्रयत्न हो रहा था, ताकि गिरने वाली वह वस्तु फूटने से पूर्व ही नष्ट हो जाय। जब एक मैदानी तोप चोबहम के समीप मंगल-निवासियो के उस यंत्र को नष्ट करने पहुँची, समय लगभग पाँच के समीप था।

सन्ध्या को छ: के समीप, जब कि मैं अपनी पत्नी के साथ, ग्रीष्म-कालीन आवास में, चाय के निमित्त उत्तेजित रूप से उस युद्ध के सम्बन्ध मे, जो हम पर निरन्तर मँडरा रहा था, बात करता बैठा था, मैंने गोलियो की बौछार के साथ दबे हुए धमाके का शब्द सुना। उसके पश्चात् ही एक तीव्र धडाके की ध्वनि हमारे समीप ही सुनायी पडी, जिसने पृथ्वी को कँपा दिया, और बाहर लान पर निकलकर, मैंने आरिएन्टल कालिज के वृक्षो की चोटियो को एक धुआँदार लाल प्रकाश मे फूटते, और उसके समीपवर्ती गिरजे की टावर को खंडहर होकर गिरते देखा। गिरजे की चोटी अदृश्य हो चुकी थी, और कालिज की छतो की पक्ति ऐसी प्रतीत होती थी जैसे कि कोई सौ-टन वाली तोप उस पर अग्नि-वर्षा करती रही है। हमारी एक चिमनी इस प्रकार

फूटी जैसे कि उस पर कोई गोला लगा हो, और उसके खंड अरर्-अरर् की ध्वनि करते खपरैलों पर गिरे, और उनको भी साथ लेते हुए मेरे अध्ययन-कक्ष की खिडकी के समीप वाले बगीचे में गिरे, और स्थान-स्थान पर लाल-लाल ढेर लग गये।

मैं एवम् मेरी पत्नी मूर्तिवत् खड़े रहे। तब मैंने समझा कि मेबरी पहाडी की चोटी भी इस समय मंगल-निवासियों की अग्नि-किरण के घेरे में होगी, जिस कारण कि मार्ग मे पड़ने वाला यह कालिज साफ किया जा चुका था।

मैंने अपनी पत्नी की भुजाओं को अपने हाथो में कस लिया, और बिना किसी शिष्टता का ध्यान रखे, उसे पकड़े बाहर सड़क की ओर भागा। तब मैंने नौकर को पुकारा और उसे बताया कि मैं स्वय ऊपर उसके सन्दूक को लेने जा रहा हूँ, जिसकी वह रट लगाये हुए थी।

"शायद हम यहाँ नहीं ठहर सकते," मैंने कहा, और जैसे ही मैं बोला, एक क्षण के लिए कामन से पुनः बन्दूक चलने की ध्वनियाँ आईं।

"परन्तु हम जायेगे कहाँ ?" मेरी पत्नी ने भयपूर्ण स्वर में कहा।

मैंने सोचा, और मैं किंकर्तव्य-विमूढ-सा हो गया। तब मुझे लैंदर-हैड पर रहने वाले अपने चचेरे भाइयो की याद आई।

"लैदरहैड !" मैं उस आकस्मिक कोलाहल में पुकार उठा।

उसने मेरी ओर से मुडकर पहाडी के ढाल की ओर देखा। आश्चर्य से विमूढ-से लोग, अपने घरों से निकले चले आ रहे थे।

"हम लैदरहैड किस प्रकार जायेंगे ?" उसने पूछा।

पहाड़ी के नीचे की ओर, मैंने घुड-सवारों के एक झुंड को, रेल के पुल के नीचे दौडते देखा, तीन आरिएन्टल कालिज के खुले फाटकों के सामने दौड़ रहे थे, दो घोडों से उतरकर एक मकान से दूसरे की ओर दौड़ रहे थे। जलते हुए वृक्षों की चोटियो से आने वाले धुँए के मध्य,

चमचमाता सूर्य रक्त वर्ण-सा प्रतीत हो रहा था, और प्रत्येक वस्तु पर एक अपरिचित-सा भयंकर प्रकाश डाल रहा था।

"यहाँ ठहरो," मैने कहा, "तुम यहाँ सुरक्षित हो," और मैं तुरन्त ही धब्बेदार कुत्ते को लेने के निमित्त दौडा, कारण कि मुझे पता था कि जमीदार के पास एक घोडा और एक कुत्ता-गाड़ी है। मै सम्पूर्ण शक्ति से दौड रहा था, कारण कि मैं कल्पना कर रहा था कि किसी भी क्षण पहाडी के इस ओर का प्रत्येक व्यक्ति यहाँ से भागने को तत्पर होगा। मैंने उसे अपने मकान के पीछे होने वाली समस्त घटनाओ से अनभिज्ञ अपने कटघरे में पाया। मेरी ओर पीठ किये एक व्यक्ति उससे बातचीत कर रहा था।

"मुझे एक पाउंड मिलना चाहिए," उसने कहा, "और मेरे पास उसे चलाने वाला कोई नही है।"

अपरिचित के कन्धे पर से झाँकते हुए मैंने कहा, "मैं तुम्हे दो दूँगा।"

"किसलिये ?"

"और मैं उसे मध्य रात्रि तक लौटा लाऊँगा।"

"हे ईश्वर !" जमींदार ने कहा, "ऐसी जल्दी क्या है ? मै अपने सूअर का एक भाग उसे बेच रहा हूँ। दो पाउंड, और तुम उसे वापिस ले जाओगे ? क्या समाचार है ?"

मैने शीघ्रता से उसे बताया कि मैं अपना मकान छोड रहा हूँ, और इस प्रकार मैंने कुत्ता-गाडी प्राप्त कर ली। उस समय मुझे ऐसा नही प्रतीत हुआ कि जमीदार को भी इतना शीघ्र अपना मकान छोडना होगा। मैंने तुरन्त ही गाडी प्राप्त करने की सावधानी की, और तब उसे लेकर सडक के ढाल पर शीघ्रता से भागा एवं उसे अपने नौकर और पत्नी की देख-रेख में छोडकर अपने घर मे भागा, और अपनी बहु-मूल्य वस्तुओ को बाधने लगा। मकान के नीचे के 'बीच' वृक्ष जल रहे थे, जिस समय कि मैं यहाँ यह सब कर रहा था, और सड़क के ऊपर के

रेलिग लाल हो रहे थे। जब मै इस कार्य मे संलग्न था, एक घुड-सवार पैदल भागता आया। वह प्रत्येक मकान मे जाकर लोगो को मकान छोडने की चेतावनी दे रहा था। एक मेजपोश मे अपने सामान को लपेटे, जब मैं अपने सामने के द्वार पर बाहर निकला, वह लौटकर जा रहा था। मैं पीछे से चिल्लाया

"क्या समाचार है ?"

वह मुडा, मेरी ओर घूरता रहा, और चिग्घाड़ मारकर किसी रकाबी के ढ़कने के समान वस्तु में रेगकर निकलने वाली किसी वस्तु के सम्बन्ध में कहता हुआ, चोटी पर बने मकान के द्वार की ओर भागा। आकस्मिक रूप मे उठने वाले धुएँ के एक पिड ने उसे क्षणमात्र के लिये दृष्टि से ओझल कर दिया। मैं अपने पडोसी के द्वार की ओर भागा, और स्वयं को पुन: आश्वस्त करने के निमित्त मैंने द्वार खटखटाया, यद्यपि मैं जानता था कि वह और उसकी पत्नी लंदन को जा चुके हैं, और अपने मकान का ताला लगा गये हैं। अपने वचन के अनुसार मैं पुन: अपने सन्दूक को लेने भीतर गया, उसे बाहर लाया, और उसे उसके समीप ही गाडी के किनारे पर रख दिया, और तब लगाम पकड़, मैं अपनी पत्नी के समीप वाली कोचवान की सीट पर बैठ गया। और दूसरे क्षण, धुएँ और कोलाहल से दूर, हम मेबरी के दूसरी ओर वाले ढाल पर शीघ्र गति से पुराने वोकिंग की ओर चले जा रहे थे।

सामने मैदान सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहा था। सड़क के दोनो ओर गेहूँ के खेत थे, और हिलते हुए चिह्न वाली मेबरी की सराय। मैंने डाक्टर की गाड़ी को अपने आगे देखा। पहाड़ी के तले पर पहुँच मैंने उस पहाडी को देखने को दृष्टि फेरी, जिसे हम छोड़ रहे थे। काले धुएँ की मोटी-मोटी धाराएँ, जिनमें बीच-बीच में अग्नि की लाल रेखाएँ चमक उठती थी, शान्त वायु में ऊपर को उठ रही थी, और पूर्व की ओर के वृक्षो की हरी-भरी चोटियो पर गहन काली छायाएँ डाल रही थीं। धुआँ शीघ्र ही पूर्व और पश्चिम तक फैल गया, पूर्व की ओर बाइफ्लीट

के देवदार वन, और पश्चिम में वोकिंग तक । सडक पर हमारी ओर दौडने वाले लोगो की छायाएँ स्थान-स्थान पर थी। अब अत्यन्त अस्पष्ट परन्तु गर्म एवं शान्त वायु के बीच कोई भी, मशीन-गन की हर-हर की ध्वनि, जो अब शान्त हो चुकी थी, और बीच-बीच में राइफल्स की ध्वनियाँ स्पष्ट सुन सकता था। स्पष्ट था कि मंगल-निवासी अपनी अग्नि-किरण के घेरे में आने वाली प्रत्येक वस्तु को भस्मीभूत कर रहे थे।

मैं एक कुशल कोचवान नही हूँ, और मुझे तुरन्त ही अपना ध्यान घोडे की ओर मोडना था। जब मैंने पुन. पीछे फिरकर देखा, दूसरी पहाडी ने उस काले धुएँ को छिपा लिया था। मैने घोडे को कोड़ा मारा और वोकिग तक उसकी लगाम ढीली छोड दी, हमारे और उस हलचल के मध्य धूल छा गयी। डाक्टर की गाडी को मैंने वोकिंग और सैन्ड के मध्य ही पीछे छोड दिया।

१०

तूफान में

लैदरहैड मेबरी से बारह मील के लगभग है। पायरफोर्ड का वातावरण भूसे की गन्ध एव रसीली झाड़ियो वाले चरागाह से परिपूर्ण था, और दोनो ओर की झाडियाँ गुलाब के फूलो से सुशोभित थीं। गोले छूटने की वह भीषण ध्वनियाँ, जो हमारे मेबरी से प्रस्थान करने के समय हो रही थी, सहसा एव आकस्मिक रूप में समाप्त हो चुकी थी, और अपने पीछे छोड गयी थी शान्त एवं निस्तब्धता से भरी हुई सन्ध्या। बिना किसी दुर्घटना के हम नौ बजे के समीप लैदरहैड पहुँचे एवं घोड़े को एक

घण्टे का विश्राम मिल सका, और इसी मध्य मैंने अपना भोजन किया, और अपनी पत्नी को उनकी देख-रेख मे सौप दिया।

मार्ग भर मेरी पत्नी उत्सुकतापूर्ण रूप मे नि:शब्द हो रही थी, और प्रतीत होता था कि वह दुर्घटना के आभास से व्यथित थी, मैंने उसे पुन. आश्वस्त करने के निमित्त बातचीत की, और यह सकेत करते हुए कि अपने भारीपन के कारण मगल-निवासी उस खड्ड मे जकड-से गये हैं, और अधिक जो कुछ भी वह कर सकते हैं वह यह है कि वह खड्ड से बाहर रेंगने का प्रयत्न करें। परन्तु उसने केवल हा या ना मे ही उत्तर दिये। यदि सरायवाले से मेरे वचन का प्रश्न न होता, तो मैं समझता हूँ कि उसने मुझसे लैदरहैड मे ही रुकने को विवश किया होता। काश ! ऐसा होता। मुझे स्मरण है कि उसका सुन्दर मुख वियोग के समय श्वेत दीख रहा था।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं दिन भर उत्तेजित रहा था। युद्ध-ज्वर के समान ही कोई भावना, जो कभी-कभी किसी जाति को प्रभावित करती है, मेरे रक्त में घुल-मिल चुकी थी, और अपने हृदय मे मुझे उसी रात्रि मेबरी लौटने में कोई क्षोभ नही था। मुझे यह भी भय था कि तोपो की उस अन्तिम ध्वनि ने, जो मैंने सुनी थी, हमारे आक्रमण-कारियो को सदैव के लिये ही नष्ट न कर डाला हो। अपनी दशा का समग्र वर्णन मैं यह कह कर ही कर सकता हूँ कि मैं पुन मृत्यु के मुख में जाने की कामना कर रहा था।

जब मैं लौटने को तत्पर हुआ, समय ग्यारह के समीप था। अपने बन्धुओ के प्रकाश-पूर्ण घरो से आने के कारण यह रात्रि मेरे निकट अप्रत्याशित रूप से अंधेरी थी, और वह दिन के समान गर्म थी। ऊपर आकाश मे बादल द्रुत गति से उड रहे थे, यद्यपि हमारे चारों ओर की झाड़ियो एव वृक्षो में लेशमात्र भी कपन न था। मेरे बन्धुओं के नौकरो ने दोनो लैम्पो को प्रकाशित कर दिया। प्रसन्नता की बात यह थी कि मैं मार्ग से पूर्णत: परिचित था। मेरी पत्नी प्रवेश द्वार के प्रका-

शित मार्ग मे उस समय तक खड़ी रही, जब तक कि मै उस कुत्ता-गाडी मे कूद न पडा। तब सहसा, वह मुडी, और मेरे बन्धुओ को मुझे विदाई देते खडा छोड भीतर की ओर चली गयी।

प्रथम मैंने अपनी पत्नी के भय-पूर्ण विचारो के स्पर्श से अपने मन को दुर्बल पाया। परन्तु शीघ्र ही मेरे विचार मंगल-निवासियो की ओर मुड़ गये। उस समय मै सन्ध्या की गोलाबारी के घटना-क्रम से अनभिज्ञ-सा था। यहाँ तक कि मै उन परिस्थितियो से भी नितान्त अपरिचित था, जिन्होने उस सघर्ष को जन्म दिया था। मै आकहम के समीप आया (कारण कि मरे लौटने का मार्ग यही था, और सैन्ड एव पुराने वोकिग के द्वारा नही)। मैने एक रक्त वर्ण प्रकाश को देखा, जो जैसे-जैसे कि मै समीप आया, आकाश की ओर फैलता प्रतीत हुआ। एकत्रित होने वाले भीषण तूफान के बादल काले एवं लाल धुएँ मे घुल-मिल रहे थे।

रिपले स्ट्रीट निर्जन हो चुकी थी, और यदा-कदा किसी प्रकाशित खिडकी के अतिरिक्त यहॉ जीवन का कोई चिह्न नही दिखाई पड़ता था, परन्तु पायरफोर्ड के कोने पर मै एक दुर्घटना मे बाल बाल बचा, जहॉ मेरी ओर मुँह किये मनुष्यो का एक समूह खडा था। जब मै उनके सामने से निकला, उन्होने कुछ भी नही कहा, मै नही जानता कि पहाड़ी के उस पार होने वाली घटनाओ का उन्हे कहॉ तक ज्ञान था, और न मै यह ही जानता था कि वह शान्त मकान जिन्हे मैं अपने पीछे छोडता आ रहा था, सुरक्षित निद्रा मे मग्न थे, परित्यक्त थे अथवा जन-शून्य थे अथवा-भय-त्रस्त रूप से रात्रि की भयानकता का अनुमान लगा रहे थे।

रिपले से, उस समय तक जब तक कि मै पायरफोर्ड को पार नहीं कर आया, वे की घाटी मे था, और वह लाल प्रकाश मेरी दृष्टि से ओझल हो चुका था। पायरफोर्ड चर्च के बाद जब मै उस छोटी-सी पहाड़ी पर चढने लगा, वह तीव्र प्रकाश पुन. दृष्टिगोचर होने लगा, और मेरे चारो ओर वृक्ष झझा की प्रथम सूचना से कॉपते-से दिखाई पड़े। तब मैंने अपने पीछे पायरफोर्ड-चर्च से मध्य रात्रि के घण्टो का रव सुना, और

तब मेबरी पहाडी का छाया-चित्र सामने दृष्टिगोचर होने लगा, जिसके वृक्षो की चोटियाँ एवं मकानो की छते उस लाल प्रकाश की पृष्ठ-छाया में काली दिखाई दे रही थी।

जैसे ही मैंने इस दृश्य को देखा, एक भयानक हरित् वर्ण प्रकाश मेरे सामने की सडक पर दृश्य मान हो उठा। मैंने लगाम पर किसी झटके का आभास पाया। मैंने देखा कि कि द्रुत गति से उडते हुए उन बादलो को एक हरित वर्ण अग्नि सहसा चमक कर चीरती हुई मेरी बायी ओर गिरी। यह तीसरा टूटता तारा था !

इस चमक के तुरन्त बाद ही, एव चकाचौध कर देने वाले तीव्र श्वेत प्रकाश की विभिन्नता के साथ, एकत्रित होते तूफान की प्रथम बिजली कौध उठी, और किसी राकेट के समान ऊपर आकाश मे मेघो का वज्र-घोष सुनायी पड़ा। घोड़े ने लगाम को दाँतो से जकड़ लिया और स्थिर हो गया।

एक ढलुवाँ मार्ग मेबरी पहाडी के तल की ओर जाता है, और मै इसी मार्ग से नीचे की ओर उतरा। एक बार जब बिजली कौंधनी प्रारम्भ हो चुकी, वह निरन्तर चमकती ही रही, जैसा कि मैंने कभी नही देखा था। मेघों की गड़गडाहट एक दूसरी ध्वनि का अनुसरण करने लगी, जिसमें एक दूसरी प्रकार की ध्वनि भी सम्मिलित थी, और वह अधिकतम रूप मे सामान्य विस्फोट के स्थान मे किसी विशाल बिजली की मशीन के चलने की ध्वनि-सी प्रतीत होती थी। चमचमाती वह कौंध अन्धा एव अव्यवस्थित कर देने वाली थी, और जब मैं ढाल से नीचे की ओर आ रहा था, ओलो की एक क्षीण बौछार का अनुभव मैंने अपने चेहरे पर किया।

प्रथम मैंने अपने समक्ष सड़क के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु पर ध्यान नही दिया, और तब सहसा मेरा ध्यान मेबरी पहाड़ी के दूसरे ढाल पर द्रुत गति से चलती किसी वस्तु पर केन्द्रित हो गया। पहले मैंने उसे किसी मकान की गीली छत समझा, परन्तु एक के पश्चात् दूसरी चमक

ने उसे तीव्र गति से लुढकते हुए प्रदर्शित किया। यह चकित कर देने वाला दृश्य था—एक क्षण संभ्रमित कर देने वाला अन्धकार, और दूसरे ही क्षण दिन के समान प्रकाशपूर्ण चमक मे दीख पडने वाली चोटी के अनाथालय की इमारते, देवदार वृक्षो की हरी-भरी चोटियाँ, और फिर यह समस्या का रूप धारण कर लेने वाली यह वस्तु स्पष्ट, तीव्र एवं प्रकाशमय हो उठी।

और यह वस्तु जो मैने देखी! मैं उसका वर्णन किस प्रकार करूँ ? एक दैत्यकार तिपाई, जो आकार मे अनेक मकानो से भी ऊँची थी और जो छोटे देवदार वृक्षो को लाँघती-सी तथा मार्ग में आने वालो को उखाड फेंकती चल रही थी, चमकदार धातु का चलता हुआ एक विशाल इजन, जो अब झाडियो के ऊपर चल रहा था, उसके ही जुडे हुए भाग के समान लोहे की रस्सियाँ नीचे लटक रही थी एव उसके चलने की तीव्र घडघडाहट की ध्वनि बादलो की गर्जना में मिल जाती थी। बिजली कौंधी और वह स्पष्ट दिखाई पडी, एक पैर पर झुकी-सी और शेष दोनों पैर हवा में उठाये, एक क्षण दिखाई देने और उसी क्षण अन्तर्धान हो जाने के लिये, और बिजली के पुन कौंधने पर वह सौ गज समीप आ चुकी थी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी दूध रखने के स्टूल को उठा कर बलपूर्वक पृथ्वी पर गेद की भाँति दे मारा जाय ? ऐसा ही भाव था जो वह बिजली की कौंधे प्रदान करती थी। परन्तु दूध वाले किसी स्टूल के स्थान पर किसी ऐसी तिपाई की कल्पना करे जिसमे कोई विशाल यंत्र लगा हो।

तब मेरे सामने के देवदार वृक्ष सहसा इस प्रकार विभाजित हो गये, जिस प्रकार कि कडकीले सरकडे हो जाते हैं, जब कोई मनुष्य उनके बीच से निकलता है। वह चटककर टूट रहे और नीचे गिर रहे थे, और एक दूसरी वैसी ही तिपाई दृष्टि पडी, और प्रतीत हुआ जैसे कि वह शीघ्रता से मेरी ओर झपटती आ रही हो और मैं सरपट गति से उसीकी ओर भागा जा रहा था। दूसरी तिपाई को देखते ही मेरी नाडियों का रक्त

शिथिल हो गया। पुन. देखने के लिये न रुकते हुए, मैंने बलपूर्वक घोडे की गर्दन को दायी ओर मोड़ा, और दूसरे ही क्षण, कुत्ता-गाड़ी घोडे के ऊपर उछली, गाडी का बम तीव्र ध्वनि के साथ टूट गया, और एक ओर को उछलकर, मैं एक उथले पानी के ताल मे गिर पडा।

मैं तुरन्त ही रेंगकर बाहर निकल आया, और एक भटकैया झाडी के गुच्छे को पकड़कर खडा रहा, मेरे पैर इस समय भी पानी मे ही थे। घोडा निचेष्ट पडा था (उसकी गर्दन टूट गयी थी, बेचारा पशु !) और बिजली की कौंध से मैंने उल्टी हुई कुत्ता-गाडी की काली छाया और धूमिल रूप से इस समय भी धीरे-धीरे हिलते पहियो को देखा। दूसरे ही क्षण, वह विशाल यंत्र मुझे लाघता पायरफोर्ड की ओर निकल गया।

समीप से अवलोकन करने पर वह वस्तु अविश्वसनीय रूप मे विलक्षण थी, कारण कि वह केवल चलती हुई कोई जड मशीन ही नही थी। निस्सन्देह वह एक मशीन ही थी, जिसकी धातु गतिक्रम में ध्वनि करती एवं जिसके विलक्षण आकार से दीर्घ एवं चमचमाते स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग (जिसमें से एक ने एक छोटे-से देवदार वृक्ष को जकड लिया था) लटक रहे, और खड़खडाहट की ध्वनि कर रहे थे। जब वह कुचलती एवं लाँघती हुई आगे बढती, वह अपना मार्ग निकाल लेती थी, और पीतल का बना उसका वह ढकना इधर-उधर हो रहा था और निश्चित था कि किसी के संकेत पर चल रहा है, जो उसके द्वारा चारो ओर देख रहा है। इस मशीन के मुख्य भाग के पीछे, किसी मछुए की विशाल बास्केट के समान श्वेत धातु की कोई वस्तु थी, और हरित वर्ण धूम्र के पिण्ड उसके जोडो से निकल रहे थे, जब कि वह मेरे ऊपर से निकला और दूसरे ही क्षण वह जा चुका था।

बिजली की घटती-बढ़ती कौंध के कारण उस समय मैं इतना ही देख पाया, कारण कि कभी चमक चकाचौंध करने वाली होती, और कभी गहन काली छायाएँ।

जाते समय वह विजय-सूचक ऐसे नाद को जन्म दे रहा था, जिसने

बिजली की गर्जना को दबा दिया, 'एलू एलू' की ध्वनि, और दूसरे ही क्षण वह अपने साथी के समीप पहुँच गया, और डेढ मील के अन्तर पर वह मैदान में किसी वस्तु पर झुक रहा था। मुझे कोई सन्देह नही है कि मैदान की यह वस्तु उन दस सिलण्डरो में से तीसरी थी, जो उन्होंने हमारे लोक पर मगल-लोक से फेंके थे।

उस क्षण मैं वर्षा और अन्धकार मे वहाँ पडा, रह-रहकर चमकने वाली बिजली के प्रकाश मे झाड़ियो के ऊपर धातु के इन दैत्याकार जीवो को गतिशील देखता रहा। इस समय ओलो की एक हल्की बौछार आती, और बन्द होती थी, यह आकृतियाँ छिपती और फिर स्पष्ट होती दीख पडी। कभी-कभी बिजली की चमक पर्याप्त काल के लिये बन्द हो जाती और तब यह अन्धकार मे खो जाती।

मैं ऊपर ओलो से तर हो चुका था, और नीचे से पोखर के पानी से। यह उस समय से पूर्व की बात है, जब मेरा जड़ आश्चर्य मुझे पानी से निकलकर किसी सूखे स्थान तक आ पाने का संघर्ष करने को प्रोत्साहित करता, अथवा सर पर मँडराने वाले इस सकट के संबंध में विचार करने का अवसर प्रदान करता।

मुझसे कुछ ही दूर, सार्वजनिक प्रयोग के निमित्त बनी लकड़ी की एक कमरे वाली झोपडी थी, जो चारों ओर से आलू के पौदों से घिरी हुई थी। अन्त में मैंने प्रयत्न किया, और प्रत्येक सहारे की वस्तु को पकडता, मैं इसकी ओर दौड़ा। मैंने द्वार खटखटाया, परन्तु मैं भीतर के लोगो का ध्यान आकर्षित न कर पाया (यदि भीतर कुछ लोग थे भी), और कुछ समय पश्चात् ऐसा करना रोककर, और मार्ग को पर्याप्त रूप में एक खाई के द्वारा पूरा कर, एव इन दैत्याकार मशीनो द्वारा न देखे जाने में सफल होकर, मेबरी के देवदार वृक्षो की ओर अग्रसर हुआ।

उस खाई की आड़ में, भीगा और अब कँपकँपाता, मैं अपने घर की ओर बढा, पगडण्डी को पाने के निमित्त मैं वृक्षो के सहारे-सहारे आगे बढा। जंगल का यह भाग नितान्त अन्धकारमय था, कारण कि बिजली

की चमक अब केवल कभी-कभी ही रह गयी थी, और वह ओले, जो मूसलाधार बरस रहे थे, अब वृक्षों के घने कुंजो से ढेर का ढेर गिर पडते थे।

यदि मैं इन समस्त बातो का, जिन्हे मैंने देखा, पूरा अर्थ समझ गया होता, मैंने तुरन्त ही अपना मार्ग बाइफ्लीट होते हुए स्ट्रीट चोबहम की ओर चुना होता, और इसी प्रकार मैं लैदरहैड में अपनी पत्नी के पास लौट जाता। परन्तु उस रात मेरी अपनी ही विलक्षणतम बातो, मेरी दयनीय शारीरिक स्थिति ने मुझे ऐसा करने से रोका, कारण कि मैं अनेक आघात खा चुका था, थका था, भीगा था, और तूफान मुझे बहरा एवं अन्धा कर चुका था।

मुझे अपने घर जाने का धूमिल-सा विचार था, और यही मेरा उद्देश्य था। वृक्षों के मध्य लड़खडाता मै एक खाई में गिर पडा, और लकडी से टकरा कर मेरे घुटने चोट खा गये, और अन्त में पानी में छप-छपाता, मै 'कालिज आर्म्स' से निकलने वाली एक सड़क पर निकला। छपछपाहट मै इस निमित्त कहता हूँ कि तूफान की वर्षा में पहाड़ी की मिट्टी नीचे कीचड़ के रूप में बह रही थी। वहाँ अन्धकार में एक मनुष्य मुझसे टकरा गया, और लुढकता हुआ मै पीछे जा गिरा।

भय से वह चीत्कार कर उठा, इधर-उधर उछलता रहा, और इससे पूर्व कि संयमित हो मै उससे कुछ कह सकता, वह भाग खडा हुआ। तूफान का प्रभाव इस स्थान पर इतना तीव्र रह चुका था कि पहाड़ी पर ऊपर चढ़ सकना मेरे निकट कठिनतम काम हो गया। मै बायीं ओर वाले बाड़ के सहारे-सहारे ऊपर चला, और उसीके सहारे मार्ग निकालता रहा।

सिरे के समीप, मैं किसी कोमल वस्तु से टकराया, और बिजली की चमक में मैंने देखा कि काली बनात एव जूतों का जोड़ा है। इससे पूर्व कि मैं स्पष्ट रूप में देख पाता कि वह मनुष्य किस अवस्था में पड़ा है, चमक समाप्त हो चुकी थी। उसके समीप खडा, मैं दूसरी चमक की

प्रतीक्षा करता रहा। जब बिजली पुन: कौधी, मैने देखा कि वह एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था, जिसके वस्त्र स्वच्छ किन्तु सादा थे, और वह बाड़ के समीप ढेर-सा पड़ा था, जैसे कि वह प्रबल प्रहार द्वारा उठाकर उस पर पटका गया हो।

अपने उस संकोच एवं भय पर विजय पाकर, जो ऐसे मनुष्य के निकट स्वाभाविक है, जिसने कभी किसी मृत शरीर का स्पर्श न किया हो, मै झुका, और मैने उसके हृदय की धडकन देखने के निमित्त उसे उलट दिया। वह पूर्णत निष्प्राण था। स्पष्ट था कि उसकी गर्दन टूट चुकी थी। बिजली तीसरी बार कौधी, और उसका चेहरा मेरी ओर को झुका। मैं स्तम्भित रह गया। यह धब्बेदार कुत्ते वाला जमीदार था, जिसकी गाड़ी मैंने ली थी।

सावधानीपूर्वक उसे लाँघता मै ऊपर की ओर बढा। पुलिस-स्टेशन और 'कालिज आर्म्स' होता हुआ, मैं अपने घर की ओर चला। पहाडी की ओर कुछ जलता दिखाई नहीं पड रहा था, यद्यपि कामन की ओर से इस समय भी तीव्र लाल प्रकाश एवं लाल धुएँ का विशाल समूह था, जो गिरते हुए ओलो से टकरा रहा था। बिजली की कौधों में, जहाँ तक मैं देख सका, मेरे चारो ओर के मकान अधिकांश रूप में सुरक्षित थे। 'कालिज आर्म्स' से टूटा हुआ एक ढेर सड़क पर पड़ा था।

मेबरी ब्रिज की ओर जाने वाली सडक पर बोलने और चलने की ध्वनियाँ आ रही थीं, परन्तु उनको पुकारने अथवा उन तक जाने का साहस मेरे पास न था। सिटकनी खोलकर मैं भीतर घुसा, मैंने द्वार बन्द किया, और भीतर का बोल्ट गिराकर ताला लगाया, और तब जीने की सीढियो तक स्वय को घसीटकर, मैं बैठ गया। मेरी कल्पना उन धातुओ के दैत्यो एव बाड़ो से टकराये उस मृत शरीर से पूर्ण थी।

प्रचण्ड रूप से कँपकँपाते मैं पीठ को दीवाल से टिकाकर जीने का सहारा लिए बैठा रहा।

११

खिड़की पर

मैं पहिले ही बता चुका हूँ कि मेरी भावनाओ की उत्तेजित अवस्था स्वय को नष्ट कर डालने की कुशल गति जानती है। कुछ समय पश्चात् मैंने पाया कि मैं सर्दी खा चुका था, और भीगा हुआ था एवं मेरे जीने के कालीन पर मेरे आस-पास पानी जमा हो गया है। यत्र की भाँति मैं उठ खडा हुआ, और रसोई-घर मे जाकर मैंने कुछ व्हिस्की पी, और तब मुझे कपडे बदल डालने की प्रेरणा हुई।

जब मैं ऐसा कर चुका, मैं ऊपर अपने अध्ययन कक्ष मे गया, परन्तु मैंने ऐसा क्यो किया, मैं नही जानता। मेरे अध्ययन-कक्ष की खिडकी पेडो एव हारसेल कामन की रेलवे की ओर खुलती है। हमारे पलायन की हडबडी में यह खिड़की खुली रह गयी थी। मार्ग अन्धकार से भरा था, और खिडकी से दृश्यमान उस स्थान को छोडकर; कक्ष का वह भाग अभेद्य अन्धकार में डूबा हुआ था। मैं द्वार के बीच में ही रुक गया।

तूफान समाप्त हो चुका था। ओरिएन्टल कालिज की मीनारे और देवदार के वृक्ष नष्ट हो चुके थे, और पर्याप्त दूरी पर एक तीव्र लाल प्रकाश से प्रकाशित, बालू के गड्ढो वाला कामन दिखाई पड़ रहा था। प्रकाश के परे काली आकृतियाँ, विलक्षण एवं विचित्र, शीघ्रता के साथ इधर-उधर चल फिर रही थी।

ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि उस ओर का समस्त प्रदेश जल रहा था—एक विशाल पहाडी चोटी, जिसमे अग्नि की अनेक जिह्वाएँ लप-लपा रही थी, जो मन्द होते तूफान के कारण इधर-उधर होती एवं

पुकारती प्रतीत होती थी, और ऊपर अन्तरिक्ष के वाष्पपूर्ण बादलो को रक्त-रजित कर रही थी। थोडे-थोडे अन्तर पर किसी समीपवर्ती प्रचण्ड अग्नि से उठता हुआ धुएँ का कोई विशाल स्तूप खिडकी के सामने से निकलता और मंगल-निवासियो की उन आकृतियो को दृष्टि-विन्दु से छिपा लेता। मैं नही देख सकता कि वह क्या कर रहे थे, और न उनकी स्पष्ट आकृति ही दिखाई पडती, और न मै उन काली आकृतियो को पहिचान पा रहा था, जिन पर वह कार्यशील थे। न मै समीपवर्ती अग्नि को ही देख पा रहा था, यद्यपि उसकी छायाएँ अध्ययन-कक्ष की दीवालो और छत पर नृत्य कर रही थी। रालमय पदार्थ के जलने की एक तीव्र टकार वातावरण में थी।

बिना कोई शब्द किये, मैने द्वार बन्द कर दिया और खिडकी तक रेग आया। जब मैंने ऐसा किया, मेरी दृष्टि का पसार एक ओर वोकिंग स्टेशन के समीपवर्ती मकानो, और दूसरी ओर बाइफ्लीट के भस्मीभूत देवदार वृक्षो तक हो गया। पहाडी के समीप एक प्रकाश-सा था, और मेबरी सडक एवं स्टेशन के पास वाली गलियों के मकानो के खण्डहर चमचमा रहे थे। रेलवे के ऊपर के प्रकाश ने प्रथम तो मुझे चक्कर में डाल दिया, वहाँ एक विशाल ढेर और तीव्र चमक थी, और उसकी दाहिनी ओर आयताकार वस्तुओ की पक्ति-सी। तब मैंने देखा कि यह नष्ट हुई गाडी थी, जिसका अगला भाग अग्नि से नष्ट कर दिया गया था, और पिछला अभी भी पटरी पर था।

प्रकाश के इन तीन मुख्य केन्द्रो के मध्य, मकान, गाडियाँ, और चोबहम की ओर के जलते गॉव असंयत रूप से फैले हुए अन्धकार के प्रदेश से प्रतीत होते थे, जो स्थान-स्थान पर धूमिल रूप से सुलगती और धुआँ देती भूमि से भग्न होते-से दिखाई पडते थे। यह अद्भुततम दृश्य था—शून्य अन्धकार एवं जलती अग्नि। इसने, अन्य किसी वस्तु की अपेक्षा, मेरे मन में रात्रि को दिखाई पड़ने वाले कुम्हारों के अलाव की स्मृति को सजीव कर दिया। पहिले मै मनुष्यो को भिन्न रूप में न देख

सका, यद्यपि मैं विशेष रूप से उन्हे ही खोज निकालने को प्रयत्नशील था। बाद में मैंने वोकिंग स्टेशन के प्रकाश में पक्ति के परे एक के पश्चात् दूसरे को शीघ्रतापूर्वक चलते देखा।

और क्या अग्नि में अस्त-व्यस्त यह छोटा-सा संसार था, जिसमे मैं वर्षों से सुरक्षित रूप से रह रहा था। पिछले सात घन्टो में क्या हो चुका है, मैं नही जानता था, और साथ ही, यद्यपि मैं अनुमान करने का प्रयत्न कर रहा था, मै दैत्याकार उन मशीनो एव सिलण्डर से निकलने वाले उन मन्द जीवो के, जिन्हे मैंने देखा था, पारस्परिक सम्बन्धो से भी अनभिज्ञ था। एक अनूठी अकर्तृक भावना से, मैंने अपनी डेस्क-चेयर को खिडकी की ओर घुमा दिया, और बैठकर अतल अन्धकार में डूबे उस प्रदेश, और विशेष रूप से बालू के उन गड्ढों के ऊपर प्रकाश मे शीघ्रता से इधर से उधर जाती, उन दैत्याकार वस्तुओ को देख रहा था।

वह आश्चर्यजनक रूप में संलग्न थे। मैं स्वय से प्रश्न करता रहा कि वह क्या हो सकते थे? क्या वह सबुद्ध यन्त्र थे? ऐसी बात, मैं समझता था, असम्भव है। अथवा उनमें से प्रत्येक में एक मंगल-निवासी बैठा था, जो आज्ञा दे रहा था, निर्देशन कर रहा था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य का मस्तिष्क उसके शरीर में बैठकर उस पर शासन करता है? जीवन में प्रथम बार स्वयं से यह प्रश्न करने के लिए कि हमारे लौह आवरण अथवा इजन हमसे निम्नतर जीवो को कैसे प्रतीत होते होगे, मैं उन वस्तुओ की कल्पना मानव-संसार के यंत्रों से करने लगा।

तूफान अपने पीछे निर्मल आकाश छोड गया था, और जलती हुई भूमि के उठते हुए धुएँ के ऊपर, धूमिल होता हुआ, पिन की मूठ के समान मंगल का नक्षत्र पश्चिम में डूब रहा था, जब कि एक सिपाही मेरे उद्यान मे आया। चहार दीवारी पर मैंने खडखड़ाहट की ध्वनि सुनी, और उस तन्द्रा से, जो मुझ पर छा गयी थी, जाग्रत हो, मैंने नीचे झाँक-

कर देखा, और धूमिल रूप में उसे बाड पर चढते देखा। एक दूसरे मानव के दर्शन पर मेरी जडता समाप्त हो गयी, और उत्सुकतापूर्वक मैं खिड़की पर से नीचे झाँका।

"शी !" मैंने फुसफुसाकर कहा।

बाड के समीप ही पैरों को फैलाये, सन्देह से वह रुक गया। तब वह ऊपर चढ आया, और लान में होता हुआ मकान के कोने की ओर बढ़ने लगा। वह झुककर सावधानी से चलने लगा।

"कौन है ?" खिडकी के नीचे खड़ा हो ऊपर की ओर देखते हुए वह फुसफुसाया।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?" मैंने पूछा।

"परमात्मा जाने।"

"क्या तुम छिपने का स्थान खोज रहे हो ?"

"हाँ, हाँ।"

"मकान में आ जाओ," मैंने कहा।

मै नीचे गया, द्वार को खोला, और उसे भीतर करके पुन. ताला लगा दिया। मैं उसका चेहरा नही देख पाया। उसके सर पर हैट नही था, और उसके कोट के बटन खुले हुए थे।

"हे ईश्वर !" उसने कहा जैसे ही मैंने उसे भीतर खीचा।

"क्या हुआ ?" मैंने प्रश्न किया।

"क्या नही हुआ ?" अन्धकार में मैंने देखा कि उसने निराशा की मुद्रा बनायी। "उन्होंने हमें नष्ट कर दिया—केवल सर्वनाश," और उसने यही शब्द बार-बार दोहराये।

यत्रवत् वह मेरे पीछे-पीछे भोजन-कक्ष तक आ पहुँचा।

"कुछ व्हिश्की लो", मैंने गिलास भरते हुए कहा।

वह उसे पी गया। तब सहसा वह मेज़ के सामने बैठ गया, उसने अपना सर हाथो मे ले लिया, और भाव-जनित उत्तेजना से किसी छोटे बालक के समान रोने लगा, जब कि अपने हाल के नैराश्य को आश्चर्य-

जनक रूप मे विस्मृत कर, मैं उसके समीप उस पर आश्चर्य करता खडा रहा।

पर्याप्त समय बीत गया, इससे पूर्व कि वह अपने मस्तिष्क को मेरे प्रश्नो का उत्तर देने योग्य बना सका, और तब उसने अव्यवस्थित एवं टूटे हुए उत्तर दिये। वह पैदल सेना का ड्राइवर था, और ड्यूटी पर सात बजे से ही आया था। उस समय कामन पर गोली चल रही थी, और कहा जा रहा था कि प्रथम आगत मगल-निवासी किसी धातु की ढाल के आवरण में अपने दूसरे सिलण्डर की ओर रेंग रहे थे।

बाद में यही ढाल ऊपर उछलकर एक तिपाई के रूप में परिवर्तित हो गयी, और उसने प्रथम युद्ध की मशीन का रूप धारण कर लिया, जिसे मैंने देखा था। वह तोप, जिसे वह चलाकर लाया था, हारसेल के समीप लगायी गयी थी, जिससे कि वह कामन के बालू के उन गड्ढो पर निशाने लगा सके, और उसके आगमन ने युद्ध की सम्भावना प्रकट की। जैसे ही तोपची लोग पिछले भाग में गये, उसके घोडे का पैर किसी खन्दक मे जा पडा, गाडी लुढक पडी, और वह गड्ढे में गिर पड़ा। उसी क्षण उसके पीछे की तोप गरज उठी, बारूद मे विस्फोट हो गया, और उसके चारों ओर आग ही आग हो उठी, और उसने स्वय को जले हुए मनुष्यों और घोडो के ढेर के नीचे पडे पाया।

"मैं निर्जीव-सा पडा रहा," उसने कहा, "जड बुद्धि-सा, और मेरे सामने ऊँचाई पर एक घोडे का मृत शरीर था। हम नष्ट हो चुके हैं। और वह गन्ध ! हे ईश्वर ! भुने माँस की भाति ! घोडे के गिरने से मेरी पीठ पर आघात लगा, और स्वस्थ हो पाने तक, मैं वही पड़ा रहा। एक परेड की भाँति यह सब एक मिनिट में समाप्त हो गया—और तब लड़खडाहट, घड़घडाहट एवं चाबुक की फटकार !"

"पूर्णत: नष्ट !" उसने कहा।

बहुत देर तक मृत घोडे के शरीर के नीचे, किसी कीडे की भाँति कामन को झाँकता-सा पडा रहा। एक डिम्ब-युद्ध के रूप में, केवल विनष्ट

होने के निमित्त ही, सैनिको ने उन पर झपटने का प्रयत्न किया। तब वह दैत्य पैरो पर खडा हो चुका था, और उसने कामन पर भागते हुए लोगो के सर पर सरलता के साथ इधर से उधर चलना प्रारम्भ कर दिया, जिसका ढक्कनेदार सर किसी टोपी से ढके मानव सर के समान इधर-उधर घूम रहा था। हाथ के समान की कोई वस्तु किसी धातु के केस को पकडे थी, जिससे हरित वर्ण की चिन्गारियाँ फूट रही थी, और इस फनेल से अग्नि-किरण निकल रही थी।

कुछ ही मिनटो में, जहाँ तक कि वह सैनिक देख सका, कामन पर कोई भी जीवित वस्तु नही थी, और प्रत्येक झाडी एव वृक्ष, जो उस समय तक भस्म होने से बच चुका था, जलने लगा। 'हुसार' सडक पर मोड से परे थे, और वह उन्हे न देख सका। कुछ समय तक वह मैक्सिम-बन्दूको की गड़गडाहट सुनता रहा, और तब सब कुछ शान्त हो गया। उस दैत्य ने कुछ समय तक वोकिंग स्टेशन एव उसके समीपवर्ती मकानों को सुरक्षित रहने दिया, परन्तु क्षणमात्र में अग्नि-किरण उस पर पडी, और समस्त नगर प्रज्वलित खण्डहरो में परिवर्तित हो गया। तब उस वस्तु ने अग्नि-किरण को बन्द कर दिया, और सैनिक दस्ते की ओर पीठ फेर कर, डगमगाते हुए सुदूर देवदार वृक्षो की ओर चलने लगा, जो द्वितीय सिलण्डर को घेरे हुए थे। जैसे ही उसने ऐसा किया, एक दूसरा चमचमाता टाइटन (दैत्य) खड्ड के ऊपर निकलता दिखाई पडा।

दूसरे दैत्य ने प्रथम का अनुसरण किया, और यह देखकर सैनिकों ने भस्ममय उन झाडियो को सतकर्ता पूर्वक रेंगते हुए हारसेल की ओर चलना प्रारम्भ कर दिया। सौभाग्य से सडक के सहारे वाली एक खाई के द्वारा वह स्वयं को बचा सका, और इस प्रकार वोकिंग जा पहुँचा। इस स्थान पर उसका वर्णन आकस्मिक हो उठा। स्थान अगम्य था। प्रतीत होता था कि केवल कुछ ही व्यक्ति जीवित रहे हैं, जो सामान्यतः विक्षिप्त हो चुके हैं, और अनेक जल-फुँक चुके हैं। अग्नि ने उसे दूर हटा दिया, और एक भग्न एवं तपती दीवाल में छिप गया, जब कि उसने

मङ्गल के उन दत्यों में से एक को लौटते देखा। इसने उसे एक मनुष्य का पीछा करते, अपने एक लौहवत स्पर्श-ज्ञान-सयुत हाथ से उठाकर उसके सर को एक देवदार वृक्ष से टकराते देखा। अन्त में रात्रि हो जाने पर पैदल सेना ने दौड़ लगायी, और वह रेल के घेरे पर चढ गये।

तब से छिपता एव स्वय को छिपाता, सकट से निकलकर लन्दन पहुचने की आशा में, वह मेबरी की ओर चलने लगा। लोग खाइयो एवं तहखानों में छिपे थे, और जीवित रह जाने वाले अनेक वोकिंग गाँव अथवा सैन्ड की ओर जा चुके थे। वह प्यास से व्याकुल था, जब कि उसने रेलवे आर्क के समीप किसी वाटर-मेन को नष्ट-भ्रष्ट हुआ, और उससे फूट-फूट कर पानी को सडक पर बहते देखा।

यही वह कहानी थी जो मैं अनेक भागों में उससे सुनी थी। जो कुछ भी उसने देखा था, मुझे बताकर एव मुझे उस सबके समझ पाने योग्य बनाने का प्रयत्न करते हुए, वह शान्त हो गया। उसने दोहपर से कुछ भी नही खाया था, जो उसने कहानी के प्रारम्भ में ही मुझे बताया था, मैंने रसोई में उसके निमित्त कुछ भोजन पा लिया, और उसे कमरे मे ले आयी। हमने मङ्गल-निवासियो के ध्यान न आकर्षित करने के भय से कोई प्रकाश नहीं किया, और बार-बार हमारे हाथ रोटी अथवा मास का स्पर्श करते। जब वह बात कर रहा था, हमारे चारों ओर का धुंधलका मद्धिम पड़ गया, और कुचली हुई झाडियाँ एव भग्न गुलाब के पौदे स्पष्ट दीखने लगे। ऐसा प्रतीत होता कि अनेक पशु अथवा मनुष्य घास के उस मैदान से गुजरे हैं। मैं उसके काले अथवा रुक्ष चेहरे को देखने लगा, और निस्सन्देह मेरा भी वैसा ही था।

जब हम भोजन समाप्त कर चुके, बिना आहट किये ऊपर गये, और अपने अध्ययन-कक्ष में पहुँचकर मैंने पुनः खुली खिडकी से बाहर झाँका। एक ही रात्रि मे वह घाटी भस्म के ढेर में बदल चुकी थी। अग्नि-शिखाएँ धीमी पड चुकी थी। जहाँ पहले शिखाएँ थी, वहाँ अब धुएँ की धारियाँ उठ रही थीं, परन्तु असंख्य नष्ट-भ्रष्ट एवं जीर्ण मकान और

खण्ड-खण्ड हुए एवं काले पडे-पडे, जिन्हे रात्रि के आवरण ने छिपा रखा था, ऊषा के निर्मम प्रकाश में क्षीण एव भयानक रूप से चमक उठे। तो भी स्थान-स्थान पर कुछ वस्तुएँ भाग्यवश बच गयी थी—एक स्थान पर एक श्वेत रेलवे सिगनल, और दूसरे स्थान पर एक हरे मकान का भाग—जो उन काले खण्डहरो के मध्य श्वेत एव हरे रूप मे चमक रहे थे। इससे पूर्व के किसी भी युद्ध में विनाश इतना भीषण एवं इतना सार्वभौम नही हुआ था और पूर्व के उगते प्रकाश मे चमचमाते धातुओं के उन दैत्यो में से तीन उस खड्ड के समीप खडे थे, और उनके टोपाकार मुँह चक्राकार गति में घूम रहे थे, जैसे कि वह उस विनाश को नाप रहे हो, जो उन्होने उपस्थित कर दिया था।

मुझे ऐसा लगा कि जैसे वह खड्ड लम्बा-चौडा कर दिया गया था, और बार-बार हरित धूम्र के पिंड उस खड्ड से प्रकाशपूर्ण ऊषा की ओर उठ रहे थे—वह ऊपर उठते, चक्कर काटते, खण्ड-खण्ड होते, और तब विलीन हो जाते।

सामने चोबहम के समीप अग्नि-शिखाएँ लपलपा रही थी। सूर्य की प्रथम किरणो का स्पर्श करते ही वह रक्त वर्ण धूम्र के खम्भ से प्रतीत होने लगे।

१२

वीब्रिज और शेपर्टन का विनाश

जैसे ही सूर्योदय होने लगा, हम उस खिडकी से हट गये, जिससे कि हम मंगल-निवासियो को देख रहे थे, और बिना शब्द किये नीचे उतर गये।

वह सैनिक मेरे इस विचार से सहमत हो गया कि वह मकान हमारे ठहरे रहने योग्य न था। उसने लन्दन की ओर चलने का प्रस्ताव किया, जहाँ वह अपनी अश्व-सेना की बारह नम्बर वाली बैटरी मे सम्मिलित हो जायगा। मेरी योजना तुरन्त ही लैदरहैड लौट जाने की थी, और मगल-निवासियो की शक्ति ने मुझे ऐसा प्रभावित किया था कि मैने अपनी पत्नी के साथ देश को छोडकर न्यू हेवन चले जाने का निश्चय कर लिया था, कारण कि मै स्पष्ट रूप से समझ चुका था कि लन्दन का समीपवर्ती भाग भीषण विनाशकारी युद्ध का क्षेत्र बन उठेगा, इससे पूर्व कि इनके समान जीवो को नष्ट कर दिया जाय।

जो कुछ भी हो, हमारे और लैदरहैड के मध्य, इन दैत्यो द्वारा आरक्षित, तीसरा सिलण्डर पडा हुआ था। यदि मै अकेला होता, तो मैं मैदानी भाग से जाने का आयोजन करता। परन्तु सैनिक ने मेरे इस विचार को रोक दिया "किसी भी सुयोग्य पत्नी पर यह कोई करुणा नहीं है", उसने कहा, "कि उसे विधवा बना दिया जाय", और अन्त मे उससे विदा होने से पूर्व, मै जंगली मार्ग से उत्तर की ओर चोबहम स्ट्रीट तक जाने को सहमत हो गया। वहाँ से मै लैदरहैड पहुँचने के निमित्त एप्सम से एक चक्करदार मार्ग का अनुसरण करता।

मै तुरन्त ही चल दिया होता, परन्तु मेरा साथी सेना मे रह चुका था, और इस विषय मे मुझसे अधिक जानता था। उसने मुझे मकान मे एक बोतल खोज निकालने को कहा, जिसे उसने व्हिस्की से भर लिया, और प्रत्येक प्रस्तुत जेब को बिस्कुटो तथा मास के टुकडो से ठसाठस भर लिया। तब हम मकान से रेंगकर निकले, और फिर सम्पूर्ण शक्ति के साथ उस जीर्ण-शीर्ण ढलुवाँ सडक पर दौडे, जिससे होकर मै रात को लौटा था। मकान निर्जन दिखाई पडते थे। सडक पर तीन भस्म शरीर एक दूसरे के समीप पडे हुए थे, जो अग्नि-किरण द्वारा नष्ट किये गये थे, और यहाँ-वहाँ वह वस्तुएँ पड़ी थी, जिन्हे लोग भागते में गिराते गये थे—एक चोगा, एक स्लीपर, एक चाँदी का चम्मच, और इसी प्रकार

की सामान्य वस्तुएँ। पोस्ट-ग्राफिस के समीप के ऊपरी मोड़ पर एक अश्व-हीन छोटी गाडी, जिस पर सन्दूक और मेज कुर्सियाँ इत्यादि लदी थी, एक पहिये के ऊपर झूल रही थी। एक कैश-बक्स शीघ्रतापूर्वक खोला गया था, और मलवे के नीचे फेक दिया गया था।

केवल अनाथालय को छोड़ कर, जो इस समय भी जल रहा था, इस स्थान के मकानो को कोई भीषण क्षति नही पहुँची थी। मकानो की ऊपरी चिमनियो को नष्ट करती अग्नि-किरण शेष को सुरक्षित छोड गया थी। तो भी हम लोगो के अतिरिक्त मेबरी पहाडी के इस स्थान मे अन्य कोई जीवित आत्मा प्रतीत नही हो रही थी। निवासियो की बहुसख्या, जहाँ तक मै समझता हूँ, पुराने वोकिंग वाली सडक से बच निकले थे—वही सडक, जिसका अनुसरण मैने किया था। जब मै लैदरहैड को गया था, वह लोग छिप चुके थे।

हम उस काले वस्त्रो वाले मनुष्य के समीप से नीचे गली मे उतर गये, जो रात्रि के ओलो के कारण भीगा हुआ था, और पहाडी के तले के समीप जगली मार्ग पर पहुँच गये। हम इसी मार्ग पर आगे बढते रेल की ओर बिना किसी भी जीवित आत्मा से भेट किये चलते गये। लाईन के सहारे वाले जगल धब्बोदार एव भस्मीभूत खण्डहैर-से हो रहे थे, अधिकतर वृक्ष गिर पडे थे, परन्तु तो भी उनकी एक प्रचुर सख्या अभी खडी थी—उदासीन-से भूरे डंठल, जिनकी शाखाओ के कुंजो का वर्ण हरे के स्थान पर गहरा भूरा था।

हमारी ओर वाले स्थान पर अग्नि ने समीपवर्ती वृक्षो को झुलसा देने के अतिरिक्त अन्य कोई भीषण क्षति नही की थी, अपना आधिपत्य जमाने मे वह नितान्त असफल रही। एक स्थान पर शनिवार को जगल के श्रमिक कार्य-रत रहे थे; काटे तथा छाँटे हुए वृक्ष साफ़ किये हुए स्थान पर पडे थे, जहाँ पर इजिन तथा आरा मशीन से गिरे हुए बुरादे के ढेर लगे थे। समीप ही एक काम-चलाऊ झोपडी निर्जन पड़ी थी। इस प्रात वायु मे कोई कम्पन न था, और सभी कुछ विलक्षण रूप से शान्त

था। चिडियाँ भी निस्तब्ध थी, और जैसे हम शीघ्रता से आगे बढ रहे थे, मै और सैनिक परस्पर फुसफुसाकर बाते करते, तथा बार-बार अपने कन्धो से इधर-उधर झाँकते बढ़ रहे थे। एक-आध बार हम कुछ सुन पाने के निमित्त रुके।

कुछ समय पश्चात्, जब हम सडक के समीप आये, और जैसे ही हमने ऐसा किया, हमने घोडो की टापो की ध्वनि सुनी, और पेडो के ठूँठो के मध्य से झाँककर तीन सैनिको को देखा, जो मन्द गति से वोकिंग की ओर जा रहे थे। हमने उन्हे पुकारा, और जब हम उनकी ओर दौडे, वह रुक गये। वह एक लैफ्टीनेन्ट तथा प्रायवेट अष्टम हुसार्स सेना के सैनिक थे, जिनके पास कोण नापने के यत्र के समान कोई वस्तु थी, जो उन्होने बताया हेलियोग्राफ था।

"तुम पहले मनुष्य हो जिन्हे मैने प्रात· इस ओर जीवित आते देखा है", लेफ्टिनेण्ट ने कहा। "क्या हो रहा है ?"

उसकी वाणी एव मुख उत्सुकता से भरा हुआ था। उसके पीछे के सैनिक हमें उत्सुकतापूर्वक घूर रहे थे। मेरे साथ का सैनिक झपटकर सड़क पर कूद पड़ा और उसने सैनिक अभिवादन किया।

"तोप कल रात्रि नष्ट हो गयी सर ! छिप रहा था। बैटरी से पुन· मिलने का प्रयत्न कर रहा था, सर। आप मंगल·निवासियो को देख सकेंगे, मैं समझता हूँ, इसी सडक पर आधा मील बढने पर।"

"वह कैसे हैं ?" लेफ्टिनेण्ट ने प्रश्न किया।

"लौह कवच मे सुरक्षित दैत्य। सौ फीट ऊँचे। तीन पैर एव दैदी-प्यमान शरीर, जिस पर एक टोपे में छिपा विशाल मस्तिष्क है श्रीमान !"

"बको मत", लेफ्टिनेण्ट ने कहा, "कैसी पागलपन की बात है !"

"आप स्वयं देख लेंगे सर। उसके पास एक बाक्स है, जो अग्नि-वर्षा करता है, और नष्ट कर डालता है।"

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है—कोई बन्दूक ?"

"नही श्रीमान् !" और सैनिक ने अग्नि-किरण पर विस्तृत वर्णन प्रारम्भ कर दिया। लेफ्टिनेन्ट ने उसे बीच में रोक दिया, और मेरी ओर देखने लगा। मै इस समय तक सडक के किनारे ही खड़ा था।

"क्या तुमने उसे देखा है ?" लेफ्टिनेंट ने कहा।

" यह सब बिल्कुल ठीक है," मैंने उत्तर दिया।

"ठीक है," लेफ्टिनेंट ने कहा, "मैं समझता हूँ कि उसे देखना मेरा कर्तव्य भी है। देखो," सैनिक से उसने कहा—"हम यहाँ लोगो से मकान खाली कराने मे फँसे हैं। अच्छा हो कि तुम आगे आकर बिग्रेडियर-जनरल मारविन से भेट करो, और जो कुछ भी तुम जानते हो उन्हे बताओ। वह जीवित हैं। क्या जानते हो ?"

"मै जानता हूँ," मैने कहा; और उसने अपना घोड़ा दक्षिण की ओर मोड दिया।

"आधा मील ?" उसने कहा।

"अधिक से अधिक," मैने उत्तर दिया, और दक्षिण की ओर के वृक्षो की चोटियो की ओर सकेत किया। उसने मुझे धन्यवाद दिया और घोडो को बढा दिया, और हमारी दृष्टि से ओझल हो गये।

आगे बढकर हमारी भेंट सडक पर तीन महिलाओं, और दो बालको से हुई, जो एक श्रमिक की झोपडी साफ करने में व्यस्त थे। उनके पास एक हाथ-ठेला था, और वह उसे गन्दे बण्डलो और मेज-कुर्सियो से भर रहे थे। वह सभी अपने कार्यों में इतने व्यस्त थे कि हमसे वार्तालाप का कोई प्रश्न ही नही उठा, और हम आगे बढ़ गये।

बाइफ्लीट स्टेशन के समीप हम देवदार वृक्षो से बाहर निकले, और हमने देहात को प्रात कालीन प्रकाश मे स्तब्ध पाया। वहाँ हम अग्नि-किरण क्षेत्र के पर्याप्त बाहर थे, और यदि मकान निर्जन न होते, एक दूसरे में ठसाठस भरते मनुष्यो का कोलाहल न होता, और यदि रेलवे के ऊपर वोकिंग की ओर की लाइन को झाँकते सैनिको का झुण्ड न होता, तो दिन अन्य रविवारो की भाँति सामान्य दीख पडता।

कुछ फार्म-वैगन और गाड़ियाँ खडखडाहट की ध्वनि करती एडल्सटन वाली सडक पर जा रही थी, और सहसा एक खेत के गेट पर एक चरागाह के परे, हमने छ ट्वएल्व-पाउडर्स को देखा, जो समानान्तर दूरी पर वोकिंग की ओर मुँह किये खडे थे। आज्ञा की प्रतीक्षा करते तोपची लोग तोपो के समीप खडे थे, और बारूद-गोलो के ठेले कार्यशील रूप मे पर्याप्त दूरी पर थे। सभी कुछ इस प्रकार था जैसे कि निरीक्षरा के लिये तत्पर हो।

"ठीक है।" मैने कहा, "कुछ भी हो, उनके निशान ठीक रहेगे।"

सैनिक द्वार पर कुछ झिझका।

"मै चला जाऊँगा", उसने कहा।

आगे वीब्रिज की ओर, ठीक पुल के ऊपर श्वेत जाकेट पहिने सैनिक एक दीर्घ सुरक्षा-पक्ति-सी फैलाये हुए थे, और उनके पीछे और भी तोपे थी।

सैनिक अधिकारी जो कार्य-रत नही थे, खडे थे, और दक्षिरा की ओर वाले वृक्षो की चोटियो को देख रहे थे, और भूमि खोदने वाले लोग भी थोडी-थोड़ी देर बाद उसी दिशा की ओर देख लेते थे।

बाइफ्लीट हलचल से भरा हुआ था, लोग स्थान-स्थान पर भीड लगाये हुए थे; और लगभग बीस हजार, जिनमे कुछ घोडो से उतरे हुए थे, और कुछ घोडो पर सवार, उनको छिन्न-भिन्न करते फिर रहे थे। तीन या चार काली गाडियाँ, जिन पर गोलों के मध्य श्वेत क्रास बने हुए थे, एक पुरानी बस एवं अन्य गाड़ियाँ गाँव वाली सड़क पर भरी जा रही थी। बीसियो लोग वहाँ थे, जिनमें से अधिकतम शरीर पर सुन्दरतम वस्त्र धारण किये हुए थे, प्रदर्शित कर रहे थे कि जैसे वह विश्राम का दिन मना रहे हो। सैनिक उन्हे परिस्थिति की गम्भीरता समझा पाने में महानतम कठिनाई की अनुभूति कर रहे थे। हमने एक झुर्रियो वाले वृद्ध को देखा, जिसके पास बीस या इससे अधिक रग-बिरगे फूलों के फूलदान एक विशाल बक्स मे थे, उस कारपोरल से झगड़ते देखा, जो

उन्हे पीछे रोक रहा था। मै रुका, और रुककर मैंने उसकी भुजा पकड ली।

"क्या तुम जानते हो कि वहाँ क्या है ?" मैंने मंगल-निवासियो को छिपा रखने वाले देवदार वृक्षो की चोटियो की ओर सकेत करते हुआ कहा।

"उँह", उसने मुडते हुए कहा, "मै समझा रहा था कि यह बहु-मूल्य हैं।"

"मृत्यु", मै चिल्ला उठा, "मृत्यु आ रही है ! मृत्यु !" और उसे इस भयानक बात को समझ पाने के लिये छोडकर, यदि वह ऐसा कर सके, मै शीघ्रतापूर्वक उस सैनिक के पीछे बढ गया। कोने में पहुँचकर मैंने पुन पीछे देखा। सैनिक उसके पास से जा चुका था, और वह अभी भी उस बक्स को, जिसके सिरे से वह रग-बिरगे फूल झाँक रहे थे, उठाये खडा था, और संशयपूर्वक वृक्षो के परे टकटकी लगाये देख रहा था।

वीब्रिज में हमे कोई भी नही बता सका कि सैनिक हैड क्वार्टर्स कहाँ स्थापित किये गये थे; वह स्थान ऐसी असंयमता से परिपूर्ण था, जैसी कि मैंने इससे पूर्व किसी भी नगर में नही देखी थी। छकडा-गाड़ियाँ—सवारियो एव घोड़ो की आश्चर्यजनक विभिन्नता। उस स्थान के मान्य लोग, जो गोल्फ एव नौकारोहण के वस्त्रो मे सुसज्जित थे; सुन्दरतम परिधान में सुशोभित रमणियाँ भीड किये हुए थी, नदी तट पर निरुद्देश्य घूमने वाले घुमक्कड, जो तत्परता से सहायता कर रहे थे; बच्चे, जो उत्तेजित दीख रहे थे और विशेष रूप से रविवार के इन विलक्षण-तम विभिन्न एवं विचित्र अनुभवो पर आह्लादित थे। इस सबके मध्य मे आदरणीय पादरी साहसपूर्वक उत्सव मना रहा था, और उसके घण्टे का रव इस उत्तेजना को भेदता गूँज रहा था।

मैंने और उस सैनिक ने, पानी पीने वाले फुहारे की सीढियो पर बठकर, शीघ्रतापूर्वक उस सामान मे से कुछ खाया, जिसे हम साथ लाये थे। सैनिक—कारण यहाँ हुसार नही थे, वरन् श्वेत परिधान मे

ग्रेन्डियर्स—गश्त लगाते लोगों को वापस लौटने अथवा युद्ध प्रारम्भ होते ही अपने स्थानो में छिप जाने का आदेश देते फिर रहे थे। जब हमने रेल का पुल पार किया, हमने देखा कि बढती हुई एक भीड़ रेलवे स्टेशन के भीतर और बाहर एकत्रित हो रही है, और भीड-भाड से भरता हुआ वह प्लेटफार्म बक्सों और सामानो से पटा पड़ा था। सामान्य मार्ग, मै समझता हूँ, चर्टसी की ओर वाले सैनिक दस्तो और तोपो को मार्ग देने के कारण रुँध-सा गया था, और बाद में मैंने सुना कि उन स्पेशल गाड़ियो में, जो एक घण्टा बाद छोड़ी गयी, स्थान पाने के लिये बर्बरता-पूर्ण संघर्ष भी हुआ था।

हम मध्याह्न तक वीब्रिज में रहे, और उसी समय हमने स्वयं को शेपर्टन लाक के समीप पाया, जहाँ वी और टेम्स नदियाँ परस्पर मिलती हैं। वी का मुहाना त्रिकोणाकार है, और इस स्थान पर नौकाएँ किराये पर ली जाती हैं, और एक दीर्घ नौका नदी के पार दीख पड़ रही थी। शेपर्टन की ओर एक सराय थी, जिसके समक्ष एक लान था, और उससे परे शेपर्टन-चर्च की टावर—जिसके स्थान पर एक आवर्त लगा दिया गया था—वृक्षो के ऊपर चमक रही थी।

यहाँ हमने भागने वालो का एक उत्तेजित एवं कोलाहलशील समूह पाया। इस समय तक पलायन ने अव्यवस्था का रूप धारण नही किया था, परन्तु वहाँ इस समय तक इतने अधिक लोग थे, जिन्हे इधर-उधर तैरती वह नौकाएँ पार नही कर सकती थी। भारी बोझो से हाँफते लोग आ रहे थे, एक दम्पति इस समय भी मकान के बाहर प्रयोग किये जाने वाला द्वार पकडे ले जा रहे थे, जिस पर गृहस्थी में प्रयोग किये जाने वाली असंख्य वस्तुएँ लदी थी। एक व्यक्ति ने हमें सूचित किया कि वह शेपर्टन स्टेशन से बाहर निकल जाने का प्रयत्न कर रहा है।

लोग कोलाहल कर रहे थे, और एक व्यक्ति परिहास भी कर रहा था। यहाँ के इन लोगो का विचार था कि मगल-निवासी केवल भयानक मानव हैं, जो नगर पर आक्रमण कर लूट-पाट कर सकते हैं, अनिश्चित

रूप में अन्ततः स्वयं विनष्ट हो जाने के निमित्त ही। हतोत्साहित भाव से लोग बार-बार वी के परे चर्टसी वाले चरागाह की ओर देख लेते थे, परन्तु वहाँ सभी कुछ शान्त था।

टेम्स के पार, केवल उस स्थान के अतिरिक्त, जहाँ नावे घाट पर लगती थीं, सभी कुछ सरे के ओर की स्पष्टत प्रतिभासित होने वाली विभिन्नता की तुलना में शान्त था। वहाँ उतरने वाले लोग नीचे गली की ओर पैदल चले जा रहे थे। उस दीर्घ नौका ने अभी एक यात्रा की थी। तीन या चार सैनिक सराय के समक्ष लान पर खडे, भागने वालों को घूरते एव परिहास करते, किसी भी सहायता के भाव का प्रदर्शन न करते-से खडे थे। सराय बन्द हो चुकी थी, कारण कि अब उसके बन्द होने का निर्धारित समय हो चुका था।

"वह क्या है ?" एक मल्लाह चिल्लाया, और "चुप रह मूर्ख" एक मनुष्य ने एक भूँकते हुए कुत्ते से कहा। तब वह ध्वनि पुनः सुनाई पड़ी, एक दबे हुए धमाके की ध्वनि—एक तोप की गड़गड़ाहट।

युद्ध प्रारम्भ हो रहा था। तुरन्त ही नदी के पार हमारे दाहिने हाथ की ओर अदृश्य बैटरियो के चलाने की ध्वनि—अदृश्य, कारण कि वह वृक्षो के पीछे थी—उस ध्वनि में मिल गयी, जो एक दूसरे के पश्चात् भीषण अग्नि-वर्षा कर रही थी। एक नारी चीत्कार कर उठी। प्रत्येक मनुष्य युद्ध के आकस्मिक प्रारम्भ से, जो हमारे इतने समीप था, परन्तु साथ ही अदृश्य मन्त्र-मुग्ध-सा हो गया। फैले हुए 'चरागाहें' जिनमे इन सबसे पूर्णत : उदासीन गाएँ चर रही थी, और ऊष्ण सूर्य में चाँदी की भांति चमकते सरपत के श्वेत ठूँठों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी देखा नही जा सकता था।

"सैनिक उन्हे रोक देंगे" मेरे पीछे की एक नारी ने संशय-युक्त स्वर मे कहा। वृक्षो की चोटियो के ऊपर एक धुँधलका-सा छा गया।

तब सहसा हमने सुदूर नदी तट पर ऊपर की ओर उठता धुएँ का प्रवाह देखा, जो ऊपर वायु मे हिलता रहा और वही पर रुकता-सा

दृष्टिगोचर हुआ, और साथ ही पैरो के नीचे की भूमि हिलती-सी प्रतीत हुई। एक भीषण विस्फोट ने वायु को कँपा दिया, तथा समीपवर्ती मकानो की दो-तीन खिडकियो को चूर-चूर करते हुए हमें जड़-सा कर दिया।

"वह यहाँ हैं !" नीली जर्सी पहिने एक व्यक्ति चिल्ला उठा। "सामने ! क्या तुम देखते हो ? सामने !"

शीघ्र ही एक के बाद दूसरे, एक, दो, तीन, चार लौह कवच-सयुक्त मगल-निवासी चर्टसी की ओर फैल उस चरागाह के छोटे-छोटे वृक्षो के ऊपर नदी की ओर फलाग लगाते दिखाई पड़े। प्रारम्भ में वह छोटी-छोटी टोपीदार वस्तुएँ-सी प्रतीत हुई, जो लुढकती हुई चिड़ियो के समान गति से जा रही थी।

तब वक्राकार गति से हमारी ओर बढती पाँचवी दिखाई पडी। उनकी कवच-संयुक्त देह सूर्य के प्रकाश में चमचमा रही थीं, जब कि वह उन तोपो के उपर शीघ्रतापूर्वक झपटते हमारी ओर बढते चले आ रहे थे, और अधिक विशाल प्रतीत होते थे, जैसे-जैसे वह हमारे समीप आ रहे थे। हमारी बायी ओर वाले एव हमसे दूरतम ने वायु में एक विशाल केस उछाला, और प्रेतवत् भयानक वह अग्नि किरण, जिसका दर्शन मै शुक्रवार की रात्रि को कर चुका था, चर्टसी की ओर झपटी, और उस नगर को ध्वस्त कर दिया।

इन विलक्षणतम्, द्रुतगामी एवं भयानक जीवो के दर्शन पर, जल के तटवर्ती वह समूह मुझे एक क्षण के लिए भय से जड-सा प्रतीत हुआ। वहाँ चीत्कार अथवा कोलाहल के स्थान पर शान्ति थी। तब एक अस्फुट भनभनाहट एवं पैरो की ध्वनियाँ—पानी से छपछपाहट की ध्वनि। एक मनुष्य, जो नितान्त भयभीत होने के कारण अपने कन्धे पर रखे बोझे को सम्हाल पाने में असमर्थ था, पीछे को लुढ़का, और अपने बोझे से धकेलकर मुझे अलग गिरा दिया। एक नारी ने मुझ पर अपने हाथो से प्रहार किया, और भागती हुई परे निकल गयी। लोगो के भागने के कारण, मैं भी पीछे मुडा, परन्तु मुझ पर किसी भी विचार-जन्य भय

का अधिकार न था। भयानक अग्नि-किरण मेरे मस्तिष्क में थी। पानी के नीचे छिपना! यही उपाय था।

"पानी के नीचे," मैं बिना सुने जाने के विचार से चिल्ला उठा।

मैंने पुन चारो ओर देखा, और निकट वाले मगल-निवासियो की ओर दौड़ा—सीधे ककडो वाले किनारे पर झपटता सर तक पानी मे घुस गया। दूसरो ने भी ऐसा ही किया। मनुष्यो से भरी एक नौका पीछे लौटी, और जैसे मै पीछे झपट रहा था, वह नीचे कूदने लगे। मेरे पैरो के नीचे के पत्थर कीचड से भरे और रपटनदार हो रहे थे, और नदी इतनी उथली थी कि लगभग बीस फीट तक मै कमर तक ही जल पा सका। तब, जब कि मगल-निवासी मेरे ऊपर कठिनाई से कुछ गज ही था, मैंने स्वय को उछलकर नीचे गिरा दिया। नौका से जल मे कूदते लोगो की ध्वनियाँ बादलो की गडगडाहट के समान मेरे कानो मे गूँज रही थी। शीघ्रतापूर्वक लोग नदी के दोनो तटो पर उतर रहे थे।

परन्तु मगल के उस यत्र ने इस ओर भागते लोगो पर कोई ध्यान नही दिया, ठीक उसी प्रकार जैसे कि कोई मनुष्य चीटियो की अव्यवस्था पर देता है, जब कि उसका पैर उनके छत्ते से टकरा जाय। दम घुटने पर जब मैंने अपना सर पानी के ऊपर उठाया, मगल के उन यत्रो का लक्ष्य, उन बैटरियो की ओर था, जो नदी के पार इस समय तक गोलियाँ बरसा रही थी, और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने उस वस्तु को ढीला कर दिया, जो अग्नि-किरण को जन्म देता था।

दूसरे ही क्षण वह नदी के तट पर था, और एक ही फलाग मे उसने आधा मार्ग पूरा कर लिया। दूरतम तट पर उसके सामने के पैर मुडे, और दूसरे ही क्षण उसने स्वयं को अपनी पूरी ऊँचाई पर उठा लिया, और वह शेपर्टन गाँव के समीप था। साथ ही वह छः तोपे, जो सभी के ज्ञान से परे सीधे हाथ वाले तट की ओर, गाँव की बाहरी सीमा के पीछे छिपी खडी थी, गरज उठी। समीपवर्ती इस धक्के एवं दूसरे यंत्र के प्रथम के समीप आने से मेरा हृदय काँप गया। यह दैत्य इस

समय अग्नि-किरण को जन्म देने वाले उस केस को ऊपर उठा रहा था, जैसे ही प्रथम गोला हुड से छः गज पर फूटा।

आश्चर्य से मै चीत्कार कर उठा। शेष चारो दैत्यो के संबध मे मैने न कुछ देखा और न सोचा। मेरा ध्यान समीपतम घटना पर केन्द्रित था। फिर दो अन्य गोले उस यंत्र के समीप वायु में फटे, जैसे ही वह हुड उनका स्वागत करने एव चौथे गोले के लक्ष्य को संभ्रमित करने को इधर-उधर घूमा।

यह गोला उस यंत्र के ठीक समीप फटा। वह हुड फैला, चमका और दर्जनो चमचमाती धातु एव लाल मास की धज्जियो में खंड-खड हो गया।

"मारो," मैं चीत्कार एव आह्लाद के मध्यवर्ती किसी स्वर मे पुकार उठा।

अपने चारों ओर जल मे घुसे व्यक्तियो से मैंने अपने समर्थन में आने वाली पुकारें सुनी, उस सामयिक आह्लाद में मैं पानी से बाहर उछल आया होता।

एक मदमत्त दैत्य के समान शिरच्छेद किया हुआ वह दैत्य लड़खड़ाया, परन्तु गिरा नही। एक चमत्कारिक रूप से उसने अपना सतुन्लन ठीक कर लिया, और अपनी गति का ध्यान न करते हुए, और उस कैमरा-सी वस्तु को ऊपर उठाए हुए, जिससे अग्नि-किरण जन्म पाती थी, द्रुतगति से चक्कर काटता हुआ वह शेपर्टन की ओर बढ गया। उसमें जीवित बुद्धि वाला वह मगल-निवासी नष्ट हो चुका था, और आकाश की चारो दिशाओ वाली वायु उसे झुला रही थी, तथा वह वस्तु अब केवल धातु का एक दुर्गम यंत्र के समान ही थी, जो विनाश के निमित्त कटिबद्ध इधर-उधर चक्कर काट रही थी। बिना किसी नियन्त्रण के वह एक सीधी रेखा मे बढा। वह शेपर्टन-चर्च की टावर से टकराया, और उसे ध्वस्त कर दिया, जैसा कि एक तोप के गोले ने किया होता, तब वह एक

ओर को मुडा, भटकता हुआ आगे बढा, एक भयानाती थी। समीप-
मेरी दृष्टि से परे किसी स्थान पर नदी में गिर पडा। ा कर रहे थे,

एक भयानक विस्फोट ने वायु-मण्डल को कँपा दिया, आग इधर से एक फुहारा, वाष्प, कीचड एव नष्ट-भ्रष्ट धातु के खड दूर तक आ उडते दिखाई पडे। जैसे ही कि अग्नि-किरण वाला यत्र जल से टकराया, जल असंयत रूप से वाष्प का रूप धारण करने लगा। दूसरे ही क्षण, एक प्रचण्ड ज्वार-भाटे के समान विशाल लहर जो खौलती हुई-सी थी, ऊपरी धारा की ओर आयी। मैंने लोगो को तट की ओर संघर्ष करते पाया, और उनके चीत्कारो एवं कोलाहल को मगल वाले उस यत्र के गिरने के धमाके के मध्य सुना।

उस क्षण मैंने गर्मी एव आत्मरक्षार्थ किये जाने वाले सघर्ष पर कोई ध्यान नही दिया। लगभग आधा दर्जन जन-हीन नौकाएँ लहरो की इन हलचलों के मध्य इधर-उधर आलोडित हो रही थीं। गिरा हुआ मंगल का वह अस्त्र नीचे वाली धारा में दृष्टिगोचर हुआ, जो धारा के आर-पार पड़ा हुआ था, और जिसका अधिकाश भाग जल-मग्न ही था।

ध्वस्त यन्त्र से वाष्प की धाराएँ उठ रही थी, और बवंडर के रूप मे उठते हुए पानी के ढेरो के मध्य, मैंने कुछ समय पश्चात् तथा अस्पष्ट रूप में उस विशाल यंत्र के अगो को पानी को मथते और जल एव कीचड को उछाल कर फेकते देखा। उनके स्पर्श-ज्ञान-संयुत पिण्ड किन्ही जीवित भुजाओ की भाँति इधर-उधर हिल रहे थे, और केवल इन गतियो की असहाय उद्देश्यहीनता से ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे कोई घायल शरीर लहरों के मध्य, जीवन के निमित्त संघर्ष कर रहा हो। किसी गुलाबी भूरे वर्ण का तरल पदार्थ कोलाहल की ध्वनि के साथ फुहारो के रूप में ऊपर वायु में निकल रहा था।

इस दृश्य से मेरा ध्यान किसी चिल्लाहट से भग हुआ, जो हमारे व्यावसायिक नगरो के साइरन की ध्वनि से मिलती-जुलती थी। नाव को खीचकर ले जाने वाले मार्ग में घुटनो पानी में खडा एक व्यक्ति मेरी ओर

को अस्पष्ट रूप में चिल्लाया और सकेत किया। पीछे देखने पर, मैंने अन्य यत्रो को दैत्यो के समान फलाग लगाते चर्टसी की ओर नदी के ढाल की ओर आते देखा। इस बार शेपर्टन की तोपे व्यर्थ ही गोले बरसाती रही।

इस पर मैंने तुरन्त ही पानी मे गोता लगाया, और जब तक मै दम साध सका, कष्टपूर्वक पानी के भीतर ही आगे बढने का प्रयत्न करता रहा। मेरे चारो ओर के पानी में हलचल थी, और वह शीघ्रतापूर्वक गर्म हो रहा था।

जब मैंने श्वास लेने और आँखो पर से बाल और पानी हटाने के लिये सर बाहर निकाला, वाष्प एक चक्राकार श्वेत कोहरे के रूप में ऊपर उठ रही थी, जिसने पहले ही मगल के उन यत्रो को दृष्टि से पूर्णत. छिपा लिया। कोलाहल कर्ण-बधिर था। तब धूमिल रूप में मै उन्हे देख सका, भूरे वर्ण के विशाल आकार, जो कोहरे के कारण और अधिक गहरा हो गया था। वह मेरे ऊपर से निकल चुके थे, और उनमें से दो अपने साथी के झाग देते हुए, बवडर-युक्त ध्वस्त के ऊपर रुके हुये थे।

तीसरा और चौथा उनके पीछे पानी मे खड़ा था, एक जो मुझसे शायद दो सौ गज की दूरी पर था, और लालेहम की ओर। अग्नि को उत्पन्न करने वाले हुड पर्याप्त ऊँचे उठे हुए थे, और हिस्-हिस् की ध्वनि करती किरणे कभी इधर कभी उधर बरस उठती।

वायु ध्वनियो से परिपूर्ण थी, श्रवणेन्द्रिय को बधिर कर देने वाला कोलाहलो का सघर्षण, मंगल के यत्रो की घडघडाहट, गिरते हुए मकानों की चरचराहट, गिरते वृक्षो, बाडों, खपरैलों के धमाके, जो ज्वाल-पुंज में परिवर्तित हो रहे थे, और अग्नि की कड़कड़ाहट। नदी से उठने वाली वाष्प से मिलने के निमित्त गहन एवं काला धुँआ उठ रहा था, और वीब्रिज के ऊपर जैसे कि अग्नि-किरण इधर से उधर जाती थी, उसकी गति का पता उन श्वेत तीव्र प्रकाश-युक्त चमकों से चलता था, जो एक

साथ उग्र ज्वालाओं के धूम्रमय नृत्य में परिवर्तित हो जाती थी। समीप-तम मकान इस समय सुरक्षित खडे अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, छायावृत्त, अस्पष्ट एव वाष्प से धूमिल, जिसके पीछे अग्नि-किरण इधर से उधर जा रहा थी।

एक क्षण तक शायद मै खडा रहा, लगभग खौलते हुए पानी मे छाती तक डूबा, अपनी अवस्था पर जड-मूर्तिवत्, बच निकलने की आशा से निराशित। वाष्प के मध्य मैने उन लोगो को देखा जो मेरे साथ थे, और अब सरकडो के बीच पानी से निकलने का यत्न कर रहे थे, उन मेढको के समान, जो किसी मानव को आता देख घास पर रेगते है, अथवा पूर्ण नैराश्य के साथ नाव को खेचने वाले मार्ग मे इधर-उधर दौड रहे थे।

तब सहसा अग्नि-किरण की यह श्वेत चमक मेरी ओर झपटी। उसके स्पर्श से चटखने वाले मकान पीले हो जाते थे, और अग्नि उगलने लगते, वृक्ष एक गर्जन के साथ लपटें छोडने लगते। नौका को खीचने वाले मार्ग पर ऊपर नीचे चमकती यह किरणे इधर-उधर भागने वाले लोगो को निगलती पानी के किनारे उस स्थान तक आ जाती, जो उस स्थान से, जहाँ मै खडा था, पचास गज दूर भी नही था। नदी को पार करती वह शेपर्टन की ओर गयी, और उनके स्पर्श वाले मार्ग का जल खौलते हुए चक्राकार में ऊपर उठने लगा, जिसके ऊपर वाष्प का शिखर-सा था। मै तट की ओर दौड़ा।

दूसरे ही क्षण वह विशाल लहर, खौलने वाले बिन्दु के समीप, मुझ पर झपट चुकी थी। मै ऊँचे स्वर में चीत्कार कर उठा, और झुलस गया, आधा अन्धा एव पीडा-युक्त, मै उछलते और हिस्-हिस् करते जल से तट की ओर भागा। यदि मैं ठोकर खा गया होता तो मेरा अन्त हो जाता। उस चौड़े एव कंकरीले मार्ग पर जो नीचे की ओर जाकर वी और टैम्स नदियो का कोण निर्धारित करता है, मंगल-निवासियों की

समग्र दृष्टि के समक्ष होने पर मैं असहायता की अनुभूति करने लगा। मृत्यु के अतिरिक्त मुझे कोई अन्य प्रतीक्षा न थी।

मगल के एक यन्त्र के अपने सर के ऊपर लगभग बीस गज से भी अधिक आने की मुझे धुँधली-सी स्मृति है, जो उस ककरीले मार्ग पर आगे बढ रहा था, इधर-उधर चक्कर काटता और पुनः ऊपर उठता; एक दीर्घ उत्तेजना, और तब उन चारो को अपने साथी का ध्वंसावशेष अपने मध्य ले जाते, कभी स्पष्ट और कभी धूम्र-आवरण से धूमिल, अनवरत रूप से पीछे हटते, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ, नदी एव चरागाह के परे अनन्त शून्य में। और तब, बहुत धीरे-धीरे मैं समझ सका कि मैं किसी चमत्कार के द्वारा बच गया हूँ।

१३
पादरी का साथ कैसे हुआ

पारलौकिक अस्त्रो के विषय में इस आकस्मिक पाठ को पढ़ाकर मंगल-निवासी हारसेल कामन वाली अपनी पूर्व स्थिति पर लौट गये, और प्रत्यावर्तन की शीघ्रता एव अपने ध्वस्त साथी के भार से बोझिल होने के कारण, निस्सन्दिग्ध रूप में वह मुझ जैसे एक-दो शिकारो को छोड़ते गये। यदि उन्होने अपने साथी को छोड दिया होता, और अपने मार्ग पर आगे ही बढ़ गये होते, उस समय उनके, और लन्दन नगर के मध्य बैटरियो और 'टुएल्व-पाउंडर' तोपो के अतिरिक्त अन्य कुछ न था, निश्चित रूप में वह अपने आगमन की सूचना से पूर्व ही वहाँ पहुँच गये होते; उनका आगमन उतना ही आकस्मिक, भयानक एवं विनाश-

कारी होता जैसा कि वह भूकम्प, जिसने एक शजिन की एक पंक्ति एक को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था।

परन्तु उन्हे कोई शीघ्रता न थी। अपनी नक्षत्रो के भ्रा-हारा था मे एक के पश्चात् दूसरा सिलण्डर आता रहा; प्रत्येक चौबीस घेरे भय निमित्त नयी कुमुक ले आते थे। और इसी बीच स्थल एवं जल-५। के अधिकारी, जो अपने विरोधियो की अपरिमित शक्ति के प्रति पूर्णत जागरूक थे, उग्रतम रूप मे क्रियाशील थे। प्रत्येक मिनिट एक नयी तोप अपनी स्थिति सम्हाल लेती और सन्ध्या से पूर्व प्रत्येक झाड़ी एव किंग-स्टन और रिचमण्ड के पहाडी ढालो का मध्यवर्ती प्रत्येक मकान एक काली, प्रतीक्षारत तोप के मुँह से परिपूर्ण था। और उस भस्मीभूत एवं निर्जन क्षेत्र मे शायद बीस मील के घेरे में, जो हारसेल कामन पर मगल-निवासियो के घेरे मे पडता था, हरे-भरे पेडो के मध्य, भस्मप्राय: एवं ध्वस्त ग्रामो, काले पडे एव धुआँ देते खम्भो जो एक ही दिन पूर्व हरी-भरी बेलो एवं वनस्पतियो से परिपूर्ण थे, कार्य-रत सैनिक मंगल-निवासियो की प्रगति पर गोलाबारी करने वाले तोपचियो को सावधान करने के निमित्त हेलियोग्राफ लिये रेग रहे थे। परन्तु मंगल-निवासी अब हमारी थल-सेना के आदेशो एव मानव सामीप्य के संकट को पूर्णत समझ चुके थे, और सभी सिलण्डरो के एक मील के घेरे मे बिना अपने जीवन को असुरक्षा में डाले, एक भी मनुष्य निकलने का साहस नही कर रहा था।

ऐसा लगता है कि इन दैत्यो ने मध्याह्न का प्रारम्भिक भाग इधर-उधर जाने, और दूसरे और तीसरे सिलण्डर से—दूसरा जो एडलस्टन-गोल्फ लिक्स और तीसरा पायर्फोर्ड पर था—हारसेल कामन के प्रथम स्थान पर वस्तुओ के स्थानान्तरित करने मे व्यतीत किया। काली झाडियो एव ध्वस्त मकानो के ऊपर, जो दूर तक फैले हुए थे, चौथा एक प्रहरी की भाँति खडा था, जब कि शेष दूसरो ने अपनी विशाल युद्ध की मशीनो को त्याग दिया और खड्ड में उतर गये। वहाँ वह रात गये तक कार्यशील रहे, और हरित वर्ण धूम्र के विशाल शिखर, जो उस स्थान से उठते रहे,

"तुम पिछले घटे भर से पानी माँग रहे हो", उसने कहा ।

एक दूसरे का निरीक्षण करते हुए हम कुछ क्षण तक चुप रहे । मै निश्चिततापूर्वक कह सकता हूँ कि उसने मुझे एक पर्याप्त विलक्षण पुरुष पाया, अपने भीगे पायजामे और मोजो के अतिरिक्त नंगा, झुलसा हुआ और धुएँ के कारण काले मुँह और कन्धो वाला । उसके मुख पर दुर्बलता अकित थी, उसकी चिबुक मुडी हुई थी, उसके बाल घुँघराले हो रहे थे, लगभग सन के ही समान माथे से चिपटे हुए बाल; उसके नेत्र दीर्घ, पीले, नीले और खुले हुए थे । मुझसे परे देखता हुआ वह रह-रह-कर आकस्मिक् रूप मे बोल उठता था :

"यह सब क्या है ?" उसने कहा । "इन सब वस्तुओ का क्या अर्थ है ?"

मै उसकी ओर घूरता रहा, और कोई उत्तर नही दिया ।

उसने एक पतला और श्वेत हाथ आगे बढा दिया और उपालम्भ-भरे स्वर में बोला .

"यह सब क्यो होने दिया जा रहा है ? हमने क्या पाप किये हुए हैं ? प्रात:काल की प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी, मध्याह्न के लिये अपने मन को स्वस्थ करने मै सड़क पर जा रहा था, और तब—अग्नि, भूकम्प एव विनाश ! जैसे कि यह साडम और गोमेरा हो ! हमारा सब काम नष्ट हो गया, सभी काम.... ..यह मगल-निवासी क्या हैं ?"

"हम क्या हैं ?" मैंने गला साफ करते हुए कहा ।

उसने अपने घुटनो को पकड लिया, और मुझे देखने के लिये पुन: मेरी ओर मुडा । शायद आधा मिनिट तक वह मौन भाव से मुझे घूरता रहा ।

"अपने मन को हल्का करने मैं सडक पर घूम रहा था," उसने कहा । "और सहसा अग्नि, भूकम्प एव विनाश !"

वह शान्ति मे खो गया, उसकी ठोडी अब पूर्णत. उसके घुटनो मे छिप चुकी थी ।

अपने हाथो को हिलाते उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया :

"सभी काम—सभी रविवारीय स्कूल ! हमने क्या अपराध किया है वीब्रिज निवासियो ने क्या किया है ? सभी कुछ खो गया, सभी कुछ नष्ट हो गया । चर्च ! हमने उसे केवल तीन वर्ष पूर्व ही बनवाया था । समाप्त—स्थिति से विनष्ट ! क्यो ?"

पुन. एक चुप्पी, और पुनः एक पागल के समान वह बोल पड़ा ।

"उसके जलने का धुआँ सदैव ही ऊपर उठता रहता है !" वह चिल्ला उठा ।

उसके नेत्र जल रहे थे, और एक क्षीण उगली से उसने वीब्रिज की ओर सकेत किया ।

इस समय तक मै उसका निरीक्षण करना प्रारम्भ कर चुका था । उस भयानक दुर्घटना ने, जिसमें वह लिप्त रहा था—स्पष्ट था कि वह कोई वीब्रिज का भगोडा ही था—उसकी बुद्धि को छिन्न-भिन्न कर दिया था ।

"क्या हम सनबरी से अधिक दूर हैं ?" मैंने वास्तविकतापूर्ण स्वर में कहा ।

"हमें क्या करना चाहिए ?" उसने पूछा । "क्या यह जीव सभी स्थानों पर हैं ? क्या समस्त पृथ्वी पर उनका अधिकार हो चुका है ?"

"क्या हम सनबरी से दूर हैं ?"

"इसी प्रात मैंने उत्सव में स्थानापन्न अधिकारी के रूप में काम किया ......"

"ससार बदल चुका है," मैंने धीरे से कहा । "तुम्हे अपना मानसिक सन्तुलन ठीक रखना चाहिए । अभी आशा है ।"

"आशा !"

"हाँ, पर्याप्त आशा—इस सब विनाश के होते हुए भी !"

अपनी स्थिति के सम्बन्ध में मैं उसे अपना दृष्टिकोण समझाने लगा । प्रथम तो वह सुनता रहा, परन्तु जब मै सुनाने में तल्लीन हो गया, उसके

नेत्र पूर्ववत् टकटकी लगाने लगे, और मेरे प्रति उसका आदर टूटने लगा।

"यह प्रलय का प्रारम्भ होना चाहिए," उसने मुझे रोकते हुए कहा। "प्रलय—ईश्वर का महान एव भीषण दिन ! जब मनुष्य पर्वतो और चट्टानो से अपने ऊपर गिरकर उन्हे छिपा लेने के निमित्त प्रार्थना करेंगे—उसकी दृष्टि से छिपाने के निमित्त, जो सिंहासान पर आसीन हैं।"

मैंने स्थिति को समझाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने अपने श्रमपूर्ण तर्क बन्द कर दिये, लड़खडा कर खडे होने का प्रयत्न किया, और उसके ऊपर खडे होकर उसके कन्धो पर हाथ रख लिया।

"मनुष्य बनो," मैंने कहा। "तुम्हारी बुद्धि विचलित हो गयी है। धर्म का क्या महत्व है, यदि वह सक्ट के समय लडखडाने लगे ? विचार करो कि इससे पूर्व के भूकम्पो, बाढो, युद्धो और ज्वालामुखियो ने मानव-संसार को क्या-क्या किया है। क्या तुम्हारा विचार है कि ईश्वर ने वीब्रिज को इस सबसे मुक्त कर रखा है ? ...... वह कोई इन्श्योरेन्स एजेन्ट नही है।"

कुछ समय तक वह जड़-सा हो गया।

"पर हम किस प्रकार बच सकते हैं ?" उसने सहसा प्रश्न किया। "वह अभेद्य हैं वह दया—विहीन हैं,·· ···"

"न पहिली ही बात, और न शायद दूसरी ही," मैंने उत्तर दिया। "और जितने अधिक वह शक्तिशाली हैं, हमे उतना ही विवेकपूर्ण एव सावधान होना चाहिए। उन्हींमे से एक सामने तीन घण्टे पूर्व ही नष्ट कर डाला गया।"

"नष्ट !" उसने चारो ओर घूरते हुए कहा। "ईश्वर के दूत किस प्रकार नष्ट हो सकते हैं ?"

"मैंने ऐसा होते देखा," मैं उसे बताने लगा। "पर संयोगवश हम उस संकट के समक्ष आ पहुँचे हैं, और यही सब कुछ है।"

"आकाश मे वह चमक कैसी है ?" वह सहसा पूछ बठा।

"मैंने उसे बताया कि वह है लियोग्राफ का सिगनलिंग है, और वह

आकाश मे मानव-संसार की सहायता एवं प्रयत्न का द्योतक है।"

"हम उसके मध्य में हैं," मैंने कहा, "उसीकी भाँति शान्त। आकाश की वह चमक घिरते हुए तूफान की सूचना दे रही है। आगे, मैं समझता हूँ मगल-निवासी हैं, और लन्दन की ओर, जहाँ किंगस्टन और रिचमन्ड के समीप वृक्षो का झुण्ड है, तोपे लगी हैं। कुछ ही समय पश्चात् मंगल-निवासी पुनः इसी मार्ग से आयेगे।"

और जैसे ही मैंने यह सब कहा, वह उछलकर खड़ा हो गया, और सकेत से मुझे चुप होने को कहा।

"सुनो!" उसने कहा।

नदी के पार वाली नीची पहाड़ियो से दूर पर गरजती तोपो की गूँज, और एक सुदूरवर्ती कोलाहल सुनायी पडा। तब सभी कुछ शान्त हो गया। एक काक् शेफर (Cock-Chafer) मन्द गति से झाड़ी पर जाता दीख पडा, और आगे बढ गया। पश्चिमी क्षितिज में धुन्धला एवं पीला अर्द्धचन्द्र वीब्रिज एवं शेपर्टन के उठते धुएँ और सूर्यास्त के शान्त एव ऊष्ण वातावरण के ऊपर झाँक रहा था।

"हम इसी मार्ग का अनुसरण करें," मैंने कहा, "उत्तर की ओर।"

१४

लन्दन में

जब मंगल के वह अस्त्र वोकिंग पर गिरे, मेरा छोटा भाई लन्दन में था। वह मेडिकल कालिज का विद्यार्थी था, जो किसी निकटवर्ती परीक्षा के लिये अध्ययन कर रहा था, और उसने मगल-निवासियों के आगमन के सम्बन्ध में शनिवार से पूर्व कुछ भी नही सुना। शनिवार के प्रात -

कालीन पत्रों मे, मगल-लोक और अन्य लोकों में जीवन एवं इसी प्रकार अन्य विषयों के अतिरिक्त एक संक्षिप्त एवं अनिश्चित अर्थ वाला एक तार भी छपा था, जो अपनी संक्षिप्तता के कारण नितान्त दुर्बोध था।

मंगल-निवासियो ने एक भीड के समीप आने से आशंकित होकर, पर्याप्त संख्या मे लोगो को एक शीघ्रता से चलने वाली बन्दूक से मार डाला, और यही कहानी का रूप था। तार का उपसंहार इन शब्दो से होता था "भयानक प्रतीत होने वाले मंगल-निवासी उस खड्ड से, जिसमे वह गिरे थे, बाहर नही निकले हैं, और वास्तव मे वह ऐसा कर पाने मे अशक्त प्रतीत होते हैं। सम्भवत. यह पृथ्वी की अतिरिक्त आकर्षण-शक्ति के कारण है।" इसी अन्तिम आधार पर अग्रगामी लेखको ने अपने लेखो को सुविधापूर्वक विस्तृत किया था।

निस्सन्दिग्ध रूप मे, बायलाजी कक्षा के सभी विद्यार्थी, जिसमें मेरा छोटा भाई उस दिन गया था, इस सब में अत्यधिक रुचिशील थे, परन्तु गलियों में इस विषय पर कोई असाधारण उत्तेजना नही पायी जाती थी। मध्याह्न के समाचार-पत्रों ने इस विषय पर बडे अक्षरो में अनेक समाचार प्रस्तुत किये। कामन पर सेना के पहुँचने एव वोकिंग और वीब्रिज के मध्यवर्ती देवदार के जंगलो के जलने के अतिरिक्त उनके पास देने को अन्य कोई समाचार न था। तब 'सेन्ट जेम्स गजट' ने, एक अतिरिक्त एवं विशेषाङ्क द्वारा, तार-सूचना के छिन्न-भिन्न हो जाने से कटु सत्य को प्रकाशित किया।° परन्तु इसे केवल जले हुए देवदार वृक्षो के तार लाइन के समीप गिरने के कारण ही माना गया। उस रात्रि को युद्ध के सम्बन्ध मे और कुछ भी नही जाना जा सका—मेरे लैदरहैड जाने और लौटने वाली रात्रि को।

मेरे भाई ने हमारे विषय में कोई चिन्ता नही की, कारण कि वह समाचार-पत्र के वर्णन से समझ चुका था कि सिलण्डर हमारे घर से दो मील से भी अधिक दूर था। उसने, जैसा कि वह कहता है, 'उसी रात्रि मेरे पास तक आने, और उनको नष्ट होने से पूर्व ही देखने का निश्चय

कर लिया। उसने लगभग चार बजे मुझे तार दिया, जो कभी भी नही प्राप्त हुआ, और वह सन्ध्या एक सगीत-शाला मे व्यतीत की।

शनिवार की रात्रि को लन्दन में भी मेघो की गडगडाहट का तूफान चलता रहा, और मेरा भाई एक कैब द्वारा वाटरलू पहुँचा। उस प्लेट-फार्म पर कुछ समय प्रतीक्षा कर चुकने के पश्चात्, जहाँ से मध्य रात्रि वाली गाडियाँ बहुधा प्रस्थान करती हैं, उसे मालूम हुआ कि किसी दुर्घटना के कारण गाडियाँ उस रात्रि वोकिंग नही पहुँच रही हैं। दुर्घटना किस प्रकार की है, वह निश्चित न कर सका, वास्तव में रेल के अधिकारी इस विषय में कुछ भी नहीं जानते थे। स्टेशन पर कोई विशेष उत्तेजना न थी, कारण कि अधिकारी-गण इससे अधिक कुछ सोच भी पाने में असमर्थ थे कि बाइफ्लीट एवं वोकिंग जंकशन के मध्य लाइन छिन्न-भिन्न हो गयी है, थ्येटर-गाडियों को, जो सामान्यतः वोकिंग होकर जाती थी, कुछ घुमाकर वर्जिनिया-वाटर अथवा गिल्फोर्ड होकर चला रहे थे। वह साउथम्पटन और पोर्टसमाउथ रविवारीय भ्रमणार्थी गाडियो के मार्गों मे आवश्यक उलट-फेर करने में व्यस्त थे। किसी रात्रि के समाचार-पत्र के संवाददाता ने, मेरे भाई को ट्रैफिक-मैनेजर समझकर, जिससे कि कुछ अंशों में वह मिलता-जुलता है, उससे मिलने की घात में रहा, और उससे भेंट करने का प्रयत्न किया। रेलवे अधिकारियो के अतिरिक्त थोडे ही लोग रेल-मार्ग की इस दुर्घटना का संबंध मंगल-निवासियो से जोड़ पाते थे।

इन्हीं घटनाओ का एक भव्य रूप में वर्णन मैंने पढा है कि रविवार के प्रात समस्त लन्दन वोकिंग के समाचारो से उत्तेजित हो गया था। वास्तव में घटना के इस अतिरंजित रूप का निर्णय करने वाला कोई समुचित कारण नहीं था। लन्दन के अधिकाश मनुष्य मगल-निवासियो के सबध में सोमवार के प्रात होने वाली दुर्घटना से पूर्व कुछ भी नही जानते थे। उनको भी, जो कुछ जानते भी थे, शीघ्रतापूर्वक लिखे गये इन तार-सम्वादो को समझ पाने मे पर्याप्त समय लगा, जो रविवारीय

समाचार-पत्रो में प्रकाशित हुए थे। लन्दन के नागरिको का बहुताश रविवार के समाचार-पत्र नही पढता है।

और व्यक्तिगत सुरक्षा का अभ्यास लन्दन निवासियो के मन मे इतना गहन आरोपित होता है, और समाचार-पत्रो में प्रकाशित होने वाले आश्चर्य-जनक समाचार इतने सामान्य होते हैं कि बिना किसी कँपकँपी के वह पढ़ सके. "कल रात्रि सात बजे के लगभग मगल-निवासी सिलण्डर से बाहर निकले, और धातुओ की ढाल की सुरक्षा में इधर-उधर फिर-कर उन्होने वोकिंग स्टेशन को उसके समीपवर्ती मकानों के साथ पूर्णत: नष्ट-भ्रष्ट कर डाला तथा कार्डीजन रेजीमेन्ट की एक सम्पूर्ण बटेलियन को समाप्त कर दिया। समग्र विवरण अज्ञात है। उनके कवचों को भेद पाने में मेक्सिम पूर्णत. निष्फल सिद्ध हुई, मैदानी तोपो को उन्होने व्यर्थ कर दिया! हवा में उडते हुसार चर्टसी में सरपट दौड़ते रहे। मगल-निवासी मन्द गति से चर्टसी अथवा विण्डसर की ओर बढ़ रहे हैं। लन्दन की ओर उनकी प्रगति को रोकने के लिए अर्थ-वर्क्स ऊपर उठाये जा रहे हैं।" वर्णन, जसा कि 'सण्डेसन' ने दिया, इस प्रकार था, और एक बुद्धि-पूर्ण एव विशेष रूप से तत्पर 'हैण्ड-बुक' लेख ने 'रेफरी' नामक पत्रिका में इस घटना की तुलना किसी भी गॉव की पशु-शाला को एक साथ खोल दिये जाने से की।

लन्दन का कोई भी व्यक्ति आरक्षित मंगल-निवासियों के वास्तविक रूप को नही जानता था, और इस समय भी लोगो के मस्तिष्क में एक विचार दृढ था कि यह मन्दगामी है. 'रेंगते हुए', 'कष्ट पूर्वक रेंगते हुए'—ऐसे ही वर्णन पूर्व की समस्त सूचनाओं में प्रयुक्त किये गये। उनमे से कोई भी तार उनके आगे बढ़ने के प्रत्यक्ष साक्षी द्वारा नही दिया गया था। जैसे-जैसे नूतन समाचार आते गये, रविवारीय पत्रो ने विशेषाक छापे, और कुछ ने बिना किसी समाचार को प्राप्त किये ही। परन्तु मध्याह्न से पूर्व लोगो को बताने योग्य वास्तव में कोई और बात नही थी, जब कि अधिकारियो ने अपनी प्राप्त सूचनाओ को प्रकाशनार्थ प्रस्तुत

नही किया। कहा गया कि वाल्टन एव वीब्रिज के लोग और समस्त जिले भर के लोग लन्दन की ओर विशाल संख्या में बढे चले आ रहे हैं, और यही सब कुछ था।

इस समय तक भी, पूर्व की रात्रि क्या हो चुका है, इससे पूर्णतः अनभिज्ञ मेरा भाई फाउण्डलिंग हास्पिटल वाले गिर्जे में गया। वहाँ उसने आक्रमण के संबंध मे दिये जाने वाले सकेतो को सुना, और शान्ति के निमित्त एक विशेष प्रार्थना हुई। बाहर निकलने पर उसने 'रेफरी' पत्रिका की एक प्रति खरीदी। उसके समाचारो को पढकर वह शकित हो गया, और पुन वाटरलू स्टेशन यह पता लगाने के निमित्त गया कि सूचना के साधन सम्बद्ध हो चुके हैं अथवा नही। बसे, गाडियाँ, साइकिल-सवार एव असख्य पैदल चलते लोग, जो अपने सुन्दरतम वस्त्रों में चल रहे थे, इस विलक्षण समाचार से कठिनता से प्रभावित होते प्रतीत हो रहे थे, जिसे समाचार-पत्र-वाहक चिल्ला-चिल्लाकर फैला रहे थे। लोग रुचि ले रहे थे, अथवा यदि वह शकित थे, तो केवल उन स्थानों के निवासियो के सबध मे ही थे। स्टेशन पर उसने प्रथम बार सुना कि विण्डसर एव चर्टसी की लाइनें अब रोक दी गयी थीं। पोर्टरो ने उसे बताया कि कई विशेष तार प्रातः काल बाइफ्लीट एव चर्टसी स्टेशनो द्वारा प्राप्त किये गये थे, परन्तु सहसा वह बन्द हो गये। मेरा भाई उनसे बहुत ही कम विवरण निकाल पाया। 'वीब्रिज के समीप युद्ध हो रहा है', उनकी सूचना का सारांश था।

गाडियो का यातायात अब छिन्न-भिन्न हो चुका था। लोगों की एक विशाल संख्या, जो दक्षिण-पश्चिमी स्टेशनो से आने वाले मित्रो की प्रतीक्षा कर रही थी, स्टेशन के आस-पास खडी थी। एक भूरे बालो वाले वृद्ध महाशय मेरे भाई के समीप आये, और उन्होने साउथ-वैस्टर्न कम्पनी की कडे शब्दो में भर्त्सना की।

रिचमण्ड, पुटनी और किंगस्टन से दो-एक गाडियाँ उन लोगो को लेकर आयी, जो एक-आध दिन के नौकारोहण के निमित्त गये थे, और उन्होंने तालो को बन्द एव वातावरण में उत्तेजना पायी। नीला और

श्वेत ब्लेजर पहिने एक व्यक्ति मेरे भाई के पास विलक्षण समाचार लेकर आया।

"छिपे-छिपे किंगस्टन से आने वालो का एक विशाल समूह है जिनके पास मूल्यवान वस्तुओ से भरी हुई गाडियाँ और बक्से हैं", उसने कहा। "वह मोलसी, वीब्रिज एवं वाल्टन से आ रहे हैं और वह कहते हैं कि चर्टसी के समीप तोपो की ध्वनियाँ सुनी गयी हैं, भारी गोलबारी, और यह कि अश्वारोही सैनिको ने उन्हे एकदम हट जाने को कहा है, क्योकि मगल-निवासी आ रहे हैं। हमने हैम्पटन-कोर्ट स्टेशन पर तोपें चलती सुनी, परन्तु हमने समझा कि वह मेघों की गर्जन-ध्वनि थी। इस सब गोरख धन्धे का क्या अर्थ है? मंगल-निवासी अपने खड्ड से बाहर नही निकल सकते हैं, क्या वह ऐसा कर सकते हैं?"

मेरा भाई उसे कुछ न बता सका।

बाद में उसे मालूम हुआ कि सकट की अनिश्चित भावना भूमि-गत रेलवे यात्रियों मे भी फैल गयी है, और रविवारीय भ्रमणार्थी समस्त दक्षिण-पश्चिमी भागो—बार्न्स, विम्बिलडन, रिचमण्ड पार्क, क्यू आदि से अस्वाभाविक रूप में जल्दी लौट रहे हैं, परन्तु किसी भी मनुष्य के पास सुनी-सुनायी अनिश्चित बातों के कहने को अन्य कुछ न था। इस विषाक्त फोड़े से सबधित सभी व्यक्ति विक्षोभित थे।

पाँच बजे के समीप स्टेशन की एकत्रित होती भीड़ दक्षिण-पूर्वी एव दक्षिण-पश्चिमी स्टेशनो के मध्य सूचना-लाइन के खुल जाने, और विशाल तोपों तथा सैनिकों से लदे डिब्बों को देखकर अपरिमित रूप से उत्तेजित हो उठे। यह वह तोपें थी जो वूलविच और चैथम से किंगस्टन क्षेत्र को भरनें के निमित्त लायी जा रही थी। इस समय परिहासों का आदान-प्रदान हुआ! "तुम खा लिये जाओगे!" "हम पालने वालों में सर्व श्रेष्ठ हैं!" आदि-आदि। उसके कुछ समय पश्चात् पुलिस वालों का एक दस्ता स्टेशन पर आया, और भीड को प्लेटफार्मों से हटाने लगा, और मेरा भाई पुनः सड़क पर चला आया।

गिर्जे के पवित्र घण्टे सान्ध्य प्रार्थना के निमित्त बज रहे थे, और मुक्ति-सेना की कुमारियों का एक समूह वाटरलू रोड से भजन गाता आ रहा था। पुल पर घुमक्कडो की एक बहुसख्या किसी विलक्षण भूरे रग के फेन को खडाकार रूप में धारा में तिराते हुए देख रही थी। सूर्य अस्त हो रहा था, और क्लाक-टावर तथा पार्लियामेंट हाउसेज कल्पना किये जाने योग्य प्रशान्ततम आकाश के नीचे चमक रहे थे—सुनहला आकाश, जिस पर लाल बैगनी वर्ण के मेघो की दीर्घ तिरछी धारियाँ अंकित थी। वहाँ किसी तैरती वस्तु की चर्चा थी। वहाँ के मनुष्यो में से एक, जिसने बताया कि वह एक आत्मसंयमी था, कहा कि उसने पश्चिम की ओर हैलियोग्राफ की चमक देखी है।

वैलिग्डन स्ट्रीट्र में मेरे भाई की भेट कुछ हट्टे-कट्टे, असभ्य-से दीख पडने वाले व्यक्तियो से हुई, जो उसी समय फ्लीट स्ट्रीट से कुछ भीगे समाचार-पत्र एवं आतकपूर्ण घोषणा-पत्रो को लिये चले आ रहे थे। "भयानक आपत्ति!" वह वैलिग्डन स्ट्रीट में एक दूसरे के प्रति चिग्घाड-सी मारते चिल्ला रहे थे। "वीव्रिज पर युद्ध! पूरे समाचार! मगल-निवासियो का प्रत्यावर्तन! लन्दन सकट की सम्भावना में!" उसे उस समाचार-पत्र की एक प्रति के निमित्त तीन पैसे देने पडे।

और केवल उसी समय वह मगल-निवासियो की सम्पूर्ण शक्ति एव भयावहता के सबध में थोडा-बहुत समझ सका। उसे मालूम हुआ कि वह केवल मुट्ठी भर मन्दगामी जीव नही थे, अपितु वह विशाल यत्रो का सचालन करने वाले मस्तिष्क थे, और वह शीघ्रगति से चल सकते तथा इतने प्रचण्ड वेग से प्रहार कर सकते थे कि शक्तिशाली तोपें भी उनका सामना कर पाने में निष्फल सिद्ध होती थी।

उनके यन्त्रो का वर्णन 'विशाल मकडो के समान यन्त्रों से किया गया था, जो लगभग सौ फीट ऊँचे एव एक एक्सप्रेस गाडी के समान गतिशील थे, और उग्र अग्नि-किरण बरसा सकने योग्य थे।' ढकनेदार बैटरियाँ, जिनमे मुख्यत मैदानी तोपें थी, हारसेल कामन के आस-पास

तथा विशेष रूप से वोकिंग जिले और लन्दन के मध्य के देहातो में लगा दी गयी थी। उनमें से पाँच यन्त्र टेम्स की ओर गतिशील देखे गये थे, और केवल एक भाग्यवश नष्ट कर दिया गया था। और दूसरे स्थानो मे गोले लक्ष्य-भ्रष्ट हो गये, और तोपे तुरन्त ही अग्नि-किरण द्वारा लुप्त कर दी गयी। विशाल सख्या मे सैनिको के नष्ट होने का वर्णन था, परन्तु तो भी उनका दृष्टिकोण आशावादी था।

मगल-निवासी पीछे हटा दिये गये थे, वह अभेद्य नहीं थे। वह वोकिंग के चारो ओर चक्राकार रूप में फैले अपने सिलण्डरो के त्रिकोण में लौट गये थे। हैलियोग्राफ लिये सिगनलर लोग चारो ओर से उनके समीप घिरते आ रहे थे। विण्डसर, पोर्टस्माउथ, एल्डरशाट, वूलविच यहाँ तक कि उत्तर के जिलो से भी तोपे शीघ्रता के साथ लायी जा रही थी, दूसरी तोपो के साथ-साथ वूलविच से पिच्चानवे पाउण्ड वाली तोपे। सब मिलकर, एक सौ सौलह, अपनी स्थिति सम्हाल चुकी अथवा स्थानो पर लगा दी गयी थी, जो मुख्यतः लन्दन नगर को चारो ओर से घेरे थी। इंगलैंड में इससे पूर्व कभी भी सैनिक सामग्रियो का ऐसा विशाल एकत्रीकरण नही हुआ था।

यदि और अधिक सिलण्डर पृथ्वी पर गिरे, तो आशा की जाती थी कि वह प्रचण्ड विस्फोटक पदार्थों द्वारा, जो शीघ्रतापूर्वक प्रस्तुत एवं वितरित किये जा रहे थे, नष्ट कर दिये जायेगे। निस्संदेह समाचार यह था कि स्थिति विलक्षणतम एवं गम्भीर थी, परन्तु जनता को इस त्रास को भुलाने अथवा महत्व न देने को प्रोत्साहित किया जा रहा था। इसमें सन्देह नही कि मंगल-निवासी महानतम रूप में विलक्षण एवं भयावह थे, परन्तु बाह्य रूप में वह हमारी अपेक्षा लाखों में बीस से भी अधिक नही थे।

अधिकारियो के पास यह सोचने के निमित्त आधार था कि बाह्य रूप में प्रत्येक में पाँच से अधिक और इस प्रकार कुल मिलाकर पन्द्रह से अधिक मगल-निवासी उन यन्त्रों में नही थे। और उनमें से एक नष्ट

हो चुका था—हो सकता है कि उससे भी अधिक । जनता को संकट के आगमन के सम्बन्ध मे भली प्रकार सावधान कर दिया गया, और दक्षिण-पश्चिमी नगरवर्ती क्षेत्रो के भीत एव त्रस्त व्यक्तियो की सुरक्षा के निमित्त विशाल पैमाने पर प्रयत्न किये जा रहे थे । और इसी प्रकार लन्दन की सुरक्षा से सम्बन्धित आश्वासनो को पुन -पुन. दोहराकर एवं अधिकारियो के सकट का सामना कर सकने के आत्मविश्वास के साथ, यह घोषणा-रूप सूचना समाप्त हो गयी थी ।

यह विशाल अक्षरो में छपी थी, और उसकी स्याही अभी भी गीली थी, और आलोचना का एक भी शब्द कह सकने का कोई स्थान न था । यह देखना विलक्षण था, मेरे भाई ने कहा, कि पत्र के अन्य स्थानो को इस सूचना को स्थान देने के निमित्त निर्दयतापूर्वक फाड़ डाला गया था ।

समस्त वेंलिण्डन स्ट्रीट में लोगो को इन गुलाबी पन्नो को फड़फडाता और इसे पढता देखा जा सकता था, और समस्त स्ट्रेन्ड देखते ही देखते इन समाचार-पत्रो को बेचने वाले हाकरो की भीड से भर उठा । बसो पर चढते लोग अपनी प्रतियाँ लेने के निमित्त भाग कर आ रहे थे । निस्सदेह इन समाचारो ने लोगों को अत्यधिक उत्तेजित कर दिया था, चाहे इससे पूर्व वह इस ओर कितने ही उदासीन क्यों न रहे हो । स्ट्रेण्ड की एक मान-चित्र की दूकान की खिडकियो को खोल डाला गया, और मेरे भाई ने बताया कि अपने रविवारीय वस्त्रों में एक व्यक्ति, जो नीबू के रग के दस्ताने भी पहिने था, खिडकी में दिखाई पड रहा था, और शीघ्रतापूर्वक सरे के मान-चित्रों को शीशे के पीछे लटका रहा था ।

हाथ मे समाचार-पत्र लिये स्ट्रेण्ड से ट्रेफेलगर स्क्वायर जाते हुए, मेरे भाई ने पश्चिमी सरे से भागने वाले कुछ व्यक्तियो को देखा । एक मनुष्य था, जो एक ऐसी गाडी में, जिसे तरकारी बेचने वाले प्रयोग करते हैं, जा रहा था, और गाडी में उसकी पत्नी, दो बच्चे एव कुछ फर्नीचर था । वह वेस्टमिन्स्टर ब्रिज की ओर से आ रहा था, और उसके पीछे

ही भूसा ढोने वाला एक वैगन था, जिसमें कुछ सम्भ्रान्त-से दीख पडने वाले व्यक्ति बैठे थे, और कुछ बक्स एव बण्डल उसमें रखे थे। इन व्यक्तियो के चेहरे अस्त-व्यस्त हो रहे थे, और उनकी सम्पूर्ण बसों पर अपने सर्वश्रेष्ठ रविवारीय वस्त्रो में अलकृत व्यक्तियो से पूर्ण वैषम्य प्रकट करती थी। घोडागाडियो में बैठे फैशनेबल वस्त्रों वाले लोग उन्हे घूर रहे थे। स्क्वायर पर वह इस प्रकार रुकते जैसे कि वह नही समझ पा रहे हों कि वह किधर मुडे और अन्त मे वह पूर्व की ओर स्ट्रेण्ड वाली सड़क पर मुड जाते। इनसे कुछ दूरी पर काम-काजी वस्त्र पहिने एक व्यक्ति एक पुराने फैशन वाली तीन पहियो वाली गाड़ी पर आया, जिसका अगला पहिया छोटा था। उसका चेहरा गन्दा और सफेद हो रहा था।

मेरा भाई सड़क से नीचे विक्टोरिया नामक स्थान के लिये मुडा, और उसकी भेट ऐसे अनेक व्यक्तियो से हुई। उसकी एक अनिश्चित-सी भावना थी कि वह मुझसे भी ऐसे ही रूप में भेंट कर सकता है। उसने यातायात का निर्देशन करती पुलिस को भी असाधारण सख्या मे पाया। कुछ शरणार्थी बसो वाले व्यक्तियो से विचार-विमर्श कर रहे थे। एक कह रहा था कि उसने मगल-निवासियो को देखा है। "पैदल चलने वाली टिकटियों पर लगे हुए बायलर्स, मैं तुम्हे बताता हूँ, मनुष्यो की भाँति लाँघ-लाँघ कर चलते हुए।" लोगो की बहुसख्या उनके विलक्षण वर्णन से उत्तेजित एव सजीव हो उठी थी।

विक्टोरिया के परे के दूकानदार इन आने वालों के साथ अच्छा व्यापार कर रहे थे। स्ट्रीट के सभी कोनो पर लोग समाचार-पत्र पढ रहे थे, उत्तेजित रूप में वार्तालाप कर रहे थे अथवा रविवार के इन विलक्षण आगन्तुको को घूर रहे थे। जैसे-जैसे रात्रि बढती गयी, उनकी सख्या भी बढती गयी, और अन्त में, मेरे भाई ने मुझे बताया, सडके किसी डर्बी वाले दिन एप्सम-हाई-स्ट्रीट पर होने वाली भीड़-भाड के समान भर गयी। मेरे भाई ने इन भगोड़ो में से अनेक से प्रश्न किये, परन्तु उनमें से अधिक से वह कोई सन्तोषजनक उत्तर न पा सका।

केवल एक मनुष्य के अतिरिक्त, जिसने उसे विश्वास दिलाया कि वोकिंग पूर्व की रात्रि को पूर्णत नष्ट कर दिया जा चुका है, उसे वोकिंग का अन्य कोई समाचार नही मिला।

"मै बाइफ्लीट से आया हूँ", उसने कहा, "प्रात ही साइकिल पर सवार एक व्यक्ति वहाँ आया, और एक द्वार से दूसरे तक भाग-भागकर उसने सभी को चले जाने के निमित्त सावधान किया। तब सैनिक लोग आये। हम देखने के लिये बाहर आये, और पश्चिम की ओर धुएँ के बादल थे—धुआँ और केवल धुआँ, और एक भी जीवित व्यक्ति उस ओर से आता न दीख पडा। तब हमने चर्टसी की ओर तोपो की ध्वनि सुनी, वीब्रिज की ओर से आते समूहो को देखा। अत मैने घर को ताला लगा दिया और चला आया।"

उस समय गलियो में यह प्रबल भावना पायी जा रही थी कि अधिकारियो की आक्रमणकारियो को बिना इतनी असुविधा उत्पन्न किये ही नष्ट कर डालने की अक्षमता निन्दनीय है।

आठ बजे के लगभग लन्दन के समस्त दक्षिणी भाग मे भारी गोली-बारी की ध्वनि सुनायी पड रही थी। मुख्य गलियो मे भारी भीड़-भाड़ होने के कारण मेरा भाई उसे नही सुन सका, परन्तु नदी की ओर वाली पिछली गलियो में आने पर वह उसे स्पष्ट रूप मे सुन सका।

वेस्ट मिन्स्टर से रीजेन्ट पार्क वाले अपने कमरे की ओर वह दो बजे लौटा। मेरे सम्बन्ध में वह अब अत्यधिक चिन्तित था, और सकट की अपरिमितता के कारण अशान्त। सैनिक-सूचना के आधार पर उसका मन दौडने को कर रहा था, जैसा कि शनिवार को मेरा कर रहा था। उसने उन समस्त शान्त एवं प्रतीक्षा-रत तोपो एवं आकस्मिक रूप में भ्रमण-शील हो उठने वाले गाँवों के सम्बन्ध में विचार किया; उसने टिकटियो पर सौ फीट ऊँचे बायलर्स की कल्पना करने का प्रयत्न किया।

दो-एक गाड़ियाँ भरे शरणार्थी आक्सफोर्ड स्ट्रीट की ओर और अन्य कुछ मेरीलेबान रोड की ओर जा रहे थे, परन्तु यह समाचार इतनी मन्द गति से प्रसारित हो रहा था कि रीजेन्ट स्ट्रीट पर इस समय भी सदैव की भाँति अनेक रविवारीय रात्रि के भ्रमणार्थी आ-जा रहे थे, यद्यपि समूहो मे वार्तालाप कर रहे थे, और रीजेन्ट पार्क के समीप अनेक मौन दम्पति छिन्न-भिन्न गैस के लैम्पो के नीचे सदा की भाँति आ-जा रहे थे। रात्रि ऊष्ण एव स्तब्ध थी, और उसे भग करने वाली तोपो की ध्वनियाँ थोडे-थोडे काल के पश्चात् सुनायी पड रही थी, और दक्षिण की ओर बिजली कौध उठती थी।

यह समझते हुए कि मैं भयानक विपत्ति मे फँस चुका हूँ, उसने समाचार-पत्र को बार-बार पढा। वह चिन्तित था, और रात्रि के भोजन के पश्चात् वह पुन: निरुद्देश्य भ्रमण के निमित्त बाहर निकल पड़ा। वह लौट आया और निष्फल रूप से उसने स्वय को परीक्षा की पुस्तको में लगाने का प्रयत्न किया। वह मध्य रात्रि के थोडे समय पश्चात् सोने गया, और सोमवार के प्रारम्भिक घन्टों में उसकी नीद भयानक स्वप्नो, द्वार खटखटाने वालो, और भागते पैरो एवं दूरतम ढोलो की ध्वनियो और घन्टियो की घनघनाहट से भग हो गयी। छत पर रक्त वर्ण पर-छाइयाँ नाच रही थी। एक क्षण तक वह यह विचार करता पड़ा रहा कि क्या प्रात: हो चुका है अथवा ससार विक्षिप्त हो गया है। तब वह शय्या से कूद पड़ा और खिडकी की ओर भागा।

उसका कक्ष महराबदार था, और उसने अपना सर बाहर निकाला, और उसके खिड़की खोलने की ध्वनि ने दर्जनों प्रतिध्वनियो को जन्म दिया, और अनेक प्रकार के रात्रि के अधूरे वस्त्र पहिने लोग दिखाई पड़े। लोग प्रश्न कर रहे थे। "वह आ रहे हैं," द्वार को हथौडे से पीटता एक पुलिस वाला चिघाड़ उठा।

ढोल एव तुरही की ध्वनि एलबनी स्ट्रीट वाली बैरक से आ रही थी, और सुनायी पड़ सकने की सीमा वाला प्रत्येक गिर्जा नीद को एक

प्रबल एव अव्यवस्थित जगाने वाले घन्टे की ध्वनि से उड़ा रहा था। खुलते हुए द्वारो की ध्वनियों का कोलाहल सुनायी पड़ रहा था, और सामने वाली खिडकियाँ एक के पश्चात् दूसरी, अन्धकार से पीले प्रकाश में परिर्वतित होने लगी।

सड़क के ऊपर की ओर एक बन्द घोडा-गाडी सरपट गति से दौड़ती आयी, जिसकी ध्वनि खिड़की के नीचे तीव्रतम हो उठी, और तब धीरे-धीरे मन्द पड़ती गयी। उसके पीछे ही दो गाड़ियाँ आई, जो भागती हुई सवारियो के एक विशाल समूह की अग्रगामिनी थी, जो अधिकतर यूस्टन के चढाव की ओर जाने की अपेक्षा चाक फार्म स्टेशन की ओर जा रही थी, जहाँ से नार्थ-वेस्टर्न स्पेशल गाड़ियाँ भर रही थी।

पर्याप्त समय तक, आश्चर्य से जड़, मेरा भाई खिड़की से झाँकता पुलिस वालो को एक से दूसरे द्वार को खटखटाते, और अपने अविश्वसनीय समाचारो को सुनाते देखता रहा। तब उसके पीछे वाला द्वार खुला, और उस स्थान पर रहने वाला व्यक्ति केवल कमीज, पायजामा, और स्लिपर पहन आया, जिसकी पतलून की पट्टी कमर के समीप खुल रही थी, और उसके बाल तकिये के कारण अस्त-व्यस्त हो रहे थे।

"क्या मुसीबत है ?" उसने प्रश्न किया। "अग्नि! कैसी भयानक पंक्तियाँ !"

उन दोनो ने अपने सर खिड़कियो से बाहर पुलिस वालो की बातो को सुनने का प्रयत्न करते हुए निकाले। बगल वाली गलियो से लोग बाहर निकल रहे थे, और बातचीत करते किनारो पर खड़े थे।

"यह सब क्या मुसीबत है ?" मेरे भाई के सह-निवासी ने कहा।

मेरे भाई ने उसे वस्त्र पहिनते अस्पष्ट रूप में उत्तर दिया, और प्रत्येक बार वह खिड़की तक दौड़ता रहा, ताकि वह सडक पर होने वाली उत्तेजना के किसी भी भाग से वंचित न रह जाय। और तुरन्त ही असामयिक रूप में प्रातःकालीन समाचार-पत्रो को बेचने वाले गलियों में चिंघाड़ उठे!

"लन्दन घुट मरने के सकट मे !" किंगस्टन के दोनो ओर और पार वाले मकानो, और पीछे पार्क के चबूतरो एव मेरीलेबोन, वेस्टबोर्न पार्क और सेन्ट पेनक्रास की सैकडों गलियो, पश्चिम एव उत्तर की ओर किल्बर्न और सेन्ट जान वुड और हैम्पस्टेड की ओर, पूर्व में शोरडिच, हाईबरी, हेगरस्टन और हाक्सटन की ओर, और वास्तव मे समस्त लन्दन के एलिग से ईस्ट हेम तक के विशाल क्षेत्र मे लोग अपने नेत्र मलते, खिडकियाँ खोलकर नाना प्रकार के उद्देश्य-हीन प्रश्न पूछ रहे थे, और शीघ्रतापूर्वक वस्त्र पहिन रहे थे, जब कि भय की सर्वप्रथम लहर गलियो मे प्रवाहित हो रही थी। यह सकट का आगमन था, और लन्दन, जो रविवार की रात्रि को अचेतन एवं निष्क्रिय रूप मे निद्रा-मग्न हुआ था, सोमवार के प्रारम्भिक घन्टो मे संकट के स्पष्ट आभास के साथ जाग रहा था।

अपनी खिडकी से यह समझ पाने में असमर्थ कि नीचे क्या हो रहा है, मेरा भाई नीचे गली में उतर गया, ठीक उसी समय जब कि मकानो के बीच चमकता आकाश, आते हुए प्रभात के कारण गुलाबी हो रहा था। प्रत्येक क्षण पैदल अथवा सवारियो पर भागते हुए व्यक्तियो की सख्या बढती ही गयी। "काला धुआँ," उसने लोगों को चिल्लाते सुना, और "काला धुआँ" पुन वायु-मण्डल में गूँज उठा। ऐसे सार्वजनिक भय का स्पर्श-संचारी रूप स्पष्ट था। जब मेरा भाई द्वार पर हिचकिचाता खडा था, उसने एक और समाचार-पत्र-वाहक को अपनी ओर आते देखा, और तुरन्त ही उसने एक प्रति खरीदी। वह मनुष्य, शेष लोगों के साथ भाग रहा था, और भागते-भागते अपने समाचार-पत्र एक-एक शिलिंग को बेच रहा था—लाभ और भय का विलक्षण सम्मिश्रण!

और इस समाचार-पत्र में मेरे भाई ने सेनाध्यक्ष का मार्मिक सम्वाद पढा।

'मगल-निवासी राकेटो के द्वारा काले एवं विषाक्त धुएँ के विशाल पिंड

छोडते हैं। उन्होने हमारी बैटरियो को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला है, रिचमन्ड, किंगस्टन और विम्बिलडन को ध्वस्त कर दिया है, और मार्ग की समस्त वस्तुओ को विनष्ट करते, वह लन्दन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उनको रोक पाना असम्भव है। तुरन्त ही पलायन करने के अतिरिक्त उस काले धुएँ से कोई त्राण नही है।'

केवल इतना ही, परन्तु यही पर्याप्त था। उस विशाल छ मिलियन वाली जन-सख्या का नगर गतिशील था, सरक रहा था, भाग रहा था—तुरन्त ही विशाल सख्या में वह उत्तर की ओर जा रहा था।

"काला धुआँ!" अनेक कण्ठ पुकार उठते थे, "अग्नि!"

समीपवर्ती गिर्जो के घन्टो ने एक भीषण कोलाहल करना प्रारम्भ कर दिया, और असावधानी के साथ चलाई जाने वाली एक घोड़ा-गाड़ी चीत्कारो एव गलियों के मध्य सड़क पर रखी एक पानी की टकी से टकरा गयी। मद्धिम एव पीला प्रकाश मकानो मे इधर-उधर जाता दृष्टि-गोचर होता था, और गुजरती हुई कोई-कोई घोडागाडी अपने अभी तक जलने वाले लैम्प को चमकाती चली जाती, और ऊपर आकाश में प्रभात निखरता जा रहा था—स्पष्ट, स्थिर एव शान्त।

उसने अपने ऊपर वाले कमरो और सीढियो पर ऊपर-नीचे जाते लोगो के दौड़ने की ध्वनियाँ सुनी। ड्रेसिंगगाउन और शाल पहिने उसकी मकान-मालकिन द्वार पर आई, और साथ उसका पति था, जो बाते करता जा रहा था।

जैसे ही मेरे भाई ने सभी लोगो के बाहर निकलने के अर्थ को समझा, वह अपने कमरे में गया, उसने वहाँ रखा सभी धन अपनी जेब में रखा—कुल मिलाकर दस पाउड, और पुन गलियो मे निकल गया।

१५

सरे की घटना

जब कि हैलीफोर्ड के समतल चरागाहो की एक झाड़ी के नीचे बैठा पादरी मुझसे चीख-चीखकर बाते कर रहा था, और मेरा भाई भगोडो को वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज पर देख रहा था, मगल-निवासियों ने अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाही पुनः प्रारम्भ कर दी । परस्पर-विरोधी दिये गये समस्त वर्णनो से जो कुछ भी कोई मनुष्य निश्चित कर सकता है, उनकी बहुसंख्या उस रात्रि को नौ बजे तक उस खड्ड में किसी ऐसे कार्य मे क्रिया-शील रही, जो हरित वर्ण धूम्र के विशाल पिंडो को जन्म देता था।

परन्तु आठ बजे के लगभग उनमें से तीन निश्चित रूप से बाहर निकल आये थे, और मन्द गति एवं सावधानी के साथ बढते हुए उन्होने अपना मार्ग बाइफ्लीट और पायरफोर्ड होते हुए रिपले और वीब्रिज की ओर निकाला, और इस प्रकार वह अस्ता होते सूर्य के प्रकाश मे प्रतीक्षा-रत तोपो की दृष्टि में पड़ गये । यह मंगल-निवासी किसी समूह की अपेक्षा एक पंक्ति में आगे बढ रहे थे, प्रत्येक अपने साथी से सम्भवत. एक या डेढ़ मील की दूरी पर । उसी दूरी में एक से दूसरे की ओर गतिशील होते हुए वह साइरन के समान ध्वनि में परस्पर सम्वादो का आदान-प्रदान कर रहे थे ।

रिपले और सेन्ट जार्ज हिल पर होने वाली यही ध्वनि एव तोपों की गरज थी, जिसे हमने अपर हैलीफोर्ड पर सुना था । रिपले के तोप-चियों ने, जो पैदल सेना के नौसिखिये सैनिक थे, और जिन्हे इस स्थिति पर नही लगाया जाना था, एक भयानक, असामयिक एवं निष्फल बौछार

की, और तब पैदल और घोड़ों पर वह निर्जन गाँवों की ओर भाग निकले, और बिना अपनी अग्नि-किरण का प्रयोग किये, मंगल का वह यत्र शान्तिपूर्वक उनकी तोपो के मध्य रुका, उनके सामने से निकला और इस प्रकार पेनशिल पार्क में लगी तोपो के समक्ष आ पहुँचा, जिन्हे उसने नष्ट कर डाला ।

सेन्ट जार्ज हिल वाले तोपची या तो सुशिक्षित थे अथवा किसी भिन्न धातु से सजे हुए थे। एक देवदार के वन की ओट में छिपे, शायद वह समीपतम मगल-निवासी की दृष्टि से ओझल थे। उन्होने अपनी तोपो को इस प्रकार लगा रखा था जैसे कि वह परेड निरीक्षण की अवस्था मे हो और उन्होने लगभग एक सहस्र गज के घेरे से तोपे दाग दी।

गोले मगल के उस यन्त्र के चारो ओर चमके, और उन्होने उसे कुछ पग बढते, लडखड़ाते, और तब नीचे गिरते देखा। प्रत्येक मनुष्य एक साथ कोलाहल कर उठा, और तब उन्मत्त। शीघ्रता के साथ तोपे पुनः भरी गयी। उस यन्त्र ने एक दीर्घ झुकान प्रारम्भ कर दी, और तुरन्त ही चमचमाता एक दूसरा दैत्य, उसकी ध्वनि का उत्तर देता, दक्षिण वाले वृक्षो के ऊपर चमका। ऐसा लगता था कि जैसे उस तिपाई की एक टाग किसी गोले से टूट-सी गयी है। तोपो की दूसरी बौछार के समस्त गोले गिरे हुए मंगल-यन्त्र पर बरसने लगे, और साथ ही उसके दोनो साथी तोपो को नष्ट करने के निमित्त अपनी अग्नि-किरण लाये। बारूद और गोले विस्फोट कर उठे, तोपो के चारो ओर के देवदार वृक्ष अग्नि-शिखाएँ छोडने लगे, और केवल एक या दो मनुष्य, जो इस समय तक पहाड़ी की चोटी पर पहुँच चुके थे, बच सके।

इसके पश्चात् लगता है कि तीनो ने परस्पर विचार-विमर्श किया और वह रुक गये, और उन स्काउटो ने, जो उनका निरीक्षण कर रहे थे, सूचना दी कि वह अगले डेढ घन्टे तक निश्चेष्ट पड़े रहे। वह मगल-निवासी, जो गिरा दिया गया था, एक छोटी भूरी आकृति, जो उस दूरी से नीले रग की एक छोटी खूंटी दिखाई पड़ती थी, अपने हुड

से कठिनतापूर्वक रेग कर बाहर निकला, और अपने यन्त्र की मरम्मत में लग गया। लगभग नौ बजे तक वह कार्य समाप्त कर चुका था, कारण कि उसकी ऊपरी टोपी वृक्षो के ऊपर चमकने लगी थी।

उस रात नौ बजकर लगभग कुछ मिनिट हुए थे, जब कि इन तीनो मगल-यन्त्रो से, जो पहरा दे रहे थे, चार यन्त्र और जा मिले, जिनके पास एक पतला काला ट्यूब था। उन तीनो मे से प्रत्येक को एक ऐसा ही ट्यूब दिया गया, और सातो समानान्तर दूरी पर एक वक्राकार गति में सेन्ट जार्ज हिल, वीब्रिज और रिपले के दक्षिण-पश्चिम वाले सैन्ड नामक गाँव की ओर चले। जैसे ही वह चलने लगे, एक दर्जन राकेट उनके सामने डिटन और ईशर वाली प्रतीक्षा-रत तोपो को सावधान करने के निमित्त उडने लगे। उसी समय उनके चार लड़ाकू यन्त्र, जो इसी प्रकार ट्यूबो से सुसज्जित थे, नदी को पार कर गये, और उनमे से दो, जो पश्चिमी आकाश मे काली आकृतियो के समान दिखाई पड रहे थे, मेरे और पादरी के सामने दिखाई पडे, जब कि हम थके-हारे एवं कष्ट-पूर्वक उस सडक की ओर शीघ्रता से बढ़ रहे थे, जो हैलीफोर्ड के उत्तर की ओर जाती है। जैसा हमे प्रतीत होता था, वह किसी बादल पर तैरने-से लगे, कारण कि एक श्वेत धुंधलका खेतो पर छा गया और उनकी एक तिहाई ऊँचाई तक ऊपर उठने लगा।

इस दृश्य पर पादरी दबे गले से चिल्लाया और भागने लगा। परन्तु मैं जानता था कि एक मंगल-यन्त्र से भागने का प्रयत्न निष्फल है और एक ओर घूमकर मै गीले बिच्छू के पेडो और गोखरु की झाडियों में रेंगता, सडक के सहारे वाली एक चौडी खाई मे बढने लगा। वह घूमा, उसने देखा कि मैं क्या कर रहा हूँ, और मेरी ओर आने लगा।

वह दोनों मंगल-यन्त्र रुक गये, और हमारे समीप ही सनबरी की ओर मुँह किये खड़े रहे, और दूरतम तीसरा यन्त्र अब सन्ध्या के तारे की ओर गतिशील एक धूमिल बिन्दु-सा लगने लगा—दूर स्टेन्स की ओर।

कालान्तर पर होने वाली मगल-यन्त्रों की भुकान अब बन्द हो गयी; उन्होंने सिलन्डर के चारो ओर अर्ध चन्द्राकार रूप में अपनी स्थिति पूर्ण स्तब्धता के साथ सम्भाल ली। यह घेरा लगभग बीस मील का था। बारूद के आविष्कार से अब तक किसी भी युद्ध का प्रारम्भ इतना शान्त नही रहा था। हमारे एव रिपले के समीपवर्ती किसी भी अन्य अन्वीक्षक पर इसका संक्षिप्त रूप में एक-सा ही प्रभाव पड़ा होता—मगल-निवासी अन्धकार से भरे आकाश के एक छत्र अधिकारी-से प्रतीत होते थे, जो केवल क्षीण चन्द्र, नक्षत्रो, साध्य गगन के धूमिल प्रकाश एव सेन्ट जार्ज हिल और पेनशिल के गुलाबी प्रकाश से भग हो रहा था।

परन्तु स्टेन्स, हाउन्सलो, डिटन, ईशर, अकिहम पहाडियो के पीछे और नदी के दक्षिण की ओर, और उससे परे उत्तर दिशा वाले चरागाहो मे जहाँ कही भी वृक्षो का समूह अथवा गाँवो के मकानो की छते छिपने का पर्याप्त स्थान प्रदान कर रही थी, तोपे प्रतीक्षा-रत थी। सकेत देने वाले राकेट फटे और रात्रि मे अपनी चिन्गारियाँ छोडकर विलीन हो गये, तथा प्रतीक्षा करने वाली तोपो की उत्कठा तीव्रतर हो गयी। मगल-निवासियो को गोलो की पक्ति के बीच ही आगे बढना था, और तुरन्त ही चित्रवत् खडी मनुष्यो की उन आकृतियो की प्रारम्भिक रात्रि मे गहन काली दीख पड़ने वाली वह तोपे भयानक गर्जना के साथ युद्ध-आक्रोश मे फूट पडी।

निस्सन्देह निरीक्षण-शील उन सहस्रो मस्तिष्को मे प्रमुख विचार, जैसे कि वह मेरे अन्दर प्रमुख था, यह तथ्य था कि वह हमे कितना समझते थे। क्या वह समझ चुके थे कि लाखो की सख्या मे रहने वाले हम लोग सगठित, सयमित थे, और साथ-साथ काम कर रहे थे? अथवा उन्होने हमारे राकेटो से निकलने वाली अग्नि-शिखाओ और हमारे गोलो के आकस्मिक प्रहारो एव हमारे उनके स्थानों को तत्परता से घेर लेने की क्रिया को उसी प्रकार समझा जिस प्रकार कि हम किसी छेड़े हुए छत्ते वाली मुहारो के प्रचण्ड एवं सम्मिलित आक्रमण को समझते

हैं ? (उस समय कोई नही जानता था कि उन्हे किस प्रकार के भोजन की आवश्यकता थी ।) इसी प्रकार के सैकड़ो प्रश्न मेरे मस्तिष्क मे उठ रहे थे जिस समय कि मैं विशाल प्रहरी के समान खड़ी आकृति को देख रहा था । और मेरे मस्तिष्क में लन्दन की ओर वाली गुप्त एव अज्ञात शक्तियो की बात भी उपस्थित थी । क्या उन्होने खन्दक तैयार कर ली है ? क्या हाउन्स्लो वाले बारूद के कारखाने जाल के समान तैयार थे ? क्या लन्दन-निवासियो के हृदय मे अपने विशाल प्रासादो की रक्षा के निमित्त प्रबलतम संघर्ष करने का साहस था ?

तब कुछ समय पश्चात्, जैसा कि हमें प्रतीत हुआ, झाड़ी को बेधती दूर चलने वाली तोप के धमाके के समान कोई ध्वनि आई । तब दूसरी उससे और अधिक समीप, और तब फिर तीसरी । तब हमारे समीप वाले मगल-यन्त्र ने अपने ट्यूब को ऊचा उठाया और उसे तोप के समान छोड़ा, एक धमाके के साथ जिसने पृथ्वी को कंपा दिया । स्टेन्स के समीपवर्ती मंगल-यन्त्र ने उसका उत्तर दिया । उसमें केवल उस धमाके की ध्वनि के अतिरिक्त कोई चमक नही थी, कोई धुआँ नही था ।

एक के पश्चात् दूसरी छूटती इन सूक्ष्म बन्दूको ने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया कि मैं कुछ समय के लिये अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा एव अपने जले हुए हाथों को भूल गया, और झाड़ी पर चढकर सनबरी की ओर झाँकने लगा । जब मैं ऐसा कर रहा था, एक दूसरी ध्वनि हुई, और एक बड़ा प्रोजेक्टाइल वायु मे हाउन्स्लो की ओर मुंह किये चमकने लगा । मैं उसमे से धूम्र अथवा अग्नि या इसी प्रकार की किसी अन्य वस्तु के निकलने की प्रतीक्षा करता रहा । परन्तु मैं केवल गहन नीलाकाश देख सका, जिसमें एक एकाकी तारा चमक रहा था, और ऊपर और नीचे की ओर केवल श्वेत कुहासा-सा फैला था । और न किसी वस्तु के चटखने की ही ध्वनि हुई और न विस्फोट की ही । स्तब्धता पुनः छा गयी ; और तीन मिनट तक रही ।

"क्या हुआ ?" मेरे पीछे खड़े पादरी ने प्रश्न किया ।

"ईश्वर जाने !" मैंने उत्तर दिया ।

समीप ही एक उल्लू फड़फडाया और उड़ गया [illegible] समय तक की ध्वनि हुई और बन्द हो गयी । मैंने पुन. मगल-यन्त्र [illegible] और पाया कि वह नदी के सहारे पूर्व की ओर तीव्र लुढकता [illegible] जा रहा है ।

प्रत्येक क्षण मै किसी प्रच्छन्न तोप के गोले की अग्नि को उस पर झपटते देखने की प्रतीक्षा में खड़ा रहा । परन्तु सन्ध्या की स्तब्धता पूर्ववत् रही । जैसे-जैसे कि वह आगे बढता गया, मगल-यन्त्र की आकृति छोटी पडती गयी, और शीघ्र ही कोहरे एवं रात्रि के घिरते अन्धकार ने उसे निगल लिया । एक समान प्रेरणा से हम ऊपर चढ आये । सन-बरी की ओर एक काली आकृति थी, जैसे कि एक गावदुम पहाड़ी सहसा वहाँ फूट आई हो, जिसने आगे के स्थान को हमारी दृष्टि से छिपा लिया, और तब दूर वाल्टन के ऊपर भी हमने एक ऐसी ही दूसरी चोटी देखी । पहाडी के समान दीख पडने वाली यह आकृतियाँ उस समय भी घटती-बढती दिखाई पड़ी जब हम उन्हे घूर रहे थे ।

एक आकस्मिक विचार से प्ररित होकर मैंने उत्तर की ओर देखा, और वहाँ मैने इस प्रकार के बादलो के आकार की वस्तु को पाया ।

सभी कुछ सहसा शान्त हो गया । दूर दक्षिण-पूर्व की ओर स्तब्धता के कारण, हमने मगल-निवासियों को एक दूसरे की पुकारते सुना, और तब वायु पुन: उनकी बन्दूकों के दूरतम धमाको से कँपकँपा उठी । परन्तु पृथ्वी की तोपो ने कोई उत्तर न दिया ।

यद्यपि हम उस समय इन वस्तुओ का वास्तविक अर्थ न समझ सके, परन्तु बाद मे मुझे इन विशाल स्तूपाकारो का अर्थ समझाया गया, जो सान्ध्याकाश में एकत्र हो रहे थे । उस अर्ध चन्द्राकार में खडे, जिसका वर्णन मै पहले कर चुका हूँ, प्रत्येक मंगल-यन्त्र ने, किसी अज्ञात सकेत पर, बन्दूक के समान प्रतीत होने वाले उस ट्यूब से किसी भी

करने लगी, और विशाल तोपो के गरजने की ध्वनि सुनी, जो वहाँ लगायी गयी थी। यह लगभग पन्द्रह मिनट तक निरन्तर रुक-रुककर चलती रही, और हैम्पटन और डिटन स्थित अदृश्य मगल-यन्त्रो पर गोले फेंकती रही, और तब बिजली की वह पीत किरणे अदृश्य हो गयी, और उनके स्थान पर एक तीव्र रक्त वर्ण प्रकाश छा गया।

तब चौथा सिलन्डर—हरे रग का चमकता उल्कापात-सा—जैसा कि मुझे बाद में पता चला, बुशी पार्क में गिरा। इससे पूर्व कि रिचमन्ड और किंगस्टन की तोपें चली, दूर दक्षिण-पश्चिम में तोप चलाने के धमाके सुनायी पड़ते रहे, और जहाँ तक मैं समझता हूँ जो उन तोपचियों द्वारा चलायी गयी थी, इससे पूर्व कि वह काली वाष्प उन पर अधिकार कर सकी।

इस प्रकार इसे उसी प्रकार नियमित रूप में पूरा करके, जैसा कि मनुष्य बर्रों को धुएँ से छिन्न-भिन्न कर देते हैं, मगल-निवासियो ने दम घोटने वाली इस वाष्प को लन्दन की ओर प्रवाहित कर दिया। इस अर्द्ध चन्द्राकार घेरे के दोनों सिरे धीरे-धीरे उस समय तक फैलते गये, जिस समय तक कि उन्होने हैनवेल से कूम्ब और मेल्डन तक एक रेखा न बना ली। रात्रि भर उनके विनाशकारी ट्यूब आगे ही बढते गये। उस समय के पश्चात्, जब कि सेन्ट जार्ज हिल वाला मगल-यंत्र नीचे गिरा लिया गया था, मंगल-निवासियों ने सैना को अपने गोले चलाने का अवसर एक बार भी प्रदान नही किया। जहाँ कही भी उन्हे अपने विरुद्ध लगायी गयी तोपों की सम्भावना प्रकट होती थी, काली वाष्प का नया कनस्तर फेंका जाता, और जहाँ तोपें प्रकट रूप में थी, वहाँ वह अपनी अग्नि-किरण का प्रयोग करते थे।

मध्य रात्रि तक रिचमन्ड पार्क के ढाल वाले चमचमाते वृक्षो, और किंगस्टन हिल की चमक काले धुएँ के एक जाल पर पड़ती थी, जो समस्त टेम्स वेली को ढके हुए था, और जहाँ तक दृष्टि का पसार था, वहाँ तक फैला हुआ था। और इसके मध्य दो मगल-यन्त्र मन्द गति से चल रहे थे,

ग्रौर अपने हिस्-हिस् ध्वनि करने वाले स्टीम फेंकने वाले भोपो को इधर-उधर घुमा रहे थे ।

मगल-निवासी उस रात्रि अग्नि-किरण का प्रयोग नही कर रहे थे, या तो इसलिये कि उनके पास उसके उत्पादन के साधन केवल सीमित ही थे अथवा वह देश का विनाश करने की इच्छा नही रखते थे, और केवल उस प्रतिरोध को ही नष्ट करना चाहते थे, जिसे उन्होने जन्म दिया था । अपने दूसरे लक्ष्य में वह निश्चित रूप मे सफल रहे । रविवार की रात्रि उनकी गति-विधियो के विरुद्ध किये गये सगठित प्रतिरोध की अन्तिम रात्रि थी । उसके पश्चात्, मनुष्यो का कोई भी समूह उनके विरुद्ध खडा न हो सका, और यह काम इतना नैराश्यपूर्ण था; यहाँ तक कि तारपीडो-विध्वंसको के नाविको ने भी, जो अपने शीघ्रता से आग लगाने वाले यन्त्रो को लेकर टेम्स तक आये थे, रुकना अस्वीकार कर दिया, और विद्रोह करके वह पुन: लौट गये । उस रात्रि के पश्चात जो कुछ भी आक्रमणात्मक कार्य मनुष्य कर सके, वह खाइयों एवं गड्ढो का निर्माण था, और ऐसा करने में भी उनकी शक्तियाँ उच्छृंखल एव सकुचित रूप में कार्यशील हुई थी ।

कोई भी मनुष्य उन तोपो के भाग्य की कल्पना, जो ईशर की ओर गोधूलि की बेला में गहन प्रतीक्षा में रत थी, किसी भी रूप में कर सकता है । वहाँ जीवित रहने वाला कोई भी नही था । कोई भी उस व्यवस्थापूर्ण प्रतीक्षा की कल्पना कर सकता है, सावधान एव जागरूक सैनिक अधिकारी, तत्पर तोपची, समीप ही लगा गोलो का ढेर, घोडों और वैगनो के साथ तोप के अगले भाग वाले तोपची, खड़े हुए नागरिकों के समूह, जो इतने समीप खडे थे जितने कि उन्हे खडा होने दिया गया था, संध्या की स्तब्धता, एम्बुलेन्स गाड़ियाँ और हस्पताल के तम्बू, जिसमें वीब्रिज के जले एवं घायल लोग थे, तब मगल-निवासियो द्वारा चलाये गये अस्त्रों की मन्द गूंज, और मकानो एव वृक्षो के ऊपर चमकने वाले वह भद्दे प्रोजेक्टाइल्स एवं समीपवर्ती खेतो में वह भीषण विनाश ।

कोई भी सहसा टूट जाने वाले ध्यान की भी कल्पना कर सकता है; द्रुत गति से फैलता एव घुमडता ऊपर तक दैत्याकार रूप में आगे बढता कृष्णता का वह स्तूप, सन्ध्या को एक स्पर्श-गोचर प्रकाश मे बदलता एक विलक्षण एव विनाशकारी वाष्प-समूह, जो अपने विनाश-मार्ग पर बढता चला आ रहा था, उसके समीपवर्ती धुंधले दिखाई पड़ने वाले मनुष्य एव घोडे, जो दौड रहे थे, नैराश्य की ध्वनियाँ, आकस्मिक रूप मे परित्यक्त तोपे, मनुष्य, जिनके दम घुट रहे थे, और जो पृथ्वी पर पडे हाथ-पैर ऐंठ रहे थे, और अपार-दर्शक धूएँ का वह शकु। और तब रात्रि और अन्धकार—केवल अपार-दर्शक धुएँ का वह विशाल पिंड, जो अपने विनाश पर यवनिका डाल रहा था।

प्रभात से कुछ पूर्व यह काली वाष्प रिचमन्ड की ओर बढ रही थी, और शासन की भग्न होती अन्तिम व्यवस्था, एक अन्तिम प्रयास के रूप मे, लन्दन की जन-संख्या को पलायन की आवश्यकता समझाने का प्रयत्न कर रही थी।

१६

लन्दन से निष्कासन

इस प्रकार आप भय की उस प्रचण्ड लहर की कल्पना कर सकते हैं जो ससार के विशालतम नगर में फैल रही थी, ठीक उस समय जब सोमवार का सूर्य उदित होने को था—पलायन करने वालो की मन्द-धारा, जो शीघ्र ही एक द्रुत गामिनी धारा मे परिवर्तित होने लगी, जो रेलवे स्टेशन के चारों ओर टक्कर मारती और झाग-सी दे रही थी, और टेम्स नदी मे समीप जहाजों में स्थान पाने के लिये संघर्ष-शील व्यक्तियों

के रूप में मार्ग रुद्ध-सी प्रतीत होती थी, तथा प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा उत्तर-पूर्व की ओर निकल जाने के निमित्त प्रयत्न-शील। दस बजते-बजते पुलिस-विभाग और मध्याह्न तक रेलवे-विभाग के संगठन की सम्बद्धता नष्ट हो चुकी थी—प्रथम तीव्र प्रवाह, फिर कोमल कर देने वाला प्रभाव और अन्त मे सामाजिक व्यवस्था के उस अन्तिम गलकर बह जाने के रूप में।

टेम्स नदी की उत्तरवर्ती सभी रेलवे लाइनो और केनन स्ट्रीट के दक्षिण-पूर्वी निवासियो को रविवार की मध्य रात्रि को सावधान किया जा चुका था, गाड़ियाँ ठसाठस भर रही थी, और लोग गाडियों में खड़े होने वाले स्थानो के लिये दो बजे तक परस्पर झगड़ रहे थे। तीन बजते-बजते भीड़ इतनी बढ गयी कि बिशप्स गेट स्ट्रीट पर भी लोग कुचले जाने लगे, लिवरपूल स्ट्रीट स्टेशन से सौ अथवा कुछ अधिक गज दूर रिवाल्वर चलने लगे तथा छुरे घोंपने की घटनाएँ होने लगी, और थके-हारे एवं क्रोधित पुलिस वाले, जो यातायात का प्रबन्ध करने भेजे गये थे, उन्हीं लोगो के सर फोड़ने लगे जिनकी रक्षा के निमित्त वह भेजे गये थे।

और जैसे-जैसे दिन बीतता गया, और जब एंजिन-चालक और स्टोकर्स ने लन्दन लौटना अस्वीकार कर दिया, पलायन-शील जन-समूह की विशाल संख्या स्टेशनों को छोड़कर उत्तर की ओर जाने वाली सड़कों की ओर प्रगतिशील हो उठी। मध्याह्न के समीप एक मंगल-यन्त्र बार्न्स के समीप देखा गया, और धीरे-धीरे पृथ्वी की ओर आती काली वाष्प का एक बादल टेम्स नदी और लैमबेन्थ के मैदानों की ओर गति-शील हो उठा, और उसने अपने मन्द अभियान में पुलों से जाने वाले मार्गों को पूर्णतः काट डाला। दूसरा वाष्प-पिंड एलिंग के समीप उठा, और उसने कासिल हिल पर एकत्र जीवित, परन्तु पलायन न कर पाने योग्य व्यक्तियों के समूह को चारों ओर से घेर लिया। चाक फार्म स्टेशन पर एक उत्तर-पश्चिमी गाड़ी पर चढ़ पाने के निष्फल प्रयत्न के पश्चात

जिसके मालगोदाम में भरे एंजिन चीत्कार करते मनुष्यों के मध्य चल रहे थे, और एक दर्जन के लगभग साहसी पुरुष भीड को ड्राइवर को एंजिन की भट्टी में झोंक देने से रोकने के निमित्त सघर्ष कर रहे थे—मेरा भाई चाक फार्म रोड से निकलकर, द्रुतगति से जाती सवारियो को पार करता निकल गया, और भाग्यवश एक साइकिल दूकान की लूट में पहुँचने वाला वह अग्रिम व्यक्ति था। उस मशीन के अगले टायर मे, उसे खिडकी से बाहर निकालने में पक्चर हो गया, परन्तु वह केवल हथेली पर चोट खाकर ही बच गया। हैवरस्टाक हिल का ढाल कई उलटे हुए घोड़ों से रुका पड़ा था, और अतः मेरा भाई बेलसाइज़ रोड़ की ओर मुड गया।

और इस प्रकार वह उस भगदड़ की उत्तेजना से बच निकला, और एजवेयर रोड के सहारे चलता, थका-हारा, परन्तु भीड मे सबसे अग्रिम, लगभग सात बजे एजवेयर पहुँचा। स्थान-स्थान पर लोग बीचोबीच सडक पर आश्चर्य करते खडे थे। मार्ग में उसे कुछ साइकिल-सवार, कुछ घुड़सवार एवं दो कारे मिली। एजवेयर से एक मील आगे पहिये का रिम टूट गया, और साइकिल सवारी करने योग्य नही रह गयी। उसने उसे सडक के सहारे पटक दिया, और पैदल गाँव की ओर चल दिया। गाँव की प्रमुख गलियों की दूकाने आधी खुली थी, और सड़को के सहारे, द्वारो और खिड़कियों मे खडे लोग, प्रारम्भ होने वाले इस असाधारण निष्कासन को आश्चर्य के भाव से देख रहे थे। यहाँ एक सराय मे वह कुछ भोजन प्राप्त करने में सफल हो गया।

कुछ समय, यह न जानते कि क्या किया जाना चाहिए, वह एजवेयर ही रहा। भागने वाले लोगो की संख्या बढ़ती ही गयी। मेरे भाई की ही भाँति उनमें से कुछ लोग उस स्थान पर रुकने की इच्छा रखते थे। मंगल के आक्रमणकारियों का कोई नूतन समाचार नही था।

उस समय सड़क पर भीड़ थी, परन्तु मार्ग रुद्ध होने में अभी पर्याप्त समय था। उस समय तक भगोड़ो की बहुसंख्या साइकिल-सवारो की

थी, परन्तु शीघ्र ही कारों, घोड़ा-गाड़ियो की संख्या, बढ़ने लगी, जो द्रुत गति से उड़ी चली जा रही थी, और सेन्ट एलबन्स वाली सड़क पर धूल के घने बादल छाये हुए थे।

चेम्सफोर्ड की ओर मार्ग बनाते, जहाँ उसके कुछ मित्र रहते थे, शायद उसके मन में यह अस्थिर-सा विचार ही था, और जिसने अन्त में मेरे भाई को पूर्व की ओर वाली एक शान्त गली में दौड़ने को प्रेरित किया। कुछ समय पश्चात् वह सीढ़ियो वाले एक मार्ग पर आया, और उसे पारकर उत्तर-पूर्व की ओर वाली एक पगडण्डी की ओर बढ़ा। वह अनेक फार्म-घरो एवं छोटे-मोटे स्थानों से होकर निकला, जिनके नाम उसने मालूम नही किये। उसने कुछ भगोडो को देखा, जब तक वह हाई बैरेट के समीप हरी-भरी घास वाली एक गली तक न जा पहुँचा, और यहाँ उसकी भेंट दो महिलाओ से हुई, जो उसकी सह-यात्रिणी बन गयी। वह उन्हे बचा पाने के लिये ठीक समय उन तक पहुँच गया।

उसने उनका चीत्कार सुना, और मोड़ पर शीघ्रता से भागने पर, उसने दो मनुष्यो को उन्हे उस टट्टू-गाड़ी से निकाल पाने का सघर्ष करते पाया, जिसमें वह यात्रा कर रही थी, और तीसरा बडी कठिनाई के साथ डरे हुए टट्टू के सर को सम्भाले था। उनमें से एक महिला, जो नाटे कद की और श्वेत बस्त्र धारण किये हुए थी, केवल चीत्कार कर रही थी, और दूसरी जो कुछ श्याम वर्ण वाली और लम्बी थी, अपने खाली हाथ से उस व्यक्ति के मुँह पर कोडे से प्रहार कर रही थी, जिसने उसका दूसरा हाथ पकड रखा था।

मेरे भाई ने परिस्थिति को तुरन्त समझ लिया, और चिल्लाता हुआ वह शीघ्रतापूर्वक इस सघर्ष की ओर झपटा। उनमें से एक व्यक्ति उधर से छोडकर उसकी ओर मुडा, अपने विरोधी के मुख से यह समझकर कि युद्ध अनिवार्य है, और साथ ही एक कुशल निशानेबाज होने के कारण, उससे भिड़ पड़ा, और उसने उसे गाडी के पहिए पर गिरा दिया।

मुक्केबाजी के द्वन्द्व-युद्ध की वीरता प्रदर्शित करने का यह कोई

समय नही था, और अंत में मेरे भाई ने लात के एक प्रहार से उसे शान्त कर दिया, और उस व्यक्ति का कालर पकड लिया, जो लम्बी महिला की भुजा पकड़े था। उसने घोड़े की टापें सुनी, कोडा उसके मुँह पर लगा, तीसरे विरोधी ने उसके नेत्रों के मध्य प्रहार किया, और उस मनुष्य ने, जिसे उसने पकड़ रखा था, स्वयं को उसकी पकड से मुक्त कर लिया, और गली में ढाल की ओर उसी दिशा में भाग छूटा, जिधर से वह आया था।

अर्द्ध जड अवस्था में, उसने स्वयं को उस व्यक्ति के समक्ष खडा पाया, जो घोड़े का सर पकड़े खडा था, और साथ ही उसे पीछे खिसकती गाडी का ध्यान आया, जो इधर-उधर हो रही थी, और जिसमें से वह महिलाएँ पीछे झाँक रही थी। उसके सामने वाले व्यक्ति ने, जो एक हृष्ट-पुष्ट-सा बदमाश प्रतीत होता था, गाड़ी का पीछा करने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने उसके मुँह पर एक घूँसा मारकर उसे रोक दिया। तब यह देखकर कि वह एकाकी रह गया है, वह गाडी के पीछे ढाल पर भागा, और वह हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति उसके पीछे भाग रहा था, और पहिले भाग जाने वाला वह व्यक्ति, जो अब मुड़ चुका था, पीछे आ रहा था।

सहसा उसने ठोकर खाई और वह गिर पड़ा। उसके पीछे वाला व्यक्ति लड़खडाकर गिरा, और उठने पर उसने स्वय को उन दोनों विरोधियो से घिरा पाया। वह उनसे कठिनाई से छूट पाता, यदि वह पतली महिला साहसपूर्वक उसकी सहायतार्थ न लौट आई होती। प्रतीत होता था कि उसके पास रिवाल्वर था, परन्तु जिस समय उन पर आक्रमरा हुआ, वह गाड़ी में सीट के नीचे दबा पडा था। उसने छः गज की दूरी से गोली चलायी, और मेरा भाई भाग्यवश ही बच सका। उन दोनों में से अधिक डरपोक डाकू भाग छूटा, और दूसरा भी गालियाँ देता उसके पीछे चल पड़ा। दृष्टि के समक्ष, वह दोनों गली के ढाल पर पहुंचकर रुक गये, जहाँ तीसरा बेसुध पड़ा था।

"यह लो," दुबली-पतली महिला ने कहा, और उसने अपना रिवा-ल्वर मेरे भाई को दे दिया।

"गाडी पर लौट जाओ," मेरे भाई ने अपने फटे हुए ओष्ठ का रक्त पोंछते हुए कहा।

बिना एक भी शब्द कहे वह लौट पड़ी—वह दोनों हाँफ रहे थे—और वहाँ लौटकर गये, जहाँ श्वेतपरिधान वाली महिला घबड़ाये हुए टट्टू को कठिनतापूर्वक रोक रखने का संघर्ष कर रही थी। स्पष्ट था कि दस्यु पर्याप्त भोग चुके थे। जब मेरे भाई ने पुनः देखा, वह लौट रहे थे।

"मै यहाँ बैठूँगा," मेरे भाई ने कहा, "यदि मै ऐसा कर सकता हूँ," और वह आगे वाली रिक्त सीट पर जा बैठा। महिला इधर-उधर झाँकने लगी।

"लगाम मुझे दो," महिला ने कहा, और टट्टू को कोड़ा मारा। दूसरे ही क्षण सडक के मोड़ ने उन तीनों दस्युओं को मेरे भाई की दृष्टि से ओझल कर दिया।

इस प्रकार सहसा एवं आकस्मिक रूप में मेरे भाई ने स्वयं को हाँफते हुए पाया, उसका मुँह कट गया था, जबड़े पर चोट लगी हुई थी, उंगलियों के पोर रक्त में सने थे, और एक अनजान सड़क पर वह इन महिलाओ के साथ गाड़ी हाकता जा रहा था।

उसे पता चला कि वह स्टेन्मोर स्थित किसी सर्जन की पत्नी एवं छोटी बहिन थी, जो प्रातःकाल ही पायनर नामक स्थान से किसी गम्भीर केस के पश्चात् लौटा था, और जिसने मार्ग के किसी स्टेशन पर मगल-निवासियों के सम्बन्ध मे सुना था। शीघ्रतापूर्वक वह घर लौटा, उसने महिलाओ को जगाया—उनका नौकर उन्हे दो दिन पूर्व छोड़कर चला गया था—आवश्यक वस्तुओ को बांधा, रिवाल्वर को सीट के नीचे रखा—जो भाग्यवश मेरे भाई के काम आया—और किसी गाड़ी के मिलने की आशा में, उन्हे एजवेयर की ओर चलने की

आज्ञा दी। पड़ोसियो को सचेत करने वह पीछे रह गया। उसने कहा कि वह उन्हे प्रात. साढे चार बजे के लगभग पकड लेगा, और अब समय नौ के समीप था, और उन्हे उसका कोई पता नही चला था। बढती हुई भीडभाड़ के कारण वह एजवेयर नही रुक सकती थी, और इस कारण वह इस पार्श्व वाली सड़क पर आ निकली।

यह वह कथा थी जो उन्होने मेरे भाई को अनेक खडो में सुनायी, जब कि वह न्यू बारनेट पर कुछ समय के लिये रुके। उसने उनके साथ उस समय तक रुकने का विश्वास दिलाया, जब तक कि वह यह निश्चय न कर ले कि उन्हे क्या करना है, अथवा जब तक वह व्यक्ति लौट न आये, और उसने उन्हें एक अच्छे निशानेबाज होने का विश्वास दिलाया, यद्यपि वह अस्त्र उसके निकट पूर्णतः अपरिचित-सा ही था।

उन्होंने सडक के सहारे एक प्रकार का डेरा-सा डाल दिया, और टट्टू समीपवर्ती झाडी में जाकर प्रसन्न हो गया। उसने उन्हे अपने लन्दन में से बच निकलने की कथा सुनायी और मंगल-निवासियो के सम्बन्ध मे भी। सूर्य आकाश में ऊँचा उठ चुका था, और कुछ समय पश्चात् उनका वार्तालाप समाप्त हो गया, और उसका स्थान एक व्यग्रतापूर्ण प्रतीक्षा की भावना ने ले लिया। अनेक गुजरने वाले यात्री उस सड़क पर आये, और जहाँ तक सम्भव हो सका, मेरे भाई ने उनसे समाचार एकत्र किये। प्रत्येक टूटे-फूटे उत्तर ने, जो उसने पाया, मानवता को घेर लेने वाले उस दुर्भाग्यपूर्ण संकट एव तुरन्त ही पलायन कर जाने वाली उसकी भावना को अधिक प्रबल किया।

"हमारे पास धन है," दुबली-पतली महिला ने कहा और वह हिचकिचायी।

उसके नेत्र मेरे भाई से मिले और उसकी हिचकिचाहट समाप्त हो गयी।

"मेरे पास भी है", मेरे भाई ने कहा।

महिला ने बताया कि उसके पास तीस पाउण्ड से अधिक सोना है,

और एक पांच पाउण्ड का नोट, और सुझाव रखा कि उसकी सहायता से वह सेन्ट एलबेन्स अथवा न्यू बेरेट से किसी गाड़ी पर सवार हो सकते हैं। मेरे भाई ने लन्दन वालो की गाड़ियो पर सवार होने की उत्तेजना को देखकर सोचा कि ऐसा होना सम्भावना से परे था, और उसने एसेक्स होकर हारविच की ओर निकल जाने, और इस प्रकार देश ही छोड़ देने वाले अपने विचार को ही प्रश्रय दिया।

मिसेज़ एलफिन्स्टन—यही श्वेत परिधान वाली महिला का नाम था—किसी भी तर्क को सुनने को तत्पर नही थी, और वह निरन्तर 'जार्ज' का नाम दोहराती रही ; परन्तु उसकी ननद, जो असाधारण रूप से शाँत एवं संकल्पशील थी, अन्त में मेरे भाई के प्रस्ताव से सहमत हो गयी , अतः ग्रेट नार्थ रोड को पार करने की आशा से, वह बारनेट की ओर चल दिये, और मेरा भाई टट्टू को पकड़े चल रहा था, ताकि उसकी शक्तियो को सजीव रखा जा सके।

जैसे-जैसे सूर्य आकाश पर ऊँचा उठता गया, दिन अत्यधिक गर्म होने लगा, और पैरों के नीचे की भूरी रेत तपने और आँखों को अन्धा करने लगी, और इस कारण उनकी यात्रा अत्यन्त मन्द रही। झाड़ियाँ धूल के कारण भूरी हो रही थी। और जैसे-जैसे वह बारनेट की ओर प्रगति करते गये, कोलाहलपूर्ण वायु प्रचण्ड होती गयी।

मार्ग मे उनको अधिक संख्या में लोग मिलने लगे। उनमें से अधिकांश उन्हे घूर रहे थे, अस्पष्ट प्रश्न कर रहे थे, थके-हारे, अस्त-व्यस्त एवं मलिन। सन्ध्या के वस्त्र पहिने एक व्यक्ति पैदल उनके समीप से निकला, जिसके नेत्र पृथ्वी पर टिके थे। उन्होने उसकी वाणी सुनी, और पीछे घूमने पर देखा कि एक हाथ से उसने अपने बालो को जकड़ रखा था, और दूसरे से किन्ही अदृश्य वस्तुओ पर प्रहार कर रहा था। क्रोध का आवेश समाप्त होने पर, बिना एक बार भी पीछे देखे वह आगे बढ गया।

जब मेरे भाई की पार्टी बारनेट के दक्षिण वाले चौराहे की ओर जा

रही थी, उन्होने अपने बायी ओर वाले खेतों से एक नारी को आते देखा, जिसकी गोद में एक बालक था, और दो उसके साथ चल रहे थे। और तब गन्दे काले वस्त्र पहिने एक व्यक्ति, जिसके एक हाथ में एक मोटी छडी, और दूसरे मे एक कपडे रखने का चमड़े का बैग था। तब उस गली के उन मकानो की ओर से जो इसे सड़क से मिलाते थे, एक गाड़ी दीख पडी, जिसे बाउलर हैट पहिने एक भूरा-सा नवयुवक हाँक रहा था, और जिसका टट्टू पसीने से लथपथ और धूल से भूरा हो रहा था। ईस्ट एण्ड फैक्टरी की लडकियों के समान तीन लडकियाँ एवं कुछ बच्चे गाडी में भरे हुए थे।

"क्या यह मार्ग हमें एजवेयर ले जायगा ?" उन्मत्त नेत्रो एवं भयानक-से मुख वाले ड्राइवर ने प्रश्न किया; और जब मेरे भाई ने हाँ मे उत्तर दिया, उसने बिना धन्यवाद दिये ही टट्टू को कोडा मार दिया।

मेरे भाई ने अपने समक्ष वाले मकानो से एक भूरे वर्ण का धूम्र अथवा धुन्धलका-सा उठते देखा, जो दिखाई पड़ने वाले मकानो के सामने वाले चबूतरे को ढक रहा था। श्रीमती एलफिन्स्टन अकस्मात् ही नीले एवं गर्म आकाश के नीचे धूम्रमय रक्त वर्ण की अनेक शिखाओं को सामने वाले मकानो से उठते देख चीत्कार कर उठी। वह कोलाहल अब अनेक कंठो के कोलाहल, पहियो की गडगडाहट और घोडो की टापो के मिश्रित कोलाहल में परिवर्तित हो रहा था। यह गली चौराहे से पचास गज की परिधि पर घूमती थी।

"हे ईश्वर !" श्रीमती एलफिन्स्टन चिल्ला उठी, "तुम हमें कहाँ लिये चल रहे हो ?"

मेरे भाई ने गाड़ी रोक दी।

कारण कि सडक खौलते हुए पानी से उठने वाली वाष्प के समान मनुष्यों से खचाखच भरी थी। एक दूसरे को कुचलते एवं उत्तर की ओर प्रगतिशील मानवो की एक धारा के समान बालू के एक विशाल ढेर ने, जो सूर्य के प्रखर ताप मे श्वेत एवं चमकीला प्रतीत हो रहा था,

चारों ओर की वस्तुओं को भूरा एवं अस्पष्ट कर रखा था, और जो निरन्तर शीघ्रगामी घोड़ों, पैदल मनुष्यो, नारियो एवं प्रत्येक प्रकार की सवारियो के पहियो से बारम्बार प्रत्यावर्तित हो रही थी।

"मार्ग !" मेरे भाई ने अनेक कण्ठों को चिल्लाते हुए सुना, "मार्ग दो !"

सडक एवं गली के सगम-स्थान तक पहुँच पाना धुआँ देती किसी अग्नि के समीप पहुँच पाने के समान था; वह भीड रह-रहकर अग्नि के समान गर्जन कर उठती, और धूल, ऊष्ण एव दुर्गन्ध पूर्ण थीं और वास्तव में सडक पर थोडे ऊपर की ओर एक मकान जल रहा था, जो घुमडते हुए धुएँ के बादलो को सडक की ओर वहाँ की उत्तेजना एवं व्यग्रता को बढाने के निमित्त भेज रहा था।

दो मनुष्य उन्हे पार करते निकल गये। तब एक भारी बन्डल सर पर उठाये रोती एक मलिन वस्त्र नारी। शिकार पकड कर लाने वाला एक खोया कुत्ता, जो सन्दिग्ध रूप से उनके चारो ओर चक्कर काट रहा था—भयभीत एवं त्रस्त, और मेरे भाई के डाँटने पर भाग गया।

सीधे हाथ वाले मकानों के मध्य से लन्दन की ओर जाने वाली सड़क पर जितना वह देख सके, दोनो ओर वाले मकानों के मध्य घिरा हुआ, शीघ्रगामी एवं मलिन वस्त्र मानवों का एक समूह था, काले सर, एक दूसरे से सटी हुई आकृतियाँ स्पष्ट हो जातीं, जब कि वह कोने की ओर भागते, शीघ्रता से निकल जाते, और तब पुनः पीछे की ओर जाने वाली एक विशाल भीड में अपनी व्यक्तिगत सत्ता को विलीन कर देते, जो अन्त में धूल के एक बादल में आत्मसात होती प्रतीत होती थी।

"आगे बढो, बढे चलो !" लोग चिल्लाते, "मार्ग, मार्ग दो !"

एक मनुष्य के हाथ दूसरे के शरीर से सटे हुए थे। मेरा भाई टट्टू के सर के सहारे से सटा खडा था, प्रबल रूप से आकर्षित वह एक-एक पग ढाल की ओर बढ रहा था।

एजवेयर अव्यवस्था का दृश्य-सा था, चाक फार्म उत्तेजित भीड के

कोलाहल से पूर्ण था, परन्तु यह विशाल जन-सख्या थी जो यात्रा पर प्रगतिशील थी। उस अपार जन-समूह की कल्पना कर पाना कठिन कार्य है। उसकी अपनी कोई विशेषता न थी। कोने से परे आकृतियाँ गुजरती-सी दीखती, और उनकी पीठ गली की भीड में मिलती प्रतीत होती। शेष बचे भाग मे वह पैदल यात्री थे, जो पहियों की गडगडाहट से भीत, गड्ढों में गिरते, एक दूसरे से धक्का खा रहे थे।

"बढे चलो।" पुकार सुनायी पड रही थी, "वह आ रहे हैं!"

गाडियाँ एव सवारियाँ एक दूसरे से सटी थी, और वह द्रुतगामी उन मशीनो को स्थान नही दे रही थी, जो किसी भी अवसर के प्राप्त होते ही मनुष्यो को बाड़ो और मकानो के द्वारो से टकराने को छोडती हुई सर्र से निकल जाती।

"बढ़े चलो।" पुकार सुनायी पड रही थी, "वह आ रहे हैं।"

एक गाडी में एक अन्धा मनुष्य मुक्ति-सेना का परिधान पहिने खडा था, और अपनी गठीली उँगलियो से कुछ दुर्बोध-सा सकेत कर "प्रलय! प्रलय!" चिल्ला रहा था। उसका स्वर भारी एव घरघराहट से भरा हुआ था, और इसी कारण मेरा भाई उसके स्वर को दूर दक्षिण की ओर तक सुनता रहा, जब कि वह दृष्टि से ओझल हो चुका था। गाड़ियो में ठसा-ठस भरे लोग कभी तो मूर्खतावश घोडो को चाबुक मारते, और कभी चालको से लड़ पडते थे, कुछ सन्तप्त नेत्रो से शून्य को ताक रहे थे। कुछ प्यास से अपने हाथो को मल रहे थे, अथवा अपनी गाडियो में लम्बे लेटे थे। घोडो की लगामें झागो से भरी थीं, और उनके नेत्र आरक्त थे।

उनमें घोड़ा-गाड़ियाँ थीं, गाड़ियाँ, बाजारू गाड़ियाँ, ठेले, जिनकी संख्या गिनती से परे थी, एक सड़क साफ करने वाली गाड़ी, जिस पर 'वेस्ट्री आफ सेन्ट पेनक्रास' अंकित था, एक विशाल लकड़ी ढोने वाली गाडी, जिसमें लक्कड़ भरे थे। शराब खीचने वालो की एक नीचे पहिये

वाली गाड़ी, जिसके अगले पहियो से गड़गड़ाहट की ध्वनि निकल रही थी, और जो रक्त से सने थे।

"मार्ग साफ करो," अनेक कंठ चिल्ला रहे थे, "मार्ग साफ करो।"

भीड़ में कुचलती सुन्दर परिधान वाली उदास चित्त वाली नारियाँ थी, जिनके साथ बच्चे थे, जो चिल्ला रहे थे, उनके चिन्तित मुख अश्रुपूर्ण थे। उनमे से अनेक के साथ पुरुष थे, जो कभी सहायता करते थे, और कभी दुष्टतापूर्ण एव बर्बरतापूर्ण आचरण। उन्हीके साथ धक्का-मुक्की करते गलियो के कुछ आवारा व्यक्ति थे, जो काले चिथड़े पहिने थे, जिनके नेत्र बडे-बड़े, वाणी तीव्र एवं मुख मलिनतापूर्ण थे। इन्हीके साथ पुष्ट शरीर वाले कुछ श्रमिक भी थे, जो भीड में अपना मार्ग निकाल रहे थे, व्यथित से दीख पडने वाले व्यक्ति, जो वस्त्रों से दूकानदार-से अथवा क्लर्क-से प्रतीत हो रहे थे, और सकोच के साथ भीड़ में अपना मार्ग निकाल रहे थे, जिनमें मेरे भाई ने एक क्षत सैनिक को भी देखा, रेलवे कर्मचारियो के वस्त्र पहिने व्यक्ति, एक सन्तप्त-सा दीख पडने वाला व्यक्ति भी, जो केवल एक नाइट-शर्ट ही पहिने था, जिस पर एक कोट पड़ा हुआ था।

विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से बनी उस भीड़ में कुछ समानता भी थी। उनके मुखों पर भय एव पीडा अंकित थी, और उनके पीछे भी भय था। सडक पर का कोई भी कोलाहल, किसी वैगन में कोई झगडा, उनके पगों को तीव्रतर कर देता, यहाँ तक कि एक व्यक्ति, जो इतना अपंग-सा प्रतीत होता था कि उसके घुटने उसके भार को सम्हाल पाने में अशक्त थे, क्षणमात्र के लिए विद्युत-संचार के समान नूतन क्रियाशीलता से सजीव-सा हो उठता। इस जन-समूह पर धूल और गर्मी का पर्याप्त प्रभाव था। उनकी त्वचा शुष्क-सी हो रही थी, और उनके होठ काले पड़ रहे थ एवं चटके हुए थे। वह सभी प्यासे थे, थके-हारे थे, और उनके पैर शिथिलप्राय थे। और अनेक प्रकार के कोलाहल में कोई भी झगड़ो, गालियो एव थकावट के कारण निकलने वाली गहन उसासो को

सुन सकता था, उनमें से सभी कोलाहलों में सावधान करने वाली एक वाणी सुनायी पडती थी—

"मार्ग ! मार्ग ! मगल-निवासी आ रहे हैं।"

उनमें से कुछ रुक गये और प्रवाह से बाहर निकल आये। यह सड़क मुख्य सडक से तिरछी-सी होकर मिलती थी, और वह लन्दन की ओर से आने का भ्रम उत्पन्न करती थी। तो भी भंवर के समान प्रतीत होने वाला एक समूह उसके उद्गम स्थान की ओर प्रवाहित होता-सा प्रतीत होता था, अशक्त लोग भीड द्वारा बाहर फेक दिये जाते थे, जो पुन. उसी प्रवाह में जाने के निमित्त संघर्ष करने के लिये क्षणमात्र विश्राम करते थे। गली में थोड़े नीचे की ओर खुली टाँग वाला एक व्यक्ति पड़ा था, जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे एव रक्तपूर्ण थे, और जिसके ऊपर उसके दो मित्र झुके हुए थे। वह सौभाग्यशाली था, जिसके ऐसे समय में भी मित्र थे।

एक छोटा-सा वृद्ध पुरुष, जिसकी मूँछें सैनिको के समान थी और जिसके शरीर पर एक गन्दा काला कोट था, भीड में से बाहर को निकला और मार्ग पर बैठ गया था। उसने अपना बूट खोला—उसके मोजे रक्त से सने थे—उनमें से एक कंकड़ी निकालकर बाहर फेकी, और पुनः लडखडाता हुआ चल पड़ा, और तब आठ या नौ वर्ष की एक बालिका जो एकाकी थी, मेरे भाई की निकटवर्ती झाड़ी पर रोती हुई गिर पडी।

"मैं आगे नही जा सकती, मैं नही चल सकती।"

मेरा भाई अपनी आश्चर्य-जड़ता से जाग उठा, और उसने दुलार-पूर्वक उसे गोदी में उठा लिया, और उसे कुमारी एल्फिन्स्टन के पास लाया। जैसे ही मेरे भाई ने उसका स्पर्श किया, वह निचेष्ट-सी हो गयी, जैसे कि वह भयभीत-सी हो गयी हो।

"एलेन !" रुद्ध कंठ से एक नारी भीड में से पुकार उठी। "एलेन !"

और बालिका सहसा मेरे भाई से उसकी ओर "माँ, माँ !" पुकारती भाग छूटी।

"वह आ रहे हैं," गली में द्रुतगति से भागते एक घुडसवार ने कहा।

"मार्ग से बाहर, उधर," एक कोचवान चिल्ला उठा, और मेरे भाई ने एक बन्द घोड़ागाडी को गली की ओर मुडते देखा।

घोड़े से बचने के निमित्त जन-समूह एक दूसरे को धकेलकर कुचलने लगा। मेरे भाई ने अपने टट्टू और गाड़ी को पीछे झाड़ी की ओर खींच लिया, और घुड़सवार सामने से निकलता हुआ सड़क के मोड़ पर जा रुका। वह एक घोडागाडी थी, जिसमें दो घोडो का स्थान था, परन्तु इस समय जोत में केवल एक ही घोडा था। मेरे भाई ने छाई हुई धूल के पार देखा कि दो मनुष्यो ने गाडी से किसी वस्तु को एक श्वेत स्ट्रेचर पर डालकर टट्टी बनाने वाली घास पर रख दिया।

उनमें से एक व्यक्ति मेरे भाई की ओर दौड़ कर आया।

"क्या यहाँ कुछ जल है ?" उसने कहा, "वह प्यास से मरे जा रहे हैं। वह लार्ड गैरिक हैं।"

"लार्ड गैरिक !" मेरे भाई ने कहा, "चीफ़ जस्टिस ?"

"पानी," उसने कहा।

"इनमें से किसी घर में नल होना चाहिये। हमारे पास पानी नहीं है। मैं अपने साथियों को नहीं छोड़ सकता।"

वह मनुष्य भीड़ में होकर कोने वाले मकान की ओर बढ़ा।

"बढे चलो !" लोग उसकी ओर चिल्लाये, "वह आ रहे हैं। बढे चलो !"

तब मेरे भाई का ध्यान एक दाढीदार एवं वृद्ध के समान मुखाकृति वाले एक व्यक्ति ने आकर्षित किया, जो बलपूर्वक एक छोटे हैण्डबैग को उठाये ले जा रहा था, जो मेरे भाई के देखते-देखते फट गया, और उसमें से गिन्नियों का एक ढेर-सा निकल पड़ा, और उनमें से प्रत्येक गिन्नी

सड़क से टकराकर पृथक्-पृथक् दिखाई पड़ने लगी। वह व्यक्ति रुक गया, और मूर्खवत् उस ढेर को घूरने लगा, और इसी बीच कन्धों से टकराने वाली एक केब से धक्का खाकर चक्कर खाता भूमि पर गिर पड़ा। चीत्कार करता वह पीछे घूमा, और एक दूसरी गाड़ी ने उसे कुछ थोड़ा-सा आहत कर दिया।

"मार्ग" उसके चारों ओर वाले लोग पुकार उठे, "मार्ग निकालो।'

जैसे ही केब निकल गयी, वह झपटा, और उसने दोनो हाथ फैलाये, गिन्नियों के उस ढेर पर फैल गया, और मुट्ठियाँ भर-भरकर जेबें भरने लगा। एक घोड़ा उसके पीछे से उठा, और दूसरे ही क्षण, जब वह आधा ही उठ पाया था, वह घोड़ों की टापों के नीचे था।

"रुको," मेरा भाई चीत्कार कर उठा, और एक नारी को अपने सामने से धकेलते हुए, उसने घोड़े की लगाम को पकड़ने का प्रयत्न किया।

इससे पूर्व कि वह उसके समीप तक आ पाये, उसने पहियों के नीचे से एक आर्तनाद सुना, और धूल के आवर्त में उसने गाड़ी की रिम को उस बेचारे की पीठ पर से निकलते देखा। गाड़ी के कोचवान ने पीछे की ओर मेरे भाई पर, जो गाड़ी का पीछा कर रहा था, कोड़ा चलाया। सहस्रों कंठों से निकलते विभिन्न चीत्कारों ने उसकी श्रवण-शक्ति को शून्यप्राय: कर दिया था। खड़े हो पाने में अशक्त वह व्यक्ति धूल में बिखरी हुई अपनी धन-राशि पर किसी आहत एवं मरणासन्न सर्प की भाँति एंगड़ी भर रहा था, कारण कि पहिये ने उसकी कमर को तोड़ दिया था, और उसके निचले अंग जड़ एवं पूर्णतः शक्तिहीन थे। मेरा भाई उठ खड़ा हुआ, और वह दूसरे कोचवान पर चिल्लाया, और काले घोड़े पर सवार एक व्यक्ति उसकी सहायता के निमित्त आ पहुँचा।

"उसे सड़क से परे ले चलो," उसने कहा, और अपने हाथों से उस व्यक्ति का कालर पकड़कर मेरे भाई ने उसे किनारे की ओर खींचा। परन्तु वह इस समय भी अपनी धन-राशि में ही अटका हुआ था, और

वह मेरे भाई को प्रतिरोधात्मक रूप से उसके हाथ पर मुट्ठी में भरे सोने का प्रहार करके रोक रहा था। "आगे बढो ! आगे बढो !" उसके पीछे से सक्रोध स्वर पुकार उठे। "मार्ग ! मार्ग !"

वहाँ एक धडाका हुआ, क्योकि उस घुड़सवार द्वारा रोकी गयी एक गाड़ी दूसरी गाडी से टकरा गयी। मेरे भाई के नेत्र ऊपर उस दिशा मे उठे, और सोने वाले व्यक्ति ने अपना सर घुमाया और अपने सर को पकडे रहने वाली कलाई में काट लिया। एक धक्का लगा, और काला घोडा लडखडाता हुआ एक ओर को गिरा, और घोडा-गाडी का घोडा उसके पीछे धक्का मारने लगा। एक टाप मेरे भाई के पैर से केवल आधा इच दूर पर पडी। उसने गिरे हुए व्यक्ति की पकड़ को ढीला कर दिया और पीछे की ओर कूद गया। उसने उस हत्भाग्य व्यक्ति की मुखाकृति पर भय को क्रोध का स्थान ग्रहण करते देखा, और दूसरे ही क्षण वह दृष्टि से ओझल हो गया, और मेरा भाई भीड़ में धक्के खाता गली के छोर तक जा पहुँचा, जहाँ से उसे पुनः अपने पूर्व स्थान तक आने के निमित्त प्रबल सघर्ष करना पड़ा।

उसने कुमारी एल्फिन्स्टन को अपने नेत्र ढके देखा, और एक छोटे बच्चे को, जिसमें एक छोटे बच्चे के मानस एव कल्पना से सम्बन्धित सभी भाव विद्यमान थे, विस्फारित नेत्रो से पृथ्वी पर निश्चेष्ट पड़ी हुई किसी काली वस्तु को देखते पाया, जो पहियो के नीचे चकनाचूर हो गई थी। "हमें पीछे जाने दो," वह चीत्कार कर उठा, और टट्टू को चारों ओर घुमाने लगा। "हम इस नरक को पार नही कर सकते," उसने कहा, और वह उसी मार्ग पर पुन. सौ गज पीछे की ओर लौटे जिस पर वह आये थे। जैसे कि वह सड़क के उस मोड पर पहुँचे, मेरे भाई नें टट्टी बनाने वाली घास की झाडी के नीचे मरणासन्न उस व्यक्ति का मुख देखा, जो मृत्यु के समान श्वेत, हत्तेज एव पसीने से चमचमा रहा था। वह दोनो नारियाँ अपनी सीटो पर झुकी बैठी थी और भय से कंपकपा रही थीं।

तब मोड़ को पारकर मेरा भाई पुनः एक बार पीछे मुड़ा। कुमारी एल्फिन्स्टन श्वेत एव पीली पडी हुई थी, और उसकी भाभी रो रही थी, और इतनी अधिक चेतना-शून्य थी कि उसके मुख से रह-रह कर निकलने वाली 'जार्ज, जार्ज' की पुकार भी अब पूर्णतः बन्द हो चुकी थी। मेरा भाई भयभीत एवं विभ्रमित हो गया। जिस समय से वह पीछे लौटे थे, मेरा भाई निरन्तर इस मोड को शीघ्रता से पार कर जाने की आवश्यकता एवं शीघ्रपरता के सम्बन्ध में विचार कर रहा था। सहसा दृढ संकल्प के साथ वह कुमारी एल्फिन्सटन की ओर मुडा।

"हमें उस ओर जाना ही चाहिए," उसने कहा, और अपने टट्टू को पुनः पीछे की ओर घुमा दिया।

उस दिन दूसरी बार इस कुमारी ने अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया। उस अपार जन-समूह में अपना मार्ग बनाने के निमित्त, मेरा भाई सवारियों से जुट गया, और जब वह एक की गाडी के घोड़े को रोके हुए था, उसने टट्टू को उसके सिर के बीच से एक टक्कर दी, और उनकी घोडागाडी से फटकर एक लम्बी-सी पच्चड छिटक कर आ पडी। दूसरे ही क्षण वह पकड लिये गये, और भीड के रेले में आगे की ओर धकेल दिये गये। केबमैन के कोडे से आरक्त-मुख मेरा भाई चेज मे गिर पडा और टट्टू की लगामें उसने उससे अपने हाथों में ले ली।

"पीछे आने वाले व्यक्ति की ओर रिवाल्वर तानो," उसने रिवाल्वर उसे देते हुए कहा, "यदि वह हमें धकेलकर आगे बढ जाना चाहता है। नहीं, उसके घोड़े को निशाना बनाओ।"

तब वह सडक के सीधे हाथ की ओर आ पाने का उपयुक्त अवसर खोजने लगा। परन्तु उस जन-प्रवाह में पुनः एक बार पडने पर प्रतीत होता था कि जैसे धूल से भरे उस वातावरण में संघर्ष करने का उसका संकल्प स्वयं हिल रहा है। उस धारा के साथ चिपिंग-बारनेट को पार करते, वह उस समय शहर से लगभग एक मील दूर थे, जब कि उन्हे

सड़क के उस पार निकल जाने के निमित्त सघर्ष करना पडा था। वह कोलाहलमय था, और वहा की अव्यवस्था का वर्णन सम्भव नही है, परन्तु नगर के भीतर और बाहर सभी स्थानो पर सडक बार-बार मोड़ खाती है और इस बात ने उनकी घबराहट को पर्याप्त अंशो में दूर किया।

हैडले नामक स्थान से वह पूर्व की ओर बढे, और वहाँ सडक के दोनो ओर और आगे बढकर एक और स्थान पर, उन्होंने अनेक जन-समूहो को जल-धारा पर पानी पीते देखा, जिनमें से अनेक पानी तक आ पाने के निमित्त झगडा कर रहे थे। और आगे, ईस्ट बारनेट के समीप-वर्ती एक पहाडी से उन्होने एक दूसरे के पीछे मन्द गति से चलती दो रेल गाड़ियो को देखा, जो बिना किसी सिगनल अथवा किसी भी व्यवस्था के चल रही थी—गाड़ियाँ, जो लोगों से खचाखच भरी थी—जिनमें लोग इंजिन के कोयले के भण्डार पर भी बैठे थे, और यह गाडियाँ ग्रेट नार्थन रेलवे की लाइन पर जा रही थी। मेरा भाई विश्वास करता है कि यह गाडियाँ लन्दन के बाहर ही कही भरी गयी थी, कारण कि लन्दन के उन्मत्त जन-प्रवाह में स्टेशनों तक पहुँचना असम्भव-सी बात थी।

इसी स्थान के समीप वह तीसरे पहर के विश्राम के निमित्त रुके, कारण कि उस दिन के सघर्ष ने उन तीनो के शक्ति-भंडार को पूर्णतः रिक्त कर दिया था। क्षुधा की लपटे उन्हे पीड़ित करने लगी; रात्रि ठडी थी, और उनमें से कोई भी सोने का साहस नही कर सकता था। और सन्ध्या में अनेक लोग शीघ्रतापूर्वक चलते उनके विश्राम-स्थल वाली सड़क पर, उनके सामने वाले मार्ग के अज्ञात भयों से उद्वेलित आये, और उस ओर चले गये जिधर से मेरा भाई आया था।

१७

थन्डर-चाइल्ड

यदि मंगल-निवासियो का अभीष्ट केवल विनाश ही होता, तो उन्होंने सोमवार को ही लन्दन की समस्त जन-संख्या को नष्ट कर डाला होता, जैसे कि वह आस-पास के नगरो एवं ग्रामो से धीरे-धीरे आकर एकत्रित होती रही थी। केवल बारनेट वाली सड़क पर ही नही, पर एजवेयर एवं वाल्थम एवे वाली सडकों और टेम्स के दक्षिण से डेल और बोड-स्टेअर्स तक उसी प्रकार की उत्तेजित भीड़ जा रही थी। यदि किसी ने भी लन्दन के ऊपर चमचमाते उस नीलाकाश में उस जून के प्रात.कालीन दृश्य को एक फुंकने के समान ऊपर लटका दिया होता, तो छोटी-छोटी गलियों के सूक्ष्म जाल से आने वाली प्रत्येक दक्षिणी एवं पूर्वी सड़क भगोड़ों से काली पडी-सी प्रतीत होती, जिसका प्रत्येक विन्दु किसी मानव की भयजनित पीडा एव शारीरिक वेदना का उद्योतक था। अपने पिछले अध्याय में मैंने अपने भाई द्वारा दिये गये चिपिंग-बारनेट वाली सड़क का विशद वर्णन केवल इसी निमित्त किया है कि पाठकगण समझ सकें कि काले विन्दुओ का उमडता-सा वह सिन्धु किसी भी दर्शक के निकट कैसा प्रतीत होता होगा। विश्व-इतिहास में इससे पूर्व कभी भी इतनी विशाल जन-संख्या ने सम्मिलित रूप में न कभी यात्रा की होगी और न इस प्रकार की पीडा का ही अनुभव किया होगा। ऐतिहासिक गाथ एवं हूण, वह विशालतम सेनाएँ, जो एशिया के पुरातन लोगो ने कभी देखी होगी, इस विशाल सिन्धु मे बूंद के समान ही होगी और यह

कोई सयोजित मार्च नही था—दानवी एवं पाशविक भगदड—जिसमें न कोई व्यवस्था थी, और न जिसका कोई लक्ष्य ही निश्चित था, साठ लाख व्यक्ति, शस्त्र-हीन एवं सम्बल-हीन, अन्धा-धुन्ध आगे टक्कर मारते हुए। यह सभ्यता का विप्लव एवं मानव-जाति के भीषरा सहार का श्रीगरोश था।

ठीक अपने नीचे, उस फुंकने वाले व्यक्ति ने दूर दूर तक विस्तृत मकानो, गिर्जाघरो, मुहल्लो, विशाल अट्टालिकाओ के कंगूरो, उद्यानो—जो परित्यक्त अवस्था में पडे थे—जो किसी विशाल मानचित्र के समान फैला हुआ पाया होगा, और दक्षिरा वाले भाग को काले-काले विन्दुओ से खचाखच भरा हुआ। एलिंग, रिचमंड विम्बिलडन आदि स्थान उसे इस प्रकार प्रतीत हुए होगे जैसे किमी विशाल लेखनी ने उस स्थान पर स्याही का एक विस्तृत धब्बा डाल दिया हो। तत्परता से एवं अबाध गति के साथ इस लेखनी का पड़ा प्रत्येक छीटा बढता और विस्तृत होता प्रतीत होता होगा, और प्रत्येक छीटे की इधर-उधर फूटती शाखाएँ, कभी किसी तल पर आधारित होती, और कभी द्रुत-गति से अज्ञात घाटी पर फैलती प्रतीत होती होगी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि स्याही का कोई छीटा किसी शोषक पत्र पर गिरकर फैलेगा।

और उससे परे, नदी के बायी ओर वाली नीली पहाडियो के ऊपर चमचमाते मगल के अस्त्र इधर-उधर आते-जाते दीख पड़ते थे, जो शांति-पूर्वक इस ओर के प्रदेश में अपने विषैले बादलो को फैला रहे थे, और अपना कार्य समाप्त कर लेने के पश्चात्, उन्हे अपने उन्ही गैस पिंड़ों में पुन. भरकर विजित प्रदेश पर अधिकार कर लेते थे। प्रतीत होता है कि उनका उद्देश्य मानव-जगत् का समूल विनाश नही था जितना कि नैतिक विनाश एव किसी भी प्रकार विद्रोह की सम्भावना को आमूल नष्ट कर देना। उन्होने मार्ग में पडने वाले समस्त बारूद भडारो में आग लगा दी, प्रत्येक तार की लाइन को काट डाला, और स्थान-स्थान पर रेलो को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। प्रतीत होता था कि वह अपने कार्य क्षेत्र

का विस्तार करने के निमित्त किसी शीघ्रता मे नही थे, उस दिन के अन्त तक वह लन्दन के मध्य भाग से आगे नही बढे। हो सकता है कि लन्दन के कुछ लोग सोमवार के प्रात. तक अपने निवास-स्थानो में ही छिपे रहे हो। और यह भी निश्चित है कि वह उन्ही स्थानो में उस भीषण काले धुएँ से घुट करमर गये।

दोपहर तक 'लन्दन पूल' आश्चर्यजनक दृश्यो का स्थान रहा। स्टीम-बोटें तथा प्रत्येक प्रकार के जलयान, भगोड़ों द्वारा दिये जाने वाली विशाल राशियो से प्रलोभित भरे हुए थे और कहा जाता है कि उन तक तैर कर पहुच जाने वाले अनेक व्यक्ति नावों के कुंडों से धकेल कर जल में फेंक दिये गये, और जल में डूब मरे। एक बजे के लगभग उस काले धुएँ का एक क्षीण अवशेष 'ब्लेक फ्रायर्स' के पुल के खम्भो के नीचे चमका और तब वह पुल उन्माद-ग्रस्त अव्यवस्था के रूप में परिवर्तित हो गया, युद्ध एवं एक दूसरे से टक्कर, और कुछ काल के लिए 'टावर ब्रिज' के खम्भो के नीचे नावें एक दूसरे से टकराने लगी एवं नाविको को नदी-तट पर खड़े मानव-समूहों से पाशविक युद्ध करना पड़ा। लोग वास्तव में पुल के ऊपरी भाग में लडखड़ा कर गिरने लगे थे।

एक घन्टा बाद जब एक मंगल-यन्त्र घटाघर से परे दृष्टि पड़ा एवं नीचे जल में उतर गया, लाइम-हाउस के ऊपर भीषण विनाश के अति-रिक्त अन्य कोई दृश्य न था।

पंचम सिलण्डर के पृथ्वी पर गिरने की कथा कहनी अभी शेष है। छठा विम्बिल्डन में गिरा। एक चरागाह में खड़ी गाड़ी में सुप्त उन नारियो की रक्षा के हेतु जागने वाले मेरे भाई ने उसके हरितवर्ण प्रकाश को पहाड़ियों से परे देखा। मगल को, इस संक्षिप्त मण्डली ने, जो इस समय समुद्र पार जाने का सकल्प धारण किये हुए थी, जन-समूह-पूर्ण उस प्रदेश से अपना मार्ग कालचेस्टर की ओर निकाला। यह समाचार कि सम्पूर्ण लन्दन मंगल-निवासियों के अधिकार में आ चुका है विश्वस्त रूप से स्वीकार कर लिया गया। वह हाइगेट पर, और यहाँ

तक कहा जाता है कि नीसडेन पर भी देखे गये थे। परन्तु मेरे भाई की दृष्टि के समक्ष वह अगले दिन से पूर्व नही पडे थे।

उस दिन छिन्न-भिन्न वह जन-समूह जीवन-सामग्रियों की अविलम्ब आवश्यकता की अनुभूति करने लगा जैसे-जैसे क्षुधा की प्रचण्डता व्याप्त होती गयी, सम्पत्ति-अधिकारो की अवहेलना की जाने लगी। कृषक अपने पशुओ, बाड़ो, अन्न-भण्डारो एवं अपनी पल्लवित होती फसलो की रक्षा शस्त्रो से करने में सन्नद्ध थे। मेरे भाई के ही समान अनेक व्यक्तियों का मुँह पूर्व दिशा की ओर था, और ऐसे भी अनेक हताश व्यक्ति थे जो पुन लन्दन की ओर अन्न की खोज में लौट रहे थे! मुख्यत इनमे ऐसे ही व्यक्ति थे, जिन्हे उस काले धुएँ का ज्ञान केवल दूसरों से सुन-सुनकर ही हुआ था। उसने सुना कि अधिकतम सरकारी लोग बर्मिघम पर एकत्रित हो गए हैं एवं तीव्र विस्फोटक पदार्थों की प्रचुर मात्रा मिडलेंड प्रदेशों के आर-पार स्वयं फूट पड़ने वाली माइनो में प्रयुक्त होने के निमित्त तैयार की जा रही है।

उसे यह भी सूचित किया गया कि मिडलेंड-रेलवे कम्पनी ने पूर्व वाली अव्यवस्था को दूर कर दिया है, और उसने पुनः गाड़ियाँ चलानी प्रारम्भ कर दी हैं, और वह समीपवर्ती प्रदेशों के गतिरोध को दूर करने के निमित्त सेन्ट-एलबन्स से गाड़ियां छोड़ रहे हैं। चिपिंग-ओन्गार नामक स्थान पर चिपका हुआ एक घोषणा-पत्र भी था जिसमें घोषित किया गया था कि उत्तर की ओर वाले नगरों में आटा प्रचुर मात्रा में उपस्थित है, और साथ ही यह भी कि आगत चौबीस घन्टो में ही समीपवर्ती भागो में क्षुधित व्यक्तियों को भोजन भी बाँटा जायगा। परन्तु यह समाचार भी उसकी योजना को विचलित न कर सका और तीनो दिन भर पूर्व की ओर बढते ही रहे और उन्होने इस घोषणा-पत्र के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर भोजन बँटते नही देखा। और सत्य तो यह है कि उनके अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने भी अन्न-वितरण किसी विशाल पैमाने पर कहीं भी नहीं पाया। उसी रात्रि प्रिमरोजहिल के

समीप सातवाँ सिलण्डर गिरा। यह उस समय गिरा जब कि कुमारी एल्फिन्स्टन जाग कर पहरा दे रही थी, कारण कि उसने मेरे भाई के साथ जागने की पारी बाँध ली थी। उसने उसे गिरते देखा।

बुधवार को तीनों भगोडे एक अधपके गेहू के खेत में रात्रि व्यतीत करके चेम्सफोर्ड पहुँचे, और वहाँ उनको उस स्थान के निवासियो द्वारा रोका, और स्वय को 'कमेटी आफ पब्लिक सप्लाई' कहते हुए, उन्होने टट्टू को भोजन-सुरक्षा के निमित्त पकड लिया और उसका कोई मूल्य न चुकाकर, उसमें से उनको केवल उनके भाग को देने का ही आश्वासन दिया। यहाँ मङ्गल-निवासियो के एपिंग पर पाये जाने का समाचार प्राप्त हुआ एव वाल्थम एबे पाउडर मिल्स के एक मङ्गल-अस्त्र को उडा डालने के असफल प्रयत्न में नष्ट-भ्रष्ट हो जाने का समाचार भी प्राप्त हुआ।

यहाँ लोग गिर्जों की मीनारो से मङ्गल-निवासियो को देख रहे थे। सौभाग्य से अवसर पाकर मेरे भाई ने तुरन्त भोजन की प्रतीक्षा बिना किये ही समुद्र-तट तक पहुँच पाने का प्रयत्न किया, यद्यपि वह तीनो ही अत्यधिक भूखे थे। दोपहर के समीप वह टिलिंघम से होकर निकले, जो भोजन के निमित्त लूट-मार करने वाले एक-दो भगोडो के अतिरिक्त विलक्षण रूप से शान्त एवं परित्यक्त पड़ा था। टिलिंघम के समीप उनको समुद्र का दर्शन होने लगा जो सभी प्रकार के जलयानो की भीड-भाड से परिपूर्ण था जिनकी कल्पना सम्भव है। कारण कि उस समय के पश्चात् जब कि नाविको की गति टेम्स तक आ पाने में असमर्थ हो गयी, वह एपेक्स तट, हारविच, वाल्टन और क्लेक्टन और बाद में फाइनेस एव शूबरी तक यात्रियो को छोड़ने के लिये आने लगे। यह बेडे एक हँसिये के आकार में प्रतीत होते थे, जो धीरे-धीरे कुहरे से ढँक कर नेज़ नामक स्थान तक आते-आते दृष्टि से ओझल हो जाते थे। तट पर आंग्ल, स्काच, फ्रेंच, डच और स्वीडिश मछली मारने वाली लाउन्चेज, याटच् और विद्युत-चालित नौकाओं की भीड़-भाड़ थी, और उनसे परे

विशाल यान, गदे कैलियर्स, यात्रियो को ढोनेवाली नौकाएँ, पैट्रौल-टैंकों को ढोने वाले यान एवं साउथेम्पटन तथा हैमबर्ग से आने वाले श्वेत लाइनर्स और ब्लेक वाटर से परे के नील-तट परे मेरा भाई किनारे पर खडा यात्रियो से खचाखच भरी हुई नौकाओ को धूमिल रूप में देख सका, काले-काले धब्बो का विस्तार जो ब्लेक वाटर से मैल्डन तक प्रतीत होता था।

यहाँ से कई मील दूर लौह-आवरण से ढँकी पानी में पर्याप्त डूबी हुई कोई वस्तु, मेरे भाई के दृष्टि प्रसार की सीमा में किसी डूबे जहाज की भाँति पडी थी। यह खम्भा गाडने वाले यंत्र वाला 'थण्डर चाइल्ड' नामक यान था। दिखाई पडने वाला केवल एक युद्ध पोत था, परन्तु सीधे हाथ की ओर पानी के चमचमाते तल पर—कारण कि वह दिन आश्चर्यजनक रूप से प्रशान्त था—धूम्र का एक विशाल नाग-सा दृष्टि-गोचर होता था, जो दूरी पर पड़े अन्य ऐसे ही पोतो की सूचना देता था, जो एक दूरी तक फैली हुई पक्ति मे वाष्प-पूर्ण एव क्रिया-शील होने के निमित्त पूर्णतः सन्नद्ध टेम्स के नदी-मुख पर मगल-निवासियो की उस विजय के समय सतर्क रूप से फैले हुए थे, यद्यपि वह उनकी गति को किसी भी प्रकार से रोक पाने में असमर्थ थे।

समुद्र का दर्शन करते ही अपनी ननद के आश्वासनों के होते हुए भी, श्रीमती एल्फिन्स्टन त्रस्त हो उठी। इससे पूर्व वह कभी भी इगलैंड से बाहर नही गयी थी, और वह बाधव-हीन पराये देश में जाने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेयस्कर समझती थी एव इसी प्रकार अन्य बाते। बेचारी नारी! वह समझती थी कि फ्राँसीसी एव मगल-निवासी व्यवहार मे समान ही होगे। इन दो दिनो की अनवरत यात्रा से वह उन्माद-ग्रस्त, भय-ग्रस्त एव शोक-ग्रस्त हो उठी थी। उसकी प्रबलतम भावना स्टेन्मूर लौट जाने की थी। स्टेन्मूर में सभी कुछ सदा ही ठीक एव सुरक्षित रहता था। स्टेन्मूर में उनकी भेंट जार्ज से······

पर्याप्त कठिनाई के पश्चात् ही वह उसे समुद्र-तट तक ला पाये,

जहाँ सौभाग्य से मेरा भाई पैडलर स्टीमर पर सवार कुछ व्यक्तियो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो सका, जो टेम्स के नदी-मुख से समुद्र की ओर आ रहे थे। उन्होने एक नौका उन्हे ले आने के निमित्त भेजी, और उन तीनो के परिवाहन का सौदा छत्तीस पाउड में किया। यह स्टीमर, उन लोगो ने बताया आसटेन्ड जा रहा था।

उस समय लगभग दो बजा होगा जब मेरा भाई अपना किराया देकर उन लोगों के साथ स्टीमर पर चढ पाया एव स्वय को सुरक्षित समझ सका। स्टीमर में भोजन का प्रबन्ध था, यद्यपि उसका मूल्य अत्यधिक बढा-चढा था, और उन तीनो ने एक अगली सीट पर कुछ खा पाने का प्रयत्न किया।

उस समय तक यद्यपि स्टीमर पर चालीस से अधिक यात्री थे, जिनमें से अधिकाश किराये के रूप में अपनी अन्तिम धन-राशि भी समाप्त कर चुके थे, परन्तु तो भी कप्तान ब्लेक वाटर पर ही सन्ध्या के पाँच बजे तक पड़ा रहा, जिस समय तक कि सभी बाहरी डेक तक सकट-जनक रूप से खचाखच न भर गये। सम्भव है कि वह और अधिक समय तक वहीं रुका रहता, यदि उसने उसी समय दक्षिण में तोपों के चलने की ध्वनियाँ न सुनी होती। और जैसे कि उनके ही प्रत्युत्तर में समुद्र में पडे हुए उन लौह-परिधान वाले पोतों ने एक छोटी चलायी एवं झन्डो की वन्दनवार-सी ऊपर की ओर लहरा दी। उनके फनेलो से धुएँ की विशाल राशियाँ ऊपर की ओर उठने लगी।

कुछ यात्रियों का उस समय तक यह विचार था कि यह ध्वनियाँ शूबरी की ओर से आ रही हैं, जब तक कि वह अधिक तीव्र रूप में सुनायी न पडने लगी। और उसी समय समुद्र-तल से उन लौह-आवरणों वाले पोतों के मस्तूल एवं अन्य ऊपरी भाग काले बादलों के नीचे उठते प्रतीत हुए। परन्तु मेरे भाई का ध्यान पुन. दक्षिण वाली उन्ही तोपो की ध्वनियो की ओर आकर्षित हो गया। उसका विचार था कि उसने उस दूरतम भूरे कुहरे से काले धुएँ का एक विशाल पिंड देखा।

वह छोटा स्टीमर नावो एव जलयानो के उस अर्ध चन्द्राकार-से अपना मार्ग पूर्व की ओर निकालता बढ रहा था, और एसेक्स का वह नीचा तट धुंधला एवं नीला पडता-सा प्रतीत हो रहा था, जब कि दूरी के कारण छोटा एव धूमिल-सा दीख पडने वाला एक मगल-अस्त्र फाउनेस की दिशा से उस कीचड वाले तट पर आता प्रतीत हुआ। उसे देखते ही ऊपर पुल पर खडा कप्तान उच्चतम स्वर मे अपने ही विलम्ब पर कसमे खाता रहा, और ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे स्टीमर के निर्जीव पैडिलो में भी भय का संचार हो उठा। स्टीमर पर सवार प्रत्येक व्यक्ति बाहरी भागो पर खडा अथवा भीतरी सीटो पर बैठा उस दूरतम आकृति को घूर रहा था, जो भूमि पर के प्रत्येक वृक्ष अथवा गिर्जे की चोटियो से ऊँचा था, और सुविधापूर्वक मनुष्यों के सदृश्य छलाँगे लगाता चल रहा था।

यह प्रथम मंगल-अस्त्र था जो मेरे भाई ने देखा, और भयभीत होने की अपेक्षा वह आश्चर्य-जड-सा खडा इस दैत्य को तत्परतापूर्वक जलयानों के उस बेडे की ओर बढता देख रहा था, जो तट को पार कर जल में अत्यधिक धँसता-सा प्रतीत होता था। तब इस दैत्य से परे एक दूसरा वृक्षो के झुरमुट को लाँघता, और फिर उससे भी परे एक अन्य, जो समुद्र एव आकाश के बीच बढ़ा आ रहा था। वह सभी समुद्र की ओर बढे आ रहे थे, जैसे कि उनका लक्ष्य बच निकलने वाली इस विशाल राशि को रोकना था, जो फाउनेस से हेज़्लैक फैली हुई थी। यद्यपि इस छोटी पैडिल बोट के एजिन घडघडा रहे थे और उसके छोटे-छोटे पहिये अपने पीछे झागो की धारियाँ छोडते जा रहे थे, परन्तु तो भी वह उस विशाल एवं अशुभ प्रस्थान से पीछे छूटती जा रही थी। उत्तर-पश्चिम की ओर देखने पर मेरे भाई ने जलयानो के उस विशाल समूह को प्रति-पल समीप आते उस भय से लहराता-सा पाया, कोई यान किसी दूसरे के पीछे से निकल रहा था, दूसरा चारों ओर से चक्कर काटता आ रहा था, स्टीम वाले जलयान सीटियाँ देते हुए धुएँ के पिंड छोड

रहे थे, मस्तूल इधर-उधर उड रहे थे एव छोटी नौकाएँ चारो ओर चक्कर काट रही थी। इस सब एव मन्द गति से अपनी बायीं ओर बढने वाले उस सकट की ओर वह इतना अधिक आकर्षित हो चुका था कि उसका ध्यान समुद्र की किसी भी अन्य वस्तु की ओर नही था। तब स्टीम-बोट के एक आकस्मिक झटके ने (कारण कि कुचले जाने से बचने के निमित्त उसने सहसा एक चक्कर काटा था) उसे उस सीट से फेंक दिया जिस पर वह खडा था। उसके चारो ओर चीत्कार हो रहा था, कुछ लोगो के पाँव कुचल गये थे, एव उल्लास की कुछ मन्द ध्वनियाँ, जिनके प्रत्युत्तर मे केवल कुछ मन्द कठ ही सुने जा सके। स्टीम-बोट न पुन. झटका खाया, और वह हाथो के बल गिर पडा।

वह उछल कर खडा हो गया और उसने स्टीमर के पार्श्व-भाग की ओर देखा, और उनसे सौ गज से कम एक छोटी नौका, हल के समान जल को चीरने वाला लौह एक-एक दीर्घ ब्लेड, जो स्टीमर से आगे की ओर प्रवाहित होने वाली झाग की प्रचण्ड लहरों के मध्य इधर-उधर झकोले खा रहा था, और असहाय रूप से वह नौका वायु में अपने पैडिलो को चला रही थी, और तब उसने उसके डेक को जल-मग्न होते देखा।

पानी की एक बौछार ने मेरे भाई को एक क्षण के लिये अन्धा कर डाला। जब उसके नेत्र पुन खुले, उसने देखा कि वह दैत्य जा चुका है, और भूमि की ओर बढ रहा है। उसमें से विशाल लौह के ऊपरी भाग फूट पड़े, और उनमे से जुडी हुई फनेलो से अग्नि के साथ-साथ धूम्र का एक विशाल पिंड वायु में फूट पडा। यह तारपीडो वाला पोत था, जो धुआँ देता, भय-त्रस्त जलयानों की रक्षा के निमित्त आ रहा था।

स्टीमर की ऊपरी रस्सियो को पकडे और कँपकँपाते उस डेक पर पाँव जमाये मेरे भाई ने मंगल-अस्त्रो पर आक्रमणशील इस विशाल दैत्य को पुन' देखा, एव इस बार उसने उन तीनों को पास-पास देखा, और वह समुद्र की ओर इतने समीप थे कि उसने उनकी टिकटियों को पूर्णतः जल-मग्न पाया। जल-मग्न एव इस प्रकार दूर से देखे जाने पर वह उस

विशाल लौह-आवरण से कही कम भयानक प्रतीत हो रहे थे, जिसके सरक्षण में वह स्टीमर ऐसी असहायता से निकल भागने का प्रयत्न कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह इस नूतन विरोधी को कौतूहल के साथ देख रहा हो। हो सकता है कि उनके निकट यह दैत्य उन्हीके समान प्रतीत हो रहा हो। 'थन्डर चाइल्ड' ने कोई तोप नही चलायी, और इसी कारण वह समग्र गति से उनकी ओर चलता रहा। शायद यह उसके तोप न चलाने का ही फल था कि वह शत्रु के इतने समीप पहुँच पाने में सफल हो सका। मगल-अस्त्र वाले लोग नही जानते थे कि वह क्या करें। केवल एक गोला, और अपनी अग्नि किरण के द्वारा वह उसे रसातल पहुँचा देते।

'थन्डर चाइल्ड' ऐसी गति से चल रहा था कि क्षरण मात्र में ही वह स्टीम-बोट और एसेक्स-तट की ओर क्षितिज के विस्तार मे घुँधले पडते-से उन भीमकाय मगल-अस्त्रो के मध्य पहुँचता-सा दिखाई पडा।

सहसा अग्रिम मगल-यत्र ने अपने ट्यूब को नीचा किया, और उस लौह-आवरण पर काली गैस का एक कनस्तर फेंका। वह उसके बाये ओर वाले भाग से टकराया, और एक काले धुएँ के पिंड के रूप में उड़ता प्रतीत हुआ, जो समुद्र की ओर गति-शील हुआ, सीधा ऊपर उठने वाला धूम्र, जिसमें से वह लौह-आवरण साफ निकलता दिखाई पडा। स्टीमर से देखने वाले दर्शको को, जो पानी में पर्याप्त धँसे थे एव जिनके नेत्रों पर सूर्य का प्रकाश पड रहा था ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वह मगल-अस्त्रों के मध्य पहुँच चुका है।

उन्होने उन धुधली आकृतियो को एक दूसरे से पृथक होते और तट की ओर लौटने के निमित्त पानी से निकलते देखा, और उनमें से एक ने अपने कैमरे के समान अपने अग्नि-किरण वाले यत्र को ऊपर उठाया। नीचे की ओर तिरछा किये हुए वह उसे थामे रहा, और उसके स्पर्श मात्र से ही जल खौलने-सा लगा। स्टीमर अपनी तीव्रतम गति से चलता रहा।

१८

पद-तले

अब तक अपने भाई के अनुभवो का वर्णन करने मे मैं अपने संबध से इतना दूर जा पहुँचा कि पिछले सभी परिच्छेदों भर, मैं और वह पादरी हैलीफोर्ड स्थित उस मकान में पडे रहे, जिसमें हम काली-वाष्प से बच पाने के निमित्त छिप रहे थे। मैं वहीं से प्रारम्भ करता हूँ। हम वहाँ रविवार की रात्रि भर, और फिर दिन भर—उस दिन जो अव्यवस्था का दिन था—सूर्य-प्रकाश के एक छोटे-से द्वीप में, जिसे उस काली वाष्प ने शेष संसार से पूर्णतः काट रखा था, उद्वेगमय अकर्मण्यता के भाव से पडे, उन थका डालने वाले दिनों में हम केवल प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त और कुछ न कर सके।

मेरा मन अपनी पत्नी की चिन्ता से पूर्ण था। भयभीत, संकट-ग्रस्त और मुझे मृत समझ कर मेरी मृत्यु के शोक में लीन, मैंने उसकी कल्पना लैदरहैड में की। मैं कमरो में इधर-उधर चक्कर काटता, जोर से बोल उठता जब कि मैं विचार करता कि मैं किस प्रकार उससे बिछड़ गया, और मेरी अनुपस्थिति में वह किन-किन संकटों में पड सकती है। मेरा चचेरा भाई, मै मानता था, किसी भी सकट-पूर्ण स्थिति का सामना करने का साहस रखता है, परन्तु वह सकट को शीघ्र ही समझ लेने और तुरन्त ही उठ खडा हो जाने वाले व्यक्तियो में नही था। इस समय जिस वस्तु

की आवश्यकता थी वह साहसपरता न थी वरन् सावधानी थी। मेरे पास एक ही सान्त्वना थी, और वह यह विश्वास था कि मंगल-निवासी लन्दन की ओर बढ रहे हैं और उससे दूर जा रहे हैं। ऐसी अनिश्चित चिन्ताएँ मन को सवेदनशील एव मर्माहत बनाये रखती हैं। पादरी के मुख से निरन्तर निकलने वाले स्त्रोतो को सुनते-सुनते मै थक चुका था और चिड़चिड़ा उठा था, विशेषतः उसकी स्वार्थ-पूर्ण दुखानुभूति पर। कुछ निष्फल प्रतिवादन के पश्चात् मै उस एक ही कमरे, जिसमें ग्लोब लगे थे, नमूने और कापियाँ, और जो स्पष्टतः छोटे बालको की कक्षा का कमरा था, रहते हुए भी उससे दूर रहने लगा। अन्त में जब वह मेरे पीछे उस कमरे मे भी आ पहुँचा, मै मकान के ऊपरी भाग में स्थित एक बाक्स-रूम में चला गया, और अपनी पीडित भावनाओ के साथ एकान्त मे रह पाने के निमित्त, मैने स्वय को भीतर से बन्द कर लिया।

उस समस्त दिन एव आगामी प्रातः हम उस काली वाष्प द्वारा बुरी तरह से घेर लिये गये। रविवार की सन्ध्या को पास वाले मकान में मनुष्यो के होने का आभास मिला—एक खिडकी पर एक गतिशील चेहरा एव गतिशील प्रकाश और बाद में किसी द्वार के बन्द किये जाने की ध्वनि। परन्तु मुझे नही मालूम कि यह कौन लोग थे अथवा उनका क्या अन्त हुआ। आगामी दिन हमने उनको नही देखा। सोमवार को प्रातः वह काली वाष्प मन्दगति से नदी की ओर खिसकने लगी, और अन्त में उस सडक के सहारे चलने लगी जिसके सहारे वह मकान था जिसमें हम छिपे पड़े थे।

मध्याह्न के समीप एक मगल-यत्र उस मैदान में आया, जिसने अत्यधिक ऊष्ण वाष्प का एक फुहारा-सा छोडा और उन समस्त खिडकियों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, जिनका उसने स्पर्श किया, और पादरी के हाथों को झुलसा दिया जब कि वह सामने वाले कमरे से बाहर की ओर भागा। अन्त में जब हम उन झुलसे हुए कमरो से रेंग कर पुनः बाहर की ओर झाँकने आये, उत्तर की ओर वाला प्रदेश ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि

कोई काला बर्फीला तूफान वहाँ से होकर निकला हो। नदी की ओर देखने पर हम झुलसे हुए चरागाहो की श्यामता में मिली हुई एक अवर्णनीय लालिमा को देखकर आश्चर्य में पड गये।

कुछ समय के लिए हम नही समझ सके कि इस परिवर्तन ने हमारी स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है, केवल इस तथ्य के कि हम काली वाष्प के भय से मुक्त हो गये हैं। परन्तु बाद में मैं समझ सका कि हम अब किसी घेरे में नही थे, और अब हम बाहर निकल सकते थे। जैसे ही मैं जान सका कि हमारा निकल भागने का मार्ग खुल चुका है, कार्यशीलता का मेरा स्वप्न सचेत हो उठा। परन्तु वह पादरी जड एव विवेकहीन हो चुका था।

"हम यहाँ सुरक्षित हैं," उसने दोहराया, "पूर्णत सुरक्षित।"

मैंने उसे छोड़ देने का निश्चय कर लिया—काश मैं ऐसा कर सका होता! उस सैनिक से प्राप्त शिक्षा से अधिक बुद्धि-युक्त, मैंने खाने-पीने की वस्तुओं की खोज की। अपने झुलसे हाथो के लिये मुझे तेल और पट्टियाँ प्राप्त हो गई और मैंने एक हैट तथा फलालेन की एक कमीज भी ले ली, जो मुझे उनमें से एक शयनागार में मिल गई। जब उसके निकट यह स्पष्ट हो गया कि मैं अकेला जाने को तत्पर हूँ, मैंने अकेले जाने का निर्णय कर लिया है, वह सहसा चलने को उठ खडा हुआ। और उस तृतीय प्रहर सभी कुछ शान्त रहने के कारण, हम, जैसा कि मैं अनुमान करता हूँ, पाँच बजे के लगभग सनबरी की ओर वाली काली पडी सडक पर चल दिये।

सनबरी में एव सडक पर थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् हमें मृत शरीर मिले जो ऐंठे हुए पडे थे—घोडे एवं मनुष्य—उल्टी हुई गाड़ियाँ एव सामान, जिन पर काली धूल की परतें जमी थीं। इन भस्समय कफनों ने मुझे पाम्पेआई के विनाश की बात सोचने पर विवश कर दिया, जो मैंने पढी थी। बिना किसी दुर्घटना के हम हैम्पठन कोर्ट जा पहुँचे, हमारे मस्तिष्क विलक्षण एवं अपरिचित आकृतियो से भरे थे, और हैम्पटन-

कोर्ट पहुँच कर हमारे नेत्र एक छोटे-से हर-भरे भूमि-भाग को देखकर त्रासमुक्त हो सके, जो उस घुटनशील वाष्प के यात्रा-पथ से भाग्यवश बच सका था। हम बुशी पार्क गये, जिसमें पालित हरिण अखरोट के वृक्षों तले इधर से उधर चक्कर काट रहे थे, और इस प्रकार हम ट्वीकेनहैम आ पहुँचे। यह प्रथम मनुष्य थे जिन्हे हम देख सके।

सडक से दूर हैम एव पीटरशेम से परे के जगल इस समय भी जल रहे थे। ट्वीकेनहैम अग्नि-किरण अथवा काली वाष्प दोनो प्रकार की क्षतियो से सुरक्षित था, और यहाँ मनुष्य पर्याप्त सख्या मे थे, यद्यपि कोई भी हमें किसी प्रकार का समाचार न दे सका। उनमें से अधिकतम हमारे ही समान थे, जो इस आंशिक शान्ति का लाभ अपने स्थानो को बदलने के निमित्त कर रहे थे। मुझे स्मरण है कि यहाँ के अधिकतर मकान भय-ग्रस्त निवासियो द्वारा भरे हुए थे, इतने भय-त्रस्त कि उनमे पलायन कर पाने की शक्ति का भी सर्वथा अभाव था। यहाँ भी सडक के सहारे शीघ्रता के साथ भगदड के चिन्ह विद्यमान थे। चकनाचूर ढेर के रूप में पड़ी तीन साइकिलो के देखने की मुझे स्पष्ट स्मृति है, जो पीछे आने वाली गाडियो के पहियो से बुरी तरह से कुचल दी गयी थीं। हमने लगभग साढ़े आठ बजे रिचमण्डब्रिज को पार किया। हम उस खुले हुए पुल से शीघ्रतापूर्वक गुजरे, परन्तु मैंने नीचे नदी में तैरते हुए लाल-लाल ढेरो को देखा, जिनमें कुछ कई-कई फीट चौड़े थे। मैं नही जानता कि यह क्या थे—उनका अन्वेषण कर पाने के लिये समय नही था—और मैंने उनका अर्थ उनकी वास्तविकता से अधिक भयावह रूप मे कर डाला। यहाँ भी सरे की ओर वाली दिशा में वह काली भस्म थी, जो कभी धूम्र एवं जीवित शरीरो का रूप रखती थी—स्टेशन के समीप का एक ढेर—परन्तु जिस समय तक हम बार्न्स के समीप न आ पहुँचे, हमने मगल-निवासियों को एक बार भी नही देखा।

उस काले पडे विस्तार में हमने तीन मनुष्यो को नदी की ओर जाने वाली किसी पार्श्व वाली गली में नीचे की ओर भागते देखा, और इसके

अतिरिक्त यहाँ सभी कुछ निर्जन था। पहाड़ी के ऊपर रिचमण्ड नगर तीव्र गति से जल रहा था, और रिचमण्ड नगर से बाहर उस काले धुएँ का कहीं कोई अस्तित्व नही था।

तब सहसा, जैसे कि हम क्यू (Kew) पहुचे, कुछ लोग भागते आते दीख पडे, और सौ गज के लगभग दूरी पर मकानो की चोटियो के ऊपर हमे एक मंगल-अस्त्र के दर्शन हुए। संकट को निकट पाकर हम भौंचक्के-से खड़े रहे, और वह अस्त्र यदि अपने नीचे की ओर झाँक लिया होता, हम तुरन्त ही नष्ट हो गये होते। हम इतने अधिक भय-ग्रस्त थे कि हमें आगे बढ़ने का साहस न हुआ, अपितु हम पीछे मुडे और एक उद्यान के शेड में छिप रहे। वह पादरी चुपचाप रोता और आगे बढना अस्वीकार करता मेरी अनुनय-विनय करता रहा।

परन्तु लैदरहैड पहुँचने का मेरा स्थिर विचार मुझे विश्राम नहीं करने दे रहा था, और गोधूलि के धुँधलके में मैं पुन: बाहर निकल पडा। मैं एक झाड़ीदार जगल से होकर निकला, और एक बड़े मकान के पार्श्व वाले मार्ग से निकलकर क्यू वाली सडक पर आ पहुँचा। पादरी को मैंने शेड में छोड दिया था, परन्तु वह शीघ्रतापूर्वक भागता मेरे पीछे आ पहुँचा।

दूसरी बार की यह यात्रा मेरे जीवन की एक बड़ी मूढ़ता थी। कारण कि यह स्पष्ट था कि मंगल-निवासी हमारे आस-पास ही हैं। वह मेरे समीप आ ही पाया होगा, जब कि हमने या तो उसी अस्त्र को जिसे हम पहिले देख चुके थे अथवा किसी अन्य को अपने से पर्याप्त दूर क्यू-लाज की ओर वाले चरागाहो के ऊपर देखा। चार-पाँच छोटी-छोटी आकृतियाँ उसके आगे मैदान की हरियाली में शीघ्रतापूर्वक भाग रही थी, और एक क्षण में ही यह स्पष्ट हो गया कि यह मगल-अस्त्र उनका पीछा कर रहा था। तीन छलाग में वह उन तक आ पहुँचा, और उसके पैरो के नीचे फैले वह चारों ओर भाग रहे थे। उसने उन्हे नष्ट करने के लिये अग्नि-किरण का प्रयोग नही किया, अपितु एक-एक करके उन्हें

ऊपर उठा लिया। उसने उन्हे विशाल धातु के उस पार्श्व-भाग में डाल दिया जो ठीक उस प्रकार का प्रतीत होता था जैसे कि मजदूरो के कन्धो पर उनकी टोकरियाँ लटकी होती हैं।

यह प्रथम अवसर था जब कि मै जान सका कि पराजित मानव-समाज को नष्ट कर डालने के अतिरिक्त मगल-निवासियो का अन्य कुछ अभीष्ट भी हो सकता है। भय से जड हम एक क्षण तक खडे रहे, तब पीछे मुडे और अपने पीछे एक द्वार से भागकर चारो ओर से दीवालों से घिरे एक उद्यान मे जा पहुँचे, और सौभाग्य से एक खाई को सामने पाकर उसमे उतरने की अपेक्षा गिर पडे और एक दूसरे से फुसफुसाने का भी साहस न करते हुए उस समय तक पडे रहे जब तक कि आकाश से तारे न झाँकने लगे।

मै समझता हूँ कि समय लगभग ग्यारह के समीप होगा जब कि हमने पुनः चलने का साहस एकत्रित किया, सडक के सहारे नही वरन् झाडियो एव वृक्षो के मध्य छिपते हुए, और उस अन्धकार मे वह सीधे और मै बाये हाथ वाली ओर उन मगल-अस्त्रो को देखते आगे बढे, जो हमारे चारो ओर घिरे प्रतीत होते थे। भटकते हुए हम झुलसे एव काले पडे एक स्थान पर आ पहुँचे, जो अब ठण्डा पड चुका और भस्म में परिवर्तित हो चुका था, छितरे पडे अनेक मानव-शव, जिनके सिर एव धड बुरी तरह से झुलस गये थे, परन्तु जिनके पैर एव बूट पूर्णतः सुरक्षित थे, और मृत घोडो का ढेर, जो चार पूरी हुई तोपो एव नष्ट-भ्रष्ट तोप-गाडियो से शायद पचास गज की दूरी पर था।

लगता था कि जैसे शीन नष्ट होने से बच गया है, पर वह स्थान निस्तब्ध एव निर्जन था। यहाँ हम किसी मृत शरीर से नही टकराये, यद्यपि हमारे निकट उस स्थान के पार्श्व-वर्ती मार्गों को देख पाने के लिये रात्रि पर्याप्त अँधेरी थी। शीन मे मेरा साथी सहसा थके एव प्यासे होने की शिकायत करने लगा, और हमने उनमे से किसी मकान मे जाने का निश्चय किया।

पहिला मकान, जिसमें हम कठिनाई के साथ एक खिडकी के द्वारा घुसे, एक छोटा एव शेप से पर्याप्त दूर बना मकान था, और उस स्थान मे मैने केवल कुछ गन्दे पनीर के अतिरिक्त अन्य कुछ भी न पाया। परन्तु जो कुछ भी हो, वहाँ पीने के लिये पानी था, और मैंने एक बसूला उठा लिया, जो हमारे निकट अगले मकान के द्वार को तोड पाने मे अत्यधिक उपयोगी सिद्ध प्रतीत हो रहा था।

हमने सडक को एक ऐसे स्थान पर पार किया जहाँ से वह मार्टलेक की ओर घूमती है। यहाँ प्राचीरो से घिरे एक उद्यान मे एक श्वेत मकान खडा था, और इसके भडार-गृह मे हमे खाद्य-पदार्थो का एक भडार प्राप्त हुआ—एक कढाई मे रखे रोटी के दो गस्से, बिना भुनी मांस की एक बोटी और रान का आधा टुकडा। इस सूची का वर्णन मैने इतनी सूक्ष्मता से इस निमित्त किया है कि शायद, जैसा कि आगे घटित हुआ, हमे इसी भोजन पर आगामी पन्द्रह दिन जीवित रहना पडा। एक आलमारी के नीचे बीयर की बोतल रखी थी, और दो बोरी हैरीकोट बीन्स और थोडे-से लचीले चोकन्दर थे। यह भडार-गृह एक प्रकार के रसोई-घर मे खुलता था, और यहाँ रखी जलाने की इन लकडियो और एक कप-बोर्ड मे हमने लगभग एक दर्जन बर्गन्डी, टीनो से भरा शोरबा और सालमन मछली, और दो टीन बिस्कुट प्राप्त किये।

बराबर वाले रसोईघर में हम अधेरे में बैठे रहे—कारण कि हमें प्रकाश करने का साहस नही था—और हम रोटी और उस रान को खाने लगे और एक बोतल से हमने कुछ बीयर भी पी। पादरी, जो इस समय भी भीरु एवं अशान्त था, अब आगे जाने योग्य हो गया था, और मै उससे कुछ खाकर अपनी शक्ति बनाये रखने का अनुरोध कर रहा था, जिस समय कि वह घटना घटी, जिसे हमें इसी स्थान मे बन्दी बना देना था।

"अभी मध्य रात्रि नही हो सकती", मैने कहा, और तभी नेत्रों को

अन्धा कर डालने वाली स्पष्ट हरित प्रकाश की चमक हुई। उस हरित् एव काले प्रकाश मे, रसोई घर की प्रत्येक वस्तु सहसा चमक उठी, और पुन. विलीन हो गयी। और इसके पश्चात् वस्तुओं के कम्पन का एक ऐसा कोलाहल हुआ जैसा कि मैंने उसके पूर्व अथवा उसके पश्चात् कभी भी नही सुना है। इसके बाद ही इतनी शीघ्रता से होने वाला कि वह तात्कालिक प्रतीत हो, मेरे पीछे धमाके का शब्द हुआ, काँच झन्ना कर टूटे, हमारे चारो ओर टूट-टूट कर गिरने वाला मलवा, और तब धडाधड छत का प्लास्टर हमारे ऊपर गिरने लगा, जो हमारे सरों से टकरा कर असख्य खडो मे बिखर जाता। अपनी रक्षा करता एव सज्ञा-हीन-सा मै चूल्हे के समीप वाले फर्श पर सर के बल गिर पडा। पर्याप्त समय तक, पादरी ने मुझे बताया मै चेतना-हीन रहा, और जब मै सचेत हुआ, हम लोग पुन अन्धकार में थे, और वह, जिसका मुँह जैसा कि मैंने बाद को पाया माथे की एक चोट के कारण रक्त से भीगा था, मेरे ऊपर पानी डाल रहा था।

कुछ समय तक मै स्मरण न कर सका कि क्या हो चुका है। तब धीरे-धीरे मुझे सब बाते याद आ गयी। कनपटी की एक चोट पीड़ा करने लगी।

"क्या तुम ठीक हो ?" पादरी ने फुसफुसा कर प्रश्न किया।

अन्त मे मैंने उसे उत्तर दिया। मैं उठ बैठा।

'चलो मत," उसने कहा। "फर्श काँच और चीनी के टूटे टुकडो से भरा है। और मै समझता हूँ कि तुम बिना शब्द किये नही चल सकते, और मेरा विचार है वह बाहर ही हैं।"

हम दोनो पूर्णत स्तब्ध बैठे रहे, इतने कि हम एक दूसरे की श्वास-ध्वनि भी कभी-कभी ही सुन पा.ा े। सभी कुछ मृत्यु के समान स्तब्ध था, यद्यपि एक बार हमारे अत्यन्त समीप प्लास्टर या कोई टूटी हुई ईंट गडगडाहट की ध्वनि करती हुई नीचे आ गिरी। बाहर और हमारे

पर्याप्त समीप किसी धातु की वस्तु की रह-रह कर होने वाली गड़गड़ाहट सुनायी पड़ी।

"वह !" पादरी ने कहा जब कि दोबारा हुई।

"हाँ", मैंने कहा, "परन्तु वह क्या है ?"

"एक मंगल-निवासी," पादरी ने उत्तर दिया।

मैंने पुन सुनने का प्रयत्न किया।

"वह अग्नि-किरण की ध्वनि के समान नही थी", मैंने कहा, और कुछ काल के लिये मै यह सोचने लगा कि उन विशाल युद्ध-अस्त्रो मे मे कोई मकान से टकरा गया है, जैसे कि मैंने एक को शेपर्टन चर्च से टकराते देखा था।

हमारी स्थिति इतनी विलक्षण एव अकल्पनीय थी कि उन तीन-चार घन्टो मे, जब तक कि पौ न फटी, हम शायद ही अपने स्थानो से हिले हो। और तब प्रकाश भीतर की ओर झाँका, उस खिड़की से नही, जो काली पड़ चुकी थी, वरन् सोट और हमारे पीछे टूटी हुई दीवाल के एक झरोखे से। रसोई-घर के भीतरी भाग को हमने प्रथम बार इस समय धुंधले रूप मे देखा।

बाहरी उद्यान से कीचड़ की एक विशाल राशि खिड़की द्वारा भीतर आ गयी थी, जो उस मेज पर बह रही थी जिस पर हम बैठे रहे थे, और हमारे पैरो के चारों ओर बिखरी पड़ी थी। बाहर मकान के सहारे मिट्टी का एक बड़ा ढेर लगा था। खिड़की के ढाँचे से ऊपर से हम एक उखड़े हुए गन्दे पानी के पाइप को देख सके। फर्श पर ध्वस्त हुए धातु के बर्तनों का एक ढेर था, मकान की ओर वाला रसोई-घर का सिरा टूट चुका था, और क्योंकि वहाँ प्रात कालीन प्रकाश फैल चुका था, यह स्पष्ट था कि मकान का एक बड़ा भाग खण्डहर हो चुका है। इस विध्वस से पूर्णत विभिन्न वह भोजन की चौकी थी, जो फैशन के अनुसार हल्के हरे रग की थी, और जिसके नीचे ताँबे और टीन के अनेक बर्तन थे, दीवाल पर लगा कागज जो नीले और श्वेत

टाइल्स के अनुकरण के समान लगता था तथा रसोई पर की ऊँचाई से ऊपर लगे फडफडाते हुए कुछ रगीन कागज ।

जैसे-जैसे दिन का प्रकाश फैलता गया, हमने दीवाल के छिद्र द्वारा, मै समझता हूँ, इस समय चमचमाते सिलण्डर के ऊपर प्रहरीवत् खडे किसी मगल-निवासी के शरीर को देखा । उसे देखते ही, जितना भी सम्भव हो सका, सावधानीपूर्वक हम रसोई-घर के प्रकाश से बर्तन माँजने वाली कोठरी के अन्धकार मे रेंग गये ।

सहसा वस्तुओ का वास्तविक अर्थ स्वय ही मेरी समझ मे आ गया ।

"पाँचवाँ सिलण्डर", मै फुसफुसा उठा, "मंगल से फेका गया पाँचवाँ अस्त्र इस मकान से टकराया है, और उसने हमे इन खण्डहरो के नीचे दबा दिया है ।"

कुछ काल तक पादरी मौन रहा, और तब वह अस्फुट स्वर में बोला "ईश्वर हम पर दया कर ।"

मैने उसे रिरियाते सुना ।

केवल इस ध्वनि के हम उस कोठरी मे निःशब्द पडे रहे । जहाँ तक मेरा सबध है, मेरे पास साँस लेने तक का साहस नही था, और रसोई-घर के द्वार पर होने वाले उस धुँधले प्रकाश पर दृष्टि जमाये मै बैठा रहा । मै अब पादरी का मुँह देख सकता था, धुँधली अण्डाकार आकृति, और उसका कालर तथा उसके कफ । बाहर धातु पर हथौड़ा पड़ने की ध्वनि होने लगी और तब तीव्र चिल्ल-पो, और तब कुछ समय पश्चात् किसी इजिन के समान हिस्-हिस् की ध्वनि । पर ध्वनियाँ, जो अधिकाश रूप मे समस्यात्मक रूप धारण कर रही थी, रह-रहकर होती रही, और कुछ भी पता लग सका तो इतना कि समय के साथ-साथ वह भी बढती जाती थी । तुरन्त ही परिमित धमाको की ध्वनियाँ एव एक कपन जिसने हमारे समीपवर्त्ती प्रत्येक वस्तु को कपा दिया, और जिससे भंडार-गृह मे रखे बर्तन बजने और इधर-उधर गिरने लगे, प्रारम्भ हुआ और चलता रहा । एक बार प्रकाश को जैसे ग्रहण लग गया, और प्रेतवत्

प्रतीत होने वाला रसोई-घर का वह द्वार पूर्ण अन्धकार मे डूब गया। कई घन्टो तक हम वहाँ स्तब्ध एव कँपकँपाते पडे रहे होगे, जब तक कि हमारी थकी हुई चेतना.........।

अन्त मे मैंने स्वय को जगा हुआ और भूखा पाया। मेरा मन ऐसा मानना चाहता है, हम उस जागरण से पूर्व दिन के अधिकाश भाग तक पडे सोते रहे होगे। क्षुधा एक ही छलाँग में इतनी तीव्र हो उठी कि उसने मुझे कार्य-शील बना डाला। मैंने उसे बताया कि मैं भोजन की खोज मे जा रहा हूँ, और टटोलता हुआ मै भण्डार-गृह की ओर बढा। उसने मुझे कोई उत्तर नही दिया, परन्तु शीघ्र जैसे ही कि मैंने खाना प्रारम्भ किया, उस अस्पष्ट ध्वनि ने, जो मै कर रहा था, उसे गति-शील कर दिया, और अपने पीछे मैंने उसके रेगकर आने की ध्वनि सुनी।

१९

खण्डहर से क्या देखा

खाना समाप्त करने के पश्चात् हम पुन. रेंगकर उस कोठरी मे वापिस आ गये और वहाँ आकर मैं पुन. सो गया होऊँगा, कारण कि जिस समय मैं उठा मै एकाकी था। धमाको का वह कम्पन खेदजनक रूप मे चलता रहा। मैंने पादरी को अनेक बार पुकारा, और अन्त में मैंने अपना मार्ग रसोई-घर के द्वार की ओर टटोला। इस समय भी दिन का प्रकाश था, और मैंने उसे कमरे के उस पार उस त्रिकोणात्मक छिद्र से, जो बाहर के मगल-यंत्र की ओर खुलता था, सटे पाया। उसके कन्धे

उठे हुए थे, जिससे उसका सिर मेरी दृष्टि से छुपा हुआ था।

किसी भी एंजिन-शेड मे होने वाले कोलाहलो के समान मैं अनेक ध्वनियाँ सुन सका, और वह स्थान उन ध्वनियो से कम्पायमान हो रहा था। दीवाल के उस छिद्र से मैं सूर्यास्त के स्वर्णमय प्रकाश मे पीली दीख पडने वाली एक पेड की चोटी एव उस शान्त सन्ध्या के ऊष्ण-नील वातावरण को देख सका। एक मिनिट या उससे कुछ अधिक मैं पादरी को देखता रहा, और तब रेगते एव सावधानी से फर्श पर बिखरे उन टुकडो पर पाँव रखता हुआ आगे बढा।

मैने पादरी के पैर का स्पर्श किया, और वह इतनी प्रचण्डता के साथ पीछे मुडा कि प्लास्टर का एक बहुत बडा खण्ड बाहर की ओर रपका और तीव्र ध्वनि करता हुआ गिर पडा। इस भय से कि कही वह चीख न पडे, मैने उसकी भुजा को कसकर पकड लिया, और एक दीर्घ काल तक हम गति-हीन पडे रहे। तब यह देखने के लिये कि हमे सुरक्षित रखने वाली उस प्राचीर का कितना भाग अभी शेष है, मैने अपना सिर पीछे घुमाया। इस उखडे हुए प्लास्टर ने अपने पीछे लम्ब-रूप वाला एक छिद्र छोड़ दिया था, और एक सोट के बीच से सावधानी-पूर्वक अपना सिर उठाकर मै उसके द्वारा उस सडक को देख सका जो इस रात्रि से पूर्व एक शान्त सडक थी। वह परिवर्तन, जो हमने वहाँ पाया, पूर्व से सर्वथा भिन्न था।

पाचवाँ सिलण्डर उस मकान के मध्य भाग मे गिरा होगा, जिसमें हम पहिले गये थे। वह इमारत अपने स्थान पर नही थी, इस आघात से वह पूर्णत. ध्वस्त एव चूर-चूर हो गई थी। वह सिलण्डर इस समय मकान की नीव से भी कही नीचे एक खड्ड मे पडा था, जो उसमे कही बडा था जिसे मैने वोकिग मे देखा था। उस प्रचण्ड आघात से उसके आस-पास की पृथ्वी की धज्जियाँ उड़ गई थी—'धज्जियाँ' ही केवल एक शब्द है—और वह कीचड विशाल ढेरो में यहाँ-वहाँ पडी थी जिसने कि समीपवर्ती मकानो को छिपा रखा था। वह ठीक उसी प्रकार

छितराई पडी थी जैसे कि हथौडे के प्रचण्ड आघात से कीचड। हमारा वाला मकान पीछे की ओर गिरा था, सामने वाला भाग, यहाँ तक कि उसका फर्श भी, पूर्णत: ध्वस्त हो चुका था, और सौभाग्य से रसोई-घर और बर्तन माँजने वाली वह कोठरी ही बच गई थी, और केवल सिलण्डर की ओर वाले भाग को छोडकर अन्य तीनो ओर से टनो मिट्टी एव मलवे के ढेरो के नीचे दबी पड़ी थी। इस स्थिति के साथ-साथ हम इस समय उस गोल खड्ड के ऊपर लटक रहे थे जिसे बनाने में मगल-निवासी तत्पर थे। वह प्रचण्ड ध्वनि निश्चित रूप मे हमारे पीछे से आ रही थी, और थोडे-थोडे समय पर एक चमकीला हरित वर्ण धूम्र हमारे उस झाँकने वाले छिद्र के सामने किसी पर्दे के समान ऊपर उठता दीख पडता था।

खड्ड के मध्य सिलण्डर खुल चुका था, और नष्ट-भ्रष्ट एव मलवे के ढेरो मे दबी झाडियो के बीच खड्ड के उस सिरे पर, उन विशाल युद्ध-अस्त्रो मे से एक अपने निवासियो से परित्यक्त, सान्ध्य आकाश के नीचे सीधा और ऊँचा खडा था। प्रथम तो उस असाधारण एव चमचमाते यान्त्रिक आकार के कारण मै न तो उस खड्ड को ही देख सका और न उस सिलण्डर को ही, यद्यपि उनका वर्णन पूर्व ही कर देना सुविधाजनक रहा, जो भूमि खोदने मे संलग्न था, और साथ ही उन विलक्षण जीवो के कारण जो मन्द गति से एक पीडा के साथ समीपवर्ती मलवे के उस ढेर पर रेंग रहे थे।

निश्चित रूप मे वह यान्त्रिक आकार ही था जिसने सर्व प्रथम मेरे ध्यान को आकर्षित किया। वह उन जटिल रचनाओ मे से एक था जिन्हे हैन्डलिंग मशीन कहा जाता है, और जिनका अध्ययन आज तक इस लोक के अन्वेषणो को इतनी अधिक प्रेरणा देता रहा है। जैसे ही वह मुझे दिखाई पडा, वह पाँच जुडे हुए एवं चचल पैरो वाले एक धातु-निर्मित मकडे के समान दीख पडा, जिसमें विशाल संख्या मे लीवर और छडियाँ जुडी हुई थी, और जिसके चारो ओर उस तक पहुँचने एवं उसे

जकड लेने वाले स्पर्श-ज्ञान-सयुत अग थे। उसकी अधिकतम भुजाएँ मुडी हुई थी, परन्तु तीन और स्पर्श-ज्ञान संयुत अंगो द्वारा वह अनेक डब्बों, प्लेटो और छड़ियो को निकाल रहा था जो सिलण्डर के आवरण मे लगी थी, और प्रकट रूप मे उसकी दीवालो को सुदृढ़ करती थी। यह सब, जब वह उन्हे निकाल चुका, बाहर उठा लिये गये और पीछे की ओर समान तल वाली पृथ्वी पर रख दिये गये।

उसकी गति इतनी तीव्र, जटिल एव निर्दोष थी कि प्रथम बार उसकी धातु की चमक देखते हुए भी मै उसे यत्र की भाँति न देख सका। युद्ध-यत्रो को असाधारण रूप मे नियमित एव क्रिया-शील बनाया गया था, परन्तु इस यन्त्र से तुलना किये जाने योग्य कुछ भी नही था। वह लोग जिन्होने इस यन्त्र को नही देखा है, और जिनके निकट इसे समझ पाने का साधन या तो किसी कलाकार के कल्पित प्रयास है अथवा मेरे समान किसी साक्षी के अपूर्ण वर्णन, उनके लिये इनकी सजीवता की कल्पना कर पाना कठिन है।

युद्ध के घटना-क्रमानुसार वर्णन के हेतु सर्व प्रथम दिये गये सूचना-पत्रो में से एक पत्र मे दिये गये दृष्टान्त-चित्र का मैं विशेष रूपसे स्मरण करता हूँ। स्पष्ट है कि कलाकार ने इन युद्ध-यन्त्रो में से किसी एक का शीघ्रतापूर्वक अध्ययन किया है, और वही उसके ज्ञान की परिसमाप्ति हो गयी। उसने उन्हे तिरछा और सीधी तिपाई के रूप मे चित्रित किया जिसमें न तो लचकीलापन था और न कोई सूक्ष्मता और जो दर्शक के निकट उनके कठिनता से चलित हो पाने के भाव को भी चित्रित करता है। ऐसे मत वाले उस सूचना-पत्र का पर्याप्त प्रचार हुआ था, और यहाँ मै उनका वर्णन केवल पाठक को उनके छोडे गये प्रभाव के प्रति सावधान करने के निमित्त ही कर रहा हूँ। वह उन सजीव मगल-निवासियो के समान, जिन्हे मैने काम करते देखा था, ठीक उसी प्रकार नही थे जैसे कि कोई डच खिलौना किसी मानव के समान नही हो सकता है। मेरे विचार मे इन दृष्टान्त-चित्रो के बिना वह

सूचना-पत्र अधिक उपयोगी सिद्ध होता ।

सर्व प्रथम, मै पुनः कहता हूँ, वह हैण्डलिंग मशीन मुझे किसी मशीन के समान नहीं लगी, वरन् चमकीली खाल वाले कर्कट के समान कोई जीव । उस यन्त्र को सचालित करने वाला वह मगल-निवासी, जिसके कोमल स्पर्श-ज्ञान-संयुत अग उसकी गति को क्रियाशील करते थे, किसी कर्कट के मस्तिष्क वाले भाग के समान दृष्टि पडता था । परन्तु तब मैंने इस भूरे, चमकदार और चमडे के समान दीख पडने वाले आवरण की समानता टेडे-मेडे शरीर वाले उन जीवो से की और इन निपुण कार्य-कर्ताओ की वास्तविक स्थिति मेरी समझ मे आयी । यह समझ मे आने के साथ ही मेरा कौतूहल उन अन्य जीवो के प्रति आकृष्ट हो उठा, जो सजीव मगल-निवासी थे । इनकी एक क्षणिक झलक मै पहिले ही देख चुका था, और पूर्व की वह वमन की अनुभूति अब मेरे अन्वीक्षण को आबाधित नही कर रही थी ।

अब मैंने देखा, वह इस लोक के प्राणियो से इतने विभिन्न थे जितना कि सोचा जाना सम्भव है । वह विशाल और गोल शरीर वाले थे—अथवा सिरो वाले, जिनके सिरो का व्यास लगभग चार फीट था, प्रत्येक शरीर के सामन एक सिर । इस चेहरे पर नथने नही थे—वास्तव मे ऐसा प्रतीत होता है कि मंगल-निवासी गन्ध-ज्ञान से वचित थे परन्तु उस पर गहरे काले रंग वाले विशाल नेत्रो का जोडा था और उसके ठीक नीचे एक प्रकार की मांसमय चौच । इस शरीर अथवा सिर के पीछे—मै नही जानता कि मै इसे किस नाम से पुकारूँ—एक कडा और नगाडे के समान भाग था, जिसे शरीर-रचना-विज्ञान मे कान की सज्ञा दी जानी चाहिए, यद्यपि वह हमारे इस लोक की भारी वायु मे निष्क्रिय ही सिद्ध हुआ होगा । उसके मुख के समीप सोलह पतले एवं कोडे के समान प्रतीत होने वाले स्पर्श-ज्ञान-सयुत अंग थे, जो आठ-आठ के दो गुच्छो मे विभक्त थे । उसी समय से इन गुच्छों का प्रसिद्ध शरीर-रचना शास्त्र-वेत्ता प्रोफेसर हाउज़ द्वारा दिया गया 'हाथ' नाम उपयुक्त ही सिद्ध हुआ ।

और मैने भी जब इन मगल-निवासियो को प्रथम बार देखा, वह इन हाथो के बल स्वय को ऊपर उठाने का प्रयत्न कर रहे थे, परन्तु निर्विवाद रूप मे इस लोक की भौतिक स्थिति से बढे हुए बोझ के कारण ऐसा कर पाना असम्भव था। ऐसी कल्पना करने के लिये पर्याप्त कारण है कि मंगल-लोक मे वह ऐसी सुविधा के साथ कर सकते होगे।

उनकी आन्तरिक शरीर-रचना मै यहाँ बता दूँ, जैसा कि सूक्ष्म-परीक्षा से सिद्ध हुआ, उतनी ही सरल थी। उनके शारीरिक ढाँचे मे अधिकतम भाग मस्तिष्क का था, जिसमे से बहुसंख्या मे नाडियाँ, आँखो, कानो और उन स्पर्श-ज्ञान-सयुत अंगो तक जाती थी। इससे परे जटिल रचना वाले उनके फेफडे थे, जिसमे उनका मुख, हृदय एवं उनकी नाडियाँ खुलती थी। इस लोक के भारी वातावरण एव भूमि की अतिरिक्त आकर्षण शक्ति के कारण उत्पन्न उनके फेफडो की पीडाजनक क्रियाशीलता उनकी त्वचा की सिकुडन से पूर्णत: व्यक्त होती थी।

और मगल-निवासियो के शारीरिक अगो का यह योग था। विलक्षण, जैसा कि यह किसी भी मानव के निकट प्रतीत हो सकता है, पाचन के वह समस्त जटिल अग, जो हमारे शरीर के ढाँचे का प्रमुख भाग बनाते हैं, मंगल-निवासियो मे विद्यमान नही थे। उनमे सिर ही थे, केवल सिर। उनमे अँतडियाँ नाम को भी नही थी। वह भोजन नही करते थे, और पाचन उससे भी कम। भोजन के स्थान पर वह अन्य जीवो का रक्त पीते थे, और इस प्रकार उसे अपनी नाडियो में प्रविष्ट कर लेते थे। मैने स्वयं ऐसा होते देखा है, जैसे कि मै उसके स्थान पर उसका वर्णन करूँगा। परन्तु, हो सकता है कि मै नकचिडा-सा प्रतीत होऊँ, मै उसका वर्णन कर पाने मे असमर्थ हूँ जिसे मै देख भी न सका। इतना ही पर्याप्त है कि किसी भी जीवित जीव के शरीर से लिया गया रक्त, अधिकतर मनुष्यो के शरीर से, एक छोटी नलिका द्वारा रक्त-ग्राहक शिरा मे प्रविष्ट हो जाता था......।

निस्सन्देह उसकी कल्पनामात्र भी हमारे निकट भयावह रूप में अप्रिय हे, परन्तु इसके साथ ही हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमारी सामिष प्रकृति किसी बुद्धिमान खरगोश के निकट कैसी प्रतीत होगी।

शरीर-शास्त्र मे इ जेक्शन के लाभ को अस्वीकार नही किया जा सकता है, यदि कोई भी मनुष्य खाना खाने और उसकी पाचन-क्रिया में होने वाले मनुष्य के अपरिमाण समय एव शक्ति की हानि की कल्पना करे। हमारे शरीर में का आधा भाग ग्रन्थियो और नलियो और अगो से बना हुआ है, जो विभिन्न प्रकार के भोजनो को रक्त में परिवर्तित करते हैं। पाचन-क्रिया और स्नायु-मडल पर उसकी प्रतिक्रिया हमारी शक्ति, वर्ण एवं मस्तिष्क को रस प्रदान करती है। मनुष्य सुखी अथवा दुखी अपने यकृत अथवा जठर-सबधी ग्रन्थियो के स्वस्थ अथवा अस्वस्थ होने के कारण होते हैं। परन्तु मगल-निवासी चित्त-वृत्ति एव भावनाओ-सम्बन्धी चेतना की समस्त अस्थिरताओ से परे थे।

अपने भोजन के निमित्त मनुष्यो से उनका कभी न विचलित होने वाला अनुराग कुछ तो उन जीवो के अस्थि-पजरो को देखकर होता है, जिन्हे वह मगल-लोक से भोजन-सामग्री के रूप में अपने साथ लाये थे। उन सिकुडे हुए शवो को देखने पर, जो मनुष्यो के हाथो में पडे हैं, प्रकट होता है कि यह जीव दो पैरो वाले थे, जिनके ककाल दुर्बल तथा एक प्रकार के श्वेत सिल्का पत्थर के बने-से प्रतीत होते थे (ठीक उसी प्रकार जैसे कि सिल्का स्पँज होते हैं) तथा दुर्बल मांसल-रचना वाले, छः फीट ऊँचे, जिनके ऊपर गोल सिर और चकमक पत्थर के समान गोलकों मे बडी-बडी आँखें। ऐसे ही दो-दो तीन-तीन जीव प्रत्येक सिलण्डर में लाये गये थे, और पृथ्वी पर पहुँचने से पूर्व ही वह सभी मार डाले गये थे। उनके लिये यह भी ठीक ही हुआ, कारण कि हमारे लोक में उनका सीधा खडा हो पाने का प्रयत्न मात्र ही उनके शरीर की प्रत्येक हड्डी को तोड डालता।

और जब कि मे इस वर्णन में लगा हूँ, मे इसी स्थान में कुछ अन्य

बाते भी बता दू, जो, यद्यपि वह सभी उस समय हमारे निकट प्रत्यक्ष न थी, उस पाठक को जो उनसे अपरिचित है, इन जीवो की अधिक स्पष्ट कल्पना कर सकने मे सहायक होगा।

तीन अन्य विषयो मे उनकी शरीर-रचना हमसे विलक्षण रूप मे विभिन्न थी। उनकी रचना निद्रा-मय नही थी, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य का हृदय कभी प्रसुप्त नही होता है। क्योकि पुन-शक्ति प्राप्त करने के योग्य मास-पेशियो की सरचना उनमे नही थी, वह सामयिक चेतना उनके निकट अपरिचित-सी ही थी। थकावट, ऐसा प्रतीत होता है, या तो उनको होती ही नही थी अथवा न्यून अशो मे होती थी। पृथ्वी पर वह बिना प्रयत्न-विशेष किये नही चल पाये होगे, यद्यपि वह अन्त तक क्रिया-शील रहे। चौबीस घण्टो मे वह चौबीस घटा काम करते थे जैसा कि इसी पृथ्वी पर चीटियाँ करती हैं।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि इस लिंगमय ससार मे विलक्षण प्रतीत होता है, मगल-निवासी लिंग-हीन थे, और अत. उन समस्त भावो से शून्य जो मानव-समाज मे इन भेदो से जन्म पाते है। एक नवजात मगल-निवासी, इस विषय मे कोई विवाद नही हो सकता है, वास्तव मे युद्ध के समय इसी पृथ्वी पर विद्यमान था, और वह अपने जन्म-दायक के शरीर से जुडा हुआ था, जिसका कुछ अश अलग हो चुका था जैसे कि छोटे लिली पुष्प की कलिका हो जाती है।

इस पृथ्वी के उच्चतर जीवो मे गुणित होने की यह प्रणाली लुप्त हो चुकी है, परन्तु पृथ्वी पर भी यह पुरातन प्रणाली थी। निम्न प्राणियो मे ट्यूनीकेट नामक जीवो तक मे, जो रीढ़वाले प्राणियो के निकटतम वशज थे, दोनो प्रणालियाँ साथ-साथ चलती रही, परन्तु अन्तत मैथुन-प्रणाली ने अपनी प्रतिस्पर्धिनी प्रणाली पर पूर्णत विजय प्राप्त कर ली। मंगल-लोक मे प्रत्यक्ष है कि यह क्रिया विपरीत रूप में घटित हुई।

यह एक उल्लेखनीय बात है कि मगल-निवासियो के आक्रमण से

पर्याप्त पूर्व वैज्ञानिक ख्याति वाले एक चिन्तन-शील लेखक ने मनुष्य के एक अन्तिम आकार की भविष्य-वाणी की थी जो मगल-लोक में विद्यमान वास्तविकता से किसी भी प्रकार भिन्न नही थी। उसकी भविष्य-वाणी, मुझे स्मरण है, नवम्बर अथवा दिसम्बर १८६३ में पर्याप्त काल से अप्रचलित 'पैल मैल बजट' नामक किसी प्रकाशन मे निकली थी, और उस पर आधारित व्यग के होने का स्मरण मै मंगल-निवासियो के आगम के पूर्व चलने वाली 'पच' नामक पत्रिका मे करता हूँ। एक मूर्खतापूर्ण एव विनोदपूर्ण भाव में लिखते हुए उसने सकेत किया कि यान्त्रिक-साधनो की पूर्णता अन्तत अ गों की क्रियाशीलता पर विजय प्राप्त कर लेगी, रासायनिक उपायों की पाचन-क्रिया पर—और बाल, नासिका का ऊपरी भाग, दाँत, कान और चिबुक अब मानव के लिये आवश्यक अग नही हैं, और नैसर्गिक भावों में अभिरुचि की उनकी वृत्ति आगामी युगो में उनके निरन्तर क्षय का कारण बनेगी। केवल एक मस्तिष्क ही प्रमुख-प्रमुख आवश्यकता के रूप में रह जाता है। इसके अतिरिक्त शरीर का केवल एक अन्य अग ही स्थिति में रहने योग्य रह जाता है, और वह हाथ है, मस्तिष्क का शिक्षक एव कार्य-वाहक। जब कि शरीर के अन्य अग क्षीण होंगे, हाथ पहिले से लम्बे होते जायेंगे।

विनोद में लिखे गये शब्दो में भी अनेक सत्य ही सिद्ध होते हैं, और मंगल-निवासियो मे निर्विवाद रूप में हमे शरीर-रचना के पशुवत् आधार पर बुद्धि की विजय की वास्तविक सिद्धि प्राप्त होती है। मेरे निकट यह पूर्णत विश्वसनीय है कि मगल-निवासी शरीर के शेष अंगों के स्थान पर मस्तिष्क एवं हाथो द्वारा क्रमिक विकास पाकर (जिसमे दूसरे अंगो ने अन्त में उन दो कोमल-स्पर्श-ज्ञान-संयुत गुच्छों को जन्म दे डाला) हमारे ही समान किसी प्राणी के वंशज हैं। मानव में विद्यमान किसी भी प्रकार के भाव-धरातल से शून्य, शरीर के बिना मस्तिष्क ज्ञान-प्राप्ति का स्वार्थमय साधन मात्र रह जायगा।

अन्तिम प्रमुख बात जिसमे इन प्राणियो की प्रणालियाँ हमसे भिन्न था, एक ऐसी बात थी जिसे कि कोई भी साधारण-सी बात ही समझता। सूक्ष्म अग-रचनाएँ, जो पृथ्वी पर इतने रोगो एव पीडाओ का कारण होती हैं, या तो मंगल-लोक के निवासियो में कभी घटित ही नही हुई थी, अथवा मगल-निवासियो के आरोग्य-शास्त्र ने उन्हे वर्षों पूर्व नष्ट कर डाला था। सैकडो प्रकार के रोग, मानव-जीवन के समस्त ज्वर एव स्पर्श जन्य रोग, यक्ष्मा, नासूर, गिल्टी तथा इसी प्रकार की अन्य व्याधियाँ उनकी जीवन-व्यवस्था मे व्यक्त ही नही होती थी। और मगल एवं इस लोक के जीवन मे रहे असाम्य की चर्चा करते हुए, मै यहाँ लाल बेल के सम्बन्ध में कुछ विलक्षण सूचनाएँ दे सकता हूँ।

प्रत्यक्ष है कि मगल-लोक का वनस्पति प्रदेश हरित् होने के स्थान पर तीव्र रक्त वर्ण का है। जैसा भी हुआ हो, उन बीजो ने, जो मगल-निवासी इच्छा अथवा भूल से अपने साथ लाये थे, रक्त वर्ण वनस्पतियो को जन्म दिया। केवल वही जिसे स मान्यत 'रेड वीड' के नाम से पुकारा जाता है, लौकिक वनस्पतियो के साथ चल पाने मे सफल हो सका। यह लाल बेल अल्पकाल ही मे बढ गयी थी, और कुछ लोगो ने उसे बढते देखा है। जो कुछ भी हो, कुछ समय तक तो यह लाल बेल विलक्षण शक्ति एव समृद्धि के स थ पल्लवित हुई। हमारे बन्दी होने के तीसरे या चौथे दिन वह उस खड्डु के चारो ओर फैल गयी, और सेहुड के समान पल्लव-हीन उसकी शाखाओ ने हमारी तिकोनी खिडकी के चारो ओर लाल रग की झालर-सी बना दी। और बाद मे मैंने उसे उस समस्त प्रदेश मे फैलते पाया, और विशेषकर उन स्थानो मे जहाँ कही भी पानी की धाराएँ थी।

मगल निवासियो के मुख वाले शरीर में पीछे की ओर एक गोल कान का पर्दा था, जो प्रतीत होता है कि कभी उनके निकट श्रवणेन्द्रिय के रूप में रहा होगा, और केवल इस बात के, जैसा कि फिलप्स कहता है कि नीला तथा बैगनी रंग उनको काला दीख पडता था, उनकी आँखो

की दृष्टि-शक्ति हमसे अधिक भिन्न नही थी। सामान्यत ऐसा विचार किया जाता है कि वह ध्वनियों तथा अपने स्पर्श-ज्ञान-संयुत अगो को हिलाकर आपस मे भाव व्यक्त करते थे, और उदाहरण के लिये इस तथ्य का अनुमोदन वह योग्यतापूर्ण परन्तु शीघ्रता के साथ लिखा हुआ सूचना-पत्र (जो निश्चित रूप मे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया है जो घटना का साक्षी नही था), जिसका वर्णन मैं ऊपर कर चुका हूँ, करता है और जो इस समय तक उनके सम्बन्ध मे सूचना देने का मुख्य साधन रहा है। और अब मेरे अतिरिक्त किसी भी अन्य जीवित मनुष्य ने क्रिया-शील मंगल-निवासियों को इतने समीप से नही देखा है। एक सयोग को मैं कोई प्रसशनीय स्थान नही दे सकता, परन्तु सत्य यह ही है। और मै बलपूर्वक कहता हूँ कि मैं समय-समय पर उनकी गति-विधियो को निकट से देखता रहा हूँ, और मैंने तीन, चार, पाँच और एक बार छ मगल-निवासियो को बिना किसी ध्वनि अथवा संकेत किये गूढतम कार्यों को एक साथ करते देखा है। उनके मुख से निकलने वाली विलक्षरण कर्कश ध्वनि केवल भोजन से पूर्व निकलती थी, उसमे कोई उतार-चढाव नही होता था, और मै विश्वास करता हूँ कि वह किसी प्रकार का संकेत नही था वरन् पाचन-क्रिया के प्रारम्भ होने से पूर्व वायु के बाहर निकलने की ध्वनि। मै मनोविज्ञान के प्राथमिक ज्ञान मे कुछ अधिकार रखता हूँ, और इस बारे में मैं पूर्णत सन्तुष्ट हूँ—इतना सन्तुष्ट जितना कि मैं अन्य किसी भी बात से हो सकता हूँ – कि मंगल-निवासी किसी भी प्रकार की शारीरिक मध्यस्थता के भावो का आदान-प्रदान करते थे। और प्रबलतम पूर्व बोध रखते हुए भी मुझे इस विषय में सन्तुष्ट होना ही पडा। मंगल-निवासियो के आक्रमरण से पूर्व जैसा कि कोई भी पाठक प्रासंगिक रूप में स्मरण कर सकता है, साधारण रूप में दूर रहते हुए मैं एक दूसरे के मन पर प्रभाव डालने वाले सिद्धान्त का वर्णन कर चुका हूँ।

मगल-निवासी किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण नही करते

थे। आभूषण एव प्रसाधन-सम्बन्धी उनकी धारणाएँ हमसे भिन्न थी, और प्रत्यक्ष रूप में वह तापमान के परिवंतनो से कठिनतापूर्वक प्रभावित होने वाले ही नही थे, अपितु लगता है कि तापमान के दबाव का भी उन पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नही पडा था। परन्तु यदि वह कपड़े नही पहिनते थे, तो भी उनके शरीरो मे प्रयुक्त किये जाने वाले अन्य कृत्रिम प्रसाधनो के कारण निश्चित रूप में वह मनुष्यो से श्रेष्ठ ही थे। अपनी बाइसिकिलो, सडक पर सरपट भागने वाले यत्रो, अपनी ऊपर उड सकने योग्य मशीनो, अपनी तोपो और घडियो एवं इसी प्रकार अन्य साधनो वाले हम मानव उस विकास-क्रम के प्रारम्भ काल में ही हैं जिसे मगल-निवासी समाप्त कर चुके हैं। वह व्यावहारिक रूप मे केवल मस्तिष्क ही रह गये थे जो अपनी आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर धारण कर लेते थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि मनुष्य भाँति-भाँति के वस्त्रो के सूट पहिनता है, अथवा किसी शीघ्रता के कारण बाइसिकिल पर चला जाता है अथवा वर्षा के दिन छतरी हाथ मे लेकर। और उनके यंत्रो के सम्बन्ध मे, शायद इस लोक के मनुष्य के निकट इस विलक्षण तथ्य से अधिक आश्चर्यकारक कोई बात नही हो सकती कि मानव-रचित सभी यंत्रो का जो मुख्य साधन है, उनमे नही है—उनमे पहिया नही है; उन समस्त वस्तुओ मे, जो वह हमारे इस लोक में लाये, कही भी पहियो के प्रयोग किये जाने का चिह्न अथवा सम्भावना नही मिलती। किसीने भी एक लोक से दूसरे लोक मे आने के इस कार्य में तो उनकी स्थिति निश्चित मानी होगी। और इसी प्रसग में यह बताना भी एक आश्चर्यजनक बात है कि इस पृथ्वी पर भी प्रकृति ने पहिये का कही भी प्रयोग नही किया है, और न उसके विकास के अन्य साधन ही बनाये हैं। और केवल यह ही नही कि मंगल-निवासी या तो उनके सम्बन्ध में कोई ज्ञान नही रखते थे (जो अविश्वसनीय बात है) अथवा उन्होने जान-बूझकर पहियो का प्रयोग नही किया, परन्तु उनके यंत्र मे स्थिर चूल अथवा चूल से ही सम्बन्धित किसी क्रिया का थोड़ा-सा प्रयोग

एक विशेष प्रकार से किया गया था जिसकी ग्रास-पास होने वाली गोलाकार गतियाँ यान से सबधित रहती थी। उस यत्र के सभी जोड उस छोटे परन्तु सुन्दरतापूर्वक मुडे हुए एवं संघर्षणशील केन्द्रों पर सरकने वाले भागो का एक जटिल रूप प्रस्तुत करते हैं। ग्रौर इस विशद वर्णन में यह उल्लेखनीय बात है कि उनके यत्र के दीर्घ लीवर और उनकी क्रियाएँ ग्रधिकांश रूप मे नमनशील खोल मे बनी तश्तरियो की कृत्रिम मास-पेशियो के समान किसी रचना में जन्म पाती थीं, ग्रौर जब इनमें विद्युत-धारा गति-शील होती थी, यह तश्तरियाँ ग्राकषर्ण-शक्ति-युक्त होकर प्रचण्ड गति के साथ एक दूसरे के समीप खिचने लगती थी। इस प्रकार पशुग्रो की गतियो की यह विलक्षरण समानता, जो मनुष्य के निकट इतनी ग्राश्चर्यजनक एव अप्रिय रही थी, प्राप्त की गई थी। मांस-पेशियो के समान प्रतीत होने वाली यह ग्रग-रचना कर्कट के ग्राकार वाली उस 'हैन्डलिंग मशीन' मे प्रचुर मात्रा मे विद्यमान थी, जिसे मैंने उस सिलण्डर के खुलते समय छिद्र से प्रथम बार झाँक कर देखा था। देखने पर वह उन मगल-निवासियो से कही ग्रधिक सजीव दीख पडती थी; जो उस दीर्घ यात्रा के पश्चात्, उससे परे हाँफते, अपने शक्ति-हीन पिंडो को हिलाते एवं कठिनाई के साथ रेगते धूप में पडे थे।

जब कि मैं धूप मे होती उनकी शक्ति-हीन गतियो को देख रहा था, ग्रौर उनके शरीर की प्रत्येक विलक्षरण क्रिया को समझ पाने का यत्न कर रहा था, पादरी ने मेरी भुजा को झकझोर कर अपनी उपस्थिति का ज्ञान करवाया। घूमने पर मैंने अपने समक्ष चढी हुई भवें, और मूक परन्तु कुछ बोलने को तत्पर होठो को पाया। वह छिद्र पर ग्राना चाहता था, जिसमें से हम दोनो मे से कोई एक एक समय झाँक सकता था, ग्रौर इस प्रकार मुझे कुछ समय के लिये उनको देखना बन्द करना पड़ा जब कि वह इस विशेष ग्रधिकार का उपयोग कर रहा था।

जब मैंने पुनः देखा, कार्य-व्यस्त वह 'हैन्डलिंग मशीन' उस सिलण्डर से ग्रनेक यंत्र भागो को निकाल-निकाल कर एक ऐसे आकार में रख

चुकी थी जो ठीक उसीके समान था, और बाय हाथ को नीचे की ओर एक छोटी एव कार्य-शील खुदाई की मशीन स्थिति मे आ चुकी थी, जो हरित् वर्ण धूम्र के पिंडो को ऊपर उड़ाती उस[7] छिद्र के चारो ओर अपना काम कर रही थी, जो विधिपूर्वक और विवेकपूर्ण रूप में भूमि को खोद रही और मिट्टी का ढेर लगा रही थी। यही वह वस्तु थी जो उस निरन्तर आने वाली कोलाहलमय ध्वनि को जन्म देती थी और यह उसके ही व्यवस्थित रूप में लगने वाले धक्के थे जो हमारे उस भग्न शरण-स्थान को कम्पायमान कर रहे थे। जहाँ तक मै देख पाया, यंत्र को सचालित करने वाला कोई मगल-निवासी उसमे विद्यमान नही था।

२०

बंदी-जीवन के दिन

एक दूसरे युद्ध-यत्र के आगमन ने हमें हमारे झाँकने वाले उस छिद्र से हटाकर पुन उस कोठरी में पहुँचा दिया, कारण कि हमें भय था कि उस ऊँचाई से झाँककर कोई भी मगल-निवासी इस ढेर के पीछे हमें देख सकता है। बाद के दिनो में उनके द्वारा देखे जाने का भय हमारें मन में कम हो गया, कारण कि हमसे बाहर धूप की चकाचौध से देखे जाने पर वह स्थान अन्धकारमय प्रतीत होता होगा, परन्तु प्रारम्भ के दिनो में देखे जाने की किंचित् सम्भावना धडकते हृदय के साथ हमे कोठरी मे लौटा देती थी। परन्तु तो भी, ऐसा करने में चाहे कितनी ही बडी जोखम थी, पर बाहर झाँकने का प्रलोभन हम दोनो के निकट सवरण सीमा से परे था। और इस समय मे एक प्रकार के आश्चर्य

के साथ स्मरण कर रहा हूँ कि उस असीम आपत्ति के होते हुए भी जिसमे हम भुखमरी और उससे भी कही भयानक मृत्यु के बीच फँसे थे, हम छिद्र से उन्हे झाँक पाने के भयावह अधिकार को प्राप्त करने के निमित्त उस समय भी प्रयत्नशील थे। उत्सुकता एव किसी प्रकार का शब्द करने से भयान्वित हम उस रसोई-घर मे इधर से उधर दौडते और एक दूसरे से टकरा जाते तथा खुले हुए उस भाग के कुछ इचो के घेरे मे एक दूसरे को धक्का देते और लाते मारते थे।

इसका कारण यह है कि हम दोनो एक दूसरे से पूर्णत' असगत स्वभाव एव विचार तथा कर्म करने का अभ्यास रखते थे, और हमारा यह सकट एव एकाकी स्थिति हमारी इस असगतता को केवल प्रबल ही करती थी। हैलीफोर्ड मे ही मुझे उसके असहाय स्थिति सूचित करने वाले उद्गारों तथा उसके मन की मूर्खतापूर्ण हठवादिता से घृणा हो चुकी थी। बडबडाहट के साथ निकलते हुए उसके समाप्त न होने वाले स्वगत्-भाषण मेरे कार्य-दिशा स्थिर करने वाले प्रत्येक प्रयत्न को नष्ट कर डालते थे, और इस प्रकार त्रस्त एव उत्तेजित मेरे मन को कभी-कभी पागलपन की सीमा तक खीच ले जाते थे। संयम का उसमे उतना ही अभाव था जितना कि किसी भी निर्बुद्धि नारी में हो सकता है। वह घण्टो रोता रहता, और वास्तव मे मे यह विश्वास करता हूँ कि जीवन-क्रम मे शिशुवत् बिगड़ा हुआ यह विवेक-हीन मानव अपने दुर्बल अश्रुओं को किसी भी रूप में शक्तिशाली मानता था। और उसके दृढाग्रहो के कारण अपने मन को उससे अलग रख पाने में असमर्थ मै अन्धकार में बैठा रहता। वह मुझसे अधिक भोजन करता, और उसके निकट मेरा यह बताना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ कि हम उस मकान में उस समय तक पड़े रहें जब तक कि मगल-निवासी अपने खड्ड के कार्य को समाप्त न कर ले, और प्रतीक्षा के इस दीर्घ काल में एक समय आ सकता है जब हमें भोजन की आवश्यकता हो। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार वह पर्याप्त समय के अन्तर से डटकर भोजन करता। साथ ही वह सोता कम था।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये, उसकी किसी भी प्रकार के सोच-विचार मे रही उदासीनता ने हमारी विपत्ति एवं संकट को इतना अधिक बढा दिया कि, यद्यपि मुझे ऐसा करते खेद होता था, मुझे धमकियों और अन्त में मुक्को का आश्रय लेना पडा। ऐसा करने ने कुछ काल के लिये उसे विवेकपूर्ण बना दिया। परन्तु वह कपटी एवं छलपूर्ण उन दुर्बल प्राणियो में से एक था, जो न ईश्वर का ही सामना करते हैं और न मनुष्य का ही, जो स्वय अपनी अन्तरात्मा से भी मुँह छिपाते हैं, गौरव-शून्य, भीरु, वीर्य-हीन एव घृणा फैलाने वाली आत्माएँ।

इन बातो को स्मरण करना एव अंकित करना मुझे अप्रिय लगता है, परन्तु मै उनका वर्णन इस निमित्त कर रहा हूँ कि मेरी कहानी में कोई कमी न रह जाय। वह, जो जीवन के अन्धकारमय एवं भयानक रूपो मे से दूर ही रहे हैं, मेरी इस पाशविकता, इस अन्तिम दुर्घटना में मेरे मन में रही क्रोध की प्रचण्डता को सरलता के साथ निन्दनीय ठहरा सकते हैं; कारण कि जैसे वह अन्य बातो को जानते हैं, वह जानते हैं कि अनुचित क्या है, परन्तु यह नही कि पीड़ा-ग्रस्त मनुष्य के निकट क्या सम्भव होता है। परन्तु जो कठिनाई मे पड चुके हैं, जो तत्व-सबधी बातो की गहराई तक उतर चुके हैं उदार दृष्टिकोण से काम लेगे।

और जिस समय हम भीतर के उस धुँधलके एव अन्धकार में अस्फुट स्वरो मे परस्पर कलह करने, एक दूसरे से भोजन एव पानी छीनने, हाथ पकडने और मुक्केबाजी करने में सलग्न थे, बाहर उस भयानक जून के निर्मम प्रकाश में वह विलक्षण आश्चर्य हो रहा था, खड्ड मे मगल-निवासियो का अपरिचित-सा व्यवहार। मुझे अपने उन नूतन अनुभवो का वर्णन करना चाहिये। एक दीर्घकाल पश्चात् साहस करके मैं अपने उस छिद्र पर लौट आया और मैने पाया कि इन नवागन्तुकों पर कम से कम तीन अन्य युद्ध-यत्रो के निवासी स्थान ग्रहण कर चुके हैं। यह अन्तिम अपने साथ कुछ नये प्रकार के यत्र लाये थे जो सिलण्डर के आस-पास व्यवस्थित रूप में खडे हुए थे। वह दूसरी

'हैन्डलिंग मशीन' अब तैयार हो चुकी थी, और उन नये आविष्कारों में से एक की सहायता में लगा दी गयी थी जो यह बड़ी मशीन अपने साथ लायी थी। दूर से देखने पर यह किसी दूध की बाल्टी से मिलती-जुलती दीख पड़ती थी जिसके ऊपर लगा हुआ नाशपाती के आकार का कोई गैस एकत्रित करने का यंत्र इधर-उधर घूम रहा था, जिसमे से गिरता हुआ सफेद चूर्ण के समान कोई पदार्थ नीचे रखे गोल बर्तन में गिर रहा था।

इधर-उधर घूमने की यह गति इसे 'हैन्डलिंग मशीन' के एक स्पर्श-ज्ञान-संयुत अंग से प्राप्त होती थी। चम्मच के आकार के दो हाथों द्वारा यह हैन्डलिंग मशीन भूमि को खोद रही थी और ढेरों मिट्टी इस नाशपाती के आकार वाले यंत्र में फेंक रही थी, और एक दूसरे हाथ द्वारा थोड़े-थोड़े समय के अन्तर से एक द्वार को खोलती और मशीन के मध्य भाग में एकत्रित हुए पिघली हुई धातु के जग लगे एवं काले पड़े मैल को बाहर फेंक रही थी। एक अन्य फौलाद के समान शक्तिशाली अंग नीचे के बर्तन में एकत्रित होते उस चूर्ण को तीलियों वाली मार्ग द्वारा किसी अन्य संग्राहक यंत्र की ओर गति-शील करता था, जो उस नीली धूल के ढेर के कारण मेरी दृष्टि से छिपा हुआ था। इस अदृश्य संग्राहक यंत्र से हरित् वर्ण धूम्र की एक क्षीण धारा उस प्रशान्त वायु में सीधी ऊपर की ओर उठ रही थी। जब कि मैं देखने में तल्लीन था, मन्द एवं संगीत-पूर्ण झनझनाहट की ध्वनि के साथ उस 'हैन्डलिंग मशीन' ने दूरबीन के समान एक अन्य अंग को आगे बढाना प्रारम्भ किया, जो एक क्षण पूर्व बेढंगे रूप में फैला हुआ-सा प्रतीत होता था, और उस समय तक बढाती रही जब तक कि वह मिट्टी के उस ढेर के पीछे अदृश्य न हो गया। दूसरे ही क्षण वह सफेद अल्मूनियम की एक सलाई को, जो इस समय तक मैली नही हुई थी और चमचमा रही थी, ऊपर उठा चुकी थी और खड्ड के सहारे लगी हुई सलाखों की टाल में उसे रख चुकी थी। सूर्यास्त और तारों का प्रकाश होने के मध्य काल में

इस कार्य-कुशल मशीन ने उस कच्ची मिट्टी से कम से कम सौ ऐसी सलाखे बना ली होगी, और नीली रेत का वह ढेर उस समय तक ऊपर बढता ही रहा जिस समय तक कि वह खड्ड के ऊपरी किनारे तक न आ पहुँचा ।

इन यंत्रों की शीघ्रगामी एवं जटिल गतियो तथा उनके स्वामियो की जडता एवं कम्प-पूर्ण मन्दता का वैषम्य स्पष्टग्राही था, और पर्याप्त समय तक मुझे स्वय को यह आश्वासन देना पडा कि यह अन्तिम इन दोनो यत्रो का जीवित रूप मात्र थे ।

जिस समय कि मनुष्यो का पहिला दल उस खड्ड मे लाया गया, पादरी उस छिद्र पर अधिकार किये हुए था । अपनी समस्त श्रवण-शक्ति से सुनता, झुका हुआ मैं बैठा रहा । सहसा वह पीछे की ओर घूमा, और इस भय से कि हम देख लिये गये हैं, भय के प्रबल सवेग से मैं गठरी बन गया । वह कूडे-कर्कट पर ररकता नीचे आ गिरा, और उस अन्धकार में मेरे पीछे ही रूद्धकठ, सकेतो से कुछ सूचित करता हुआ रेग आया, और क्षणमात्र में भी उसके भय से प्रभावित रहा । उसके सकेत छिद्र की ओर न जाने का आभास दे रहे थे, और कुछ ही समय बाद मेरी उत्सुकता ने मेरे मन में साहस का सचार किया, और मै उठ खडा हुआ और उसे पीछे छोडता हुआ ऊपर चढ़ गया । प्रथम तो मै उसके भय का कोई कारण न देख सका । गोधूलि का समय हो चुका था, तारे छोटे एवं धूमिल दीख पड़ रहे थे, परन्तु अल्मूमियमँ की उस रचना से उठती झिलमिलाती हरित् वर्ण अग्नि के प्रकाश से वह खड्ड प्रकाशित था । यह सम्पूर्ण दृश्य हरित् वर्ण किरणो और इधर से उधर जाती धूमिल काली परछाइयो से परिपूर्ण था और नेत्रो के निकट पीडाकारक था । उसके ऊपर और मध्य में होकर और उसकी कोई चिन्ता न करते हुए चमगादड इधर-उधर उड रहे थे । टेढ़े-मेढे आकार वाले मगल-निवासी अब दिखाई नही पड रहे थे, नील हरित् वर्ण वाले उस चूर्ण का ढेर उन्हे दृष्टि से छिपा सकने योग्य ऊँचाई तक उठ चुका था, और अपने

पैरो को सिकोडे, मुडा हुआ एव सक्षिप्त आकार धारण किये हुए एक युद्ध-यत्र खड्ड के आर-पार खडा था। और तब यत्रो की उस झनझना-हट के मध्य तैरता मुझे मानव कंठ-स्वरो के सुनाई पडने का सन्देह-सा हुआ, जिसे प्रथम बार तो मैंने केवल त्याज्य ही समझा।

इस युद्ध-यंत्र को समीप से देखता मैं सिकुडा हुआ और प्रथम स्वय को यह आश्वासन देता हुआ पडा रहा कि यत्र के हुड मे किसी मगल-निवासी की स्थिति निर्विवाद है। जैसे ही वह हरित् प्रकाश-किरणे ऊपर को उठी, मैं उसकी तैलमय त्वचा एव उसके नेत्रो की चमक को देख सका। और सहसा मेने एक चीत्कार सुना, और एक दीर्घ स्पर्श-ज्ञान-संयुक्त अग को ऊपर मशीन के कन्धो तक पहुँचते देखा, जहाँ उसकी पीठ पर एक पिंजरा-सा लटक रहा था। अब तब कोई वस्तु जो प्राण-पण से सघर्ष कर रही थी—ऊपर आकाश में उठायी गयी, और जैसे ही यह काली आकृति पुन· नीचे आयी, उस हरित् वर्ण प्रकाश में मैंने देखा कि वह एक मानव था। एक क्षण को वह स्पष्ट दिखाई पडा। सुन्दर कपडे पहिने वह एक हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ एव मध्य आयु का मनुष्य था, तीन दिन पूर्व वह इस पृथ्वी पर टहल रहा होगा, एक पर्याप्त प्रभुत्व-शील व्यक्ति के समान। मैं उसके स्थिर दृष्टि वाले नेत्रो एवं उसके दोहरे सिरे वाले बटनो तथा घडी की चेन पर पडने वाली किरणो को देख सका। वह ढेर के पीछे अदृश्य हो गया, और एक क्षण के लिये वहाँ शान्ति रही। और तब मगल-निवासियों की चिल्लाहट तथा रुक-रुक कर आने वाली आह्लाद की ध्वनियाँ सुनायी पडने लगी······।

मैं कूडे के उस ढेर से नीचे ररक पडा, और कानो को हाथ से दबाये, अपने पैरो को बलपूर्वक आगे बढाता कोठरी मे घुस गया और उसे भीतर से बन्द कर लिया। पादरी ने, जो सिर पर हाथ रखे चुपचाप झुका हुआ पडा था, मुझे जाते हुए देखा और अपने अकेले छोड़ दिये जाने पर तीव्र स्वर से चीत्कार कर उठा, और मेरे पीछे भागता ·····

उस रात्रि हम अपने इस भय एव झाँक पाने के उस भयावह

आकर्षण के मध्य झूलते-से पडे रहे, यद्यपि मैं ऐसा करने की प्राथमिक आवश्यकता का अनुभव करता रहा, असफल रूप मे निकल पाने के किसी उपाय को सोचता रहा; परन्तु बाद मे दूसरे दिन मै अपनी स्थिति पर सरलता से विचार कर सका। पादरी, मैने पाया, किसी भी प्रकार तर्क मे सम्मिलित किये जाने योग्य स्थिति मे नही था, विलक्षण भयो ने उसकी प्रवृत्तियो को उत्तेजित कर दिया था, उसे विवेक अथवा पूर्व-चिन्तन कर सकने से पूर्णतः वचित कर दिया था। व्यावहारिक रूप में वह पाशविक धरातल पर पहुँच चुका था। परन्तु जैसी कि कहावत है, मैने साहस एकत्र किया। मुझे ऐसा लगा कि यदि मै स्थिति का सामना करने के लिये कटिबद्ध हो खडा हो जाऊँ तो चाहे कितनी हो भयानक हमारी स्थिति है, इस समय तक पूर्ण नैराश्य की भावना को मन में स्थान देने का कोई तर्क-सगत कारण नही है। हमारे बच निकलने का मुख्य अवसर इस सम्भावना मे निहित था कि मगल-निवासी उस खड्ड को केवल सामयिक पडाव के रूप मे ही प्रयोग कर रहे हैं। और यदि वह इसे स्थायी रूप में भी प्रयोग करे, तो वह सावधानी के साथ उसकी देख-रेख रखना आवश्यक नही समझ सकते हैं, और इस प्रकार हमें निकल भागने का अवसर मिल सकता है। मैने खड्ड से दूर किसी ओर एक मार्ग खोदने की सम्भावना पर भी अत्यन्त सावधानीपूर्वक विचार किया, परन्तु प्रहरीवत् खडे किसी भी युद्ध-यत्र की दृष्टि मे पड जाने की बात प्रथम अत्यन्त भयावह प्रतीत हुई। और यह सब खुदाई मुझे स्वय ही करनी पडती। पादरी निश्चित रूप में मेरी कोई सहायता नही कर सकता था।

यदि मेरी स्मृति ठीक काम कर रही है तो वह तीसरा दिन था जब मैने एक लडके को मारा जाते देखा। केवल एक यही अवसर था जब कि मैने मगल-निवासियो को प्रत्यक्ष रूप मे भोजन करते देखा। उस अनुभव के बाद मै दिन के अधिक भाग तक उस छिद्र से दूर रहा। मै कोठरी मे गया, उस द्वार को खोला, और जितना कि मै कर सका, मैने कुछ घटे बिना कोई शब्द किये भूमि खोदने मे व्यय किये, परन्तु जब मै कई फीट

नीचा गड्ढा खोद चुका था, वह पोली भूमि तीव्र धमाके के साथ ररक पड़ी, और मुझे आगे काम करने का साहस नही हुआ। मेरा साहस टूट चुका था, और किंचित् सरकने की इच्छा भी न रखते हुए मैं पर्याप्त समय तक कोठरी के फर्श पर पडा रहा। और इसके पश्चात् खुदाई के द्वारा निकल भागने का विचार मैंने सदा के लिये त्याग दिया।

यह मंगल-निवासियों द्वारा मुझ पर डाले गये प्रभाव को अंकित करता है कि प्रथम तो मुझे किसी भी प्रकार के मानव प्रयत्नो द्वारा उनके विनाश के कारण बच निकलने की या तो कोई आशा थी ही नही, अथवा थी भी तो बहुत थोडी। परन्तु चौथी अथवा पाँचवी रात्रि को मैंने भारी तोपों के समान कोई ध्वनि सुनी।

रात्रि अधिक बीत चुकी थी और चन्द्र आकाश मे चमचमा रहा था। मगल-निवासी उस खुदाई की मशीन को अपने साथ ले गये थे, और केवल एक युद्ध-यंत्र के, जो खड्ड के उस ओर खडा था, तथा एक 'हैन्डलिग मशीन' के जो मेरी दृष्टि से ओझल उस छिद्र के ठीक नीचे पड़ने वाले खड्ड के कोने पर खडी थी, वह स्थान उनकी उपस्थिति से सर्वथा शून्य था, 'हैन्डलिग मशीन' से निकलने वाले उस प्रकाश एवं चाँदनी की क्षीण झारियो और कही कही पडने वाले धब्बों के अतिरिक्त वह खड्ड अन्धकारपूर्ण और 'हैन्डलिंग मशीन' से होने वाली झनझनाहट के अतिरिक्त पूर्णतः स्तब्ध था।

वह रात्रि सुन्दर एवं निर्मलतापूर्ण था, और केवल एक अन्य चमचमाते नक्षत्र के अतिरिक्त आकाश में चन्द्रमा का पूर्णाधिकार।

मैंने एक कुत्ते को भोकते सुना, और वही परिचित ध्वनि थी जिस पर मेरा ध्यान गया। तब मैंने स्पष्ट रूप से बडी तोपो के समान गड़गड़ाहट की कोई ध्वनि सुनी। छः स्पष्ट ध्वनियाँ मैंने गिनी, और तब एक दीर्घ मध्यान्तर के पश्चात् पुन छ.। और फिर सब कुछ शान्त हो गया।

२१

पादरी की मृत्यु

वह हमारे बन्दी होने का छठा दिन था जब मैंने अन्तिम बार बाहर झाँका और स्वय को अकेला पाया। मेरे समीप रहने तथा मुझे उस छिद्र से हटाने का प्रयत्न करने के स्थान पर पादरी कोठरी मे जा चुका था। सहसा मेरे मन में एक विचार उठा। शीघ्रता एवं स्तब्धतापूर्वक मैं पुनः कोठरी में गया। अन्धकार में मैंने पादरी को कुछ पीते सुना। अधेरे मे मैंने उसे छीन लिया और मेरी उँगलियो में बर्गन्डी की एक बोतल आ गई।

कुछ क्षण हम दोनो में छीना-झपटी होती रही। बोतल पृथ्वी से टकराकर टूट गयी, और मैं उसे छोडकर उठ खडा हुआ। हँफहँफाते हम एक दूसरे को धमकियाँ देते खडे रहे। अन्त मे मै भोजन और उसके मध्य बैठ गया और उससे एक व्यवस्था प्रारम्भ करने के अपने सकल्प का वर्णन किया। मैने भडार-गृह की भोजन-सामग्री को दस दिन तक चलने वाले भागो में विभाजित कर दिया। उस दिन मैंने उसे और अधिक नही दिया। तीसरे पहर इसने भोजन तक पहुँचने का एक क्षीण प्रयास किया। मैं ऊँघ रहा था, परन्तु एक क्षण में ही मैं जाग गया। उस पूरे दिन और पूरी रात मैं और वह एक दूसरे के सामने बैठे रहे, मै चिन्तित परन्तु दृढ चित्त, और वह रुदन-शील तथा भूख की रट लगाये हुए। मे जानता हूँ कि वह एक दिन और एक रात का ही समय था—परन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वह एक सुदीर्घ काल रहा हो।

और इस प्रकार हमारी उस गहन असंगतता का अन्त एक खुले सघर्ष

मे हुआ। दो लम्बे दिनो तक हम धीमे स्वरों में झगड़ते एव एक दूसरे से कुश्तियाँ लडते रहे। कभी उसे फुसलाता और मनाता, और एक बार तो मैंने बर्गन्डी की अन्तिम बोतल घूँस में देकर उसे प्रसन्न किया, क्योकि वहाँ वर्षा का जल एकत्रित करने वाला एक पम्प था, जिससे मैं पानी प्राप्त कर सकता था। परन्तु उस पर न शक्ति का ही कोई प्रभाव पडता था और न दयालुता का ही; निश्चित रूप में वह विवेक शून्य हो चुका था। वह न भोजन पर आक्रमण करना ही त्यागता था और न अपने प्रलाप को ही। हमारे बन्दी-जीवन को सहन कर सकने योग्य बनाने के निमित्त आवश्यक सावधानी का वह पालन नही करता था। धीरे-धीरे मै समझने लगा कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, और मुझे विश्वास होने लगा कि उस बन्द एव घिनौने अन्धकार में रहा मेरा वह एकमात्र साथी पागल है।

कुछ अस्पष्ट स्मृतियो द्वारा मुझे यह सोचने की प्रवृत्ति होती है कि मेरा अपना मस्तिष्क भी समय-समय पर भटकने लगता था। जब कभी मुझे निद्रा आ जाती मै विलक्षण एव भयानक स्वप्न देखता। यद्यपि यह विलिक्षण-सी बात प्रतीत होती है, परन्तु मुझे लगता है कि पादरी की दुर्बलता एव पागलपन ने मुझे सजीव, शक्तिपूर्ण एव स्वस्थ मन रखा।

आठवे दिन वह अस्फुट स्वर के स्थान पर जोर-जोर से बोलने लगा, और उसके उस स्वर को कम करने का मै कोई उपाय नही कर सका।

"यह न्यायोचित है, हे ईश्वर!" वह बार-बार दोहराता। "यह न्यायोचित है। मुझपर और मेरे जीवन पर तेरा वज्र गिरे। हमने पाप किये हैं। धर्माचरण में हम अपूरण सिद्ध हुए हैं। इस ससार मे निर्धनता थी, पीडा थी और धन हीन धूल मे कुचले जा रहे थे और मै अपनी शान्ति में ही तल्लीन रहा। और मै उस सन्तोष-दायक मूर्खता का ही उपदेश करता रहा—हे ईश्वर, कैसी महान् मूर्खता!—जब कि मुझे उसके विरुद्ध उठ खड़ा होना चाहिये था, चाहे ऐसा करने में मेरा नाश ही क्यो

न हो जाता, और मुझे उन्हे प्रायश्चित्त करने के लिये प्रेरित करना था—प्रायश्चित्त !··· 'निर्धन एव दरिद्रो पर अत्याचार करने वाले ··"

तब सहसा वह उस भोजन की चर्चा पर आ जाता जो मैने उससे बचा रखा था, प्रार्थना करता, अनुनय करता और अन्त में धमकियो पर उतर आता। उसने अपने स्वर को ऊँचा करना प्रारम्भ कर दिया—मै उससे ऐसा न करने की प्रार्थना करता, उसने मुझ पर अधिकार जमाने का एक उपाय खोज निकाला—उसने धमकी दी कि वह शोर मचाकर मंगल-निवासियो को भीतर बुला लेगा। कुछ समय तक वह मुझे डरा सका; परन्तु उसके प्रति की गयी कोई भी दयालुता हमारे बच निकलने की सम्भावना को कल्पनातीत रूप मे नष्ट कर देती। मै उसकी धमकियो का उल्लंघन करता रहा, यद्यपि मुझे ऐसी कोई आशा नही थी कि वह ऐसा नही करेगा। परन्तु जैसे भी हो उस दिन उसने ऐसा नही किया। धीरे-धीरे ऊँचे होते स्वरो में वह आठवे और नवे दिन के अधिकाश भाग तक बातचीत करता रहा—धमकियाँ और प्रार्थनाएँ, अर्ध विवेकपूर्ण बातें जिनमे सदा ही वह ईश्वर की सेवा-सबधी अपने मूर्खता एव बकवादपूर्ण पाखण्डमय प्रायश्चित्तो को इस भाँति जोड देता कि मुझे उस पर दया आ जाती थी। तब वह कुछ समय को सो गया, और उठकर नूतन शक्ति के साथ उसने पुन ऐसा प्रारम्भ कर दिया, इतने ऊँचे स्वर मे कि मुझे उसे तुरत ही रोकने की आवश्यकता आ पड़ी।

"शान्त रहो।' मैने प्रार्थना की।

वह उठ खडा हुआ, कारण कि वह अंधकार में ताँबे के डेग के पास बैठा हुआ था।

"मैं बहुत समय तक शान्त रहा हूँ", उसने ऐसे स्वर में कहा जो खड्ड तक अवश्य पहुँचा होगा, "और अब मुझे प्रत्यक्ष होना ही चाहिये। इस कृतघ्न नगर का नाश हो! नाश हो! नाश हो! नाश हो! इस पृथ्वी के निवासियो · ···।"

"चुप रहो", पैरो के बल उठते और इस भय से आतकित कि कही

मंगल-निवासी इसे सुन न लें, मैंने कहा। "ईश्वर के लिये······।"

"नहीं", पादरी अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया, और इसी प्रकार अपनी दोनों भुजाएँ फैलाकर खडा हो गया। "ईश्वर का शब्द मेरी जिह्वा पर है, बोलो।"

और तीन ही छलाँगो में वह रसोई-घर के द्वार पर था। "मुझे स्वयं को प्रत्यक्ष करना चाहिये। मैं जाता हूँ। पर्याप्त विलम्ब हो चुका है।"

मैंने अपना हाथ फैलाया और दीवाल पर टँगे मास काटने के एक छोटे गडांसे को पकड लिया। भय ने मुझे क्रूर बना डाला था। और वह रसोई-घर का आधा भाग भी पूरा न कर पाया था कि मैंने उसे पकड लिया। मानव-संस्कारों के अन्तिम संचार के रूप मैंने धार वाले भाग को पलट मूठ से उस पर प्रहार किया। वह धडाम से नीचे जा गिरा और हाथ-पैर फैलाये पड गया। मैं उससे ठोकर खा गया और हाँफता खड़ा रहा। वह निश्चेष्ट पडा था।

सहसा मैंने बाहर एक कोलाहल सुना, गिरते हुए प्लास्टर के गिरने और खंड-खड होने की ध्वनि, और दीवाल का वह त्रिकोणात्मक छिद्र अँधेरा हो गया। मैंने नेत्र ऊपर उठाये और एक 'हैन्डलिंग मशीन' के निचले-ऊपरी भाग को धीरे-धीरे भीतर आते देखा। जकड लेने वाले उसके अंगो में से एक तो मलवे के उस ढेर पर इमठता हुआ आ रहा था, और दूसरा अग दिखाई पडा, जो गिरी हुई सोटो में होकर नीचे आ रहा था। सर्वथा जड, दृष्टि उस पर टिकाये मैं खडा रहा। और तब मैंने उस मशीन के सिरे पर लगे एक शीशे द्वारा एक चेहरे—जैसा कि हम उसे पुकार सकते हैं, और एक मंगल-निवासी के विशाल नेत्रों को भीतर झाँकते देखा, और तब धातु का एक दीर्घ सर्पाकार स्पर्श-ज्ञान-संयुत अग छिद्र के द्वारा मार्ग टटोलता आगे बढ़ा।

अपनी सारी शक्ति लगाकर मैं पीछे घूमा, पादरी से टकराया, और उस कोठरी के द्वार पर पहुँचकर रुक गया। वह सर्पाकार पिंड इस समय दो गज अथवा इससे कुछ अधिक कमरे में आ चुका था, और विल-

क्षण एव आकस्मिक गतियो से इधर-उधर मुड़ता और मरोड़ खाता था। कुछ समय तक उस मन्द एवं चचल प्रगति को देखता मैं मंत्रमुग्ध-सा खड़ा रहा। तब क्षीण एव घरघरा चीत्कार करते मैंने स्वय को कोठरी मे पीछे की ओर धकेला। मुझे प्रचण्ड कम्पन ने जकड लिया था। मै कठिनाई से खडा रह पा रहा था। मैंने कोयले रखने वाले तहखाने का द्वार खोला, और वहाँ से धुंधले रूप में चमकते रसोई-घर वाले द्वार को घूरता और सुनने का प्रयत्न करता खड़ा रहा। क्या उस मंगल-निवासी ने मुझे देख लिया है? वह अब क्या कर रहा है?

वहाँ कोई वस्तु धीरे-धीरे इधर से उधर चल रही थी, कभी-कभी वह दीवाल से टकरा जाती, अथवा धातु की झनझनाहट ध्वनि के साथ पुन· अपनी गति प्रारम्भ करती। तब एक भारी शरीर—मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि वह क्या था—रसोई-घर के फर्श पर होकर उस छिद्र की ओर खीचा गया। दुनिर्वार रूप से आकर्षित मैं द्वार तक रेंगा और रसोई-घर मे झाँकने लगा। बाहर चमकते धूम के त्रिकोण में मैंने उस मगल-निवासी को शतभुज दैत्य के समान उस विशाल 'हैन्डलिग मशीन' में पादरी के सिर का सूक्ष्म निरीक्षण करते पाया। स्वय ही यह विचार मेरे मन मे उत्पन्न हुआ कि वह चोट के उस निशान से मेरी उपस्थिति जान जायगा।

मै पुन: कोयले के उस तहखाने तक रेंग आया, उस द्वार को भीतर से बन्द कर लिया, और जितना भी हो सका, और जितना नि:शब्द रूप में सम्भव हो सका, मै उस अंधेरे में वहाँ पडे कोयले और लकडियो में स्वयं को ढाँपने का प्रयत्न करने लगा। बीच-बीच में मै यह जानने के लिये हाथ रोक लेता कि कही उस मगल-निवासी ने पुन: उस छिद्र से उस सर्पाकार पिंड को भीतर तो नही डाल दिया है।

तब क्षीण धातु की झनझनाहट के समान वह ध्वनि पुन· लौट आयी। मैंने उसे सीधे रसोई-घर के ऊपर टटोलते सुना। और उसके बाद ही जहाँ तक मै निश्चय कर सका मैंने उसे कोठरी मे सुना। मैंने विचार

किया कि सम्भव है मुझे पकड सकने की लम्बाई उसमे न हो। मै तन्मय प्रार्थना मे डूब गया। तहखाने के द्वार को खरोचती वह निकल गयी। असहनीय सशय का जैसे एक युग-सा बीत गया; और तब मैने उसे सिटकनी को टटोलते सुना। मंगल-निवासियो को द्वारो का ज्ञान था।

इस पकड़ पर शायद वह एक क्षण अनिश्चय मे रहा, और तब द्वार खुल गया।

अन्धकार मे मै उस वस्तु को अच्छी तरह से देख सका—किसी भी अन्य वस्तु के स्थान पर यह हाथी की सूँड के समान थी—जो मेरी ओर लहरा रही थी; दीवालो, कोयलो, लकडियो और छत को टटोलती और उनकी परीक्षा करती। वह एक काले कीड़े के समान थी—जो अपने नेत्र हीन सिर को इधर-उधर घुमाता है।

एक बार तो उसन मेरे जूते की एडी का स्पर्श कर लिया। मैं चीत्कार करने ही वाला था, पर मैने अपने हाथ को काट लिया। कुछ समय के लिये वह शान्त हो गयी। मै समझ रहा होता कि वह वापिस लौट चुकी है। तब एक आकस्मिक खटके की ध्वनि के साथ उसने किसी वस्तु को जकड लिया—और मै समझा कि उसने मुझे पा लिया है — और वह तहखाने से पुन. बाहर जाती लगी। एक क्षण तक मैं निश्चय न कर सका। प्रत्यक्ष रूप मे परीक्षण के लिये उसने कोयले का एक पिंड उठा लिया था।

मैने इस अवसर का लाभ अपनी स्थिति को किंचित बदल देने मे उठाया, जो सकुचित हो चुकी थी। सुरक्षा के हेतु मै सच्चे मन से प्रार्थनाएँ कर रहा था।

तब मैने उस मन्द एव सावधान ध्वनि को पुन: अपनी ओर रेगते सुना। धीरे-धीरे दीवाल को खरोचती और फर्नीचर से टकराती वह समीप आ पहुँची।

और जब मै द्विविधा में ही फँसा खडा था, वह पिंड एक भारी झटके के साथ तहखाने के द्वार से टकराया और उसे बन्द कर दिया।

र कि मैंने रसोई-घर में
मैंने उसे भडार-गृह मे जाते सुना, और बिस्कुटो के ि ाया, और उसे सुन-
बोतल फूट गयी, और तब तहखाने के द्वार पर एक की आवाज थी।
लगा। और तब शान्ति, जो अनिश्चिततामय अनन्तता मे ाल घुण्डियाँ
गयी। न दिया।

क्या वह जा चुका है ?

अन्त मे मैंने निश्चय किया कि वह जा चुका है। को

उसके बाद वह उस कोठरी मे नही आया, परन्तु दसवे दिन भर, उस घने अन्धकार मे, कोयलो और लकडियो के उस ढेर मे मै पानी पीने के लिये भी, जिसकी मुझे प्रबल इच्छा थी, रेंगने का साहस न करते हुए दबा पडा रहा। और वह ग्यारहवाँ दिन था जब मै अपने उस सुरक्षित स्थान से इतनी दूर भी सरक पाने का साहस कर सका।

२२

निस्तब्धता

भडार-गृह में आने से पूर्व मेरा पहिला काम रसोई-घर और बर्तन माँजने की कोठरी के द्वार को बन्द करना था। परन्तु भडार खाली पडा था, भोजन का प्रत्येक कण समाप्त हो चुका था। स्पष्ट था कि मंगल-निवासी ने उसे उस दिन उठा लिया था। यह देखकर प्रथम बार मेरे मन मे निराशा का सचार हुआ। ग्यारहवे और बारहवे दिन मैंने न कुछ खाया और न ही कुछ पिया।

पहिले तो मेरा मुँह और गला सूख गया और मेरी इन्द्रियो की शक्ति क्षीण हो गयी। उस कोठरी के अन्धकार मे मै नैराश्यपूर्ण दीनता

किया कि सम्भव है ग

प्रार्थना मे डूब गया मेरा मन भोजन की कल्पना में लीन था। मैंने समझा असहनीय सशक्त-शक्ति पूर्णतः नष्ट हो चुकी है, कारण कि खड्ड से आने कनी को टाफरने की वह ध्वनियाँ, जिन्हे सुनने का मैं अभ्यस्त हो चुका

इस री तरह बन्द हो चुकी थी। मेरे शरीर मे इतनी शक्ति भी खुल तीत हो रही थी कि मैं छिद्र तक चुपचाप रेंग जाता अथवा वहाँ गया होता।

बाहरवें दिन मेरा कठ इतना सूख गया कि मंगल-निवासियो को सावधान करने का पूरा अवसर देते हुए मैंने परनाले के समीप लगे वर्षा के पानी को एकत्रित करने वाले नल पर आक्रमण कर डाला, और काले पडे एवं विषैले पानी के कई गिलास प्राप्त कर लिये। इसे पीकर मैंने पर्याप्त स्फूर्ति की अनुभूति की और यह देखकर कि मेरे नल चलाने की ध्वनि पर खोज करने वाला कोई स्पर्श-ज्ञान-सयुत पिंड भीतर नही आया है, मेरे मन में दृढता आ गयी।

इन दिनो में मै बार-बार पादरी और उसकी मृत्यु के ढग के संबध में असम्बद्ध एवं अनिर्णायिक रूप मे विचार करता रहा।

तेरहवें दिन मैंने कुछ और पानी पिया और ऊँघता हुआ मैं निकल पाने की ऐसी योजनाओं पर विचार करता रहा जो सर्वथा असम्भव थी। जब कभी मुझे निद्रा आ जाती, मैं भयानक प्रेत-छायाओं, पादरी की मृत्यु अथवा बहुमूल्य भोजनो का स्वप्न देखता, परन्तु सोते अथवा जागते में एक ऐसी पीड़ा की अनुभूति करता जो मुझे बार-बार पानी पीने की प्रेरणा देती थी। कोठरी में आने वाला प्रकाश अब भूरे के स्थान पर लाल रंग ले चुका था। मेरी विच्छिन्न कल्पना के निकट वह रक्तमय वर्ण-सा प्रतीत होता था।

चोदहवे दिन मैं रसोई-घर मे गया, और मुझे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि उस लाल बेल की पत्तियो की आकार वाली घुण्डियाँ दीवाल के उस छिद्र को पार कर भीतर आ पहुँची थी, जिसके कारण उस स्थान का आधा प्रकाश गुलाबी रग के धुंधलके से प्रच्छन्न हो उठा था।

वह पन्द्रहवे दिन का प्रारम्भिक भाग था जब कि मैने रसोई-घर मे परिचित ध्वनियो के एक विलक्षण क्रम का आभास पाया, और उमे सुन-कर पहिचाना कि वह एक कुत्ते की सूँघने और कुरेदने की आवाज थी। रसोई-घर मे जाकर मैने एक कुत्ते की नाक को उन लाल-लाल घुण्डियो के मध्य भीतर झाँकते पाया। इस बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। मेरी गध पाकर यह थोडा सा भूँस दिया।

मैने सोचा कि यदि मैं चुपचाप किसी प्रकार उसे भीतर आने को प्रलोभित कर सकूँ, तो शायद मै उसे मार कर खा जाने में सफल हो जाऊँ और प्रत्येक अवस्था में यह वाछनीय था कि मै उसका अन्त कर डालूँ ताकि उसकी चेष्टाएँ कही मंगल-निवासियो का ध्यान आकर्षित न कर ले।

"अच्छे कुत्ते!" कहता हुआ मै आगे रेगा, परन्तु सहसा उसने अपना सिरे पीछे हटाया और अन्तर्धान हो गया।

मैने पूरी शक्ति लगाकर सुनने का प्रयत्न किया—मै बहिरा नही हुआ था—निश्चित था कि खड्ड में ही पूर्ण शान्ति है। मैने किसी पक्षी के पखो की फडफडाहट और टरटर की एक कर्कश ध्वनि सुनी। फिर सब कुछ शात हो गया।

पर्याप्त समय तक मै उस छिद्र से सटा पड़ा रहा, परन्तु मुझे उसे घेरे रखने वाली बेल के सहारे चलने का साहस न हुआ। एकाध बार मैने अपने बहुत नीचे रेत में इधर-उधर आते उस कुत्ते के पैरों से होने वाली अस्पष्ट ध्वनि और पक्षियों के समान ध्वनियाँ सुनी, परन्तु यही सब कुछ था। अन्त में इस निस्तब्धता से उत्साहित होकर मैने बाहर की ओर झाँका।

और उस एक कोने के अतिरिक्त, जहाँ कि कौओ की एक भीड़ मगल-निवासियो द्वारा खाये गये जीवो के अवशेषो के लिये उछल-कूद मचाती परस्पर छीना-झपटी कर रही थी, खड्ड मे कोई भी जीवित वस्तु विद्यमान नही थी।

अपनी आँखों पर विश्वास न करते हुए मैंने अपने चारो ओर घूरा। वह सब यंत्र जा चुके थे, एक कोने मे उस नील चूर्ण के ढेर, दूसरे में अल्मूनियम की उन सलाखो और ककालो के ढेर पर लडते उन काले पक्षियों के अतिरिक्त वह स्थान बालू मे बने एक शून्य गोल खड्ड के समान था।

धीरे-धीरे उस लाल बेल से होकर मैंने अपने शरीर को बाहर की ओर धकेला, और ककडों के ढेर पर खडा हो गया। केवल अपने पीछे वाली उत्तर दिशा को छोडकर मै चारो ओर देख सकता था, और कही भी न तो मंगल-निवासी दीख पडते थे और न उनका कोई चिह्न ही। खड्ड मेरे पैरो के नीचे सीधी गहराई तक चला गया था, परन्तु कुछ दूर तक पडा हुआ मलवे का वह ढेर उन खण्डहरो की चोटी तक चढ जाने के लिये प्रयोग किये जा सकने योग्य एक ढाल प्रस्तुत करता था। मेरे भव निकलने का अवसर आ पहुँचा था। हर्ष से मैं काँपने लगा।

कुछ समय तक मैं सोच-विचार करता रहा, और तब एक प्रचण्ड निश्चयात्मकता और तीव्र गति से आन्दोलित हृदय के साथ मै उस ढेर की चोटी पर चढ़ गया, जिसके नीचे मै इतने काल से दबा पड़ा था।

मैंने पुन. चारो ओर देखा। उत्तर की ओर भी किसी मगल-निवासी का कही पता नही था। शीन के इस भाग को जब पहिली बार मैं ने दिन के प्रकाश में देखा था, यह आते-जाते यात्रियो और सुखदायक श्वेत और लाल मकानों से परिपूर्ण था जिसमे चारो ओर विशाल छायादार वृक्ष फैले हुए थे। अब मैं कुचली हुई ईंटो, मिट्टी और ककडो के ढेर पर खडा था, जिसके ऊपर से हुंड के समान आकार वाले लाल पौदे फैले हुए थे, घुटनों के बराबर ऊँचे, जिनके समीप कही भी उनकी सत्ता की प्रतिस्पर्धा करने वाली इस पृथ्वी की कोई भी अन्य वनस्पति नही थी। मेरे समीप के पेड निर्जीव और भूरे पड चुके थे, परन्तु कुछ और आगे अभी भी सजीव तनो से लाल डोरो की परतो का एक जाल-सा दीख पड़ता था।

समीप के सभी मकान ध्वस्त कर दिये गये थे, परन्तु उनमे से किसी-को भी भस्म नही किया गया था, और कही-कहीं उनकी ऊपरी मजिलो की दीवाले टूटी हुई खिड़कियो और द्वारो को लिये अभी भी खड़ी थी। उनके बिना छत वाले कमरो मे वह लाल बेल अव्यवस्थित रूप में उगी हुई थी। मेरे नीचे था वह विशाल खड्ड जिसमें कौए परस्पर उन ककालो के लिये झगड रहे थे। खण्डहरो मे अन्य प्रकार की अनेक चिड़ियाँ फुद-कती फिरती थी। दूर पर मैंने एक कृश शरीर वाली बिल्ली को एक दीवाल पर दुम दबाये पडे पाया, परन्तु वहाँ किसी मानव का कोई चिह्न नही था।

मेरे बन्दी-जीवन से रहे विरोधाभास के कारण दिन चकाचौध उत्पन्न कर देने वाले प्रकाश, और आकाश नीली चमक से परिपूर्ण था। मृदुल वायु का एक झोका उस लाल बेल को, जिसने खाली भूमि के चप्पे-चप्पे को ढँक लिया था, कोमलता के साथ हिला रहा था, और आह! वायु की वह मधुरता!

२३

पन्द्रह दिन का काम

अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता न करते हुए, मै कुछ समय तक लडखड़ाता उस ढेर पर खडा रहा। उस कोलाहलपूर्ण खोह मे जिससे कि मै निकलकर आया था, मै सकुचित व्यग्रता के साथ अपनी तात्का-लिक सुरक्षा के सम्बन्ध में ही सोचता रहा था। मैंने कभी भी यह सोचने की इच्छा नही की थी कि शेष संसार पर क्या बीत रही है, और

न अपरिचित वस्तुओं के इस चौंका डालने वाले दर्शन की ही आशा की थी। मैं शीन को ध्वस्त रूप में देखने की आशा करता रहा था—पर मैंने अपने चारों ओर, विलक्षण एवं भयकर, किसी अन्य लोक का विस्तृत प्रदेश पाया।

उसी क्षण मेरे मन मे एक भाव का सचार हुआ, जो सामान्य व्यक्ति की अनुभूति के परे था, पर साथ ही जिसका ज्ञान उन असहाय पशुओं को भली प्रकार अवश्य है जिन पर हमारा प्रभुत्व रहता है। मैंने अनुभव किया, जैसा कि बिल की ओर लौटते और सहसा दर्जनों श्रमिकों को किसी मकान की नींव खोदते देखकर कोई खरगोश कर सकता है। मैंने एक भाव का प्रथम आभास पाया जो शीघ्र ही मेरे सामने स्पष्ट होकर फैल गया, जिसने मुझे अनेक दिनों पीडित किया, सत्ता-च्युत हो जाने की अनुभूति, एक विश्वास कि मैं अब प्रभुत्वशाली स्वामी नहीं था, वरन् मंगल-निवासियों के पैरों तले उन अन्य पशुओं के मध्य मे एक पशु ही था। हमें अब वैसा ही करना होगा जैसा कि वह करते हैं—छिपे रहना और देखते भागना और छिप जाना, मानव का आतक और उसका साम्राज्य जा चुका था।

परन्तु यह विलक्षण बात जैसे ही समझ में आयी, वह बीत गयी और मेरा प्रमुख उद्देश्य अपने दीर्घ एवं शोक-युक्त अनशन का उपाय करना हो गया। खड्ड से दूसरी ओर वाली दिशा में मैंने लाल बेल से ढंकी दीवाल से परे उद्यान की भूमि का एक भाग देखा जो मलबे से बच रहा था। इसने मुझे एक सकेत दिया और मैं कभी घुटनों और कभी गर्दन तक उस लाल बेल में चलने लगा। बेल की सघनता ने मेरे मन को छिपने का सुरक्षित स्थान होने का आश्वासन-सा दिया। दीवाल लगभग छः फीट ऊँची थी और जब मैंने चढने का प्रयत्न किया, तो मुझे पता चला कि मैं उसके सिरे तक अपने पैर नहीं उठा सकता हूँ। अतः मैं उसके सहारे-सहारे चला और एक ऐसे कोने में आ पहुँचा, जहाँ पत्थर की रचना थी जिसने मुझे ऊपर पहुँचकर उस उद्यान में कूद पड़ने

मे सहायता दी जिसमें पहुँचने को मैं उत्सुक था। यहाँ मैंने कुछ छोटे प्याज, कुछ कोई की गाँठें और थोडी-सी अधपकी गाजर देखी जिन्हे मैंने प्राप्त कर लिया और एक दीवाल पर चढकर उन रक्त वर्ण तथा गुलाबी वृक्षो के मध्य रक्त के विशाल धब्बो से घिरे किसी मार्ग से निकलने के समान चलता हुआ मै अधिक से अधिक भोजन प्राप्त करने और लँगडाते हुए जहाँ तक और जितना शीघ्र सम्भव हो सके, अभिशप्त एव अभौमिक इस खड्ड प्रदेश से निकल भागने का प्रयत्न करने लगा।

कुछ आगे एक घास से भरे हुए स्थान पर मुझे कुछ कुकुरमुत्ते दिखाई पडे, जिन्हे मैं निगल गया, और तब मैं भूरी एवं उथली एक जल-धारा पर आ पहुँचा, जहाँ कभी चरागाह थे। प्रथम तो मै शुष्क और ऊष्ण गर्मी मे बहती हुई इस धारा को देखकर आश्चर्य मे पड़ गया, परन्तु बाद को मैं जान सका कि यह 'अयन वृत्त' में रही उस लाल बेल के कारण ही था। असाधारण रूप में बढ़ने वाली यह बेल शीघ्र ही पानी तक जा पहुँची, तुरन्त ही यह प्रचुर रूप मे फैल गयी और अपूर्व उर्वरता-पूर्ण हो उठी। इसके बीज वी और टेम्स नदियो के जल में गिरे और उसकी शीघ्र ही उपजने एव दैत्याकार रूप मे फैल जाने वाली पत्तियों के आकार वाली गाँठों ने इन दोनो नदियो को सुखा डाला।

पटनी में, जैसा कि मैंने बाद को देखा, पुल इस बेल के गुल्म में पूरी तरह से प्रच्छन्न हो गया था, और रिचमन्ड में भी टेम्स का पानी हैम्पटन और ट्रीकेनहैम के चरागाहो के पार एक चौडी एवं उथली धारा मे बह रहा था। जैसे-जैसे पानी फैलता जाता, वह बेल भी उसके साथ-साथ फैलती जाती और अन्त में टेम्स घाटी के अधिकतम गाँव के मकान जिनके विस्तार का मैने पता लगाया, इस लाल दलदल के पीछे छिप गये और इस प्रकार मगल-निवासियों द्वारा किये गये विनाश का पर्याप्त भाग छिपा पड़ा रहा।

अन्त में इस लाल बेल का विनाश भी उतनी ही शीघ्रता से हुआ जितनी शीघ्रता से उसका विस्तार हुआ था। जल-वायु में रहे कुछ जीवा-

गुओं के कारण, ऐसा विश्वास किया जाता है, वनस्पति को नष्ट कर डालने वाले एक रोग ने उसका नाश कर डाला। और प्रकृति में रही संकलन-क्रिया के कारण इस पृथ्वी की समस्त वनस्पतियो ने जीवाणुओं से सबंधित रोगों का प्रतिकार करने की शक्ति प्राप्त कर ली है—बिना एक प्रचण्ड संघर्ष किये वह इन रोगो के समक्ष समर्पण नही करती हैं; परन्तु वह लाल बेल किसी मृत वस्तु के समान तुरन्त ही सड गयी। उसकी गाँठे सफेद पड गयी और तब सिकुडकर कुरकुरी हो गयी। वह स्पर्श मात्र से चूर-चूर हो जाती और जल की वह धाराएँ, जिन्होने उनके विकास को प्रोत्साहित किया था, अब उनके अवशेषो को समुद्र की ओर बहा········।

इस जल के समीप आकर मेरा पहिला काम अपनी प्यास को मिटाना था। मैंने पेट भरकर पानी पिया और प्रेरणावश मैंने इस बेल की कुछ गाँठों को काटकर देखा; परन्तु वह जलपूर्ण थी और उनमें कसैला एवं धातु का-सा स्वाद था। मैंने देखा कि जल इतना उथला है कि मैं उसमें सुरक्षित रूप से चलकर निकल सकता हूँ, यद्यपि वह लाल बेल मेरे पैरो की गति को थोडा-बहुत रुद्ध कर रही थी, परन्तु यह प्रवाह प्रत्यक्ष रूप मे नदी की ओर बढ़ने पर गहरा होता गया और मै मार्टलेक की ओर घूम पडा। सडक का पता उसके स्थान-स्थान पर पडने वाले गाँव के मकानो, तार के बाडो और सडक के सहारे लगे लैम्पो को देख रोहैम्पटन की ओर पहाड़ी पर जाने वाली सड़क पर चलता हुआ मैं पटनी कामन पर आ पहुँचा।

यहाँ अपरिचित एवं विलक्षण दृश्यों के स्थान पर परिचित वस्तुओ के ध्वंसावशेष दीख पडे; भूमि के टुकडे स्थान-स्थान पर किसी प्रबल बवडर से हुई क्षति को प्रदर्शित कर रहे थे और कुछ ही गज के अन्तर पर मैं पूर्णत· अप्रभावित स्थानों पर आ पहुँचता, मकान और पर्दे सुन्दरता के साथ खिंचे हुए और उनके द्वार बन्द जैसे कि उनके स्वामी उन्हे एकाध दिन के लिये छोड गये थे, अथवा जैसे वह भीतर निद्रा-मग्न थे। यहाँ

लाल बेल कम फैल पायी थी, और गली के सहारे वाले ऊँचे वृक्ष उस लाल लता से पूर्णतः मुक्त थे। मैंने वृक्षो पर भोज्य सामग्री की खोज की और कुछ भी न प्राप्त कर सका, मैंने कई निस्तब्धतापूर्ण मकानो पर भी आक्रमण किया, परन्तु वह मुझसे पूर्व ही तोड और लूटे जा चुके थे। अपनी दुर्बल शारीरिक अवस्था के कारण आगे बढने मे अशक्त मैंने दिन का शेष भाग एक झरबेरी की झाडी के नीचे विश्राम करने में काटा।

इस समूचे काल मे मैंने न किसी मानव का ही दर्शन किया और न किसी मगल-निवासी का ही। मैंने क्षुधा-पीडित-से दीख पडने वाले कुत्तो के एक जोडे को देखा, परन्तु दोनो ही मुझे अपनी ओर बढता पाकर चक्राकार रूप मे मुझसे दूर भाग गये। रोहेम्पटन के समीप मैंने दो नर-ककालो को देखा—शव नही, वरन् ककाल, अच्छी तरह से नोचे हुए—और समीप के जगल मे मैंने कुछ बिल्लियो और खरगोशो एव बिखरी हुई और एक भेड की खोपडी पायी और यद्यपि मैंने हड्डियो के इन टुकडो को दाँत से काटा, उनमे प्राप्त कर सकने योग्य कुछ भी नही था।

सूर्यास्त के पश्चात् मैंने सडक पर पटनी की ओर बढने का प्रयत्न किया, जहाँ मेरा विचार था कि किसी न किसी कारण अग्नि-किरण का प्रयोग अवश्य हुआ होगा और रोहैम्पटन से परे एक उद्यान में मैंने कुछ कच्चे आलू प्राप्त किये जो कुछ समय के लिये मेरी क्षुधा को शात करने को पर्याप्त थे। इस उद्यान से कोई भी मनुष्य नीचे बसे पटनी और बहती उस नदी को देख सकता था। गोधूलि के उस क्षीण प्रकाश मे उस स्थान का दृश्य पूर्णत निर्जन-सा प्रतीत होता था: काले पडे वृक्ष, सूने पडे खण्डहर और पहाडी के नीचे की ओर स्थान-स्थान पर लाल बेल के सघन कुजो वाले नदी की बाढ से घिरे भूमि-खण्ड। और इस सबके ऊपर वह निस्तब्धता। इस विचार ने मेरे हृदय को एक अवर्णनीय भय मे प्लावित कर दिया कि विनाशकारी यह परिवर्तन कितनी शीघ्रता

से घटित हो गया।

कुछ समय के लिये मुझे ऐसा विश्वास हो गया कि मानव-जाति पृथ्वी-तल से समाप्त हो चुकी है और मैं वहाँ एकाकी ही था, अन्तिम मानव, जो जीवित रह सका है। पटनी पहाडी की चोटी के अति निकट मैं एक अन्य ककाल के समीप आ पहुँचा, जिसकी भुजाएँ अपने स्थान से उखडी और शेष भाग से कई गज की दूरी पर पडी थी। जैसे-जैसे मैं आगे बढता गया, मुझे अधिकाधिक विश्वास होता गया कि मेरे जैसे एकाध घुमक्कड को छोडकर पृथ्वी के इस भाग पर शेष सम्पूर्ण मानव-जाति का विनाश किया जा चुका है। मगल-निवासी, मैंने कल्पना की, इस देश को उजाड कर, भोजन की खोज में आगे बढ़ गये हैं। हो सकता है कि वह इस समय बर्लिन अथवा पेरिस को नष्ट कर रहे हो, अथवा हो सकता है कि वह उत्तर की ओर बढ़ गये हों............. ।

२४

पटनी पहाड़ी वाला आदमी

वह रात्रि मैंने उस सराय में व्यतीत की जो पटनी की चोटी पर स्थित है, और लैदरहैड से पलायन के पश्चात् यह प्रथम अवसर था जब कि मैं तैयार किये हुए बिस्तर पर सोया। मैं उस अनर्थक परिश्रम का वर्णन नही करूँगा, जो मुझे इस मकान में प्रवेश पाने के निमित्त करना पडा—बाद में मुझे पता लगा कि अगला द्वार केवल एक सिटकनी के आधार पर ही बन्द था—और न यह विस्तार ही कि किस प्रकार मैंने भोजन के निमित्त प्रत्येक कमरे की छान-बीन की, जब कि नैराश्य

की चरम सीमा पर पहुँचते, एक कमरे में जो सम्भवत किसी नौकर के सोने का कमरा प्रतीत होता था, मैं चूहो के कुतरे कुछ छिलके और डिब्बे मे बन्द दो अन्नानास प्राप्त कर सका। यह स्थान मुझसे पूर्व ही खोजा और खाली किया जा चुका था। शराब बिक्री वाले स्थान पर बाद मे मै कुछ बिस्कुट और कुछ सैन्डविचेज पा सका जिन पर किसी की दृष्टि नही पड पायी थी। बाद वाली वस्तु को तो मै खा न सका परन्तु पहिली ने न केवल मेरी क्षुधा ही निवृत्त की वरन् मेरी जेबो को भी भर दिया। मैंने लैम्प का प्रकाश इस भय से नही किया कि कही कोई मंगल-निवासी लन्दन के समीपवर्ती इस स्थान पर रात में भोजन की खोज मे न आ जाय। शय्या पर जाने से पूर्व मैंने व्याकुलता का समय एक खिडकी से दूसरी पर इन दैत्यो का कोई चिह्न खोज पाने के निमित्त झाँकने मे व्यतीत किया। मै थोड़ा सो पाया। जब मै शय्या पर लेटा, मैंने स्वय को क्रमागत रूप मे चिन्तन करते पाया—एक ऐसी बात जिसकी पादरी के साथ हुए अपने तर्क के पश्चात् किये जाने की मुझे कोई स्मृति नही है। मध्य के इस समस्त काल में मेरी मानसिक स्थिति शीघ्रता के साथ परिवर्तित होते अस्थिर मनोभावो के क्रम अथवा मूर्खतापूर्ण भावोत्पत्ति के रूप में रही थी। परन्तु रात्रि में, मै विश्वास करता हूँ, खाये हुए भोजन से नूतन शक्ति प्राप्त करके, मेरा मस्तिष्क, पुन स्पष्ट हो उठा, और मै चिन्तन मे डूब गया।

मेरे मस्तिष्क पर अधिकार प्राप्त करने के निमित्त तीन बातें सघर्ष कर रही थी: पादरी की हत्या, मंगल-निवासियो की स्थिति से संबंधित चिन्ता, और अपनी पत्नी का सम्भावित भाग्य। प्रथम बात तो मेरे मन मे स्मरण किये जाने योग्य किसी प्रकार की भय अथवा पश्चात्ताप की प्रवृत्ति नही जगाती थी, मैने उसे केवल एक घटना के रूप मे देखा था, एक स्मृति जो नितान्त अप्रिय थी, परन्तु जिसमें पश्चात्ताप जैसी कोई बात नही थी। मैंने उस समय स्वय को उसी प्रकार देखा था जैसा कि मै इस समय देख रहा हूँ, एक-एक पग करके शीघ्रता से घिरने वाली

उस आपत्ति की ओर खिचता हुआ, एक जीव जिसे घटनाओं के एक क्रम ने अन्ततः उस तक पहुँचा दिया। मुझे किसी प्रकार की निन्दा करने की कोई प्रवृत्ति नही हुई, परन्तु तो भी स्थिर एवं प्रगति-हीन वह स्मृति मेरे मन को व्यथित करती रही। रात्रि की निस्तब्धता, ईश्वर से सामीप्य की भावना से अनुप्राणित होकर, जो कभी-कभी रात्रि की शान्ति एवं अन्धकार के कारण मानव-मन मे उदित होती है, मैं क्रोध एव भय की उस क्षण रही अपनी केवल परीक्षा में सफल हो सका। उससे हुए वार्तालाप का प्रत्येक चरण मैंने उसे अपनी स्मृति मे सजीव किया, उस समय से जब कि मैंने उसे अपने पीछे पडे, मेरे प्यासा होने की कोई चिंता न करते हुए, और वीब्रिज के विनाश के ऊपर उठते धूम्र और शिखाओ की ओर सकेत करते पाया था। हम परस्पर सहयोग कर पाने मे अयोग्य सिद्ध हुए—और क्रूर भाग्य ने इस पर कोई ध्यान नही दिया। यदि मैं पहिले ही इसे जान सका होता, मैंने उसका साथ हैलीफोर्ड पर ही छोड दिया होता। परन्तु मैं इसे पहिले से नही जानता था, और अपराध वह होता है जिसे पहिले से जान लिया जाय और फिर भी किया जाय। और मैं इसका वर्णन ठीक उसी प्रकार कर रहा हूँ जैसे कि मैंने इस समस्त कहानी का वर्णन किया है, ठीक उसी रूप में जैसे कि यह घटित हुई। इसमें कोई प्रत्यक्ष साक्षी नही था—इन समस्त तथ्यो को मैं छिपा सकता था। परन्तु मैं सम्पूर्ण वर्णन कर रहा हूँ, और पाठक को उसी प्रकार निर्णय करना चाहिए जैसा कि प्रवृत्ति उसे होती है।

और जब एक प्रयत्न के द्वारा मैं लम्बाकार लेटे उस कल्पना-चित्र को मन से निकाल सका मेरे सामने मगल-निवासियो की चिन्ता और अपनी पत्नी के भाग्य की बात प्रबल हो उठी। प्रथम के संबध में तो मेरे पास कोई निर्दिष्ट तथ्य नही थे, और मैं सैकडों प्रकार की बातो की कल्पना कर सका, और इस प्रकार दुर्भाग्यवश मैं दूसरी के ही विषय मे ऐसा कर सका। और सहसा वह रात्रि भयानक हो उठी। मैंने स्वय को बिस्तर पर बैठे और अन्धकार को घूरते पाया। मैंने स्वय को यह

ध्यान करते पाया कि कही अग्नि-किरण ने उसे आकस्मिक एव शोक-जनक रूप मे स्थिति से विलीन न कर दिया हो। लैदरहेड से लौटने के पश्चात् से इस समय तक मैने प्रार्थना नही की थी। मैने प्रार्थनाएँ उच्चारित की थी; बर्बरो के समान प्रार्थनाएँ, उत्तेजनाओ की चरमानुभूतियो में, मूर्ति-पूजको के मुँह से निकलने वाले मत्रो के समान प्रार्थनाएं। परन्तु जब मैने वास्तविक रूप मे प्रार्थना की, ईश्वर के उस अन्धकार के समक्ष बैठकर दृढता एव बुद्धिमत्तापूर्वक। विलक्षण रात्रि, विलक्षणतम, इस बात मे कि जैसे ही पौ फटी, मै, जो ईश्वर से बात करता रहा था, उस मकान से अपने छिपने के स्थान को छोडकर आने वाले चूहे के समान बाहर निकल आया—एक जीव जो कठिनता से विशाल आकार वाला था, निम्न श्रेणी का एक पशु, अपने स्वामियो की किसी भी आकस्मिक सनक को आहुति, ईश्वर से विश्वास के साथ प्रार्थना करता रहा। निश्चित रूप मे यदि हम इस युद्ध से अन्य कोई भी बात नही सीख सके हैं, इस युद्ध ने हमे सदय होना सिखाया है—उन बुद्धि-हीन पशुओ के प्रति दया जो हमारे प्रभुत्व मे कष्ट सहते हैं।

प्रात चमकीला एव सुन्दर था, और पूर्व की ओर वाला आकाश गुलाबी हो रहा था जिसमे छोटे-छोटे स्वर्णिम बादलो की छज्जियाँ थी। पटनी पहाडी की चोटी से विम्बिलडन जाने वाली सडक पर शनिवार की रात्रि को, जब युद्ध प्रारम्भ हो चुका था, लन्दन की ओर जाने वाली सकट-पूर्ण उस भगदड के अनेक चिह्न विद्यमान थे। वहाँ एक छोटी दो पहियो वाली गाडी थी जिस पर थामस लाब, ग्रीन ग्रोसर, न्यू मेल्डन अकित था और एक लूटा हुआ टीन का सन्दूक, पतेल का बना एक हैट जो अब सूखी हुई कीचड़ मे कुचला पडा था; और वैस्ट हिल की चोटी पर पानी की नॉद के समीप पडा हुआ रक्त के छीटो वाला कॉच। मेरी गतियाँ शिथिल थी और मेरी योजनाएँ अस्थिर। मेरे मन में लैदरहैड जाने का भी एक विचार था यद्यपि मै जानता था कि वहाँ अपनी पत्नी को पा सकने की सम्भावना नाम मात्र को ही थी। केवल इसके कि

मृत्यु ने उन्हे अपने अक मे ले लिया हो, मेरे भाई और मेरी पत्नी वहाँ से कही भाग गये होगे; परन्तु मुझे ऐसा लगा कि वहाँ पहुँचकर शायद मैं यह पता लगा लूँ या जान जाऊँ कि सरे वाले लोग भागकर किस ओर गये हैं। मैं जानता था कि मैं अपनी पत्नी को पाना चाहता हूँ, और मेरा मन उसको तथा ससार के अन्य लोगो को पाने के लिये पीडित है, परन्तु मेरे मस्तिष्क मे ऐसी कोई स्पष्ट धारणा नही थी कि यह खोज किस प्रकार पूरी हो सकती है। और अब मैं अपने पूर्ण एकाकी-पन के विषय मे भी जागरूक हो चुका था। वृक्षों और झाडियो की ढाल के नीचे चलता मैं बिम्बिलडन कामन के उस कोने की ओर गया जो चारों ओर दूर-दूर तक फैला हुआ था।

वह अधेरा प्रदेश स्थान-स्थान पर उगी भटकैया और झाडू की झाडियों से प्रकाशित दीख पडता था, वहाँ लाल बेल का कोई चिन्ह विद्यमान नही था, और हिचकिचाता हुआ जब मैं एक स्थान से दूसरे स्थान अपनी खोज में भटक रहा था, खुले हुए स्थान के किनारे से उस समस्त प्रदेश को प्रकाश एव सजीवता से भरता हुआ सूर्य उदित हो उठा। वृक्षों के नीचे एक कीचड़ वाले स्थान पर मैंने कुछ मेढको को कार्य-व्यस्त पाया। मैं उन्हे देखने एवं जीवित रहने के लिये उनके दृढ संकल्प को देखने के निमित्त रुका। और तुरन्त ही सहसा पीछे मुडने पर, देखे जाने की असगत भावना से प्रभावित, मैंने झाडियो के मध्य सरकती किसी वस्तु को देखा। इसे देखता मैं खडा रहा। मैं उसकी ओर एक कदम बढ़ा, और ऊपर उठकर वह मुडी एवं चौड़ी तलवार से सुसज्जित एक मानव निकला। धीरे-धीरे मैं उसकी ओर बढ़ा। मेरी ओर देखता वह शान्त एव गति-हीन खड़ा रहा।

जैसे मैं समीप आया, मैंने पाया कि वह मेरे ही समान धूल धूसरित एवं मलिन वस्त्र धारण किये हुए था; और वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह सड़क की नाली से होकर घसीटा गया हो। समीप आने पर मैंने उसके वस्त्रों पर लगी खाइयो की लिसलिसी मिट्टी देखी, जिस पर

सूखी मिट्टी की पीली भूरी परतें और कोयलो के चमकीले धब्बे पड़े थे। उसके काले बाल उसके नेत्रो पर पडे थे, और उसका चेहरा काला, मलिन एव शुष्क था, जिसके कारण प्रथम मैं उसे न पहिचान सका। उसके चेहरे के निम्न भाग मे एक लाल घाव का निशान था।

"रुक जाओ!" वह चिल्लाया, जब मै उससे दस गज़ की दूरी पर था, और मैं रुक गया। "तुम कहाँ से आ रहे हो!"

उसका निरीक्षण करता मै विचार करने लगा।

"मै मार्टलेक से आ रहा हूँ," मैने कहा, "मैं उस खड्ड के निकट दबा पडा था जिसे मगल-निवासियो ने अपने सिलण्डर के निमित्त बनाया था। मैने बाहर किलने का प्रयत्न किया और मै बच निकला।"

"यहाँ आस-पास भोजन का कोई प्रबन्ध नही है," उसने कहा। "यह मेरा प्रदेश है। इस पहाडी से नीचे नदी तक का समस्त प्रदेश और पीछे क्लैपहैम और ऊपर कामन के छोर तक। यहाँ केवल एक व्यक्ति ही के लिये भोजन है। तुम किस ओर जा रहे हो?"

मन्द स्वर मे मैंने उत्तर दिया।

"मै नही जानता," मैने कहा। "मैं एक मकान के खण्डहर में तेरह चौदह दिन दबा पडा रहा हूँ। मै नही जानता कि बाहर क्या-क्या हो चुका है।"

सन्देह के साथ उसने मेरी ओर देखा, और तब आगे की ओर बढ चला और परिवर्तित मुद्रा में मेरी ओर देखता रहा।

"यहाँ कही रुकने की मुझे कोई इच्छा नही है," मैने कहा। "यहाँ मेरा विचार है कि मै लैदरहैड जाऊँगा, कारण कि मेरी पत्नी वही थी।"

"अरे तुम हो?" उसने कहा। "वोकिंग वाले आदमी। और वीब्रिज में तुम्हारा अन्त नही हुआ था?"

मै उसी क्षण उसे पहिचान गया।

"तुम वही सिपाही हो जो मेरे उद्यान में आये थे।"

"हे परत्मामा !" उसने कहा। "हम लोग भाग्यशाली हैं।" उसने एक हाथ आगे बढाया और मैंने उसे पकड लिया। "मैं एक नाले में रेंग गया था," उसने कहा। "परन्तु उन्होंने प्रत्येक को नष्ट नही किया। और उनके चले जाने के पश्चात् खेतो के बीच चलता मै वाल्टन की ओर बढ़ गया। परन्तु–कुल मिलाकर चौदह दिन भी नही हुए—और तुम्हारे बाल श्वेत हो चुके हैं।" सहसा उसने अपने कन्धे के ऊपर देखा। "केवल एक कौआ है," उसने कहा। "कोई भी समझ सकता है कि इन दिनो पक्षी भी साये में रहते हैं। यह स्थान कुछ खुला हुआ है। हम उन झाड़ियो के नीचे रेंग चले और बातचीत करे।"

"क्या तुमने किसी मगल-निवासी को देखा है ?" मैंने कहा। "जब से कि मै बाहर रेग आया....."

"वह लन्दन की ओर होते हुए चले गये" उसने कहा। "मेरा अनुमान है कि वहाँ उनका एक बड़ा पडाव है। हैम्पस्टेड की ओर वाले उस समस्त प्रदेश का आकाश रात्रि मे उनके प्रकाशो से परिपूर्ण रहता है। वह एक नगर के समान है, और उस प्रदेश मे तुम उन्हें चलते-फिरते देख सकते हो। दिन के प्रकाश मे तुम ऐसा नही कर सकते। परन्तु इधर के दिनो मे—मैंने उन्हे नही देखा है"—उसने उगलियो पर कुछ गिना। "पाँच दिन हुए। तब हैमरस्मिथ के ऊपर किसी भारी वस्तु को उठाये ले जाते मैने एक जोड़ा देखा था। और परसों रात—" वह और प्रभावपूर्ण स्वर में बोला—"वह अनेक प्रकाशो से पूर्ण थी, परन्तु निश्चित रूप मे वह ऊपर आकाश में उडती कोई वस्तु थी। मेरा विचार है कि उन्होंने किसी प्रकार की कोई उडन-शील मशीन बना ली है, और उडना सीख रहे हैं।"

मैं हाथो और घुटनो के बल रुक गया, कारण कि हम झाडियो तक आ पहुँचे थे।

"उड़ना !"

"हाँ," उसने कहा, "उडना !"

सरककर मै एक कुंज में घुसा और नीचे बैठ गया।

"मानवता समाप्त हो चुकी है," मैने कहा। "यदि वह ऐसा करने मे सफल हो सके, वह पृथ्वी पर चारो ओर........."

उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया।

"वह ऐसा ही करेंगे। परन्तु—इससे यहाँ की स्थिति मे किंचित सुधार होगा। और इसके अतिरिक्त—" उसने मेरी ओर देखा। "क्या तुम्हे विश्वास नही है कि मानवता का अन्त हो चुका है? मुझे विश्वास है। हम हार चुके है, हम पराजित हो चुके हैं।"

मै उसे घूरता रहा। चाहे कितनी ही विलक्षण यह बात प्रतीत हो, मै इस तथ्य तक नही पहुँच पाया था—एक तथ्य जो उसके मुँह से निकलते ही प्रत्यक्ष-सा जान पडा। मै इस समय तक एक अनिश्चित-सी आशा रखे था, अथवा यह मेरे जीवन भर के अभ्यास का फल था। उसने अपने शब्द पुन दोहराये, "हम पराजित हो चुके हैं।" उसके शब्दो में दृढ विश्वास था।

"सब कुछ समाप्त हो चुका है," उसने कहा। "उनमे से केवल एक ही नष्ट हुआ है—केवल एक और उन्होने अपने पैर दृढता से जमा लिये है, और संसार की महानतम शक्ति को कुचल डाला है। उन्होने हमें अपने पैरो के नीचे रौंदा है। वीब्रिज मे उस एक का विनाश केवल आकस्मिक घटना ही थी। यह हरित वर्ण तारे—मैने इन पाँच-छः दिनो मे कोई नही देखा है—तथापि मुझे विश्वास है कि प्रत्येक रात्रि वह कही न कही अवश्य गिर रहे हैं। कुछ नही किया जा सकता। हम अधिकृत हो चुके हैं, हम पराजित हो चुके हैं।"

मैने उसे कोई उत्तर नही दिया। अपने सामने घूरता मै इस सम्भावना का प्रतिकार करने वाले किसी विचार को खोज पाने का विफल प्रयत्न करता बैठा रहा।

"यह कोई युद्ध नही है," सिपाही ने कहा। मैने उसे समझाया। वह विचार-मग्न हो गया। "तोप मे कोई गड़बडी हो गयी," उसने कहा,

"परन्तु क्या होता है यदि ऐसा ही हुआ हो ? वह उसे फिर ठीक कर लेंगे। और यदि इसमे किंचित विलम्ब भी हो, तो वह युद्ध के अन्त को किस प्रकार बदल सकता है ? यह ठीक मनुष्य और चीटियो के युद्ध के समान है। चीटियाँ अपने नगर बनाती हैं, अपना जीवन व्यतीत करती हैं, युद्ध करती हैं, क्रातियाँ करती हैं, उस समय तक जब तक कि मनुष्य उन्हे अपने मार्ग से हटाना नही चाहता, और तब वह मार्ग से हटा दी जाती हैं। ठीक यही स्थिति है जिसमे हम इस क्षण हैं—केवल चीटियाँ। केवल—"

"हाँ", मैंने कहा।

एक दूसरे को घूरते हम बैठे रहे।

"और वह हमारा क्या करेंगे ?" मैंने कहा।

"यही बात मैं सोच रहा हूँ।" उसने कहा—"यही बात मैं भी सोच रहा हूँ। वीब्रिज की घटना के पश्चात् मैं दक्षिण की ओर गया—यही विचार करके। मैंने देखा कि सिर पर क्या घिरा है। अधिकतम लोग इससे क्षुब्ध थे और किकिया रहे थे। परन्तु मुझे किकियाना पसन्द नही है। एक-दो बार तो मैं मृत्यु के सामने ही रहा हूँ, मैं कोई दिखावटी सिपाही नही हूँ, और अच्छी या बुरी, मृत्यु मृत्यु ही है और केवल चिन्तनशील मनुष्य ही उसमे बचकर सुरक्षित निकल आता है। मैंने प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण की ओर जाते देखा। मैं कहता हूँ, इस ओर भोजन-अधिक समय तक नही मिल सकेगा और मैं ठीक पीछे की ओर मुड पड़ा। मगल-निवासियो पर आक्रमण करने की इच्छा से मैं उसी प्रकार भटकता रहा जैसे कि मनुष्य पर आक्रमण करने की इच्छा से गौरेया। चारो ओर—" उसने क्षितिज की ओर एक हाथ हिलाते कहा, "वह बडी सख्याओ मे भूखे मर रहे हैं, एकाएक चल पडते और एक दूसरे को रौदते—"

उसने मेरा चेहरा देखा और अप्रिय रूप मे सहसा बोलते-बोलते रुक गया !

"इसमें सन्देह नही कि अनेक, जिनके पास धन-राशि थी, फाँस चले गये है" उसने कहा। हिचकिचाता-सा वह ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे क्षमा-याचना कर रहा हो। उसकी दृष्टि मेरी दृष्टि से मिली, और वह बोलता ही गया, "यहाँ चारो ओर भोजन ही भोजन है। दूकानो में टोकरियो भरी वस्तुएँ, मदिरा, सोतो का पानी; और पानी के नल एवं नाले सूखे पडे हैं। परन्तु मै तुम्हे बता रहा था कि मै क्या सोचता रहा।"

"यहाँ सुबुद्ध प्राणी हैं", मैंने कहा, "और वह हमे भोजन के रूप में चाहते हैं। पहिले तो वह हमे नष्ट कर डालेगे—हमारे जहाजो, मशीनो, तोपो, नगरो, हमारे सभी सगठन एव व्यवस्था को, यह सब नष्ट हो जायगा। यदि हम चीटियो के आकार वाले होते तो हम आपत्ति से सुरक्षित निकल आते। परन्तु हम ऐसे नही हैं। यह प्रथम सम्भावना है। ऐ ?"

मैंने स्वीकार किया।

"ठीक ऐसा ही ही है, मैंने विचार कर लिया है, तब आगे. इस समय तो हमे आवश्यकतानुसार ही पकडा जा रहा है। एक मगल-निवासी को किसी भी प्रयत्नशील भीड की खोज मे केवल कुछ मील ही जाना पडता है और वान्डसवर्थ के बाहर मैंने एक को मकानो को तोडते और खण्डहरो को नष्ट-भ्रष्ट करते देखा है। परन्तु वह ऐसा ही नही करते रहेगे। जैसे ही वह हमारे जहाजो एव तोपो को गति-हीन एव हमारे रेल-मार्गों को नष्ट कर चुकेगे और वह सब काम पूरा कर चुकेगे जो वह वहाँ कर रहे हैं। वह हमें व्यवस्थित रूप में पकड़ना और छॉट-छॉट कर हमे पिजडो एव अन्य वस्तुओ मे बन्द करके भडार मे रखना प्रारम्भ कर देंगे। यही है जो वह कुछ ही काल मे करना प्रारम्भ कर देगे। हे ईश्वर! उन्होने अभी तक ऐसा करना प्रारम्भ नही किया है। क्या तुम यह नही देखते ?"

"अभी प्रारम्भ नही किया है !" मैंने कहा।

"नही किया है। अब तक जो कुछ भी हुआ है वह हमारे शान्त न रहने के कारण हुआ है—उन्हे तोपो से डराने एव ऐसी ही अन्य मूर्खताओ

के कारण। और विवेक खोकर, प्रचुर संख्या मे उस स्थान की ओर भागने के कारण जहाँ उस स्थान से कोई अधिक सुरक्षा नही है जहाँ हम पहिले थे। इस समय तक वह हमे चिन्तित करना नही चाहते है। वह अपनी वस्तुएँ बना रहे हैं—वह सभी वस्तुएँ जो वह अपने साथ नही ला सके, अपने शेष लोगों के लिये वस्तुए तैयार कर रहे हैं। हो सकता है कि इसी कारण सिलण्डरो का आना कुछ कम हो गया हो, इस भय के कारण कि वह कही उनसे न टकरा जायँ जो यहाँ पहिले से ही विद्यमान हैं। और हमारे कोलाहल करते अन्धा होकर इधर-उधर भागने अथवा उन्हे उडा डालने की खोज में विस्फोट की योजना बनाने की अपेक्षा हमे स्वयं को नूतन परिस्थितियो के अनुसार काम मे लगाना है। मै इस तथ्य को भली प्रकार समझता हूँ। निश्चित रूप मे यह वह बात नही है जो कोई मनुष्य अपनी समस्त जाति के संबध मे चाहेगा, अपितु यह केवल वही है जिसकी ओर सभी तथ्य संकेत करते है और यही वह सिद्धात था जिसके अनुसार मैने काम किया। नगर, राष्ट्र, सभ्यता, प्रगति सभी बाते समाप्त हो चुकी हैं। वह खेल खत्म हो चुका है। हम पराजित हो चुके हैं।"

"परन्तु यदि सत्य ऐसा ही है, तो जीवित रहने का क्या प्रयोजन है?"

सैनिक एक क्षण मेरी ओर देखता रह गया।

"आगामी लाखो वर्षों तक अब पवित्र आनन्दोत्सव नही होगे, अब रायल अकादमी आव आर्ट्स जैसी कोई सस्था नही रहेगी, और न रेस्तराओं के आनन्ददायक अल्पाहार। यदि तुम मनोविनोद को पाना चाहते हो, मै समझता हूँ कि वह खेल समाप्त हो चुका है। यदि तुम अतिथिशाला की शिष्टताओ में पारगत हो अथवा यदि तुम चाकू से मटर के दाने खाना पसन्द नहीं करते, अथवा यदि तुम्हे चूतड हिलाकर चलने का अभ्यास है, अच्छा होगा यदि तुम इन सबका ध्यान छोड दो। इनसे अब कोई लाभ नही है।"

"तुम्हारा मतलब है—"

"मेरा मतलब है कि मेरे समान व्यक्ति जीवित रह रहे हैं—केवल जाति को जीवित रखने के लिये। जीवित रहने की धुन मे लगा हुआ मै क्रूर हो उठा हूँ और यदि मै गलती नही कर रहा हूँ, तो तुम भी अपनी अन्तः प्रवृत्तियो का प्रदर्शन शीघ्र ही करोगे। तुम नष्ट होने नही जा रहे हो और मै चाहता हूँ कि मै पकड़ा जाऊँ और खिला-पिलाकर मोटा किया जाऊँ। छि ! भूरे उन रेगने वाले जीवो की कल्पना तो करो !"

"तुम्हारा यह मतलब नही है—"

"यही है। मै जीवित रह रहा हूँ। उनके पैरो के नीचे। मैने योजना बना ली है, मैने निश्चय कर लिया है। हम मानव पराजित हो चुके हैं। हम अधिक नही जानते। हमे सीख लेना है इससे पूर्व कि हमे कोई अवसर मिले और सीख पाने के लिये हमे जीवित रहना है और स्वाधीन रहना है। समझे ? यह है जो किया जाना है।"

इस मनुष्य के सकल्प से पर्याप्त रूप से प्रभावित आश्चर्य-चकित मै उसे घूरता रहा।

"महान ईश्वर !" मै पुकार उठा। "परन्तु निस्सन्देह तुम पुरुष हो !" सहसा मैने उसका हाथ पकड लिया।

"हूँ ?" उसने प्रकाशपूर्ण नेत्रो से कहा, "मै विचार कर चुका हूँ।"

'बढे चलो", मैने कहा।

"ठीक है, उन्हे जो पकडे जाने से बचना चाहते हैं, तैयार हो जाना चाहिये। मै तैयार हो रहा हूँ। विचार करो, क्या सभी बर्बर पशु नही हुए जा रहे हैं; और यही है वह जो किया जाना है। यही कारण था कि मै छिपकर तुम्हे देखता रहा। मेरे मन मे सन्देह था। तुम पतले-दुबले हो। मै नही जानता था कि यह तुम हो, समझे, और न यही कि तुम दबे पडे रहे हो। यह सभी मनुष्य——उस प्रकार के व्यक्ति जो इन मकानो में रहा करते थे और वह समस्त बेचारे क्लर्क जो इन नीचे की ओर वहाँ रहा करते थे—वह कुछ भी नही कर सकते। उनमें कोई शक्ति नही है—न उनके समक्ष गौरवपूर्ण स्वप्न ही

थे और न श्रेष्ठनम भोग, और वह मनुष्य जो इन दोनो वस्तुओ मे से एक भी नही रखता—ईश्वर ही जाने कि वह भीरु होने अथवा सचेत रहने से अधिक क्या कर सकता है ? वह केवल काम करने से भागना जानते थे—मैंने वैसे सैकडों को देखा है हाथ मे थोडा-सा नाश्ता लिये, पशुओ की भाँति भागते और प्रसन्नतापूर्वक अपनी छोटी सीजन-टिकट वाली गाड़ी पकडने के हेतु प्रयत्नशील, इस भय से आतकित कि ऐसा न करने से वह पदच्युत न कर दिये जाये, उस कार्य मे रत जिसे समझ पाना भी वह कठिन समझते थे पुनः शीघ्रतापूर्वक घर की ओर इस भय से भागते कि वह भोजन के समय पर उपस्थित न हो सकेंगे, और तब पिछली गलियो मे असुरक्षित रहने के कारण वह घर से बाहर नही निकलते, और उन पत्नियो के साथ सो जाते हैं जिनसे उन्होने विवाह किया है, इस कारण नही कि वह उन्हे चाहते थे, अपितु इस कारण कि उनके पास थोडा साधन था जिससे वह इस ससार मे त्रस्त भाव से कुछ काल जीवित रह सकने योग्य सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं। जीवन जो दुर्घटनाओ से सुरक्षा एव पूँजी के रूप में बीमा किये जा चुके हैं; और रविवारो को परलोक के भय से त्रस्त। जैसे कि नरक केवल चूहो के लिये ही निर्मित हुआ हो और मगल-निवासी उन्हे उनके कल्याण के हेतु भेजे गये सौभाग्य-प्रदायक-से ही प्रतीत होगे। अच्छे और लम्बे-चौडे पिंजडे, पौष्टिक भोजन, सावधानीपूर्ण पालन और किसी भी प्रकार की चिन्ता का अभाव। एक-आध सप्ताह में क्षुधा से पीडित खेतो और मैदानों मे भोजन की खोज करते, वह स्वय आ जायेगे और प्रसन्नतापूर्वक बन्दी बन जायेगे। कुछ ही समय पश्चात् वह परम आनन्द अनुभव करेगे। वह आश्चर्य करेगे कि उनकी देख-रेख करने वाले मगल-निवासियो के आगमन से पूर्व लोग उनसे कैसा व्यवहार करते थे। और मदिरालयो के आवारा, छैला एव गवैये—मैं उनकी कल्पना कर सकता हूँ।" उसने मलि-नतापूर्ण सन्तोष के भाव से कहा। "उनमे किसी भी अश तक भावना एवं धर्म अव्यवस्थित रूप मे जागृत हो सकता है। मैंने सैकडो बाते इन

आँखो से देखी हैं, जिन्हे स्पष्ट रूप मे देखना मैंने पिछले कुछ दिनो से ही प्रारम्भ किया है। उनमें से अनेक इन बातो को उसी प्रकार समझ सकेंगे जैसे कि वह स्वय स्थूल एव मूर्खतापूर्ण हैं; और अनेक एक ऐसी प्रकार की भावना से चिन्तित रहेगे कि यह सभी बाते असत्य हैं और उन्हे कुछ न कुछ करते रहना चाहिये और जब कभी भी वस्तु-स्थिति ऐसी होती है कि जन-संख्या का बहुताश ऐसी अनुभूति करता रहता है कि उन्हे कुछ न कुछ करते ही रहना चाहिये, तो दुर्बल एव वह जो जटिलतापूर्ण विचार-धारा के कारण दुर्बलता को प्राप्त हो जाते है, सदैव एक प्रकार के अकर्मण्यतापूर्ण धर्म का प्रतिपादन करते हैं। जो प्रत्यक्ष रूप मे नितान्त पवित्र एव गौरवपूर्ण प्रतीत होता है और व्यथा एव ईश्वरेच्छा के समक्ष समर्पण कर देते हैं। ठीक इसी प्रकार की स्थिति तुम स्वय देख चुके हो। यह भीरुता के आवरण में बन्द शक्ति के एक झोके के समान होती है और भीतर तथा बाहर दोनो ही ओर खोखली होती है। यह पिजडे भजनो, स्तोत्रो एव दयानुभूति के होगे और अन्य दूसरे जो अपेक्षाकृत कुछ कम सरल प्रकृति के होगे, आशिक—उसे क्या कहते हैं ? प्रेमपूर्ण रूप में काम करते रहेगे।"

वह थोडा रुका।

"बहुत सम्भव है कि यह मगल-निवासी उनमे से कुछ को पालतू बना लेगे, उन्हे तमाशा करना सिखायेगे—कौन कह सकता है ?—और उस पालतू लडके के प्रति कुछ दया की अनुभूति करेगे जो बडा हो जायगा और वध किये जाने योग्य होगा और उनमें से कुछ को हो सकता है कि वह हमारा शिकार करना सिखा दे।"

"नही," मै चिल्ला उठा, "यह असम्भव है ! कोई भी मानव !"

"इस प्रकार की भ्रान्तियो से मन को छलते रहने से क्या लाभ ?" सैनिक ने कहा। "ऐसे भी मनुष्य हैं जो प्रसन्नतापूर्वक ऐसा करेगे। क्या मूर्खता है कि कहा जाय कि ऐसे लोग नही हैं।"

और उसके दृढ विश्वास के समक्ष मैने समर्पण कर दिया।

"और यदि वह मेरा पीछा करें," उसने कहा—"हे ईश्वर यदि वे मेरा पीछा करे !" और वह एक उदासीनतापूर्ण ध्यानावस्था में डूब गया।

इन्ही बातो पर चितन करता मैं बैठा रहा। इस मनुष्य के तर्कों का खण्डन करने योग्य मैं कुछ भी न पा सका। इस आक्रमण से पूर्व किसी भी मनुष्य ने इस सैनिक की अपेक्षा मेरे बौद्धिक स्तर की श्रेष्ठता पर शका नही की होती—मैं दार्शनिक समस्याओ पर लिखने वाला एक प्रतिष्ठित एव स्वीकृत लेखक और वह एक सामान्य सैनिक—और तो भी वह उस स्थिति का सूत्रबद्ध वर्णन कर सका जिसे मैं कठिनता से ही समझ पाया था।

"तुम क्या करने वाले हो ?" मैंने तुरन्त ही प्रश्न किया। "तुम क्या योजनाएँ बना चुके हो ?"

वह हिचकिचाया।

"तो सुनो, वह इस प्रकार है,' उसने कहा। "हमें क्या करना है ? हमें एक-से जीवन की व्यवस्था प्रारम्भ करनी है, जहाँ मनुष्य जीवित रह सके और सन्तान उत्पन्न कर सके, और शिशुओ के पालन-पोषण के निमित्त वह पर्याप्त रूप में सुरक्षित रह सके। समझे ! थोडा ठहरो और मैं स्पष्ट रूप में समझा दूँगा कि मेरे विचार से क्या किया जाना चाहिये। पालतू मनुष्य सभी पालतू पशुओं के समान आचरण करेंगे, कुछ ही पीढ़ियो के बाद वह दीर्घकाय, सुन्दर, रक्तपूर्ण, मूर्ख हो जायेंगे—पूर्णतः विवेक शून्य। सकट की बात तो यह है कि जंगलो में निवास करने वाले हम लोग जंगली हो जायेंगे—एक दीर्घकाय जंगली चूहे के समान हमारा भी पतन हो जायगा.........तुम समझ गये कि मेरा अभिप्राय भूमि-तल से नीचे रहने का है। मैं नालो के सम्बन्ध में सोचता रहा हूँ। इसमें कोई सन्देह नही है कि वह, जो, नालो के सम्बन्ध में जानकारी नही रखते हैं उन्हे भयानक स्थान समझते हैं, परन्तु इसी लन्दन के नीचे मीलों—सैकड़ों मील के क्षेत्र मे—नाले ही नाले हैं और कुछ दिनों

की वर्षा एव जन-सख्या-शून्य लन्दन उन्हे सुविधापूर्ण एव स्वच्छ रूप में छोड देगा। प्रमुख नाले प्रत्येक के निवास के लिये पर्याप्त रूप मे लम्बे-चौडे एव वायुपूर्ण हैं और तब तहखाने हैं, गुफाएँ है, गोदाम हैं, जहाँ से नालो तक बन्द किये जाने वाले मार्ग बनाये जा सकते हैं। और रेलो की सुरंगे और भूमि के नीचे वाले मार्ग ! आह ! तुम देखने लगे ? और हम समूह का रूप धारण करें—शरीर और उद्वेग-रहित शरीर वाले मनुष्य। हम किसी भी दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति को नही अपनायेंगे जो बहकर भीतर आ पहुँचता है। और दुर्बल पुन. बहकर बाहर निकल जायेंगे।"

"जैसा कि तुम मुझे चले जाना देना चाहते थे ?"

"नही—मैंने सधि की बातचीत की थी—क्या मैंने नही की ?"

"हम उसके लिये झगडा नही करेंगे। बढे चलो।"

"वह जो भीतर रुकेंगे, उन्हे आज्ञा माननी होगी। सशक्त शरीर एव उद्वेग-रहित मस्तिष्क वाली नारियो की भी हमे आवश्यकता पडेगी—माताएँ एवं शिक्षिकाएँ। सन्तप्त नारियाँ नही—भडकते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रो वाली नही। साथ ही हम दुर्बल एवं मूर्खतापूर्ण स्वभाव वाली नारियो को भी स्वीकार नही कर सकते। जीवन एक बार फिर वास्तविक हो उठेगा, और क्रिया-हीन, स्थूलकाय एव उपद्रवियो को मरना होगा। उन्हे मरना ही चाहिये। वह मरण की कामना भी कर रहे होगे। आखिर इस प्रकार जीवित रहकर जाति को कलकित करना भी एक प्रकार का जाति-द्रोह है। और वह सुखी हो भी नही सकते। इसके अतिरिक्त मृत्यु इतनी भयावह नही है—यह भीरुता की भावना है जो उसे इतना अप्रिय रूप दे देती है। और ऐसे समस्त स्थानों मे हम एकत्रित होकर रहेगे। हमारा प्रदेश लन्दन ही रहेगा। और हम बाहर निकलकर शत्रु पर आँख भी रख सकेंगे, जिस समय मगल-निवासी उस स्थान से दूर होगे। शायद हम क्रिकेट खेलेंगे। और यह आशा है जिसके द्वारा हम जाति की रक्षा कर सकेंगे। आह क्या यह सम्भव है ?

परन्तु जाति की रक्षा स्वय मे कुछ महत्व नही रखती है। जैसा मैने कहा, यह केवल चूहो के रूप मे ढल जाने का ही उपाय है। आवश्यकता अपने ज्ञान की रक्षा करने और उसकी वृद्धि करने की है। और तब तुम जैसे लोग आते हैं। पुस्तके हैं—प्रतिरूप हैं। हमे भू-गर्भ में सुरक्षित स्थान बनाने चाहियें, और जितनी भी मिल सकें पुस्तके प्राप्त करनी चाहिये; उपन्यास एवं मार्मिक कविताओ की पुस्तके नही, वरन् विज्ञान की पुस्तके। और यहा स्थान है, जहाँ तुम जैसे व्यक्तियो की आवश्यकता है। तुम्हे ब्रिटिश सग्रहालय जाना चाहिये और ऐसी समस्त पुस्तकों को उठा लाना चाहिये। विशेष रूप से हमे अपने विज्ञान को जीवित रखना चाहिये—और अधिक जानना चाहिये। हमे इन मंगल-निवासियों पर आँख रखनी चाहिये। हममे से कुछ को गुप्तचरों के रूप मे जाना चाहिये। जब व्यवस्था प्रारम्भ हो जायगी, सम्भव है मैं ऐसा करूँ। मेरा अभिप्राय है पकड़े जाना। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमे मगल-निवासियों को एकाकी छोड़ देना चाहिये। हमे उन्हें दिखाना चाहिये कि हम उन्हे कोई भी हानि पहुँचाना नही चाहते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ। परन्तु वह बुद्धियुक्त प्राणी हैं, और वह हमे खोज-खोज कर नष्ट नही करेंगे यदि उन्हें वह सब प्राप्त हो जाय, जो वह चाहते हैं, और वह समझेंगे कि हम किसी प्रकार की भी हानि न पहुँचा सकने योग्य क्षुद्र कीटाणु हैं।"

सैनिक रुका और एक भूरा-सा हाथ उसने मेरी भुजा पर रख दिया।

"हो सकता है कि हमें इतना सीखने की आवश्यकता ही न पडे—कल्पना करो : उनके युद्ध-यन्त्रो मे से चार या पाँच सहसा उड चले—दायें और बायें अग्नि-किरण बरसाते—और उनमे एक भी मंगल-निवासी न हो। एक भी मंगल-निवासी नही, वरन् मानव—मानव जो सीख चुके हों कि उन्हे किस प्रकार चलाना चाहिये। हो सकता है कि यह मेरे जीवन-काल मे ही हों—वह मानव। उन सुन्दर वस्तुओ में से किसी

एक को पाने की कल्पना करो जिसमे स्वतन्त्रतापूर्वक चारो ओर का गति वाली अग्नि-किरण हो ! कल्पना करो कि तुम उसे अपने अधिकार में रख सकते हो। क्या अन्तर पडेगा यदि तुम दौड के अंत मे उसे खण्ड-खण्ड कर डालो, उसी प्रकार के एक विस्फोट के साथ? मै समझता हूँ कि मगल-निवासी अपने सुन्दर नेत्रो को खोलेगे! क्या तुम उन्हे नही देख सकते—मानव? क्या तुम उन्हे शीघ्रतापूर्वक जाते—धूम्र-पिड छोडते आग लगाते और अपने अन्य यान्त्रिक उपायो के सम्बध मे पुकारते नही सुन सकते हो? प्रत्येक अवस्था मे कुछ न कुछ अव्यवस्थित ही रहता है। और सरसराहट, धडाके, खडखडाहट, सरसराहट! जब कि वह फूहरपन के साथ उन्हे चला रहे हो, सरसराती हुई अग्नि-किरण चमक उठती है, और, देखो! मनुष्य अपनी प्रकृति पर लौट आया है।"

कुछ काल के लिये सैनिक की कल्पनात्मक साहसपरता, आश्वासन एव आत्मविश्वास के स्वर ने, जिसमे उसने यह सब कहा, मेरे मस्तिष्क पर पूरा अधिकार कर लिया। बिना किसी द्विविधा के मै मानव-जाति से सम्बन्धित उसकी भविष्य-वाणी एव आश्चर्य में डाल देने वाली योजना मे विश्वास करता हूँ, और वह पाठक जो सोचता है कि मै दूसरे के विचारो को ग्रहण करने वाला एव विवेक-हीन हूँ अपनी स्थिति मेरी स्थिति से बदल ले, अपनी समस्त चेतना अपने विषय मे रखे और पढते हुए, और मेरे भय के कारण झाडियो में रेगते हुए और आशकाओ से परिपूर्ण! इस प्रकार हम प्रात.काल के प्रारम्भिक भाग में वार्तालाप करते रहे, और फिर बाद में झाडियो से बाहर रेग आये, और मगल-निवासियो के कारण आकाश का निरीक्षण करके प्रबलता-पूर्वक पटनी पहाडी पर स्थित उस मकान की ओर दौडे जहाँ उसने अपने छिपने का स्थान बना रखा था। यह उस स्थान का कोयले रखने का तहखाना था, और जब मैने उस कार्य का निरीक्षण किया जिसे पूरा करने मे उसने एक सप्ताह लगाया था—वह कठिनता से दस गज लम्बा एक बिल था, जिसे उसने पटनी पहाडी पर स्थित उस बड़े नाले तक

पहुँचाने का प्रबन्ध किया था—मेरे मन में प्रथम बार उसके स्वप्नो एव शक्तियो के बीच रहे अन्तर का आभास प्राप्त हुआ। ऐसा गड्ढा मै दिन भर मे खोद सकता था। परन्तु मैं उसमे इतना विश्वास अवश्य करता था कि मैं उसके साथ उस खुदाई के काम मे उस समस्त प्रात.काल और मध्याह्न तक लगा रहा। हमने उद्यान तक पहुँचने के लिये एक बिल बना लिया, और खोदी हुई मिट्टी को रसोई-घर की दीवाल के सहारे लगा दिया। हमने बनाये हुए कछुए के एक टिन शोरबे तथा समीपवर्ती भण्डार-गृह से कुछ मदिरा प्राप्त करके स्वय को श्रम-मुक्त किया। इस स्थिर परिश्रम के द्वारा मैंने मन को उद्वेलित करने वाली ससार की विलक्षणता के कारण उत्पन्न पीडा से मुक्ति-सी प्राप्ति की। जब हम काम कर रहे थे, मैंने उसकी योजना को अपने मस्तिष्क के समक्ष फैलाया और तुरन्त ही वितर्क एवं सन्देह जन्म पाने लगे; परन्तु मैं समस्त प्रातः वहाँ कार्य-रत रहा, कारण कि स्वयं को किसी भी लक्ष्य-सिद्धि मे सलग्न देखकर मैं इतना प्रसन्न था। एक घण्टा काम करने के पश्चात्, मैं उस दूरी के सम्बन्ध मे अनुमान लगाने लगा जिसे किसीको भी उस नाले तक पहुँचने मे तय करनी पडती—एवं उन सम्भावनाओ पर जिनके द्वारा हम उसे पूर्णत. खो भी सकते थे। मेरी तात्कालिक कठिनाई यह थी कि हम इतनी लम्बी सुरग क्यों खोदे, जब कि यह सम्भव था कि हम किसी भी नीचे उतरने वाले मार्ग के द्वारा सीधे नाले मे ही उतर सकते थे, और वहाँ से मकान की ओर खुदाई प्रारम्भ कर सकते थे। मुझे यह भी प्रतीत हुआ कि यह मकान गलत चुना गया था, और उस तक आने के लिये व्यर्थ सुरग की लम्बाई को बढाना पडेगा। और जैसे ही मैं इन बातों का सामना करने के लिये तत्पर होना चाहता था, सैनिक ने खोदना बन्द कर दिया, और मेरी ओर देखने लगा।

"हम ठीक काम कर रहे हैं", उसने कहा। उसने अपना फावडा रख दिया। "हम थोडी देर को काम बन्द कर दे", उसने कहा। "मैं समझता

हूँ कि पर्याप्त समय हो चुका है, जब हमने छत पर से आकाश का निरीक्षण किया था।"

मेरा मन काम किये जाना ही था, और किंचित् हिचकिचाहट के पश्चात् उसने फावडा पुन· उठा लिया, और तब सहसा मेरे मन मे एक विचार उठ खडा हुआ। मैंने काम करना रोक दिया, और उसने भी ऐसा ही किया।

"यहाँ रहने की अपेक्षा", मैंने कहा, "तुम कामन पर क्यो घूम रहे थे?"

"हवा खाकर", उसने कहा, "मै लौट रहा था। रात्रि के समय ऐसा करना सुरक्षित होता है।"

"परन्तु काम?"

"आह! कोई भी हर समय काम मे नही लगा रह सकता", उसने कहा, और बिजली की एक चमक मे मैंने उस व्यक्ति को स्पष्टत देख सका। हिचकिचाता हुआ वह फावडा पकडे खडा रहा। "हमें अब निरीक्षण करना चाहिए", उसने कहा, "कारण कि यदि उनमे से कोई भी समीप आ पहुँचा तो फावडे की ध्वनि सुनकर वह हम पर अप्रत्याशित रूप मे आक्रमण कर सकता है।"

मुझे अब तर्क-वितर्क करने की कोई इच्छा नही थी। हम साथ-साथ छत पर गये और छत के दरवाजे से बाहर की ओर निकली हुई एक नसैनी पर खडे हो गये। मगल-निवासियो का कही पता नही था, और साहस करके हम खपरैल तक जा पहुँचे, और मिट्टी के उस ढेर के पीछे सुरक्षित नीचे ररक पडे।

इस स्थिति मे झाडियो का जगल पटनी पहाडी के अधिकतर भाग को ढके हुआ था, परन्तु हम नीचे बहती नदी को देख सके, लाल बेल से उठे हुए बुलबुलो से भरी हुई कीचड, एव लैम्बैथ के लाल तथा बाढ-ग्रस्त निचले भाग को। पुराने महल के समीप लाल बेल पेडो पर छाई हुई थी, और कृश एव निर्जीव उसकी शाखाएँ फैली हुई थी, और उसके

कुंजो के मध्य सिकुडी हुई पत्तियाँ दीख पड रही थी। यह तथ्य विलक्षण प्रतीत होता था कि यह सभी बाते उनका विस्तार करने वाले पाँनी के प्रवाह पर कितनी आधारित थी। हमारे समीपवर्ती स्थान में उनमे से एक ने भी जड नही पकडी थी; हरे और चमकदार लैबर्मनस, पिंक मेज, स्नोबाल्स आदि पेड ल्यारेल्स समूहो के बीच से सूर्य के प्रकाश में चमचमा रहे थे। केन्सिग्टन से परे गहन धुआँ उठ रहा था, और उस धुएँ एवं एक अन्य नीले-से धुंधलके ने उत्तरवर्ती पहाडियो को छिपा दिया था।

सैनिक मुझे उस प्रकार के व्यक्तियो के सम्बन्ध में बताने लगा जो अभी तक लन्दन ही मे रुके थे।

"पिछले सप्ताह एक रात्रि", उसने कहा, "कुछ मूर्खों ने बिजली की लाइनो को व्यवस्थित कर लिया, और समस्त रीजेन्ट स्ट्रीट और सरकस वाला प्रदेश चँमचमा उठा, जो रगे हुए एवं फटेहाल शराबियो से भरा हुआ था; नर और नारी, जो सूर्योदय तक नाचते और कोलाहल करते रहे। एक मनुष्य ने जो वही था मुझे बताया। और जैसे ही दिन निकला, उन्होंने लैन्गहम के समीप एक युद्ध-यन्त्र को खड़े और उनकी ओर झाँकते पाया। ईश्वर ही जाने वह कितने काल से वहाँ खड़ा रहा होगा। सड़क की ओर उतरता वह उनकी ओर आया, और उसने उनमें से लगभग सौ को ऊपर उठा लिया जो नशे अथवा भय के कारण भाग पाने में असमर्थ थे।"

एक ऐसे काल का विलक्षण दृश्य जिसे सम्भवतः कोई भी इतिहास पूर्णतः अकित नही करेगा।

इस विवरण के पश्चात्, मेरे प्रश्नों का उत्तर देते-देते वह अपनी श्रेष्ठता-सूचक योजनाओं पर उतर आया। वह उत्साहित हो उठा। उन युद्ध-यंत्रों में से एक को पकडने की सम्भावना के सम्बन्ध में उसने ऐसी वाक्-पटुता से वर्णन दिया कि मेरा विश्वास उस पर फिर आधा रह गया। परन्तु अब जैसे मैं उसके स्वभाव को समझता जा रहा था, और

प्रबलतापूर्वक कुछ भी न करने पर उसके आग्रह को मै अच्छी तरह पहिचान गया। और अब मै समझ गया कि युद्ध-यत्र से लडने और उसे पकडने का उसका कोई निश्चय नही था।

कुछ समय बाद हम नीचे तहखाने मे उतर गये। हममे से कोई भी खुदाई पुन. करने की प्रवृत्ति मे नही था, और जब उसने भोजन कर लेने का प्रस्ताव किया, मैने कोई आपत्ति नही की। सहसा वह अत्यन्त उदार हो उठा, और जब हम भोजन समाप्त कर चुके, वह चला गया और कुछ श्रेष्ठ सिगार लिये वापिस लौटा। हमने सिगार सुलगाये, और उसकी आशावादिता प्रकाशित हो उठी। वह मेरे आगमन को महत्वपूर्ण मानने का इच्छुक था।

"तहखाने मे कुछ शेम्पेन है", उसने कहा।

"हम टेम्स की ओर वाले भाग में खुदाई करे", मैने कहा।

"नही", उसने कहा, "मैं आज आतिथ्य करने वाला गृह-स्वामी हूँ। शेम्पेन! हे महान ईश्वर! हमारे समक्ष अभी नितान्त दुस्तर कार्य है! हमे थोडा विश्राम करना चाहिये, और जब तक सम्भव हो सके हमे शक्ति एकत्रित करनी चाहिये। फफोले पड़े इन हाथो को देखो!"

और विश्राम-दिवस मनाने पर आरूढ, उसने भोजन के पश्चात् मुझे ताश खेलने पर विवश किया। उसने मुझे यूकर सिखाया, और हमारे बीच लन्दन को दो भागो में बाँट लेने के बाद, जिसमे मैने उत्तरी एव उसने दक्षिणी भाग लिया, और गाँवो के पाइन्ट हारने जीतने लगे। विलक्षण एव मूर्खवत् जैसा कि वह किसी भी गम्भीर पाठक के निकट प्रतीत होगा, यह पूरी तरह पर सत्य है, और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे यह एव अन्य कई खेल जो मैने खेले रुचिकर ही लगे।

मनुष्य का विलक्षण मन! अपनी गति को विनाश अथवा भयोत्पादक पतन की सीमा पर छोडकर, और अपने समक्ष केवल एक भयावह मृत्यु की सम्भावना के अतिरिक्त अन्य कोई सम्भावना न रखने

वाले हम इस पैरिटल बोर्ड के दाँवो को देखते एवं सजीव उल्लास के साथ जोकर खेलते बैठे रहे। बाद में उसने मुझे पोकर का खेल सिखाया, और मैने उसे शतरंज की गम्भीर माते भी दी। जब अंधेरा हो गया तो हम इतने अधिक रुचिशील थे कि हमने लैम्प को प्रकाशित करने का सकट मोल लेने का भी निश्चय कर लिया।

एक के बाद दूसरी खेलो की अनेक बाजियाँ खेलने के पश्चात्, हमने भोजन किया और सैनिक ने समस्त शेम्पेन उडेल ली। सिगार पीते हम बैठे रहे। वह अब किंचित् मात्र भी अपनी जाति को पुनः जीवित करने वाला साहसी उद्धार-कर्त्ता नहीं था जैसा मैंने प्रातःकाल पाया था। इस समय भी वह आशावादी अवश्य था, परन्तु वह अपेक्षाकृत कम 'गतिशील थी, एक विचारपूर्ण आशावादिता'। मैने एक सिगार लिया, और उन प्रकाशो को, जिनकी चर्चा उसने की थी, देखने ऊपर चला गया जो हाईगेट पहाडियों की ओर चमचमाते रहते थे।

मूर्खतापूर्ण रूप मे प्रथम तो मैंने लन्दन वैली की ओर झाँका। उत्तरी पहाडियाँ अन्धकार मे डूबी पडी थी, केन्सिग्टन के समीप के प्रकाश लाल-लाल चमक रहे थे, और रह-रहकर अग्नि की नारगी लाल रग वाली एक लपट उस गहन नील रात्रि मे प्रकाशित होती और लुप्त हो जाती थी। लन्दन का शेप भाग अन्धकार मे डूबा हुआ था। तब, समीप ही, मैंने एक विलक्षण प्रकाश देखा, एक पीत एव हल्की गुलाबी धाराशील-सी प्रतीत होने वाली चमक, जो रात्रि की हवा के नीचे कँपकँपाती-सी लगती थी। कुछ समय तक तो मै उसे समझ न सका, और तब मै जान गया कि यह वही लाल बेल होगी जिससे यह चमक निकलती थी। यह समझते ही, मेरी प्रसुप्त आश्चर्य की भावना, वस्तुओं के अनुपात की मेरी अनुभूति पुनः जाग पडी। उस स्थान से मैने मंगल-ग्रह की ओर देखा, लाल एव स्वच्छ निर्मल, पश्चिम की ओर ऊँचे आकाश पर चमचमाता, और तब उत्सुकतापूर्वक बडी देर तक मै हैम्पस्टेड और हाईगेट को घूरता खड़ा रहा।

पर्याप्त काल तक दिन भर के विलक्षण परिवर्तनो पर, आश्चर्य करता मै ऊपर ही रहा। मैने मध्य रात्रि की प्रार्थना से मूर्खों के समान ताश खेलने के समय तक की अपनी सभी मानसिक स्थितियो का स्मरण किया। मैने प्रबल विराग की अनुभूति की। मुझे याद है कि एक प्रकार की व्यर्थता-द्योतक भावना से मैने सिगार फेक दिया। मेरी मूर्खता स्पष्ट दीख पडने वाले अनेक विराट रूप धारण करने लगी। मै अपनी पत्नी एवं अपनी जाति के निकट विश्वासघाती-सा प्रतीत हुआ, मेरा मन पश्चात्ताप से भर उठा। मैने इस विलक्षण तथा मदिरापान एवं भरपेट भोजन मे पूर्णत सयम-हीन महान सपने देखने वाले व्यक्ति को छोडने और लन्दन मे प्रवेश करने का निश्चय कर लिया। वहाँ मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मेरे लिये मंगल-निवासी एवं मेरे अन्य सजातीय क्या कर रहे है यह जानने का सर्वोत्तम अवसर प्राप्त हो सकेगा। मै उस समय भी छत पर ही था जब कि पर्याप्त रात ढले उदित होने वाला चन्द्रमा आकाश मे ऊपर की ओर उठा।

२५

जीवन-शून्य लन्दन

सैनिको से विदा होने के पश्चात्, पहाडी के नीचे होता और हाई स्ट्रीट के सहारे पुल पार करता मै फुलहम पहुँचा। लाल बेल उस समय सघनता से छाई हुई थी, और उसने पुल के सडक मार्ग को पूर्णत: सोख रखा था, परन्तु उसकी गाँठो पर स्थान-स्थान पर उस रोग के फैलने के कारण श्वेत धब्बे पड चुके थे जिसने अन्तत उसे समूल नष्ट

कर डाला। उस गली के छोर पर जो पटनी ब्रिज स्टेशन की ओर जाती है, मैंने एक व्यक्ति को लेटे पाया। वह ऐसा काला पडा हुआ था जैसी कि काली धूल से भरी कोई झाडू होती है, जो जीवित था, परन्तु इतने अधिक नशे मे कि वह चलने-फिरने एव बोल पाने मे अशक्त था। केवल गालियो तथा अपने माथे पर लातो के अतिरिक्त मै उससे कुछ और न पा सका। मेरा विचार है कि सम्भवत: मै उसके साथ रुक गया होता, परन्तु उसकी पाशविक मुखाकृति ने मुझे ऐसा नही करने दिया।

पुल और उससे आगे की सडक के सहारे काली धूल थी, और फुलहम में वह और अधिक मात्रा मे थी। गलियाँ भयावह रूप मे शान्त थी। मैं भोजन पा सका—खट्टा, कडा और धूल से भरा हुआ, परन्तु पूर्णत: भोजनीय—यही की एक नानबाई की दूकान पर। वैल्हम ग्रीन की ओर कुछ दूर वाली गलियाँ इस चूर्ण से मुक्त हो चुकी थी, और मैं जलते हुए अनेक मकानो के चबूतरो के सामने होकर गुजरा; प्रज्वलित अग्नि का कोलाहल पूर्ण शान्ति के समान लग रहा था। ब्राम्पटन की ओर जाने पर गलियाँ पुन: स्तब्धतापूर्ण थी।

यहाँ पहुँचकर मैंने पुन. एक बार गलियाँ तथा मृत शरीरो पर जमी काली धूल को पाया। फुलहम रोड पर मैंने लगभग एक दर्जन शव पाये। उन्हे मरे कई दिन हो चुके थे, और इस कारण मैं शीघ्रतापूर्वक उनको पार करता निकल गया। काले चूर्ण ने उन्हे ऊपर से ढँक लिया था, और उनके शरीर के ऊपरी भागो को मुलायम बना रखा था। उनमें से एक या दो कुत्तो द्वारा नष्ट किये जा चुके थे।

जहाँ वह काला चूर्ण नही था, वह स्थान विलक्षण रूप में रविवारीय नगर के समान प्रतीत होता था। जिसमे दूकाने बन्द थी, मकानो में बाहर से ताले पडे थे, झिलमिलें खिंची हुई थी, निर्जनता एव निस्तब्धता। कही चोर अपना काम कर चुके थे, परन्तु भडार-गृहो अथवा मदिरा की दूकानो के अतिरिक्त शायद ही अन्य किसी स्थान पर। एक जौहरी की दूकान एक स्थान पर फोड़ी गई थी, और लगता था कि जैसे

चोर को कोई बाधा पहुँची थी, और अनेक सोने की जञ्जीरे तथा एक घडी पटरी पर पडी थीं। मैने उन्हे उठाने का कष्ट नही किया। आगे बढने पर एक द्वार के समक्ष ढेर मे दबी पडी एक नारी थी जिसका शरीर चिथड़े हो रहा था, वह हाथ जो उसके घुटनों के ऊपर लटक रहा था कुचला हुआ था, और उससे रक्त उसके धूल-धूसरित भूरे वस्त्रो पर बह रहा था, और शेम्पेन के एक फूटे हुए पीपे ने सडक के फर्श पर एक कुण्ड-सा बना रखा था। लगता था जैसे वह निद्रामग्न हो, परन्तु वस्तुत वह निष्प्राण हो चुकी थी।

जितना अधिक मै लन्दन मे आगे की ओर बढा, निस्तब्धता उतनी ही गहनतर होती गयी। परन्तु वह इतनी अधिक मृत्यु की स्तब्धता नही थी—वह अनिश्चितता की निस्तब्धता थी, प्रतीक्षा की। किसी भी समय वह विनाश जो नगर के उत्तर-पश्चिमी भागो को झुलसा चुका है, और जो एलिग तथा किलबर्न का विनाश कर चुका है, इन मकानो पर प्रहार कर सकता है और उन्हे धुँआ देते खण्डहरो के रूप मे बदल सकता है। वह एक नगर था अभिशप्त एव परित्यक्त ·।

दक्षिणी केन्सिग्टन में गलियाँ शवो एव उस काले चूर्ण से मुक्त थी। यह दक्षिणी केन्सिग्टन के समीप ही था जहाँ मैने सर्व प्रथम चिल्लाहट की ध्वनि सुनी। अनजाने रूप में वह मेरी चेतना में समा गयी। वह दो प्रकार की ध्वनियो का मन्द स्वर में पारी-पारी से बोलना था, 'उला, उला, उला, उला' जो निरन्तर जारी रहा। जब मै उन गलियो को पार कर चुका, जो उत्तर की ओर जाती हैं, यह ध्वनियाँ प्रचण्ड हो उठी, और मकान एवं इमारते मृत्यु के समान स्तब्ध उसे खण्ड-खण्ड करने लगी। एक्जीबिशन रोड के समीप वह सम्पूर्ण प्रचण्डता के साथ आती सुन पडी। केन्सिग्टन गार्डन्स् के समीप पहुँचकर, दूरतम प्रदेश से आने वाली उस शोक-ध्वनि को सुनता मै खडा रहा। लगता था कि जैसे उस विशाल मरुखण्ड ने अपने भय एव अपनी निर्जनता को व्यक्त करने के हेतु स्वर प्राप्त कर लिये हो।

'उला, उला, उला, उला' वह पर-मानवीय स्वर विलाप करता-सा प्रतीत होता था—ध्वनि की प्रचण्ड लहरे जो दोनो ओर से ऊँची-ऊंची इमारतो से घिरी उस चौडी एवं सूर्य मे चमचमाती सडक पर टकरा रही थी। आश्चर्य करता मैं उत्तर की ओर हाइड पार्क के लोहे वाले फाटक की ओर मुडा। मेरे मन मे कुछ ऐसा विचार भी था कि मैं नेच्यूरल हिस्ट्री म्यूजियम मे घुस पडूँ, और मीनार की ऊपरी चोटी तक चढने का प्रयत्न करूँ, जिससे कि मैं पार्क के उस पार का दृश्य देख सकूँ। परन्तु मैंने भूमि पर ही रहने का निश्चय किया, जहाँ तुरन्त ही छिप सकना सम्भव था, और इस कारण मैं एक्जीबिशन रोड पर ही आगे बढता गया। सडक के दोनो ओर वाली ऊँची इमारते त्यक्त एवं निस्तब्ध थी, और मेरे पद-चाप की ध्वनि दोनों ओर के मकानो से टकरा कर प्रतिध्वनित होती रही। ऊपर चोटी पर, फाटक के समीप मैंने एक विलक्षण दृश्य देखा—एक उल्टी हुई बस एवं एक घोडे का अस्थि-पजर जिस पर से सारा मास नोच डाला गया था। इस पर मैं कुछ समय के लिये किंकर्त्तव्य-विमूढ-सा रहा, और तब सरपेन्टाइन के ऊपर वाले पुल पर चढ़ गया। ध्वनि प्रबलतर होती गयी, यद्यपि मैं उत्तर-पश्चिम की ओर एक घुँधलके के अतिरिक्त पार्क के उत्तरी ओर वाले मकानो के ऊपर अन्य कुछ भी न देख सका।

'उला, उला, उला, उला' ध्वनि पुकारती रही, जैसा कि प्रतीत होता था, रीजेन्ट पार्क वाले प्रदेश से मेरी ओर आती थी। उजाडने वाली यह ध्वनि मेरे मस्तिष्क पर प्रभाव डालती प्रतीत हुई। वह मन स्थिति जो मुझे अधिकार मे किये हुए थी, समाप्त हो गयी। उस विलाप ने मेरे मन को जकड लिया। मैंने अनुभव किया कि मैं बुरी तरह से थका-हारा, क्लान्त एवं फिर से भूखा और प्यासा था।

दोपहर समाप्त हो चुका था। मृतको के इस नगर मे मैं क्यो एकाकी घूम रहा हूँ? मैं क्यों एकाकी हूँ जब कि समस्त लन्दन जीवन-हीन, और काले कफन मे लिपटा पड़ा है? मैं असह्य रूप मे एकाकी

अनुभव करने लगा। मेरा मन पुराने मित्रो की ओर दौडने लगा, जिन्हें मै अनेक वर्षों से भूल चुका था। मैने दवा वालो की दुकानो मे रखे विषो की बात सोची, उन मदिराओ की जिन्हे दूकानदारो ने एकत्रित कर रखा था, मैने उन दो सन्तप्त व्यक्तियो की स्मृति की, जो, जहाँ तक मै जानता हूँ, इस नगर में मेरे समान ही......।

मार्बिल आर्क होता हुआ मै आक्सफोर्ड स्ट्रीट जा पहुँचा, और यहाँ फिर वही काला चूर्ण और मृत शरीर, तथा कुछ मकानो के तहखानों की जालियो से एक दुर्गन्धपूर्ण तथा अपशकुनशील गन्ध। अपने लम्बे पर्यटन की गर्मी के कारण मुझे जोर की प्यास लगी थी। असीम कठिनाई के पश्चात् मै एक सार्वजनिक गृह मे प्रवेश तथा खाने-पीने की कुछ सामग्री पा सका। खाने के पश्चात् मुझे थकान लगने लगी, और मै मदिरा बिकने वाले स्थान से रसोई-घर की ओर चला गया—और एक काले घोडे के बालो से बने सोफे पर सो गया जो मुझे वहाँ रखा मिला।

जागने पर मैने उस विषादपूर्ण ध्वनि को इस समय भी अपने कानो से टकराते सुना, 'उला, उला, उला, उला।' अधेरा हो चुका था, और जब मै मदिरा वाले स्थान में कुछ बिस्कुट तथा थोडा पनीर टटोल सका—मैने वहाँ मास रखने का एक सेफ देखा, परन्तु उसमे केवल कुछ कीडो के अतिरिक्त और कुछ नही था—शान्त पड़े निवास-स्थान वाले मुहल्लो से होता हुआ मै बेकर स्ट्रीट की ओर चलता रहा—पोर्टलैन्ड स्क्वायर ही एकमात्र नाम है जो मै ले सकता हूँ—और अन्त मे रीजेन्ट्स पार्क आ पहुँचा। और जैसे ही मै बेकर स्ट्रीट की चोटी से बाहर निकला, सूर्यास्त के स्पष्ट प्रकाश मे मैने वृक्षो की चोटियो के ऊपर मगल के एक युद्ध-यन्त्र का हुड देखा जिससे चिल्लाहट की यह ध्वनि निकल रही थी। मै किंचित भी भयभीत न हुआ। मै उस तक इस प्रकार पहुँचा जैसे कि ऐसा होना स्वाभाविक स्थिति ही हो। कुछ काल तक मै उसका निरीक्षण करता रहा, परन्तु वह अपने स्थान से नही हिला। प्रतीत होता

था कि जैसे वह खडा है और चिल्ला रहा है, परन्तु क्यो, मै कोई कारण न ढूँढ सका ।

मैंने काम करने की एक योजना स्थिर की । 'उला, उला, उला, उला' की निरन्तर आने वाली वह ध्वनि मेरे मस्तिष्क को अव्यवस्थित कर रही थी । सम्भवत: मै भय-ग्रस्त हो सकने के लिये अत्यधिक थका-हारा था । निश्चित है कि भयभीत होने के स्थान पर मै थका डालने वाले इस चीत्कार का कारण जानने के निमित्त उत्सुक था । मै पार्क से पीछे की ओर लौटा और पार्क रोड में घुस पडा, और पार्क का चक्कर काटने के निमित्त चबूतरों के नीचे छिपता चलता गया, और सेन्ट जान वुड की ओर से चीत्कार करते इस स्थिर मंगल-यन्त्र को देख पाने में सफल हुआ । बेकर स्ट्रीट से कुछ सौ गज दूर मैंने कुत्तो के भूँसने के समान सामूहिक ध्वनि सुनी, और प्रथम मैंने एक कुत्ते को सडे हुए लाल मास के टुकडे को जबडो मे दाबे सीधा अपनी ओर आते देखा, और तब क्षुधित दोगले कुत्तो के एक समूह को उसका पीछा करते । मुझसे बचने के लिये उसने एक बड़ा चक्कर काटा, जैसे कि सम्भवत: उसने मुझे भी एक नूतन प्रतिस्पर्धी समझा हो । जब कि उस शान्त सडक के नीचे की ओर कुत्तो की वह चिल्ल-पों बन्द हो गयी, 'उला, उला, उला, उला' की वह ध्वनि पुन: पूर्ववत् आने लगी ।

सेन्ट जान वुड स्टेशन की आधी दूरी आने पर मै उस ध्वस्त हैन्डलिंग मशीन तक आ पहुँचा । प्रथम तो मैंने विचार किया कि सडक पर कोई मकान गिर पड़ा है । केवल उन ध्वसावशेषो पर चढने पर ही मैंने साश्चर्य यान्त्रिक आकार के इस विशाल सैमसन को पड़े देखा, जिसके स्पर्श-ज्ञान-सयुत अग झुके हुए, ध्वस्त एव मुडे हुए, उन खण्डहरों में पडे थे जिन्हे उन्होने गिरा लिया था । सामने वाला भाग नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था । प्रतीत होता था कि जैसे वह आँख मीचे सीधा मकान से टकराया हो और पीछे गिरने पर खड-खंड हो गया हो । मुझे ऐसा लगा कि शायद ऐसा हैन्डलिंग मशीन के उस मंगल-निवासी के नियंत्रण

से बाहर निकल जाने के कारण हुआ हो। उसे देख पाने के लिये मै उस ढेर पर न चढ सका, और अधकार अब इतना बढ चुका था कि वह रक्त जिससे कि वह सीट सनी हुई थी और मास खा लेने के पश्चात् कुत्तों की छोडी हुई उस मगल-निवासी की कोमल हड्डी मुझे दीख नही पड रही थी।

उस सब पर अत्यधिक आश्चर्य करते हुए, जो मैने देखा था, मै प्रिमरोज पहाड़ी की ओर बढा। वृक्षो के मध्य से बहुत दूर पर, मैने एक दूसरे मगल-युद्ध-यत्र को प्रथम की ही भाँति गति-हीन जूलाजिकल गार्डेन्स वाले पार्क मे खडे देखा। हैन्डलिग मशीन के ध्वसावशेष से कुछ परे मै पुन. लाल बेल से घिरे प्रदेश मे आ पहुँचा, और रीजेन्ट्स कैनाल को मैने पानी सोखने वाली स्पंज के समान लाल वनस्पति से परिपूर्ण पाया।

जब मै पुल पार कर रहा था, 'उला, उला, उला, उला' की ध्वनि सहसा बन्द हो गयी। ऐसा लगा कि जैसे वह काट दी गयी हो। इसके बाद आने वाली शान्ति बिजली की गडगडाहट के समान प्रतीत हुई।

मेरे समीपवर्ती धुँधलके से घिरे मकान धूमिल, ऊँचे और मलिन-से दीख पडे, पार्क की ओर वाले मकान धीरे-धीरे काले पडते जा रहे थे। मेरे चारो ओर वह लाल बेल मकानो के खण्डहरो पर ऊपर की ओर फैली हुई थी, और उस अन्धकार मे वह मुझसे ऊपर निकल पाने के लिये लपलपा रही थी। भय एव रहस्य की जननी रात्रि बढती आ रही थी। परन्तु जिस समय तक वह ध्वनि आती रही, वह एकान्त, वह निर्जनता सहनीय प्रतीत होती रही, उसके कारण लन्दन उस समय भी सजीव-सा ही प्रतीत होता था, और अपने चारो ओर जीवन के आभास ने मुझे साहसपूर्ण रखा था। तब सहसा ही एक परिवर्तन, किसी वस्तु का निकल जाना—मै नही जानता वह क्या थी—और तब एक निस्तब्धता जिसकी अनुभूति की जा सकती थी, इस तीक्ष्ण निस्तब्धता के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नही।

मेरे चारों ओर का लन्दन मुझे प्रेतवत् घूर रहा था। श्वेत मकानों की खिडकियाँ ककालों की खोपडियों मे रहे नेत्र-गोलकों के समान लग रही थी। मेरी कल्पना ने मेरे चारो ओर सहस्रो शत्रुओ को चलते-फिरते पाया। भय ने मुझे जकड़ लिया, अपने साहस के प्रति उदित वह भय। मेरे सामने की सडक सघन काली हो उठी जैसे कि उसपर तार-कोल पोत दिया गया हो, और मैंने पटरी के पार ऐंठी पडी किसी वस्तु को देखा। मैं स्वय को आगे बढने के लिये तैयार न कर सका। मैं सेन्ट जान वुड रोड की ओर बढा, और इस असह्य निस्तब्धता से सीधा किलबर्न की ओर भागा। मध्य रात्रि के पर्याप्त काल पश्चात् मैं इस रात्रि एवं निस्तब्धता से हैरो रोड स्थित गाडी वालो के स्थान में छिप सका। परन्तु सूर्योदय से पूर्व ही मेरा साहस लौट आया, और जब कि तारे अभी आकाश मे टिमटिमा रहे थे, मैं पुन एक बार रीजेन्टस पार्क की ओर लौट पडा। गलियो मे मैं अपना मार्ग भूल गया, और एक एवेन्यू के नीचे की ओर मैंने सूर्योदय के अर्ध प्रकाश मे प्रिमरोज पहाडी के मोड को देखा। चोटी पर, मद्धिम पडते तारो की ओर सिर उठाये, अन्य दोनो की ही भाँति सीधा एवं गति-हीन खड़ा हुआ एक तीसरा युद्ध-यत्र था।

पागलपन के समान एक सकल्प मेरे मन में दृढ हो उठा। मैं अपने प्राण देकर उसका अन्त कर डालूँगा। और मैं स्वय को आत्मघात करने के कष्ट से भी मुक्त कर लूँगा। निर्ममता के साथ मैं इस दैत्य की ओर बढ़ा, और तब, जैसे ही मैं समीप पहुँचा और प्रकाश फैलने लगा, मैंने देखा कि काली चिडियों का एक झुण्ड हुड के चारो ओर उड रहा और चक्कर काट रहा है। उस दृश्य पर मेरे हृदय ने मुझे एक उछाल दी और मैं सडक के सहारे दौडने लगा।

उस लाल बेल से, जो सेन्ट एडमन्डस् टेरेस वाले जल को पूर्णतः सोख रही थी, मैं शीघ्रतापूर्वक आगे की ओर बढ़ा (छाती तक ऊँची वाटर वर्क्स से एलबर्ट रोड की ओर बहने वाली एक धारा से निकला)

और सूर्योदय से पूर्व ही घाम पर आ पहुँचा । पहाडी की चोटी के समीप मिट्टी के अनेक ढेर थे जो एक ऊँचा कोट-सा बनाये हुए थे—यह अन्तिम एव विशालतम स्थान था जो मगल-निवासियो ने अपने विश्राम के निमित्त बनाया था—और इन ढेरो के पीछे से ऊपर आकाश की ओर धूम्र की एक क्षीण धारा उठ रही थी। क्षितिज की ओर एक उत्सुक कुत्ता ऊपर की ओर उठा और अर्न्तधान हो गया। वह विचार जो मेरे मस्तिष्क मे चमका था वास्तविक हो उठा, विश्वसनीय हो उठा । मै किसी भी प्रकार के भय की अनुभूति नही कर रहा था, कम्पायमान होते मेरे मन मे केवल एक पाशविक उल्लास था, जिस समय कि मै पहाडी की चोटी की ओर उस गति-हीन दैत्य की ओर दौडा । हुड मे से भूरे रग के लम्बे एव क्षीण मास के चीथडे लटक रहे थे जिसपर भूख से व्याकुल चिडिया प्रहार कर रही और चीड-फाड कर रही थी ।

दूसरे ही क्षण मै मिट्टी के उस प्राचीर पर चढ चुका था और उसकी चोटी पर खडा था, और वह कोट मेरे नीचे था । वह एक लम्बा चौडा भूमि-भाग था, जिसमे स्थान-स्थान पर विशाल यत्र रखे हुए थे, सामानो के ऊँचे-ऊँचे ढेर और विलक्षण प्रकार के छिपने के लिये बनाये गये स्थान । और इसके चारो ओर कुछ उल्टे हुए युद्ध-यत्रो मे, कुछ अब कठोर-सी दीख पडने वाली हैन्डलिंग मशीनो मे, कुछ एक पंक्ति मे जकडे हुए एव गति-हीन पडे थे मगल के निवासी—निष्प्राण ! सडाध एव रोगो का प्रजनन करने वाले जीवाणुओ द्वारा नष्ट किये गये जिनसे रक्षा कर पाने योग्य व्यवस्था उनकी शरीर-रचना में नही थी—नष्ट कर दिये गये, जिस प्रकार की लाल बेल नष्ट कर दी गयी ; जब कि मानव के समस्त यत्र ऐसा न कर सके, वह नष्ट कर दिये गये उन निम्न-तम जीवो के द्वारा जिन्हे ईश्वर ने अपनी बुद्धि से इस पृथ्वी पर जन्म दे रखा था ।

क्योकि यह घटना इस प्रकार घटित हुई, जैसे कि वास्तव में, मैने एव अन्य अनेक लोगो ने इसका पूर्व ज्ञान प्राप्त कर लिया होता यदि भय

तथा विनाश में हमारे मस्तिष्क को अन्धा न कर डाला होता। रोगो के इन जीवाणुओं ने सृष्टि के आदि काल से मानवता से कर वसूल किया है—मानव से भी पूर्व हमारे पूर्वजो से उस समय से कर वसूल किया है जब से जीवन का क्रम यहाँ प्रारम्भ हुआ। परन्तु हमारी जाति में रहे इस प्राकृतिक सकलन के कारण हमने निरोध-शक्ति विकसित कर ली है; हम किसी भी प्रकार के जीवाणुओं के समक्ष बिना सघर्ष किये समर्पण नही करते हैं, और उनमें से अनेको के निकट—वह जो निर्जीव पदार्थ मे सडाध उत्पन्न करते हैं, उदाहरण के लिये हमारे सजीव शरीर, आक्रमण किये जाने से मुक्त हैं। परन्तु मगल-लोक मे रोग-जनक जीवाणु विद्यमान नही हैं, और यह आक्रमणकारी सीधे वही से आये थे, आते ही उन्होंने भोजन किया और पानी पिया, हमारे मित्र सूक्ष्म जीवाणु उनके विनाश का काम करने लगे। उस समय जब मैं उन्हे देख रहा था, वह फिर कभी भी न निकल पाने योग्य विनाश के चंगुल मे फँसे हुए थे, वह मर रहे थे, धीरे-धीरे सड रहे थे, उस समय भी जब वह इधर से उधर आ-जा रहे थे। ऐसा होना अवश्यम्भावी था। दस अरब मृत्युओं का कर चुकाकर मानव पृथ्वी पर निवास करने का जन्माधिकार खरीद चुका है, और समस्त आगन्तुको के विरुद्ध वह उसका है, और वह उसीका रहा होता यदि मंगल-निवासी दस गुना और अधिक शक्ति-शाली होते जितना कि वह वास्तव में थे। कारण कि मानव न व्यर्थ जीवित ही रहते हैं और न उनका अन्त ही व्यर्थ होता है।

वह इधर-उधर बिखरे पडे थे, कुल मिलाकर लगभग पचास उस खाडी मे पड़े थे जो उन्होने बनायी थी; एक ऐसी मृत्यु से अन्क्रान्त जो निश्चित रूप में उनके निकट उतनी ही अचिन्त्य रही होगी जितनी कोई भी अन्य मृत्यु हो सकती है। उस समय मेरे निकट भी यह मृत्यु अचित्य ही-सी रही। यह सब जो मैं जान सका केवल इतना ही था कि यह जीव जो जीवित थे और मानव के निकट इतने भय-प्रद थे, अब निष्प्राण थे। एक क्षण के लिये मुझे सोचना पड़ा कि 'सेनाचेरिब' वाला विनाश

दोहराया गया हो, जैसे ईश्वर ने पश्चात्ताप किया हो, जैसे मृत्यु के दूत ने उन्हे रात्रि मे नष्ट कर डाला हो।

गड्ढे मे झाँकता मै खडा रहा, और मेरा हृदय गौरव-शील रूप में प्रकाशित हो उठा, ठीक उसी प्रकार जैसे कि नवोदित सूर्य मेरे चारो ओर वाले ससार को अपनी किरणो के स्पर्श से प्रकाशित कर रहा था। वह गड्ढा इस समय भी अन्धकार से घिरा था, विशाल इजिन, जो अपनी शक्ति एव सरचरण में इतने विशाल एव आश्चर्यजनक थे, जो अपनी कुटिल आकृतियो के कारण लौकिक वस्तुओ से इतने विभिन्न थे, विलक्षण, अस्पष्ट एव अपरिचित रूप में अन्धकार के आवरण से प्रकाश में आते दीख पडे। कुत्तो का एक समूह, जिनका कोलाहल मैं सुन रहा था, मुझसे इतने नीचे अन्धकार में पडे उन शरीरो के निमित्त परस्पर झगड रहा था। गड्ढे के उस पार उसके ऊपरी भाग पर फैला हुआ, विशाल एव विलक्षण वह उडने वाला यत्र था जिसके द्वारा वह हमारी भारी जल-वायु मे प्रयोग करते रहे थे जब कि विनाश एव मृत्यु ने उस पर अधिकार कर लिया। मृत्यु एक भी दिन पूर्व नही आयी थी। अपने ऊपर की ओर काँव-काँव की ध्वनि सुनकर मैने उस विशाल युद्ध-यत्र की ओर देखा जो अब कभी भी युद्ध न कर सकेगा, और मास के उन टुकडो की ओर जो प्रिमरोज पहाडी की चोटी पर उल्टी पडी सीटो से चू-चूकर नीचे गिर रहे थे।

पीछे मुडकर मैने पहाडी से नीचे उस ओर को झाँका जहाँ, अब चिडियो से ढँके, वह दोनो मगल-अस्त्र थे जिन्हे मैने कल रात्रि को देखा था, जब मृत्यु उन पर अधिकार कर चुकी थी। उनमें से एक मर चुका था, यद्यपि वह अपने साथी को सहायता के लिये पुकारता रहा, शायद मरने वालो में यह अन्तिम था, और उसकी वह ध्वनि निरन्तर उस समय तक पुकारती रही जब तक कि वह पूर्णत. नष्ट न हो गयी। वह अब भी चमचमा रहे थे, चमचमाती धातु की अहानिकारक तिपाईयो के समान ऊँचाइयाँ, ऊपर की ओर उठते हुए सूर्य के प्रकाश में······

गड्ढे के चारों ओर, और जैसे कि वह किसी चमत्कार द्वारा अनन्त विनाश से बचा ली गयी हो, नगरो की महान जननी खडी थी। वह, जिन्होंने लन्दन को केवल धूम्र-पिंडो के मलिन वस्त्रो मे सिमटे देखा है, उन मकानो की प्रशान्त निर्जनता जनित सौन्दर्य एवं उसके नग्न प्रत्यक्ष रूप की कल्पना कठिनता से कर सकते हैं।

पूर्व की ओर, एलबर्ट टैरेस के काले पडे खण्डहरों तथा चर्च के ध्वस्त शिखर के ऊपर, निर्मल आकाश मे सूर्य चमचमा रहा था, और कही-कही दूर-दूर तक निर्जन पडी छतो का कोई झरोखा ऊपर के प्रकाश को प्रविष्ट करता नितान्त श्वेत प्रकाश से चमचमा उठता। सूर्य की किरणें चाक फार्म स्टेशन के समीपवर्ती शराब के उन गोल गोदामो का भी स्पर्श कर रही थी, और बडे-बड़े रेलवे यार्ड, जो किसी समय काली पटरियो के कारण दूर से अलग दीख पडते थे, इस समय, पन्द्रह दिन तक प्रयोग मे न आने के कारण शीघ्र फलस्वरूप लाल पडी हुई थी, जिसमें सौंदर्य का कोई रहस्य छिपा पडा-सा प्रतीत होता था।

उत्तर की ओर किलबर्न तथा हैम्पस्टेड नगर थे, नीले तथा मकानो से खचाखच भरे हुए, पूर्व की ओर वाला महान नगर धुँधला पडा था, और दक्षिण में मंगल-निवासियो से परे रीजेन्टस् तथा लैन्गहम होटल, एलबर्ट हाल का गुम्बद, इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट तथा ब्राम्पटन रोड की विशाल इमारतें सूर्य के प्रकाश में स्पष्ट परन्तु छोटी दीख पड रही थी और उनसे परे धुँधले रूप में दीख पडते वैस्टमिन्स्टर के टेडे-मेडे खण्डहर। उनसे बहुत दूर तथा नीली दीखने वाली सरे की पहाडियाँ थीं, और क्रिस्टल पैलेस की दोनो मीनारें चाँदी की घड़ियो की भाँति चमचमा रही थी। सेन्ट पाल गिर्जे का गुम्बद सूर्योदय से परे अन्धकार में डूबा हुआ था तथा मैंने पहिली बार देखा, उसके पश्चिमी भाग मे रहे एक बड़े छेद के कारण ध्वस्त खडा हुआ था।

और जैसे ही मैंने शात तथा परित्यक्त पडे मकानों और कारखानो और गिर्जों के इस विशाल प्रसार को देखा, और जैसे ही मैंने उन प्रचुर

आशाओ तथा प्रयत्नो के सम्बन्ध मे विचार किया, उन असख्य जीवनों के सम्बन्ध में, जिन्हे मनुष्य की बनायी इन चट्टानो को बनाने मे प्राणोत्सर्ग करना पडा तथा उस शीघ्रगामी एवं निर्मम विनाश के, जो उन पर मडरा रहा था, और जब मैने अनुभव किया कि वह काली छाया पीछे हटायी जा चुकी है, और यह कि मनुष्य अभी भी इन गलियो मे निवास कर सकते हैं और मेरी यह प्रिय एव विशाल नगरी पुन. एक बार सजीव एव सशक्त हो उठेगी, मैंने भावना की एक ऐसी लहर की अनुभूति की जो अश्रुपात से मिलती-जुलती-सी थी।

पीडा समाप्त हो चुकी थी। हो सकता है कि उस दिन से ही घाव भरना प्रारम्भ हो जाय। देश भर मे छिन्न-भिन्न मानव जो जीवित रह सके हैं—पथ-प्रदर्शक-हीन, कानून तोडने वाले तथा ओज-हीन, बिना ग्वाले के बिखरी हुई भेडो की भाँति—वह सहस्रो जो समुद्री मार्ग से पलायन कर गये हैं, लौटना प्रारम्भ कर देगे , जीवन की नाडी प्रबल होते-होते पुन इन गलियो मे धडधडाने लगेगी और जन-शून्य मुहल्लो मे जीवन उडेलने लगेगी। जितना भी विनाश हो चुका, अब विनाश का हाथ रुक चुका था। सभी धूमिल पडे खण्डहर, मकानो के काले पडे ढाँचे जो पहाडी की धूप में चमकती घास को उदासीनतापूर्ण टकटकी के साथ घूर रहे हैं शीघ्र ही उद्धारकर्त्ताओ के हथौडो तथा कन्नियो की खनखनाहट से गूँज उठेगें। इस विचार के आते ही मैंने आकाश की ओर अपने हाथ उठाये और ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। एक वर्ष मे, मै विचार करने लगा—एक वर्ष मे......

और तब एक प्रबल सघात के साथ मुझे स्वय का विचार आया, अपनी पत्नी का विचार, जीवित रहने की चिरंतन आशा और मृदुल उपयोगिता जो सदैव-सदैव के लिये समाप्त हो चुकी थी।

२६

ध्वंसावशेष

और अब मेरी कहानी की विलक्षणतम घटना आती है। और तो भी, सम्भवतः वह पूर्णत. विलक्षण भी नही है। मुझे प्रिमरोज पहाड़ी पर खडे होकर रोने तक ईश्वर की प्रार्थना करने से पूर्व की समस्त बातो की स्पष्ट, उदासीनतापूर्ण एवं सजीव स्मृति है। और उसके पश्चात् मेरी स्मरण-शक्ति काम नही करती ········।

आगामी तीन दिनों के संबध में मुझे कुछ भी याद नही है। उस समय से मुझे मालूम पडा कि मेरे मगल-निवासियो के विनाश की सूचना प्राप्त करने वाले सर्व प्रथम मानव होने के स्थान पर, मुझ जैसे कई घूमने वाले पहिली रात्रि को ही इस तथ्य को जान चुके थे। एक मनुष्य, जो जानने वाला प्रथम व्यक्ति था, सेन्ट मार्टिन्स ली ग्रेण्ड चला गया था, और जिस समय कि मैं उस गाडी वाले की झोपडी में विश्राम कर रहा था, उसने पेरिस तार भेजने की व्यवस्था कर ली थी। वहाँ से उल्लास से परिपूर्ण यह समाचार ससार भर मे फैल चुका था; सहस्रो नगर, जो प्रेतवत् छाये उस भय के कारण जीवन-शून्य हो चुके थे सहसा उन्मत्त रूप से दैदीप्यमान हो उठे; उन्होने इसके सबंध में डबलिन, एडिनबरा, मानचैस्टर, बरमिन्घम आदि स्थानो पर उस समय जाना जिस समय मैं उस गड्ढे के किनारे खड़ा था। प्रसन्नता के अश्रुओ से परिपूर्ण नेत्रों वाले मानव, जैसा कि मैंने सुना है, एक दूसरे को पुकारते तथा परस्पर हाथ मिलाने के लिये अपने हाथ के कामो को रोकते तथा पुनः चिल्लाते

हमारे इतने अधिक समीप थे जितना समीप कि 'क्यू' था, लंदन आ पाने के निमित्त रेलगाडियो पर चढ रहे थे, गिर्जों की घण्टियो ने, भी, जो पन्द्रह दिन से शान्त थी, इस समाचार को जान लिया और वह ऐसे प्रबल रूप मे घनघनाने लगी कि समस्त इंगलैंड उनसे गूंजने लगा। साइकिलो पर सवार मनुष्य, कृश मुखाकृति वाले, बिखरे वस्त्रो वाले प्रत्येक गॉव वाली गली मे इस आशातीत मुक्ति के विषय मे चिल्लाते, मलिन एवं घूरती नैराश्य की उन मूर्तियो के रूप मे चिल्लाते भुलसते फिर रहे थे। और भोजन के संबंध मे ! नहर के पार, आइरिश सागर के पार, अटलांटिक के पार से अनाज, रोटी और मास हमारी सहायतार्थ आ रहा था। उन दिनो ससार भर के जहाज लन्दन की ओर आते दीख पडते थे। परन्तु इस सबकी मुझे कोई स्मृति नही है। मैं इधर-उधर भटक रहा था—विक्षिप्त मनुष्य। मैंने स्वय को कुछ दयावान व्यक्तियो के बीच मे पाया जिन्होने मुझे तीसरे दिन सेन्ट जान वुड में घूमते, रोते एवं चिल्लाते हुए पाया था। उन्होने मुझे बताया है कि उस समय से मैं कोई अर्थ-हीन क्षुद्र गीत 'अन्तिम जीवित मानव !' के सम्बन्ध मे गा रहा था। व्यथित जैसे कि वह स्वय अपनी कठिनाइयो के कारण थे, इन व्यक्तियो ने, जिनके नाम, यद्यपि मुझे उनके प्रति कृतज्ञता करने की प्रबल इच्छा है, मै यहाँ नही दे पाऊँगा, स्वय को मेरे भार से बोझिल किया, मुझे शरण दी एव स्वयं से भी अधिक मेरी रक्षा की। प्रत्यक्ष रूप में वह मूर्छा के दिनो मे मेरी कहानी का कुछ अंश सुन चुके थे।

नितान्त मृदुता के साथ, जब मेरा मस्तिष्क पुन: आश्वस्त हो गया, उन्होने मुझे लैदरहैड के अन्त के सम्बन्ध मे वह सब बताया जो वह सुन चुके थे। मेरे बन्दी होने के दो दिन बाद ही वह अपने समस्त प्राणियो सहित एक मगल-अस्त्र द्वारा समूल नष्ट कर डाला गया था। उसने उसे स्थिति से मिटा डाला था, जैसा कि प्रतीत होता था, बिना किसी पूर्व सूचना के, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि कोई भी बालक शक्ति-जनित चचलता के कारण चीटियो के छोडे मिट्टी के किसी ढेर को नष्ट कर

डाले।

मैं एक एकाकी व्यक्ति था, और वह सब मुझपर अत्यन्त दयालु थे। अपनी मानसिक स्थिति से उद्धार पाने के चार दिन बाद तक मैं उनके साथ रहा। इस समस्त समय में अपने अन्तर मे एक अस्थिर, एक प्रबल होती एक बार उस जीवन के अवशेष को देखने की इच्छा की अनुभूति करता रहा। अपने दुर्भाग्य पर आनन्द मना पाने की यह एक नैराश्यपूर्ण इच्छा थी। उन्होंने मुझे इस विचार से हटाने का प्रयत्न किया। मुझे इस अस्वस्थ प्रवृत्ति से हटाने के लिये उन्होने वह सभी प्रयत्न किये जो वह कर सकते थे। परंतु अन्त मे मैं अपनी प्रवृत्ति को रोक पाने मे असमर्थ हो उठा, और उनको लौट आने का निश्छल आश्वासन देकर और चार दिन के इन मित्रो से, जैसा कि मैं स्वीकार करूँगा, साश्रु विदा लेने के पश्चात् मैं पुनः उन गलियो मे निकल पड़ा जो कुछ काल पूर्व ही इतनी अधकारमय, इतनी विलक्षण एव इतनी जन-शून्य थी।

वह लौटकर आने वाले व्यक्तियो से परिपूर्ण थी, और स्थान-स्थान पर मैंने कुछ दुकाने भी खुली पायी, और मैंने पीने वाले पानी के फुहारे को पानी बहाते पाया।

मुझे स्मरण है कि दिन कैसे व्यगपूर्ण रूप में चमक रहा था जब कि मैं अपने वोकिंग वाले छोटे-से मकान की ओर उदासीनतापूर्ण यात्रा कर रहा था, सडकें कितनी कार्य-व्यस्त थी तथा मेरे चारो ओर गति-शील जीवन कितना सजीव था: प्रत्येक स्थान पर अनेको व्यक्ति निकले हुए थे, जो सहस्रो कार्यों में व्यस्त थे, और यह अविश्वसनीय-सा प्रतीत होता था कि जन-संख्या का कोई बहुतांश नष्ट हो चुका होगा। परन्तु तब मैंने ध्यान दिया कि उन लोगों की त्वचा कितनी पीली पड़ी हुई थी जिनसे मेरी भेट होती थी; मनुष्यो के बाल कितने रूक्ष थे, उनके नेत्र कितने विशाल एव चमकीले थे, और प्रत्येक व्यक्ति इस समय भी चिथड़े पहिने हुए था। समस्त चेहरे दो में से एक भाव व्यक्त करते थे—

उछाल मारता उल्लास एव शक्ति, अथवा एक उदासीनतापूर्ण संकल्प। केवल चेहरो की इस भावाभिव्यक्ति को छोडकर समस्त लंदन भिखमगो का नगर प्रतीत होता था। अधिकारीगण बिना किसी भेद-भाव के फ्रांस सरकार द्वारा हमारी सहायतार्थ भेजे गये भोजन को बाँट रहे थे। कुछ घोडो की पसलियाँ भद्दे रूप से चमक रही थी। श्वेत बैज लगाये अस्त-व्यस्त स्पेशल कान्सटेबिल्स प्रत्येक गली के कोनो पर खडे थे। वैलिग्टन पहुँचने से पूर्व मैने मगल-निवासियो द्वारा उत्पन्न हानि बहुत कम देखी, और वहाँ मैने लाल बेल को वाटरलू ब्रिज के खम्भो पर चढी हुई पाया।

पुल के किनारे पर भी, मैने उस विलक्षण काल की सामान्य विषमताओ मे से एक को पाया। लाल बेल के एक झुरमुट से फडफडाती कागज की एक परत, जो एक लकडी से जडी हुई थी जो उसे उसके स्थान पर रखे थी—वह पुन· प्रकाशन प्राप्त करने वाले समाचार-पत्र—'डेली मेल' का घोषणा-पत्र था। मैने एक काले पडे शिलिंग को देकर, जिसे मैने अपनी जेब मे पाया, एक प्रति खरीदी। उसका अधिकांश भाग खाला था, परन्तु उस एकाकी कम्पोजीटर ने, जिसने उसे तैयार किया, अपने मनोविनोद के लिये पत्र की पीठ पर विज्ञापनो की एक अद्भुत सूची दी थी। जो कुछ भी उसने छापा भावना से सम्बन्ध रखता था समाचारो का संकलन अभी भी अपनी पूर्व व्यवस्था को प्राप्त नही कर पाया था। केवल यह कि मगल-अस्त्रो के एक सप्ताह ही के परीक्षण से आश्चर्य-जनक परिणाम निकले हैं मै नयी कोई भी बात न जान सका। अन्य बातो के साथ-साथ उस लेख ने मुझे एक विश्वास दिलाया जिसे मै उस समय न मान सका यह कि 'उडने का रहस्य' जाना जा चुका है। वाटर लू पर मैंने उन मुक्त गाडियो को देखा जो लोगो को उनके घर ले जा रही थी। पहली भीड-भाड समाप्त हो चुकी थी। गाडी मे थोडे ही व्यक्ति थे, और मैं आकस्मिक वार्तालाप करने की मन स्थिति मे नही था। मैने एक खाली डिब्बा खोज निकाला, और अपने हाथ मोडे उदास भाव

से बैठे डिब्बे से बाहर फैले सूर्य-प्रकाश मे चमकते विनाश को देखता रहा। और रेलवे स्टेशन की सीमा से परे गाडी ने नयी लाइनो पर झटका खाया, और लाइन के दोनो ओर वाले मकान काले पडे खण्डहरो का रूप धारण किये थे। चैपहैम जक्शन की ओर लन्दन का मुख दो दिनो तक पडने वाले ओलो तथा वर्षा के होते हुए भी उस काले धूम्र के कारण मलिन पड चुका था, और चैपहैम स्टेशन पर लाइन पुनः नष्ट कर डाली गयी थी, वहाँ सैकडो काम से छूटे हुए क्लर्क तथा दूकानदार बारहमासी श्रमिको के साथ काम कर रहे थे, और शीघ्रतापूर्वक दोबारा बिछाई गयी लाइन के ऊपर हमने झटका खाया।

वहाँ से लाइन के सहारे वाला ग्रामीण दृश्य उदासीनतापूर्ण एव अपरिचित-सा था; विशेषत. विम्बिलडन आधा नष्ट हो चुका था। अपने देवदार के जंगल के कारण वाल्टन लाइन के समस्त स्थान कम से कम क्षति-ग्रस्त प्रतीत होता था। वैण्डिल, मोल आदि प्रत्येक छोटी नदी लाल बेल के ढेर से परिपूर्ण लगती थी, जिसका रग कसाई की दूकान पर रखे जाता मांस तथा मुरब्बा डाले हुए गोभी के रग के बीच मे था। जो कुछ भी हो, सरे वाले देवदार के जगल लाल बेल की उन गाँठों के कारण अत्यन्त सूखे हुए थे। विम्बिलडन से परे लाइन से दीख पडने वाले कुछ फलोद्यानो मे छठे सिलण्डर के समीपवर्ती मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे ढेर थे। उनके समीप अनेक व्यक्ति खडे थे, और उनके मध्य कुछ सैनिक कार्यव्यस्त थे। उनके ऊपर यूनियन जैक फहरा रहा था, जो प्रातःकालीन वायु में प्रसन्नतापूर्वक लहरा रहा था। फलोद्यान प्रत्येक स्थान पर लाल बेल के कारण गुलाबी पडा हुआ था; दूर तक फैला हुआ नील वर्ण का यह प्रदेश जो स्थान-स्थान पर बैंगनी रग की छायाओ से फटा हुआ था और नेत्रो के निकट पीडा-कारक था। असीम विश्रान्ति के साथ किसी भी देखने वाले की दृष्टि झुलसे हुए भूरे रगो तक उदासीनतापूर्ण लाल रगो को पार करती पूर्ववर्ती पहाड़ियों की नील-हरित मृदुता की ओर मुड जाती थी।

वोकिग स्टेशन की लन्दन की ओर वाली लाइन इस समय भी ठीक की जा रही थी, अत मै बाईफ्लीट स्टेशन पर उतरा और मेबरी वाली सड़क पर चल पडा, उस स्थान से होकर निकला जहाँ मैने तथा उस सैनिक ने अश्वारोही सैनिक से बात की थी, और उस स्थान को पार करता आगे बढ गया जहाँ तूफान मे मुझे वह मगल-अस्त्र दिखाई पडा था। यहाँ, उत्सुकता से प्रेरित होकर, लाल बेल की उन गाँठो के एक जाल मे, मैं ऐंठी पडी तथा टूटी हुई उस कुत्ता-गाडी को देखने के निमित्त मुड पडा, जिसके समीप उस घोड़े की सफेद पडी हड्डियाँ बिखरी और कुतरी पडी थी। कुछ काल तक इन अवशेषो पर चिन्तन करता मै खड़ा......

तब मै देवदार-वन की ओर मुडा जो स्थान-स्थान पर गर्दन तक ऊँची लाल बेल से ढका हुआ था, और यह देखकर कि धब्बेदार कुत्ते का स्वामी अपनी समाधि पा चुका है, मैं कालिज आर्म्स होता हुआ घर आ पहुँचा। और जैसे ही मै वहाँ से निकला, एक खुले हुए झोपड़ी के द्वार पर खडे एक व्यक्ति ने नाम लेकर मेरा अभिवादन किया।

शीघ्रतापूर्वक चमकने वाली एक आशा से जो तुरन्त ही विलीन हो गयी, मैंने अपने घर पर दृष्टि डाली। द्वार ढकेला गया था, वह खुला पडा था, और जैसे ही मै आगे बढा, मैंने पाया कि वह धीरे-धीरे खुल रहा है।

वह पुन बन्द हो गया। मेरे अध्ययन-कक्ष के पर्दे उस खिडकी से बाहर की ओर फडफडा रहे थे जिससे मैंने तथा उस सैनिक ने सूर्योदय को देखा था। उस समय से ही किसीने भी इस खिडकी को बन्द नही किया था। कुचली हुई झाडियाँ भी ठीक वैसी ही थी जैसी कि मै उन्हे लगभग चार सप्ताह पूर्व छोड गया था। लडखड़ाता हुआ मै हाल मे पहुँचा, और घर शून्यता से परिव्याप्त था। जीने का कालीन सिमटा हुआ उस स्थान पर बिगडा हुआ था जहाँ मै तूफान से भीगा सन्ताप की उस रात्रि मे लेट रहा था। हमारे कीचड से सने पैरो के चिह्न इस समय भी ऊपर

जाते अंकित थे।

उनका पीछा करता, मैं अपने अध्ययन-कक्ष तक जा पहुँचा, और इस समय भी मैंने अपनी लिखने वाली मेज पर चन्द्रकान्त मणि वाले पेपर-वेट से दबे उस लेख के कागज को पाया जो मै सिलण्डर खुलने वाले दिन तीसरे पहर छोड गया था। कुछ काल तक मैं अपने परित्यक्त तर्कों पर विचार करता खडा रहा। वह नैतिक विचारो के सभ्यता के सम्भावित विकास पर लिखा गया एक लेख था, और अन्तिम वाक्य एक भविष्य-वाणी का प्रारम्भ था, 'लगभग दो शताब्दि मे', मैने लिखा था, 'हम आशा कर सकते हैं—' वाक्य सहसा टूट गया था। उस प्रात: अपने मस्तिष्क को एकाग्र कर पाने की अपनी असमर्थता की मैंने स्मृति की, जिसे कठिनता से एक मास ही हुआ होगा, और मुझे याद आया कि किस प्रकार मैं इससे पीछा छुडाकर अखबार वाले लडके से अपना 'डेली क्रानिकल' लेने चल पडा था। मैंने स्मरण किया, किस प्रकार मैं उद्यान के द्वार की ओर जा रहा था जब कि वह आ पहुँचा, और किस प्रकार मैंने 'मंगल से आये मनुष्यो' वाली विलक्षण कहानी सुनी थी।

मैं नीचे उतर आया और भोजन के कमरे मे गया। वह मास तथा रोटी दोनो वही थी, जो पर्याप्त रूप से सड चुकी थी, तथा उल्टी पडी बियर की एक बोतल, ठीक उसी प्रकार पडी हुई थी जिस प्रकार कि मै तथा वह सैनिक उसे छोड गये थे। मेरा मकान पूर्णत. निर्जन था। मैने उस धूमिल आशा की मूर्खता को स्पष्टत देखा जिसे मैंने इतने काल से अपने अन्तर मे पोषित कर रखा था। और तब एक आश्चर्यजनक बात हुई। 'इससे कोई लाभ नही है' एक स्वर गूँज उठा। 'मकान परित्यक्त पडा है। पिछले दस दिनों से कोई यहाँ नही आया है। स्वय को पीडित करने के लिये यहाँ मत रुको। तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी नही बच सका है।'

मैं स्तब्ध रह गया। क्या मैने स्वयं ही अपने विचार को स्वर दिया है ? मै मुडा और मेरे पीछे वाली फ्रेंच खिड़की खुली हुई थी। मैने उस

ओर को एक पैर बढाया, और बाहर झाँकता खडा रहा ।

और वहाँ, आश्चर्य-चकित एव भीत, ठीक उसी प्रकार, जैसे कि मै आश्चर्य-चकित एव भीत खडा था, मेरा चचेरा भाई और मेरी पत्नी थी—मेरी पत्नी जो सफेद पडी थी और जिसकी आँखो मे कोई आँसू नही था । वह मन्द चीत्कार कर उठी ।

"मै आ गयी हूँ", उसने कहा, "मै जानती थी, जानती थी·· ·· ।"

उसने अपने गले पर अपना हाथ रख लिया—वह लडखड़ाने लगी । मै एक पग आगे बढा और उसे अपनी भुजाओ में भर लिया ।

२७

उपसंहार

मुझे कहते हुए दुख नही होता है कि मै अब अपनी कहानी का अन्त करने जा रहा हूँ, मै अनेक तर्क किये जाने योग्य एव इस समय तक अनिश्चित प्रश्नो के सम्बन्ध मे अपना निजी मत कितनी न्यून मात्रा में दे सका हूँ । एक विषय-विशेष पर मै निश्चित रूप से आलोचना करूँगा । मेरा अधिकृत विषय काल्पनिक दर्शन-शास्त्र है । तुलनात्मक शरीर-शास्त्र-सम्बन्धी मेरा ज्ञान तो कुछ पुस्तको तक ही सीमित है, परन्तु मुझे लगता है कि मगल-निवासियो की शीघ्रगामी मृत्यु के सबध मे दिया गया कार्वर का प्रस्ताव इतनी सम्भवनीय है कि उसे प्रमाणित ही स्वीकार किया जाना चाहिए । मैने उसी पर अपनी कथा को आधारित किया है ।

जो कुछ भी हो, उन सभी मगल-निवासियो के शरीरो मे जिनकी

परीक्षा युद्ध के पश्चात् की गयी, केवल उन जीवाणुओं के जो लौकिक जाति के माने जाते हैं, अन्य जीवाणु प्राप्त नही हुए। उन्होने अपने किसी भी मृत साथी को भूमि मे नही गाडा, और निर्मम विनाश का वह दूषित कर्म जो उन्होंने किया, एक ओर शरीर की सडाध-सम्बन्धी ज्ञान मे रही उनकी अज्ञानता की ओर भी संकेत करता है। परन्तु सम्भावित यद्यपि यह प्रतीत होता है, यह किसी प्रकार भी प्रमाणित तथ्य नही है।

और न उस काले धूम्र की समाप्ति के सम्बन्ध में ही कुछ जाना जा सका, जिसका प्रयोग मगल-निवासी ऐसे विनाशकारी प्रभाव के साथ करते थे, और अग्नि-किरण को जन्म देने वाला वह यत्र एक पहेली ही रह जाता है। एलिंग तथा साउथ केन्सिंग्टन की प्रयोग-शालाओ के भीषण विनाश ने विश्लेषण-कारियों को इस बाद की वस्तु की ओर अधिक खोज से विरक्त कर दिया। प्रकाश-किरणो पर आधारित इस काले धूम्र का विश्लेषण निर्विवाद रूप में किसी अज्ञान तत्व की ओर सकेत करता है जिसकी स्थिति नील वर्ण मे रही तीन चमचमाती रेखाओ के समूह से जान पडती है और यह सम्भव हो सकता है कि वह आर्गन से मिलकर किसी ऐसे मिश्रण को जन्म देता है जो रक्त में रहे किसी सम्मिश्रण के कारण मृत्युजनक प्रभाव डालता है। परन्तु इस प्रकार के अप्रमाणित निष्कर्ष सामान्य पाठक के निकट, जिसके निमित्त इस कहानी की रचना हुई है, शायद ही रुचिकर सिद्ध हो। शैपर्टन के विनाश के पश्चात् टेम्स से इधर-उधर छितराने वाले उस भाग का उस समय कोई परीक्षण नही किया गया, और इस समय यह भाग स्थिति में ही नहीं है।

मगल-निवासियो की शारीरिक सरचना-संबंधी परीक्षणो के फल, जितना कि शिकार की खोज मे फिरते कुत्तों ने हमारे लिये सम्भव छोडा है, मैं ऊपर दे ही चुका हूँ। परन्तु प्रत्येक पाठक नेच्यूरल हिस्ट्री म्युजियम में स्प्रिट में रखे उनके दीप्तिमान और लगभग सम्पूर्ण अस्थि-पंजर से परिचित हैं; और उससे परे शरीर-सरचना तथा उनके ढाँचे से

रहो विशेष रुचि विज्ञान का विषय है।

अधिक महत्वपूर्ण एवं सार्वजनिक रुचि का प्रश्न मंगल-लोक से किसी अन्य आक्रमण की सम्भावना है। मै नही समझता कि इस विषय पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। हमारे लोक की सीध में लौटने पर, कम से कम मै उनके आक्रमण की पुनरावृत्ति की सम्भावना रखता हूँ। वस्तु स्थिति चाहे जो भी हो, हमे तत्पर रहना चाहिये। मुझे लगता है कि उस तोप की स्थिति का पता लगाना सम्भव होना चाहिये जिससे कि अस्त्र छोडे जाते हैं, मगल-लोक के इस भाग पर निरन्तर दृष्टि रखना और आगामी आक्रमण को समय से पूर्व जान लेना।

ऐसी अवस्था में उस सिलण्डर को बारूद अथवा तोपखाने द्वारा मगल-निवासियो के बाहर निकल पाने योग्य ठण्डा होने से पूर्व ही नष्ट कर दिया जाना चाहिये। अथवा उन्हे तोपो द्वारा उस पेच के खुलते ही नष्ट कर डालना चाहिये। मुझे प्रतीत होता है कि अपने प्रथम आश्चर्य में डाल देने वाले आक्रमण की असफलता से उन्होने एक बडी सुविधा को खो डाला है। सम्भवत वह स्वयं भी इस प्रश्न को इसी दृष्टिकोण से देखते होगे।

यह माना जाने के लिये कि मगल-निवासी शुक्र-लोक मे उतर पाने में वास्तविक सफलता प्राप्त कर सके हैं, लैसिग ने महत्वपूर्ण तर्क दिये हैं। अब से सात मास पूर्व मगल और शुक्र सूर्य के साथ एक रेखा पर थे, अर्थात् मगल शुक्र-लोक से एक देखने वाले के ठीक विपरीत था। इसके पश्चात् एक विलक्षण प्रकाशपूर्ण एवं लहरदार चिह्न उस ग्रह के अप्रकाशित एव आन्तरिक भाग मे दीख पड़ा, और इसके साथ ही मद्धिम एव इसी प्रकार लहरदार आकार वाला एक गहरा काला चिह्न, मगल-ग्रह के लिये गये फोटोग्राफ मे अकित हुआ। इन आकारो में रही समानता को पूर्णत समझ पाने के निमित्त किसी भी व्यक्ति को इन चित्रों को देखने की आवश्यकता पडेगी।

जो कुछ भी हो, चाहे हम किसी दूसरे आक्रमण की आशा करे अथवा

न करे, मानव-जाति के भविष्य से संबंधित हमारे दृष्टिकोण इन घटनाओं से पूर्णत संशोधित होने चाहिये । अब हम जान चुके हैं कि हम इस नक्षत्र को सुरक्षित एवं मानव-आवास के निमित्त आशका-रहित नही मान सकते, और हम, किसी भी प्रकार के अज्ञात सुख अथवा दुख को जो शून्य से हमारी ओर आ सकता है, समय से पूर्व नही जान सकते हैं। हो सकता है कि ब्रह्माड की किसी विशालतर सरचना पर आधारित मगल-लोक का यह आक्रमण मानव-जाति को प्राप्त होने वाले किसी अन्तत. लब्ध-लाभ मे शून्य न हो, इसने हमसे भविष्य के प्रति रहे हमारे निर्बाध विश्वास को छीन लिया है, जो विनाश का सर्व शक्तिशाली कारण है, वह दान जो वह मानव विज्ञान के निमित्त लाया अनेक हैं, और उसने अनेक मानव-जाति मे रही सार्वजनिक कल्याण की धारणा को विकसित करने में पर्याप्त अशदान दिया है । हो सकता है कि शून्य की असीमता के परे मंगल-निवासी अपने इन अग्रगामियो के भाग्य का निरीक्षण करते रहे हो, अपना पाठ सीखते रहे हो, और यह भी कि वह शुक्र के अधिक रक्षाकर लोक मे बस गये हो । हो सकता है कि ऐसा ही हो चुका हो, आगामी अनेक वर्षों तक मगल-नक्षत्र के निरीक्षण होते रहेंगे, और अंगारो के समान आकाश से टूटने वाले तारे अपने पतन के साथ-साथ समस्त मानवो के निकट भुलाया न जा सकने वाला भय लाते रहेगे।

मानव-जाति के दृष्टिकोण मे इस घटना के कारण जो विस्तार हुआ है, कठिनतापूर्वक ही किसी अतिशयोक्ति का विषय हो सकता है। सिलण्डर के गिरने से पूर्व यह सामान्य धारणा थी, शून्य की समस्त परिधि में हमारे इस सूक्ष्म लोक के छोटे-से धरातल से ऊपर जीवन का कोई क्रम वर्तमान नही है । अब हम इससे आगे भी देखते हैं । यदि मगल-निवासी शुक्र-लोक तक पहुँच सकते हैं, तो ऐसा सोचने का कोई कारण नही है कि यह मानवो के निकट कोई असम्भव बात है, और जब कि सूर्य का निरन्तर ठण्डा पड़ते जाना इस लोक को निवास न किये जाने

योग्य बना देगा, जैसा कि अन्त मे उसे कर डालना चाहिये, हो सकता है कि जीवन का वह धागा जो यहाँ प्रारम्भ हुआ ऊपर की ओर उठ जाये और अपने समीपवर्ती लोक को अपने जाल मे जकड ले । क्या हम विजयी होगे ?

धूमिल परन्तु आश्चर्यकारक है वह चित्र जो मैने अन्तर मे सूर्य के समीपवर्ती जीवन के अकुरित होने वाले इस स्थान से तारा-मडल-सबधी इस विशाल परिधि में मन्द गति से उसके विकसित होने को चित्रित किया है । परन्तु वह अभी दूर का स्वप्न है । और इसके विपरीत हो सकता है कि मंगल-निवासियो का विनाश अन्त को कुछ काल के लिये स्थगित करना ही रहा हो । उनके लिये, और हमारे लिये नही, भविष्य निर्दिष्ट किया गया है ।

मुझे स्वीकार कर लेना चाहिये कि इस काल के भार एवं सकट मेरे मन मे सन्देह एव असुरक्षा की एक स्थायी भावना छोड गये हैं । लैम्प लाइट के सहारे मै अपने अध्ययन-कक्ष मे बैठा लिखता होता हूँ, और सहसा ही मै अपने नीचे फैली आनन्ददायक उस घाँटी को लपटो से लपलपाती देखता हूँ, और अपने पीछे तथा चारो ओर वाले मकानो को निर्जन एव जन्य-शून्य पाता हूँ । मै बाहर बाईफ्लीट स्ट्रीट में जाता हूँ, और सवारियाँ मुझे छोडती निकल जाती हैं । एक गाडी मे बैठा एक कसाई का लडका, घोडा गाडी मे भरे दर्शनार्थी, साइकिल पर सवार एक श्रमिक, स्कूल जाते बच्चे, और सहसा ही वह सब अस्पष्ट एव धूमिल पड जाते हैं, और मै पुनः सैनिक के साथ गर्म एव प्रभावोत्पादक उस निस्तब्धता मे शीघ्रतापूर्वक जाता दीख पडता हूँ । किसी-किसी रात्रि को मै उस काले चूर्ण को शान्त गलियो पर गहन होता देखता हूँ, और ऐंठे हुए शवो को उसी परत मे लिपटा पाता हूँ, कुत्तो द्वारा चिथडे चिथडे किये हुए वह ऊपर उठने लगते है । वह कुछ अस्पष्ट-सा बडबडाते हैं और भयानकतम होते जाते हैं, पीले पडते जाते है, कुरूप होते जाते हैं और अन्त मे पागल कर डालने वाले विकृततम मानवाकार धारण कर लेते है,

और निर्जीव एव सन्तप्त, रात्रि के अन्धकार में मै जाग पड़ता हूँ।

मैं लन्दन जाता हूँ, और फ्लीट स्ट्रीट एव स्ट्रैण्ड में कार्य-रत समूहों को देखता हूँ, और मुझे ऐसा भास होता है कि जैसे वह अतीत काल के प्रेतमात्र है जो इन सडको पर मॅंडराते फिर रहे हैं जिन्हे मैने शान्त एव श्रीहत् देखा था; इधर से उधर जाते, जीवन-हीन नगर में चलती-फिरती प्रेत-छायाएँ, रासायनिक क्रिया द्वारा सचालित किसी शरीर मे होने वाली जीवन-क्रियाओ का उपहासपूर्ण अनुकरण मात्र और प्रिमरोज पहाडी पर खडे होना भी विलक्षण लगता है, जैसा कि मैने अन्तिम अध्याय लिखने से एक या दो दिन पूर्व किया, और धुएँ एवं कोहरे से आछन्न मकानो को धूमिल पडते तथा नीले होते समूह को देखना, जो अन्ततः अस्पष्ट-से दीख पडने वाले आकाश मे विलीन हो जाते हैं, लोगो को फूलो-भरी पहाडी पर इधर-उधर फिरते देखना, इस समय तक पडे मंगल-अस्त्र के चारों ओर घिरे भ्रमणार्थियो को देखना, खेलते हुए बालको का कोलाहल सुनना, और उस समय की स्मृति करना जब कि मैंने इस चमचमाते एव स्वच्छ रूप ठोस एव शान्त, उस अन्तिम महान दिन के प्रात काल देखा था..... ।

और सबसे अधिक विलक्षण अपनी पत्नी का हाथ पकड लेना है, और तब यह विचार करना है कि मैंने उसे और उसने मुझे मरे हुए व्यक्तियों मे गिन रखा है।